

॥ सर्वमङ्गला मिथिला विद्वत्प्रिषद् विभूति !!



अध्यक्ष
पं. श्री रामचन्द्र झा
पूर्व कुलपति का.मि.मं.
छि.वि., दरभंगा
राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्तकर्ता



उपाध्यक्ष
पं. श्री देवनायण झा
पूर्व कुलपति का. मि.मं.
सं. वि. वि. वि., दरभंगा



पं. श्री शिवकान्त झा
पूर्व कुलपति
का.मि.सं.वि.वि., दरभंगा



पं. श्री विद्याशर मिश्र
पूर्व कुलपति
का.वि.सं.वि.वि. वि., दरभंगा



पं. श्री वीरेन्द्र झा
पूर्वकुलपति



पं. श्री बौजानन्द झा
पूर्व अध्यक्ष
दरभंगा विभाग



पं. श्री लक्ष्मीनाथ झा
साहित्य विभाग



पं. श्री सुरेन्द्र झा
प्रचार्य व्याकरण विभाग



पं. श्री दधानाथ झा
व्याकरण विभागध्यक्ष



पं. श्री दिलीप झा
धर्मशास्त्र विभागध्यक्ष



पं. श्री श्रवणा चौधरी
साहित्य विभाग



प्रधानाचार्य
पं. श्री मन्मथ नारायण मिश्र 'मन्मथ'
ग्राह्यप्रचार, निरन्तर
संस्कृत साहित्यकार (समस्तीपुर)

१३. पं. श्री राधाकान्त ठाकुर, कुलपति कन्दर्प वि.वि. तिरुपति

१४. पं. श्री कमलेश झा, अध्यक्ष निगमन विभाग का.वि.वि.वि., वाराणसी

१५. पं. श्री रामवीर मिश्र, ज्योतिष विभागध्यक्ष, का.वि.वि.वि., वाराणसी

१६. पं. श्री युधक्त मिश्र, वेदों विभाग, सम्पूर्णनन्द संस्कृत वि.वि., वाराणसी

१७. पं. श्री सुन्दरनारायण झा, वेद विभाग, ल.व.झ.प.सं., विशाखाट, नई दिल्ली

१८. पं. श्री महेश झा, ज्योतिष विभागध्यक्ष सराशिन गौरीनर कानन्धपुरो, उड़ीसा

१९. पं. श्री सुरेन्द्र मोहन मिश्र, कुलधेन वि.वि., मीरजापुर

२०. पं. श्री विनय कुमार झा, वेद विभागध्यक्ष का.वि.सं.वि.वि., दरभंगा

२१. पं. श्री मनोज कुमार झा, प्रचार्य ग.सं.वि.वि.वि., पटना
२२. पं. श्री परमानन्द झा, प्रचार्य, सें.दिल्ली

२३. पं. श्री कृष्णनन्द झा, व्यवस्था विभागध्यक्ष, वर्गीनी

२४. पं. श्री प्रशिक्षण झा, ज्योतिष विभागध्यक्ष, रंगपुरा

२५. पं. श्री गणेश ठाकुर, साहित्य विभागध्यक्ष, खमम, बंगाल

२६. पं. श्री सविधदानन्द पाठक, पूर्व प्रचार्य, निरन्तर

२७. पं. श्री नित्यानन्द मिश्र, श्रान्तध्याक, खननपुर

२८. पं. श्री अक्षयेश कुमार झा, व्याकरण, समस्तीपुर

२९. पं. श्री सत्यनारायण मिश्र सत्य, समस्तीपुर

३०. डॉ. जयशंकर झा, पूर्व विभागध्यक्ष, संस्कृत विभाग, ल.का.मि.वि.वि., दरभंगा

३१. पं. श्री कुमार मिश्र, वेद विभागध्यक्ष

३२. डॉ. चौधरी हेम चन्द्र राय, पूर्व प्रवक्ता श्रीराम माई नन्दरा, दरभंगा

॥ अथ सर्वतोभद्र मण्डलम् ॥



॥ अथ चतुर्विंशतो भद्र मण्डलम् ॥



॥ अथ गौरीतिलक मण्डलम् ॥



॥ अथ गणेश मण्डलम् ॥



॥ अथ राम मण्डलम् ॥



॥ अथ क्षेत्रपाल मण्डलम् ॥



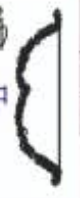
॥ अथ चतुः पञ्चयोगिनी मण्डलम् ॥



॥ अथ षोडशमयूका मण्डलम् ॥



॥ अथ नवग्रह मण्डलम् ॥

 ह्रस्व	 पुरुष	 चान्द्रमन्ता
 यदस्म्यन्ति	 सूर्य	 मंगल
 केतु	 शनि	 राहु

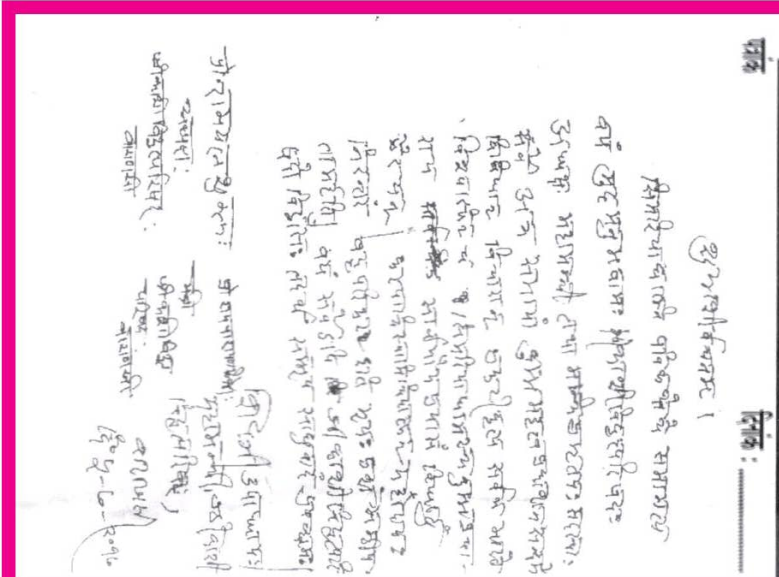
सायनी	मघी	कात्ती
03	02	01
१३	१४	१५
१६	१७	१८
१९	२०	२१
२२	२३	२४
२५	२६	२७
२८	२९	३०
३१	३२	३३
३४	३५	३६
३७	३८	३९
४०	४१	४२
४३	४४	४५
४६	४७	४८
४९	५०	५१
५२	५३	५४
५५	५६	५७
५८	५९	६०
६१	६२	६३
६४	६५	६६
६७	६८	६९
७०	७१	७२
७३	७४	७५
७६	७७	७८
७९	८०	८१
८२	८३	८४
८५	८६	८७
८८	८९	९०
९१	९२	९३
९४	९५	९६
९७	९८	९९
१००	१०१	१०२

आत्मन	लोकमान	देवसेना	मेधा
कुलदेवता	मातृ	नया	शची
गृहि	स्वरा	विजया	पद्मा
धृति	संधा	सावित्री	गौरी
			गणपति

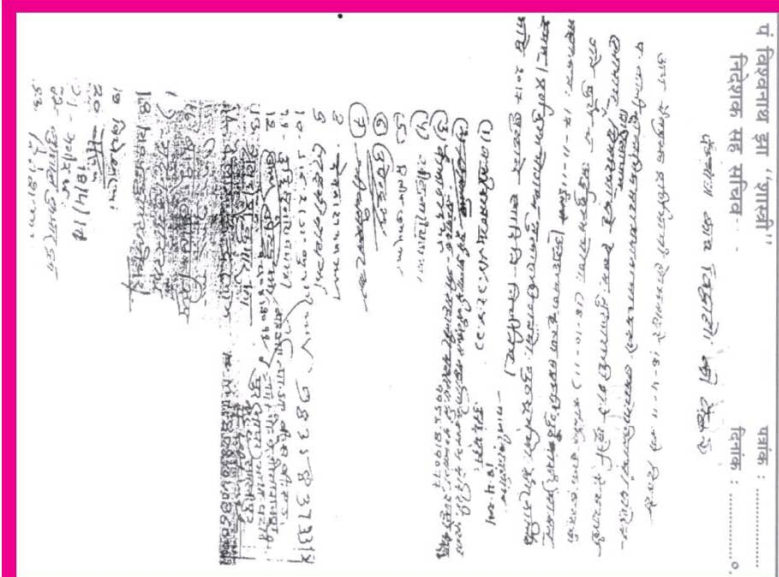
पंचांग सहयोगी सदस्यगण

१. श्री. सुरेन्द्र चौधरी अध्यक्ष सर्वमंगला आध्यात्मयोग विद्यापीठ, सिमरिया
२. श्री रामरतन साहो मुजफ्फरपुर
३. श्री सुरदर्शन सिंह सहरसा
४. श्रीमती किरण देवी सूरत, गुजरात
५. आचार्य श्री नारायण झा रसलपुर बेगूसराय
६. आचार्य श्री दिनेश कुमार झा अहियापुर बेगूसराय
७. श्री राजीव चौधरी (बलू) जोड़पुरा समस्तीपुर
८. आचार्य श्री वरुण पाठक अहियापुर बेगूसराय
९. आचार्य श्री राजेश झा अहियापुर बेगूसराय
१०. आचार्य श्री रमेश मिश्र अहियापुर बेगूसराय
११. आचार्य श्री रंजन शास्त्री मुजफ्फरपुर
१२. पं. श्री संतोष पाठक अहियापुर बेगूसराय
१३. पं.श्री दीपक कुमार झा रानी बेगूसराय
१४. पं.श्री गौतम कुमार सुमन रानी बेगूसराय
१५. पं.श्री दुर्गेश झा सोरभार समस्तीपुर
१६. स्वामी श्री सुलभानन्द जी पटना
१७. श्री सुरेन्द्र प्रसाद सिंह हरिपुर कादराबाद, बेगूसराय
१८. श्री ब्रजेश (पत्रकार) शाहपुर जन्ताहा वैशाली
१९. श्री विश्वजीत कुमार गंगापुर समस्तीपुर
२०. श्री पंकज कुमार सिंह गढ़पुरा बेगूसराय
२१. स्वामी ज्ञानानन्द जी बरियारपुर बेगूसराय
२२. स्वामी नृपेन्द्रानन्द जी भैरवार बेगूसराय
२३. श्री पप्पू राय रूपसबाज बेगूसराय
२४. श्री गौरीशंकर सिंह निम्ननिचौ बेगूसराय
२५. पं. श्री बनवारीलाल तिवारी प्रयागराज उ.प्र.
२६. पं.श्री शुभम् तिवारी प्रयागराज उ.प्र.
२७. स्वामी श्री राधेश्वरानन्दजी अहियापुर बेगूसराय
२८. श्री सनातन कुमार (श्याम भारद्वाज) शोकहरा बेगूसराय
२९. पं.श्री पद्मानाभ झा रसलपुर बेगूसराय
३०. श्री संजय चौधरी नवटोल, बेगूसराय
३१. श्री संजित कुमार (M. R.) बछोता खगड़िया
३२. श्री अरविंद यादव महेशपुरा डुमरी बेगूसराय
३३. डा. कल्पना कुमारी, दत्तसिंहसराय, समस्तीपुर
३४. श्री अमरेन्द्र कुमार सिंह डुमरी परोड़ा, बेगूसराय
३५. श्री कौलेशन्द्र कुमार सिंह डुमरी परोड़ा बेगूसराय
३६. श्री रीतेश कुमार गोखलनगर विष्णुपुर, बलिया, बेगूसराय
३७. राजकुमार झा, रसीरपुर ३८. डा. उमेश जी, मनियप्पा
३९. पद्मनाभ झा, रसलपुर ४०. सुशील सिंह, तेनाय
४१. विजय सिंह, बेगूसराय ४२. राजकिशोर सिंह, पहरसा

श्री काशी विद्वत्परिषद्: वाराणसी



स्वामि उमेशानन्दजी, आश्रम



अखिल भारतीय सर्वमंगला परिवार

- स्वामी सुलभानन्दजी, पटना
- स्वामी नागोद्भानन्दजी, पटना
- स्वामी अभयानन्दजी, पटना
- स्वामी उमेशानन्दजी, पटना
- स्वामी माधवानन्दजी, प्रयाग
- स्वामी गंगानन्दजी, हरिद्वार
- स्वामी प्रेमतीर्थजी, हरिद्वार
- स्वामी विश्वनाथानन्दजी, पुनौराधाम
- स्वामी सत्यानन्दजी, आश्रम
- स्वामी दिनेशानन्दजी, आश्रम
- स्वामी संजयानन्दजी, आश्रम
- स्वामी सदानन्दजी, आश्रम
- स्वामी अखिलेश्वरानन्दजी, सुपरमार्केट
- स्वामी सुदर्शानन्दजी, सहरसा
- स्वामी प्रद्युम्नानन्दजी, शिवहर
- स्वामी निर्मलानन्दजी, शिवहर
- स्वामी नंदकिशोरानन्दजी, शिवहर
- स्वामी ध्रुवानन्दजी, राजगीर
- स्वामी शिवकुमारानन्दजी, राजगीर
- स्वामी अमरेन्द्रानन्दजी, आश्रम
- स्वामी कौशलेन्द्रानन्दजी, आश्रम
- स्वामी रीतेश्वरानन्दजी, आश्रम
- स्वामी राधेश्वरानन्दजी, आश्रम
- स्वामी नृपेन्द्रानन्दजी, आश्रम
- स्वामी ज्ञानानन्दजी, आश्रम
- स्वामी नीरंजानानन्दजी, आश्रम
- स्वामी विजयानन्दजी, आश्रम

सर्वमङ्गला विद्वत्परिषद् सह पंचाङ्ग समर्थकाः

- पं. श्री चंद्रभूषण झा शाम्को बेगूसराय
- पं. श्री भूपेंद्र ठाकुर तेनाय बेगूसराय
- पं. श्री विकास पाठक पपरौर बेगूसराय
- पं. मिथिलेश झा आहो बेगूसराय
- पं. श्री अशुतोष कु. झा, व्याकराण ज्यो. रहुआ, समस्तीपुर
- पं. बाबु साहेब झा, बोरिया, समस्तीपुर
- पं. अखिलेश्वर कु. पाण्डेय, ज्योतिषाचार्य शिवहर
- पं. श्री योगेन्द्र झा, बलीपुर, लखीसराय
- पं. श्री नीरस झा, शाम्को, बेगूसराय
- पं. श्री भूषण झा, शाम्को, बेगूसराय
- डा. कृष्ण कुमार झा, पटना
- पं. श्री जगन्नारायण झा, जयरामपुर
- पं. श्री बन्दी झा, जयरामपुर
- पं. श्री चन्द्रभूषण झा, गौड़ा, बेगूसराय
- पं. श्री इन्द्रभूषण झा, शाम्को, बेगूसराय
- डा. कुलानन्द झा, मधुबनी
- पं. श्री वीरेन्द्र झा, मधुबनी
- पं. श्री मुरलीधर पाठक, सं. महावि. मर्दिरी, पटना
- पं. श्री राम सजीवन झा, सं. महावि. मर्दिरी, पटना
- डुनडुन मिश्रा वासुदेवपुर, बेगूसराय
- श्री अरुण किशोर ठाकुर आचार्य, पटना
- पं. सच्चिदानन्द झा आचार्य, पटना
- पं. श्री उमाकान्त झा, तिलरथ, बेगूसराय
- श्री राजनीति चौधरी, कन्हैयाचक, खगड़िया
- पं. श्री वैद्यनाथ झा, बरियारपुर, बेगूसराय
- श्री विश्वम्भर पाठक, बरौनी, बेगूसराय
- पं. श्री रामदेव झा
- डा. अवधेश शर्मा, भगालपुर
- पं. विद्यानंद झा, बेगूसराय
- पं. देवेश मिश्र, अहियापुर
- पं. दिनेश झा सं.म.वि., दरभंगा
- पं. शिवलोचन झा, सं.म.वि., तरौनी
- पं. श्री शत्रुघ्न झा बनगांव सहरसा
- पं. श्री देवकी नन्दन झा, सम्पादक, विद्यपति पंचांग
- आचार्य श्री विजय कृष्ण झा कन्हैयाचक खगड़िया
- पं. श्री कृष्ण मोहन झा महारथपुर बेगूसराय
- पं. डॉ. प्रजापति झा शाम्को बेगूसराय
- डा. रमेश झा पूर्वप्राचार्य, समस्तीपुर
- डा. गोपाल झा, सांघटिस्ट, शाम्को, बेगूसराय
- पं. श्री रामनारायण झा, रूदौली
- पं. श्री दिनेश कुमार झा, अहियापुर, बेगूसराय
- पं. श्री विकास मिश्र अहियापुर बेगूसराय
- पं. श्री रंजन शास्त्री, मुजफ्फरपुर
- पं. श्री नारायण झा, सिद्धाश्रम
- पं. श्री रत्नेश्वर पाठक, मालीपुर
- पं. श्री धीरेन्द्र झा, रूदौली
- पं. श्री सनातन भारद्वाज, श्रीधाम बरौनी
- पं. श्री राम भारद्वाज, सिद्धाश्रम
- पं. श्री रमेश मिश्र, सिद्धाश्रम
- पं. श्री लक्ष्मण भारद्वाज, गुरुधाम रूदौली
- पं. श्री साकेत कुमार झा, रूदौली
- विजय कु. झा, देसरी संजात
- पं. श्री रंधीर झा, मंझौल
- पं. श्री प्रकाश मिश्र, गढ़पुरा
- पं. श्री गौरीशंकर पाठक, अहियापुर
- पं. श्री राजेश कुमार झा, अहियापुर
- पं. श्री राजकुमार झा, रसीरपुर
- पं. श्री सुभाष कुमार पाठक, गौड़ा
- पं. श्री सतीश पाठक,
- पं. श्री अमरनाथ झा टभका समस्तीपुर
- पं. श्री अनंत झा टभका समस्तीपुर
- पं. श्री विद्यासागर झा खूटहा
- पं. राशिधर झा सं. म.वि., रोसड़ा
- पं. श्री शत्रुघ्न झा बनगांव सहरसा

मङ्गलाचरण

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सवार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते॥
गुरुभ्यश्च ग्रहेभ्यश्च मया बद्धोऽसमंजलिः।
प्रसन्नमनसस्तेन सत्यां कुर्वन्तु भारतीम्॥

स जयति सिन्दुरवदनो देवी यत्पादकपंकजस्मरणम्।
वासरमणिरिव तमसां राशिनाशयति विघ्नानाम्॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम्।
संवत्सरफलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया॥
यश्चैत्रशुक्लप्रतिपत्सु धीमान् शृणोति वर्षीयफलं पवित्रं।
भवेद्धनाढ्यो बहुसस्यभोगी जह्याच्चपीडां तनुजां च वार्षिकीम्॥
प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहे कुर्याद्वज्रारोपणं स्नानं,
मंगलामाचरेद्द्विजवरैः कुर्यान्मनोवाञ्छितम्।
ग्राह्या सौम्यसुवर्णरत्नमणयो वृद्धादिभिः पूजयेच्छ्रोतव्यं
द्विजवर्याभाषितफलं श्रेयस्करं पुण्यदम्॥
शाकस्य श्रवणात् सुपुण्यजनसंवत्सरस्यआढ्यतां
राजोराजकुले जयो विजयते मन्त्री फलं बुद्धिदं।
धान्यं धान्यपते रसं रसपतेः क्षेत्रेषु वृद्धिस्तथा,
सस्यं सर्वसुखं च वत्सफलं संश्रृण्वतां सिद्धिदं॥
धन्य ई मिथिला धाम, जतय ऐला राम भगवान।
धन्य अयाची-मंडन-ज्ञान, भन विद्यापति कवि महान॥
धन्य कुशेश्वर-विदेश्वर-सिंहेश्वर ओ अभिराम।
धन्य महैता विषहरि धाम, धन्य भवानी उगनेश्वर गाम॥
धन्य मिथि आ मिथिलाधा, धन्य धन्य विदेहरजधाम।
धन्य धरा छथि सीताराम, रमण करै छथि नमन प्रणाम॥

श्री मङ्गलमूर्तये नमः, श्रीसरस्वत्यै नमः

कल्पादि सम्वत्-१९७२९४९१२७ सुष्टिसम्वत्- १९५५८८५१२७ राम सम्वत्-८८०१६८ कृष्ण सम्वत् ५२६२
कलि सम्वत्-५१२७-२८ सप्तर्षि सम्वत्-५१०२, शकाब्दः १९४८-४९ विक्रमसम्वत्-२०८३-८४ सन् १४३४ साल
लक्ष्मण सम्वत् ९१७-१८ क्रिस्ताब्दः-२०२६-२६ ई० तत्र प्रभवादि बार्हस्पत्य गताब्दद्वयः- ५३।१।२२।१६।१६
भोग्याब्दद्वयः-६।२८।०७।४६।३४ अत्र विद्यमाने अष्टवहनबेन्दु मितेशकाब्दे रुद्रविंशतिकायां नासत्यैवैत युगे चतुः
पञ्चाशत

सैद्धान्तिक बार्हस्पत्य संवत्सर फलम्-

अल्पतोयास्तथा मेघाः कीटाश्च शलभाः शुक्रः। विकृताः पार्थिवाः देवि सैद्रवर्षे वरानने॥
वर्षेश (राजा) शनि फलमः-

सर्वोपद्रवतो नरः क्षतमना नशन्त्यथो जन्तवो राष्ट्रोपद्रव वाच्यता निगदिता विप्रेषु साधुष्वपि।

पीड्यन्ते च समीरणाद् बहुजनाः प्रासादहर्म्याद्यो निःशब्दा वसुधा निहन्ति च जलं नस्युःशनौ शालयः॥

सम्बाहक (मंत्री) भौमफलमः-

वायुर्वाति महीरहस्यपतनं भूकम्पसंक्षोभिता पृथ्वी शैलमहतिशृंगपतनं लोकस्य नाशः सदा॥

पीडा गोमहिषयाश्च कुंजर पशोर्वोरा महीभीतिदा-शस्यानां च विनाशदारुणतरा सम्बाहके भूमिजे॥

पालक (सूर्य) फलमः-

सूर्ये लाघवतां व्रजन्ति जलदा मन्थान्युक्ता मही योगैः पितृव्यरातिसारसाहितैः शस्यै विनष्टाहटात्।

राजानो राष्ट्रवादाः पुरजनसंहिताः यान्ति युद्धैकचित्ता। अर्कज्वालाभिपत्त्या चलति वसुमती पालके तीक्ष्णश्मै॥

मेघाधिप शुक्रफलमः-

शुक्रेशस्ययुता पृथ्वी जलदास्तोयवर्षिणः॥

तोयाधिप शनि फलमः-

मन्त्रेमन्दजला मेघा मन्द शस्य युता मही। तोयाधिपानामेतत्तु फलं वदति भागुरिः॥

शस्याधिप गुरुफलमः-

अनेकधन सम्पन्ना नन्दन्ति नरपालकाः। शस्य वृद्धि करीवृष्टिर्देवपूज्ये सदा भवेत्॥

लोकाधिप चन्द्र फलमः-

स्वस्थाः कीर्तियुता लोका धनान्धर विभूषिताः। हर्षोत्सव क्रियायुकाः शीतांशौ च नराधिपे॥

पुष्कर नामक मेघ फलम्-

पुष्करे चित्रितं विश्वं चित्रिताः जलदाः सदा। चित्रिता तु भवेद्वृष्टिः शस्यवृद्धिस्तु चित्रिता॥

अथ वर्षादि विश्वा-२०८३-८४

वर्षा-१७ धान्यम्-११ शीतम्-५ तुणम्-१३ उष्णम्-१७ वायुः-११ प्रजावृद्धिः- १५ प्रजाक्षयः-१५ विग्रहः-११
क्षुधाः-३ तृष्णाः-१ निद्राः-७ आलस्यम्-७ उद्यमः-५ शान्तिः- ७ क्रोधः-५ दण्डः-१ मैत्री-३ उत्सवः-३ पापम्-१३
पुण्यम्-३ रसादिः-९ उग्रत्वम्-७ रसोत्पत्तिः-३ फलोत्पत्तिः-९ रोगः- ७ रोगक्षयः-११ आचार-७ अनाचार-१३
मरणम्-१५ जननम्-५ चौरभयम्-९ चौरशान्तिः-५ अग्निभयम्-१३ अग्निशान्तिः-१३

आय-व्यय २०८३-२०८४

राशि	मेघ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	१४	८	११	५	८	११	८	१४	२	५	५	२
व्यय	१४	८	५	५	१४	५	८	१४	८	२	२	८
फल	कलेशः	विजयः	विजयः	लाभः	अपवादः	विजयः	विजयः	कलेशः	लाभः	सम्मानम्	सम्मानम्	लाभः

फलम्:-

आय व्यय युति कृत्वा तत्र रूपं विशोधयेत्। अष्टभिश्च हरेदभागं शेषांके फल मादिशेत॥

लाभः सौख्यं तथा कलेशो रोगो लोकापवादनम्। सम्मान विजयो हानिः कथितं पूर्वं सूरिभिः॥

सन् १४३४ साल वर्षीय शुद्ध्यशुद्धी

श्रावण कृष्ण प्रतिपदादितः भाद्रशुक्ल षष्ठ्यां गुरौ ४४।५३ यावत् गुरुर्वास्त सिंह संक्रांति कारणादशुद्धः ततो आश्विन कृष्ण अमावस्यायां शनौ ४९।५७ यावत् शुद्धः। ततो शुक्र क्षैण्यस्त दोषकारणात् आश्विन शुक्ल त्रयोदश्यायां शनौ ४९।५७ यावदशुद्धः। ततो मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तम्यां बुधे ३२।०८ यावत् शुद्धः। ततो धनुरादित्य दोषाद् पौष शुक्ल षष्ठ्यां गुरौ ५१।२७ यावदशुद्धः। ततो आषाढ शुक्ल नवम्यां सोमे ०।५२ यावत् शुद्धः। ततो शुक्र क्षैण्यस्त दोषाद् आषाढीं यावदशुद्धः।

पञ्चाङ्ग देखने की विधि:

इस पञ्चाङ्ग में सर्वप्रथम तिथि उसके बाद सूर्यादि दिन का नाम एवं तिथि का दण्डात्मक मान एवं तिथि घण्टा मिनट उसके बाद नक्षत्र का नाम एवं दण्डपल और घण्टा मिनटात्मक मान है, तत्पश्चात् योग का नाम एवं दण्ड पल मान उसके बाद पूर्वार्ध करण का नाम एवं दण्डात्मक मान, पश्चात् मेघादि राशि में चन्द्रमा के भुक्तकाल का घण्टात्मक मान, उसके बाद सूर्योदय एवं सूर्यास्त तथा मिश्रमान कालिक स्पष्टराश्यादि सूर्य का भोगकाल एवं राष्ट्रीय, नेपाली एवं अंग्रेजी दिनांक तत्पश्चात् मुहूर्त पर्वादि दिये गये हैं।

उदाहरणार्थ- प्रथम श्रावण कृष्णपक्ष गुरुवार को प्रतिपदा तिथि का दण्डात्मक मान ३८।१७, रात्रि ८।४० तक, श्रवणनक्षत्र का दण्डपल ३२।२ सं. ६।१० तक, योग आयुष्मान् का दण्डात्मक मान ४९।५५, करण बालव का दण्डात्मक मान ६।५५, चन्द्र का भुक्त मकर राशि में, सूर्योदय ५ बजकर २१ मिनट पर तथा सूर्यास्त ६ बजकर ३९ मिनट पर, सूर्य कर्क राशि के १२ अंश ५२ कला ४५ विकला पर भोग कर रहा है, ऐसा समझना चाहिए। राष्ट्रीय १६, नेपाली आषाढमास के १४ गते तथा अंग्रेजी दिनांक ३० जुलाई समझना चाहिए। उसी पंक्ति में धर्मशास्त्र के द्वारा वर्णित पर्वादि दिया गया है। इस पञ्चाङ्ग के निचले भाग में मिश्रमानकालिक राश्यादि दैनिक स्पष्ट ग्रह एवं दण्डपालक मिश्रमान दिया गया है। तदनन्तर दैनिक लगन सारणीय दी गई है। सुविधा की दृष्टि से प्रतिदिन सूर्योदयकालिक लगन का समाप्ति काल मानक समय के अनुसार दिया गया है। पश्चात् ब्राह्मणों को सुलभता के लिए यामार्ध (अर्धप्रहरा) का घण्टात्मक मान दिया गया है। साथ ही उपयोगी विविध विषय भी दिये गये हैं।

वर्षफ़ल २०८३-०८४

इस वर्ष के राजा शनि हैं जिसके कारण सर्पादि तथा कीटादि जीवों की वृद्धि, विश्व में तथा अपने राष्ट्र में भी उदरव, संतो एवं विप्रों का अपमान, वायुवेग के कारण जन धन की हानि, अग्नि के कारण भारी क्षति, आकाशीय दुर्घटनाओं में वृद्धि, भूस्खलन संक्रामक रोगों में वृद्धि के कारण सामान्य जनों में भय का वातावरण, पृथ्वी पर्वतों में विशेष रूप से हलचल रहेगा खण्डवृष्टि से अतिवृष्टि एवं अनवृष्टि के कारण जन-धन विशेष रूप से प्रभावित रहेंगे। असामान्य वातावरण के कारण गौ, महिष, बाड़ा आदि जीव भी जस्त रहेंगे जिसके कारण दुग्धादि उत्पन्न भी प्रभावित होंगे एवं इसके मूल्य में वृद्धि होगी, अन्नादि के उत्पादन में कमी आएगी और इसके मूल्य में भी वृद्धि होगी। सुवर्णादि धातु पदार्थ के मूल्य में भी वृद्धि होगी। शासन और शासक पुष्ट रहेंगे परंतु आपसी द्वेष के कारण जनक्रोश में वृद्धि होगी। सूर्य की ज्वाला में वृद्धि होगी। कृषि कार्य में अनेक बाधाओं के बावजूद कृषक अपने लाभ से आनंदित होंगे। ग्रह युति-दृष्टि के आलोक में वैमनस्य, विजय, विलंब की स्थिति के बावजूद कृषि, स्वास्थ्य, पर्यवरण, शिक्षा, ऊर्जा तथा जल से संबद्ध क्षेत्रों में विशिष्ट कार्य होंगे। उद्योग, व्यापार, शिक्षा, क्रीड़ा के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य संपादित होंगे। समय-समय पर भूकंप, ज्वालामुखी, हिमपात, भूस्खलन, संक्रामक रोगोपद्रव, अग्नि कोप, विधुस्पात एवं ओला वृष्टि से जनधन प्रभावित होंगे।

सन् १४३४ साल वर्षीय

शनि की साहेसाली तथा डैया- इस वर्ष ३० जुलाई २०२६ ई. से मई २०२७ तक शनि मीन राशि में रहेंगे। अतः इस प्रभाव से कुंभ मीन मेष राशि वालों के लिए शनि की साहेसाली तथा धनु सिंह राशि वालों पर डैया का प्रभाव पड़ेगा। मेष राशि वालों के सिर पर, मीन राशि वालों के हृदय पर तथा कुंभ राशि वालों के पैर पर साहेसाली का प्रभाव पड़ेगा। जून २०२७ से शनि के मेष राशि पर जाने से मीन मेष वृष राशि वाले व्यक्ति प्रभावित होंगे।

अतः प्रभावित राशि वाले व्यक्ति शनि का जप, शनि स्तोत्र का पाठ, हनुमान जी की आराधना, दर्शन, पूजन, शनिवार की पीपल वृक्ष में गुड़ मिश्रित जल दान, हनुमान चालीसा तथा सुस्कांड का पाठ करना या करना, काले चाड़े के नाल की अंगूठी धारण करना हितकर होगा ।

मासफ़ल

सावन मास फ़ल:- इस मास में पांच गुरुवार “चंद्र जीवों यदा पञ्च अन्नादिना महर्घता” तथा पांच शुक्रवार “प्रजा वृद्धिस्तु भागिने” एवं चन्द्रदर्शन तथा संक्रान्ति मुहूर्तों के आलोक में खाद्य पदार्थों के मूल्य में वृद्धि होगी। देश की बौद्धिक तथा वैज्ञानिक ज्ञान प्रतिभा के क्षेत्र में विकास होगा। देश का पूर्वोत्तर क्षेत्र आंदोलित रहेगा। देश का मध्य भाग भी अशांत रहेगा। आतंकी गतिविधि में वृद्धि, अन्नादि-चावल, गेहूँ, चना, मूंग आदि के भाव में वृद्धि होगी। पेय पदार्थ के भाव में वृद्धि संभावित है। अतिवृष्टि तथा अनवृष्टि के कारण यत्र तत्र बाढ़ की स्थिति रहेगी जिससे कृषि कार्य प्रभावित होंगे। सांप्रदायिक तनाव की स्थिति बनेगी परंतु उसी तीव्रता से उसका समन भी होगा।

भाद्र मास फ़ल:- इस मास में पाँच शनिवार का योग, चंद्र दर्शन तथा संक्रांति मुहूर्तों के आलोक में “दुर्भिक्ष पंच मंदेषु” के कारण वायु वेग अनावृष्टि तथा अतिवृष्टि के कारण अधिक क्षेत्र जलज्वालावित रहेंगे और कृषि कार्य विशेष रूप से प्रभावित होंगे। विद्युत पात तथा भूकंप के कारण जनधन विशेष रूप से प्रभावित होंगे। तुणादि का अभाव रहेगा। दुग्धादि तथा अन्नादि के भाव में वृद्धि संभावित है। सुवर्णादि आभूषणों के भाव कम होंगे। भवन निर्माण संबंधी पदार्थ के भाव में वृद्धि होगी। श्रमिकों का आंदोलन लोगों को प्रभावित करेगा। सीमा संबंधी विचार उपस्थित होने की संभावना है। यत्र तत्र सत्ता परिवर्तित होने का योग बनता है।

आश्विन-मास फ़ल:- इस मास में पांच रविवार तथा पांच सोमवार-“पञ्चार्क वासरे रोगाः” तथा “चंद्र बहु जल तोयं तुणानां बहुलोदयः” “चंद्र जीवों यदा पञ्च अनादीनां महर्घता” तथा चन्द्रदर्शन, संक्रान्ति मुहूर्तों के आलोक में इस मास में अन्नादि के भाव महंगे रहेंगे। इस मास में यानादि आकाशीय दुर्घटना एवं प्राकृतिक प्रकोप से क्षति होने की सम्भावना रहेगी। सीमा प्रान्त के देशों में भारी राजनैतिक एवं आर्थिक समस्यायों से जस्त होंगे। व्यापारिक

संबंध में क्षति होगी। स्वर्णादि पदार्थों के मूल्य में वृद्धि होगी। अन्नादि के भाव साम्य होंगे। भवन निर्माण सामग्री के भाव बढ़ेंगे। देश के मैदानी भाग में वायुवेग से तापमान कम होंगे।

कार्तिक मास फ़ल:- इसमास में पाच मंगल- “पंच भौमे भयमहर्” चन्द्रदर्शन, संक्रांति मुहूर्तों के आलोक में- खाद्य पदार्थों के मूल्य में वृद्धि संभावित है। सैन्य गतिविधियाँ तेज होंगी। राष्ट्र को प्रांतों में आकाशादि तथा यानादि दुर्घटना युक्त होगा। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अनेक उपायों की आवश्यकता होगी। पर्वतीय भाग आन्दोलित रहेंगे। तैलीय पदार्थों के मूल्य में तेजी तथा गेहूँ, चावल जौ मटर के मूल्य स्थिर रहेंगे। तापमान में कमी आएगी। हिमालयी क्षेत्र में शीत का प्रकोप बढ़ेगा। पीत पदार्थों के मूल्य में वृद्धि तथा भवन निर्माण सामग्री के मूल्य स्थिर रहेंगे।

मार्ग मास फ़ल:- इस मास में ५ बुधवार-“बुधेशसंक्षयोभूय्यां” तथा ५ गुरुवार- “चन्द्रजीवों यदा पञ्च अन्नादीनां महर्घता” चन्द्र दर्शन तथा संक्रान्ति मुहूर्तों के आलोक में-दुग्ध तथा रसादि पदार्थों के उत्पादन में कमी होने के कारण इसके मूल्य में वृद्धि होने की सम्भावना है। चावल, रूई एवं खेत पदार्थों के मूल्य में कमी आयेगी। गेहूँ, चना, जौ के भाव में वृद्धि होने की सम्भावना है। धार्मिक उन्मार एवं हिंसा में जन-धन की हानि होगी। स्थियों के प्रति अत्याचार में वृद्धि, प्राकृतिक प्रकोप से याष्ट्रिय सम्पत्तियों की हानि, शीतलहर से कृषि कार्य प्रभावित होंगे। लोह, पीतल, तौबा मेवादि के भाव में तेजी रहेगी। हिमपात से गाय, भैंस तथा अश्वदि जीवों की हानि होगी। हिमपात तथा उपल वृष्टि तथा शीतलहर का प्रकोप बढ़ेगा।

पौष मास फ़ल:- इस मास में ५ शुक्रवार-“प्रजा वृद्धिस्तु भागिने” चन्द्रदर्शन तथा संक्रांति मुहूर्त के आलोक में चावल रूई तथा खेत पदार्थों के भाव स्थिर रहेंगे। जीप, धनियाँ, मसालों तथा रसायनिक पदार्थों के भाव में मंदी आयेगी। प्राकृतिक प्रकोप वायुपान तथा आकाशीय दुर्घटना की सम्भावना। पूर्वार्द्ध भाग में शीतोधिन्म्य, वायु वेग तथा हिमपात की संभावना है। राजनैतिक उथल-पुथल तथा आपसी वैमनस्य से जनक्रोश तथा प्रदर्शनादि से राष्ट्रीय जन की हानि। सीमावर्ती देशों में अशांति से सीमा पर अशांति रहेगी। धार्मिक उन्मार के कारण अशांति तथा जन जन की हानि होने की संभावना तथा राजनैतिक अशांति रहेगी।

माघ मास फ़ल:- इस मास में ५ शनिवार-“दुर्भिक्षं पञ्च-मन्देयु” चन्द्र दर्शन तथा संक्रान्ति मुहूर्तानुसार खाद्य पदार्थों के मूल्य में सामान्य वृद्धि। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। हिमपात तथा पालापात के कारण कृषि कार्य प्रभावित होंगे। यत्र तत्र वर्षा की संभावना। सफेद पदार्थों के मूल्य में वृद्धि के बाद मंदी आयेगी। सुवर्णादि पदार्थों के मूल्य में वृद्धि। लोहे के मूल्य में स्थिरता। गेहूँ, जौ, चना, मूंग के भाव में वृद्धि के बाद स्थिरता रहेगी। राजनैतिक प्रति द्विन्दिता के कारण उथल पुथल रहेगा। परेसी देश अव्यवस्थित होगा। तेल के मूल्य में वृद्धि के कारण महंगाई में वृद्धि रहेगी।

फाल्गुन मास फ़ल:- इस माह में ५ रवि-“पंचार्क वासरे रोगाः” ५ सोमवार-“चंद्र बहु जलं तोयं तुणानां बहुलोदयः” चन्द्रदर्शन, तथा संक्रांति मुहूर्त के आलोक में रोग, चौर, अग्नि के भय से सामान्य जन प्रभावित रहेगा। वायु, वर्षा, तथा उपल वृष्टि वज्रपात से जन जन की हानि सम्भावित है। अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों पर विपरीत प्रभाव परने की सम्भावना। ऋतु परिवर्तन से चेचक आदि रोगों में वृद्धि। सीमा पर हल चला गेहूँ, मूंग, चना आदि धान्य के भाव में मंदी रहेगी। सुवर्णादि धातु पदार्थ तथा लोहा तौबा के भाव स्थिर रहेंगे। सरसों, गुड़, कपास के भाव में तेजी रहेगी।

चैत्र मास फ़ल:- इस मास में ५ मंगल-“पञ्चभौमेभयमहर्” चन्द्रदर्शन तथा संक्रान्ति मुहूर्तानुसार-खाद्य पदार्थों के मूल्य में कमी। सोना, चांदी, तौबा आदि धातु पदार्थ सस्ते होंगे। वायु वृष्टि उपलपात से कृषि कार्य प्रभावित होंगे। दूध एवं रसादि-पदार्थों के उत्पादन में वृद्धि से इनके मूल्य में साम्यता रहेगी। समुद्र के तटवर्ती क्षेत्र चक्रवात से प्रभावित होगा। पक्षान्त तक तापमान में वृद्धि से गर्मी के कारण अग्नि भय में वृद्धि होगी। रोग चौराग्नि से जनमानस प्रभावित होगा। राजनैतिक क्षेत्र में प्रतिद्विन्दिता के कारण जानादोलन की सम्भावना एवं उथल पुथल की सम्भावना है।

वैशाख मास फ़ल:- इस मास में ५ बुध-“बुधेशसंक्षयोभूय्यां।।” तथा ५ गुरुवार-“चन्द्र जीवो यदा पंच अन्नादीना महर्घता” चन्द्रदर्शन तथा संक्रान्ति मुहूर्त के कारण खाद्य पदार्थ के मूल्य में तेजी का क्रम रहेगा। खेत पदार्थ तथा काष्ठोपकरण, वस्त्रादि एवं औषधि के भाव स्थिर रहेंगे। दूध रसादि पदार्थ के उत्पादन में कमी होगी। आकाशीय दुर्घटना, रोग, चौर, अग्नि, भय में वृद्धि होगी। राजनैतिक अस्थिरता, नेतृत्व परिवर्तन, तथा जनहित का कार्य सम्पादित होगा। सीमावर्ती क्षेत्र अशांत रहेगा। गर्मी, उपल पतत तथा वायु वेग के कारण कृषकों को क्षति होने की सम्भावना।

ज्येष्ठ मास फ़ल:- इस मास में ५ शुक्रवार-“प्रजावृद्धिस्तु भागिने” चन्द्रदर्शन तथा सूर्य संक्रान्ति मुहूर्त के आलोक में वायु वेग, ग्रीष्मधिन्म्य, उपल वृष्टि के कारण कृषि कार्य प्रभावित होंगे। शाक सब्जों के उत्पादन में ह्रास होने की सम्भावना। राजनैतिक अस्थिरता, जनादोलन, धार्मिक उन्मार के कारण जन जन की हानि होने की सम्भावना। खाद्य पदार्थ, गेहूँ, जौ, चना मूंग के मूल्य में सामान्य वृद्धि की सम्भावना। फलादि गृहोपकरण, रक्त पदार्थ आदि के भाव में साम्यता रहेगी। सीमावर्ती क्षेत्र अशांत रहेगा।

आषाढ़ मास फ़ल:- इस मास में ५ शनिवार-“दुर्भिक्षपंचमन्देयु” चन्द्रदर्शन तथा संक्रांति मुहूर्त के आलोक में तथा ५ रविवार-“पंचार्क वासरे रोगाः” के कारण रोग, चौराग्नि भय के कारण जनमानस व्यवस्थित रहेगा। अन्नादि -गेहूँ, जौ चना अरहर के भाव में साम्यता रहेगा। खण्डवृष्टि, वायुवेग तथा अधिक ग्रीष्मता के कारण कृषि कार्य प्रभावित होगा। आकाशीय उदरव, दुर्घटना तथा रोग में वृद्धि होने की सम्भावना। राजनैतिक अस्थिरता के कारण जनमानस प्रभावित होगा। खनिज पदार्थ, गृहोपकरण, काष्ठोपकरण औषधि तथा रसादि पदार्थ के मूल्य में वृद्धि सम्भावित है। नूतन कार्यारम्भ जनोपयोगी कार्यक्रम केन्द्र सरकार की प्राथमिकता होगी।

राशि फ़ल २०८३-०८४

मेघ-(बु, बे, चोल, लि, लु, ले, लो, अ)-राशि वालों के लिए यह वर्ष शनि की साहेसाली के प्रभाव में रहेगा। विशेष परिश्रम करने पर ही सफलता की प्राप्ति होगी। पारिवारिक कलह बंधु विरोध की स्थिति भी पैदा होगी। जिसके कारण मानसिक अशांति, चिंता तथा व्यय भार भी बढ़ेगा। माता-पिता के स्वास्थ्य की चिंता बनी रहेगी। संतान पक्ष से अनुकूलता, दाम्पत्य जीवन में कटुता की वृद्धि। धार्मिक स्थल की यात्रा से उत्साह में वृद्धि तथा सुख की प्राप्ति घर में मांगलिक कार्य संपादित होंगे। नौकरी तथा अध्ययन अध्यापनादि कार्य में बाधायुक्त- सफलता की प्राप्ति होगी। व्यवसाय में सफलता बाधित होंगे। शनि की साहेसाली का उपचार करना हितकर होगा।

वृष-(इ, उ, ए, ओ, ब, वि, वु, वे, वो)-राशि वालों के लिए यह वर्ष विजय कारक है। नौकरी तथा व्यवसाय में सफलता की प्राप्ति होगी, अध्ययन अध्यापनादि कार्य सुचारु रूप से चलेंगे। न्यायालयीय कार्य प्रभावित होंगे। अपने तथा कट्टीबयों के यहां मांगलिक कार्य संपादित होंगे। पुत्र सुख की प्राप्ति होगी तथा दैनिक जीवन में व्यस्तता रहेगी, सैन्य तथा सुरक्षा कार्य में संलग्न व्यक्तियों के कार्य चुनौती पूर्ण होंगे। आजीविका में संलग्न व्यक्ति आपसी सहयोग में अपना कार्य संपादित करेंगे तथा दांपत्य जीवन में कटुता की स्थिति बनेगी। धार्मिक स्थलों की यात्रा हितकर तथा उत्साह जनक होगा। जून २०२७ से शनि की साहेसाली का प्रभाव होगा इस अवधि में शनि की साहेसाली का उपचार आवश्यक होगा, हनुमान जी तथा शिवजी की आराधना से लाभ होगा।

मिथुन-(क, कि, कु, घ, ड, ख, के, को, ह)-राशि वालों के लिए यह वर्ष उन्न्ति दायक तथा लाभदायक रहेगा। सामाजिक क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होगी। स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होंगी, व्यापारिक कार्य में लाभ प्राप्त होगा। भूमि भवन संबंधी कार्य में सफलता मिलेगी। पारिवारिक असहयोग समाप्त होगा। अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में संलग्न व्यक्तियों को परिश्रम का लाभ प्राप्त होगा, परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। वर्ष के उत्तरार्ध भाग में मानसिक तनाव की स्थिति बनेगी। संतान सुख के प्रति तथा व्यवसाय में अब अभ्युन्निति का योग बनता है। धार्मिक स्थलों का भ्रमण सुखकर होगा। पारिवारिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क-(हि, हु, है, हो, ड, डि, डु, डे)-राशि वालों के लिए यह वर्ष लाभदायक है। घरेलू समस्याओं का समाधान प्राप्त होगा। राजनैतिक कार्यों से मिथ्या आरोप लगेगा, सामाजिक तथा राजनैतिक कार्यों में सफलता मिलेगी। परिवार तथा कुटुंबियों के यहां मांगलिक कार्य संपादित होंगे। न्यायालयीय कार्य में बाधा की स्थिति बनेगी, अध्ययन-अध्यापन तथा कृषि कार्य से लाभ संभावित है। दांपत्य जीवन में सुख सहयोग प्राप्त होगा पर्यटक स्थल का भ्रमण लाभदायक होगा। छात्रों तथा श्रमिकों को कठिन श्रम से सफलता की प्राप्ति होगी।

सिंह-(म, मि, मु, मे, मो, ट, टि, टु, टे)-राशि वालों के लिए यह वर्ष संघर्षपूर्ण तथा कठिन श्रम साथ्य होगा। कार्य पूर्ति में बधायुक्त सफलता, स्थानांतरण तथा प्रोत्साति की प्राप्ति, परिवार में मांगलिक कार्य संपादित होंगे। अध्ययन-अध्यापन तथा कृषि संबंधी कार्य से लाभ की संभावना है। मानसिक कष्ट निरर्थक कार्यों पर व्यय भार बढ़ेगा, पारिवारिक कलह, व्यावसायिक कार्यों में हानि संभावित है। शनि की डैया का समाधान आवश्यक है।

कन्या-(टो, प, पि, पु, घ, ण, ठ, पै, पो)-राशि वालों के लिए यह वर्ष लाभदायक तथा सुखैश्वर्य कारक है। आर्थिक राजनीतिक तथा सामाजिक कार्यों से लाभ प्राप्त होगा अध्ययन, अध्यापन तथा कृषि कार्यों में बधायुक्त सफलता की प्राप्ति तथा आर्थिक लाभ प्राप्त होगा। मित्रों स्वजनों से सहयोग प्राप्त होगा। धार्मिक स्थान की यात्रा से सुख समृद्धि प्राप्त होगा। संतान सुख दांपत्य जीवन सुखकर होगा। माता-पिता के स्वास्थ्य में कमी तथा व्यय भार बढ़ेगा। आर्थिक लेनदेन में सावधानी बरतें। चोरी और ठगी के कारण आर्थिक क्षति की संभावना है। भूमि भवन से संबंधित रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। अपने रक्तचाप का ध्यान रखना आवश्यक है। मिथ्या आरोप के कारण मानसिक अशांति और इससे कष्ट होगा।

तुला-(र, रि, रु, रे, रो, त, ति, तु, ते)-राशि वालों के लिए यह वर्ष विजय कारक है। व्यापार अध्ययन अध्यापन तथा कृषि कार्य में संलग्न व्यक्ति लाभान्वित होंगे। स्वास्थ्य संबंधी चिंता रहेगी। राजनैतिक व्यक्ति अपने निकटतम व्यक्ति से सावधान रहें। दाम्पत्य जीवन में कटुता आयेगी। संतान सुख की प्राप्ति। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। भूमि भवन संबंधी कार्य वर्जित होंगे। पारिवारिक समस्या में उलझना अहितकर होगा। धार्मिक स्थान की यात्रा से लाभ होगा।

वृश्चिक-(तो, न, नि, नु, ने, नो, य, यि, यु, ये)-इस राशिवाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष करोशकारक है। सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति मजबूत होगा। भूमि, भवन तथा वाहनादि का लाभ होगा, गुप्त शत्रुओं की पहचान आवश्यक है। नौकरी पेशा के व्यक्तियों के लिए सवेत रहते हुए अशक परिश्रम की आवश्यकता होगी। न्यायालयी कार्य में प्राप्ति तथा सफलता भी मिलेगी। धन के लेन देन में विशेष सतर्कता की आवश्यकता है। स्थायी सम्पत्ति के लिए पारिवारिक कलह की सम्भावना है।

धनु-(दे, यो, म, मि, भू, घ, फ, ड भो)-राशि वालों, के लिए यह वर्ष शनि की डैया के प्रभाव के कारण कष्ट कर है। मानसिक चिंता, शारीरिक कष्ट की संभावना है। नौकरी पेशा में लगे व्यक्तियों को अधिक काम तथा सतर्कता की आवश्यकता है। पैतृक सम्पत्ति के लिए पारिवारिक कलह सम्भावित है। माता पिता के लिए स्वास्थ्य की समस्या रहेगी। भूमि, भवन तथा कृषि कार्य प्रभावित होगा। कारोवार से लाभ होगा परन्तु आन्तरिक शत्रुओं से सावधान भी रहना होगा। अध्ययन अध्यापन से सम्बन्धित व्यक्तियों को विशेष सावधानी की आवश्यकता है। शनिवार को पीपल वृक्ष में गुड़मिश्रित जल दें। हनुमन्पूजन तथा हनुमान चलीसा तथा सुस्करांड का पाठ, लोहे की अंगूठी धारण करना लाभदायक होगा। धार्मिक स्थान का भ्रमण तथा शिवपूजन हितकर होगा।

मकर-(मो, ज, जि, जु, जे, जो, ख, खि, खू, ग, गि)-इस राशि वाले व्यक्ति के लिए यह वर्ष सम्मानदायक है। व्यावसायिक कार्य से लाभ प्राप्त होगा। सामाजिक तथा राजनैतिक कार्य से सम्मान प्राप्त होगा। अध्ययन, अध्यापन तथा कृषि कार्य में बाधायुक्त सफलता की प्राप्ति होगी। भूमि, भवन, वाहनादि, के लाभ होने की सम्भावना है। नौकरी पेशा से जुड़े व्यक्ति अपने अधिकारियों का अनुराण आवश्यक है। पारिवारिक सुख-संतान सुख की प्राप्ति। वैवाहिक जीवन सुख शान्तिमय रहेगा। कार्यक्षेत्र में अधिक परिश्रम तथा सावधानी की आवश्यकता है। धार्मिक स्थान का भ्रमण सुखदायी होगा।

कुम्भ-(गु, गे, गो, स, सि, सु, से, सो, ट)-राशि वालों के लिए यह वर्ष शनि की साहेसाली के प्रभाव में रहेगा। मानसिक परेशानी, पारिवारिक कलह तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्याये उपस्थित होंगे। अध्ययन अध्यापन तथा कृषिकार्य में बाधा युक्त सफलता। सरकारी सेवकों को सावधानी पूर्वक कार्य सम्पादित करना होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पादित होंगे। साहेसाली शनि का परिहार आवश्यक है। जून २०२७ से शनि की साढ़े साली का प्रभाव सामान हो जायेगा। इसके पश्चात् सभी कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न होंगे।।

मीन-(रि, रु, थ, थ्र, ज, दे, दो, च, चि)-राशि वाले व्यक्ति सम्पूर्ण वर्ष शनि की साढ़े साली के प्रभाव में रहेगा। आकस्मिक रूप से पारिवारिक समस्याये होंगी। अध्ययन अध्यापन तथा कृषि कार्य में बाधायुक्त सफलता प्राप्त होगी। राजनैतिक तथा सामाजिक कार्यों में अपयश प्राप्त हो सकता है। भूमि, भवन, तथा वाहनादि का लाभ सम्भावित है। दाम्पत्य सुख में कटुता सन्तान सुख की प्राप्ति तथा परिवार में मांगलिक कार्य सम्पादित होंगे। शनिवार को पीपल वृक्ष में गुड़ मिश्रित जल प्रदान करे हनुमन्पूजन, हनुमान चालीसा तथा सुस्करांड का पाठ करना या करना। धार्मिक स्थान की यात्रा तथा शिवपूजन करना हित कर होगा।।

॥ अथ कर्मकाण्ड विमर्श ॥ पंचोपचारपूजा- गन्धः पुष्पं च धूपश्च दीपो नैवेद्यमेव च। पंचोपचाराः कथिता देवनां प्रीतिहेतवः॥ शोडशोपचारपूजा- आसनं स्वगतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनं तथा। मधुपर्कचिमनरत्नानवसनाभरणानि च॥। गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यं चन्दनं तथा। पंचगव्यम्- गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्। पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम्॥ पंचामृतम्- शर्करा मधु दुग्धं च घृतं दधि समांशकम्। पञ्चामृतिमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते॥ पंचरत्नानि- वज्रमौक्तिकवैदर्भ्यपुष्परागोन्मनीलकम्। पञ्चरत्नमिदं प्रोक्तं मनत्रैः कुम्भेषु निःक्षिपेत्॥ पञ्चपल्लवाः- अश्वत्थोदुम्बरप्लक्ष्मिवृत्त्यग्रोधपल्लवाः। पञ्चपल्लव इत्युक्तः सर्वकर्मसु शोभनः॥ सप्तमृत्तिका- गजाश्वरथवल्मीकसंगमाद्भ्रद्गोकुलात्। राजद्वारप्रवेशाच्च मृदमानीय निःक्षिपेत्॥ सर्वौषधिः- मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्। शुण्ठी चम्पकमुरत्तं च सर्वौषधिगणः स्मृतः॥ सर्वौषधिनामभावे तु दद्यादेकां शतावरीम्। सप्तधान्यम्- यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंकस्तथैव च। श्यामकं चणकं चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्॥ हवने शाकल्यनिर्णयः- तिलार्धं तण्डुलं प्रोक्तं तण्डुलार्धं यवा स्मृता। यवाद्धौ शर्करां दद्यात् सर्वार्थं च घृतं स्मृतम्॥		प्रदक्षिणा विचारः- एका चण्ड्या, रवेः सप्त, तिस्रः कार्यविनायक। हरेश्चतस्रः, कर्तव्याः शिवस्यार्धप्रदक्षिणा॥। (आह्निकसूत्र) नवग्रह-समिधा (लकड़ी) अर्कः पलाशः खदिरस्वपत्न्यपामर्गोऽथ पिपलः। औदुम्बरशमीदूर्वाकुशश्च समिधः क्रमात्॥ अर्क (मदार), पलाश, खदिर (खैर), अपामर्ग (चिड़चिड़), पीपल, औदुम्बर (गूलर), शमी, दूर्वा, और कुशा-ये नव ग्रहों की समिधाएँ कहीं गई हैं। महिष्यादि प्रसव दोषः- माघेबुधे च महिषी श्रावणे बडवा दिवा। सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः॥ बिल्वपत्र विचार- अर्पितान्यपि बिल्वानि प्रक्षाल्यापि पुनःपुनः। शंकरायार्पणीयानि न नवानि यदि क्वचित्॥। (स्कन्दपुराण) बिल्वपत्र न मिलने पर चढ़ाये हुये बिल्वपत्र को धोकर चढ़ाना चाहिए। दूर्वादि विचारः- दूर्वाःस्वाभिमुखधाराःस्युर्विल्वपत्रमधोमुखम्। दूर्वाको अपनी ओर और बिल्वपत्र नीचे मुखकर चढ़ाना चाहिये। धूप विचारः- पूजनस्थल में देवता के बायें भाग में धूपदानी (अगरबती) स्थापित करना चाहिये। दीपविचारः- घो का दीपक देवता के दायाँ ओर और तेल का दीपक बायाँ ओर स्थापित करना चाहिय। जन्मस्थान विशेषः- शुचिस्थाने स्वग्रहे जलाशये देवालये वा शूचिभूत्वा विधिवज्जपं कुर्यात्कारयेद्वा तदुक्तं स्मृतौ। गृहे त्वेकगुणं जाप्यं नद्यां तु द्विगुणं स्मृतम्॥ गवां गोष्ठे दशगुणं अन्यगारे शताधिकम्॥ तीर्थोदित्सु सहस्रं स्थादनन्तं विष्णुसन्निधौ॥	● प्रतिमा के स्थापन में दिशाका निर्णय (देवतामूर्तिपकाण ३।२४-२७) पूर्वापरारस्यं देवानां, मुखं नो दक्षिणोत्तरम्। ब्रह्मा विष्णुः शिवाकेन्द्रा गृहः पूर्वापराङ्मुखः॥ शिवब्रह्मजिना विष्णुः सर्वांशाभिमुखः शुभाः॥। गणेशो भैरवश्चण्डी नकुलीशो ग्रहास्तथा। भूतद्या धनदारश्चैव दक्षिणास्याः शुभाः स्मृताः॥ मातृणां सदनं कार्यं दक्षिणोत्तरदिङ्मुखम् हनुमान् वानरश्रेष्ठो नैर्ऋतारयो विदिङ्मुखः॥ ● मन्दिर के लिये प्रतिमा का परिमाण (बृहत्संहिता ५७।४७) सौम्या तु हस्तमात्रा वसुदा हस्तद्वयोच्छ्रिता प्रतिमा। क्षेमसुभिक्षाय भवेत् त्रि-चतुर्हस्तप्रमाण वा॥ मन्दिर के लिये एक हाथकी प्रतिमा सौम्याताको प्रदान करनेवाली, दो हाथकी प्रतिमा धनको देनेवाली, तीन हाथकी प्रतिमा कल्याणको देनेवाली और चार हाथकी प्रतिमा सुभिक्षको देनेवाली होती है। ● घर के लिये प्रतिमा का परिमाण (भविष्यपुराण) अंगुष्ठपर्वादारभ्य वितस्तिर्वादेव तु। गृहेषु प्रतिमा कार्या नाधिका शस्यते बुधैः॥ अंगुष्ठ पर्वसे लेकर वितस्ति(बिता) परिमाणतक की प्रतिमा घरों में रखनी चाहिये, इससे अधिक प्रमाण की प्रतिमा विद्वानों ने अप्रशस्त कही है। ● घर में प्रतिमा रखने का विचार- गृहे लिंगद्वयं नार्घ्यं शालग्रामद्वयं तथा। द्वे चक्रे द्वारकायास्तु नार्घ्यं सूर्यद्वयं तथा॥ शक्तित्रयं तथा नार्घ्यं गणेशत्रयमेव च। द्वौ शङ्खौ नार्घयेच्चैव भग्ना च प्रतिमा तथा॥ नार्घ्येच्च तथा मत्स्यवर्मादिदशकं तथा। गृहेऽग्निदग्धा भग्नाश्च नार्घ्याः पूज्या वसुन्धरे॥ एतासां पूजनात्रित्यमुद्देशं प्राप्नुयाद् गृही। घर में दो लिंग, दो शालिग्राम, दो द्वा्रिकाचक्र, दो सूर्य, तीन शक्ति, तीन गणेश, दो शङ्ख, खण्डित प्रतिमा और मत्स्य, कूर्म आदि दशो अवतारों की एकसाथ प्रतिमाओं का तथा अग्निसे दग्ध (जली) एवं भग्न(खण्डित) मूर्ति का पूजन नहीं करना चाहिये। इस प्रकार की मूर्तियों के पूजन करने से गृहस्थ नित्य ही उद्देग(संकट) को प्राप्त होता है। ● घर में शालिग्राम रखने का विचारः- (पद्मपुराण) शालग्रामः समाः पूज्याःसमेषु द्वितीयं न हि। विषमा नैव पूज्यास्तु विषमेच्छेक एव हि॥ शालग्रामशिला भग्ना पूजनीय सचक्रका। खण्डिता स्फुटिता वापि शालग्रामशिलाशुभा॥ शालिग्राम भगवान का सम चार छः आदि रूप से पूजन करना चाहिये। समरूप में भी दो शालिग्राम की पूजा नहीं करनी चाहिये। विषम रूप में एक शालिग्राम का ही पूजन करना चाहिये(तीन शालिग्राम आदि का पूजन नहीं करना चाहिये। खण्डित मूर्ति का विचार १ खण्डित मूर्ति यदि काष्ठ की हो तो उसे अग्नि में समर्पित कर दें। २. यदि पत्थर की हो तो जल में प्रवाह करें और यदि रत्न या धातु की हो तो उसे आगाध जल में डुबो देना चाहिये। जो मूर्ति खण्डित हो गई हो उन खण्डित अंग को वस्त्र आदि से ढककर मूर्ति को सवारी में रखें। तत्पश्चात् उसे गाजे बाजे के साथ किसी शुद्ध जल वाले जलाशय तक ले जाकर जल में डुबो दें। जिस परिमाण की मूर्ति खण्डित हुई हो उसी परिमाण की दूसरी मूर्ति तैयार करके पहली मूर्ति वाले खाली स्थान पर यथा विधि प्रतिष्ठा करनी चाहिये।	● यज्ञ में दशदान का विवरण- गो-भू-तिल-हिण्गयाच्य-वासो-धान्य-गुडानि च। सैष्यं तवणमित्येवं दशदानं प्रकीर्तितम्॥ गौ, भूमि, तिल, सुवर्ण, घृत, वस्त्र, धान, गुड, चाँदी और नमक-ये दश वस्तु दान के लिये कही गई हैं। ● गोदान का महत्त्व- गोप्रदानं तारयते सप्त पूर्वान् परांस्तथा। यथाकथञ्चिद्वहत्या गां धेनुं काऽधेनुमेव वा। अरोगामपरिकल्पां दत्ता स्वर्गो महोयते॥ गोदान से सात पीढ़ी के पूर्वजों तथा सीत पीढ़ी के आगे होने वाले वंशजो का निस्तार करती है। (बृहस्पति) भूमिदान का महत्त्व षष्टिं वर्षसहस्राणि स्वर्गे वसति भूमिदः। उच्छेता चानुमन्ता च तावन्ति नरके वसेत्॥ यात्किञ्चित्कुरुते पापं जन्मप्रभृति मानवः अपि गोचर्ममात्रेण भूमिदानेन शुद्ध्यति॥ भूमिदान करनेवाला पुरुष साठ हजार वर्षों तक स्वर्ग में निवास करता है और जो दो हुई भूमि हरण करता है या हरण करने का सलाह देता है, वह उतने ही वर्ष नरक में रहता है। मनुष्य जन्म से लेकर जो कुछ भी पाप करता है उसकी निवृत्ति के लिये यदि वह गायके चामके बराबर भी भूमिदान करे, तो वह शुद्ध हो जाता है। ● अन्निको प्रचलित करने का विचारः (देवीभागवत ११।२२५-६) न पाणिना न शूर्पेण न च मेध्याजिनादिभिः। मुखोपधमेदग्निं मुखादेव व्यजायत॥ पटकेन भवेद् व्याधिः शूर्पेण धननाशनम् पाणिना मृत्युमाप्नोति कर्मसिद्धिर्मुखेन तु॥ यज्ञाग्नि को न तो हाथसे ढहकावे, न सूपसे और न पवित्र मृगचर्म आदि से (आदि पदसे वस्त्र का प्राहण है)। मुखसे ही यज्ञानिको धौंके, कर्माँक वह मुखसे उत्पन्न हुआ है। वस्त्र (चर्म आदि) से अन्निको धौंकने पर व्याधि(रोग) होती है, सूपसे धौंकने पर धन-नाश होता है, हाथसे धौंकने पर मरण होता है, किन्तु मुखसे धौंकने पर कर्मसिद्धि होती है। ● विधिहीन अग्नि में हवन करने से हानि (वायुपु ७५।६२) अग्रबद्धे सधूमे च जुहुयाद्यो हुताशने। यजमानो भवेदन्धः सोऽपुत्र इति नः श्रुतिः॥ जो यजमान अन्निके टीक-टीक न जलाने पर और धूमके रहते हुए अग्नि में हवन करता है, वह अन्धा और पुत्रहीन होता है। ● पूर्णहुति खड़े होकर ही करना चाहिये मूर्धानं दिवमन्त्रेण संव्रवेण च धारयेत्। दद्यादुत्थाय पूर्णं तु नोपविश्यकदाचन (अग्निपु) मूर्धानंदिवः०, (शु.य. ७।२४) इस मन्त्र के द्वारा सुवसे घृतकी धाराको खड़े होकर पूर्णहुति करना चाहिये, बैठकर नहीं। ● कर्म-विशेष में अग्नि के भिन्न-भिन्न नामः- प्रत्येक कर्म लिये अग्नि के अलग अलग नाम हैं। अतः जिस कर्म के लिये जिस अग्नि का आचार्थों ने नाम-निर्देश किया है, उसी अग्नि का सर्वाधि आवाहन एवं स्थापन कर हवन करना चाहिये- गर्भार्धानमें- भरत, पुंसवनसंस्कारमें- वर, सीमन्तोन्नयन संस्कार	में- मंगल, जातकमेंमें-स्वभू और नामकर्म में बल, अन्नाग्रशन संस्कार में-अंगिरा, चूड़िकरण में समुद्रभव, उपयन में जय, गोदान अर्थात् समावर्तन में रुद्र, विवाह में संयुग अग्नि कहा गया है। अग्निहोत्र में व्यालिक, गृहकर्म में भव और पितृकर्म में विश्वदेव, उदरकी अन्निका नाम अनल है, मृत(शव) का भक्षण करने में अन्निका नाम कल्मष है। महाहोम में वह्निका, जलमें प्रवाह करने में अन्निका नाम जल है। पूर्णिमा के होम में शशांक, प्रलयमें अन्निका नाम संवर्तक है। काठसे उत्पन्न अन्निका नाम घोर है। वौषों से उठी अन्निका नाम परान्त है। समुद्रमें रहनेवाली अग्नि वडवाग्नि है। पाक (अन्नपाक) करनेमें दक्ष, वसोर्धारा में जिसमें हवन किया जाता है उस अन्निका नाम निधीश है। धूपसे निकली अन्निका नाम कामदेव है। धान आदिके तुष(भूषी) की अन्निका नाम कामहा है। चतुष्पथ(चत्वर चौराहो) में स्थित अन्निका नाम कामहा है। क्षुधा उत्पन्न करनेवाली अन्निका नाम बिभत्सु है, राजा के घरमें उत्पन्न अग्नि का नाम विजय है। वृक्षाँसे उत्पन्न अन्निका नाम धूम्र है। दीपक में स्थित अग्नि का नाम कृष्णपथ है। हेमन्त आदि की अग्नि का नाम वाद्य है। मातृ मन्दिर से उत्पन्न अन्निका नाम अजित है। म्स्तेछ लोगों में जो अग्नि रहती है उसका नाम शंकर है। ईदों की भट्टी की अग्नि नाम संघ है। प्रायश्चित्त में अथवा व्रत खण्डित होने पर शुद्धि नामक अग्नि और शुक्र के आधान में अर्थात् वीर्याधान में जय नामक अग्नि जानना चाहिये। (देवीपुराण) ● गुरु-शुक्र के अस्तादि में त्याज्य कर्म- जब गुरु-शुक्र, वृद्ध अस्त और बाल हों तथा क्षय मास तथा अधिक मास में बावली, बगीचा, तलाब, कुआँ, मकान इनका आरंभ और प्रतिष्ठा व्रत का आरंभ और उद्यापन, वधु प्रवेश, महादान, सोमयज्ञ, अन्वष्टका श्राद्ध, गोदान (ब्रह्मचारी का केशान्त संस्कार), नवात्र, जलशाला प्रथम श्रावणी कर्म वेद व्रत नील वृषोत्सर्ग अतिपन संस्कार (बालकों का जातकमौदि संस्कार जो समय पर नहीं हुआ है), देवप्रतिष्ठा, गुरु से दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, मुण्डन प्रथम बार तीर्थ दर्शन, संन्यास, अग्निहोत्र, राज्याभिषेक की यात्रा चतुर्मास यात्रा समावर्तन कर्णवेध और किसी दिव्यान्तरिक्ष वस्तु की परीक्षा नहीं करनी चाहिए। ● रुद्राक्ष के एक-मुख आदिके नाम और उनका फल एकवक्त्रः शिवः साक्षाद् ब्रह्महत्यां व्यपोहति। अवध्यत्वं प्रतिप्नोति बह्निस्तप्सं करोति च॥ द्विबकत्रो हरगौरी स्याद् गोवधाद्यधनाशकृत्। (शिवरहस्य के अनुसार) ‘एक मुखवाला रुद्राक्ष साक्षात् ‘शिव’ है, जो ब्रह्महत्याको दूर करता है और समस्त स्रोतोंको अवध्य तथा अग्नि को रोकता है। दो मुखवाला रुद्राक्ष ‘हरगौरी’ (शिव. पार्वती) है, जो गोहत्या आदि पापों को दूर करता है। तीन मुखवाला रुद्राक्ष ‘अग्निजन्मा’ है, जो पाप-समूहोंको दूर करता है। चार मुखवाला रुद्राक्ष ‘ब्रह्मा’ है, जो मनुष्य की हत्या के पाप को नष्ट करता है। पाँच मुखवाला रुद्राक्ष ‘गुह’ है, जो भ्रूण-हत्या के पाप को नष्ट करता है। सात मुखवाला रुद्राक्ष ‘अनन्त’ है, जो सुवर्णकी चोरीके पापको नष्ट करता है। आठ मुखवाला रुद्राक्ष ‘विनायक’ है, जो समस्त प्रकार के असत्त्वोंका नाश करता है। नौ मुखवाला रुद्राक्ष ‘भैरव’ है, जो शिवसमुयज्य (मोक्ष) को देता है। दश मुखवाला रुद्राक्ष ‘विष्णु’ है, जो भूत एवं प्रेयके भयको हरण करता है। ग्यारह मुखवाला रुद्राक्ष ‘रुद्र’ है, जो अनेक प्रकारके यज्ञों के फलको देता है। बारह मुखवाला रुद्राक्ष ‘काम’ है, जो समस्त कर्माँ में, सफलता देता है और चौदह मुखवाला रुद्राक्ष ‘श्रीकण्ठ’ है, जो वंशका उद्धार करता है।
--	--	--	---	---	---

॥ अथ यज्ञ विमर्शः ॥

● **अनाधिकारी को यज्ञ करानेसे हानि** (मनुस्मृति ३।६५)
अथाव्ययानैश्वैव नास्तिक्येन च कर्मणाम्। कुलान्याशु विरथयन्ति यानि हीनानि मन्त्रतः॥
जिनको यज्ञ करानेका अधिकार अथवा योग्यता नहीं है, उसके द्वारा यज्ञ कराने से, कर्मों की नास्तिकता से और वेदमन्त्रोंसे रहित होने से कुल शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

● **पतित को यज्ञ कराने से हानि** (महाभारत, अनुशा० १११।४८-५१)

पतितं याजयित्वा कृ कृमियोनौ प्रजायेत। तत्र जीवित वर्षाणि दश पञ्च वर्षाणि च भारत॥
कृमिभावाद विमुक्तस्तु ततो जायति गर्दभः। गर्दभः पञ्च वर्षाणि पञ्च वर्षाणि सूकरः॥
कुक्कुटः पञ्च वर्षाणि पञ्च वर्षाणि जम्बुकः श्वा वर्षमेकं भवति ततो जायति मानवः॥

पतित पुरुष को यज्ञ करानेवाला ब्राह्मण कीड़ा बनकर उत्पन्न होता है और है भरतवंशी राजन्। वह पन्द्रह वर्ष तक कीड़े की यौनिको भोगता है। कीड़ेकी यौनिसे छुटकर वह गधा होता है, फिर वह पाँच वर्षमें गधेकी यौनिसे छुटकर सूअर होकर उत्पन्न होता है और पाँच वर्ष तक मुर्गकी, गीढ़ड़की तथा एक वर्ष तक कुत्ते की यौनिको भोग कर फिर वह मनुष्य यौनि में जन्म लेता है।

● **शूद्र को यज्ञ कराने से हानि** (पाराशरस्मृति १३।३६)

दक्षिणार्धे तु यो विप्रः शूद्रस्य जुहुयाद्धविः। ब्राह्मणस्तु भवेच्छुद्रः शूद्रस्तु ब्राह्मणो भवेत्॥

जो ब्राह्मण दक्षिण के लोभ से शूद्रको यज्ञ कराता है, वह शूद्र हो जाता है।

● **यज्ञ में ब्राह्मणों के पूजन से ही कर्म की पूर्णता होती है:-** (यज्ञ-मीमांसा)
ब्राह्मणानां नित्यपूजा कार्या वितानुसारतः। यावद् विप्रो न पूष्यन्ते न तावत् पूर्णतां व्रजेत्॥
पूजितेषु तु विप्रेषु सर्व सम्पर्णता-व्रजेत् प्रतिमा तेऽधिकं पुण्य ब्राह्मणस्य तु पूजने॥

यज्ञ में प्रतिदिन अपनी शक्तिके अनुसार ब्राह्मणों का पूजन करना चाहिये। क्योंकि जब तक ब्राह्मणों का पूजन नहीं किया जाता, तब तक यज्ञ पूर्ण नहीं होता। देवताओं से भी अधिक यज्ञकें ब्राह्मणों के पूजन करने का महत्त्व है, अतः ब्राह्मणों का पूजन होने पर ही यजमान के समस्त कार्य परिपूर्ण होते हैं।

● **यज्ञादि में धर्मपत्नी की आवश्यकता:-**

पत्नी धर्मार्थकामनां कारणं प्रवरं स्मृतम्। अपत्नीको नरो भूप कर्मयोग्यो न जायते।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यः शूद्रोऽपि वा नरः॥ पत्नी धर्म, अर्थ तथा काम की सिद्धिका श्रेष्ठ साधन है। कोई भी पत्नी-रहित पुरुष चाहे वह ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो, वैश्य हो अथवा शूद्र हो- धार्मिक कर्म करने के योग्य नहीं हो सकता। “अयज्ञो वा एष योऽपत्नीकः।” (तैत्तिरीयब्राह्मण २।२।२) जो पुरुष पत्नी से रहित है वह यज्ञ के अयोग्य है। एकचक्रो रथो यद्भदेकपक्षो यथा खगः अभायोऽपि नरसद्वदयोग्यः सर्वकर्मसु। (भविष्यपुरा) - जिस प्रकार एक पहियेवाला रथ और एक पाँखवाला पक्षी चलने या उड़ने में असमर्थ होता है उसी प्रकार भाग्यरहित पुरुष समस्त कर्मों में अयोग्य है।

● **पत्नी के अनुपस्थित में:-** (वाधूलस्मृति)

यस्य भार्या विदूरस्था पतिता वा रजस्वला। अनिष्टा प्रतिकूला वा तस्याः प्रतिनिधौ क्रिया॥
अन्यां कुशमयीं पत्नीं कृत्वा तु प्रतिरूपिकाम्। क्वचिच्छ्वभरयीं पत्नीं नित्यकर्मणि कारयेत्।
जिनकी पत्नी दूरी हो, पतित हो, रजस्वला हो, अनिष्ट करनेवाली हो अथवा अनुकूल न हो, ऐसी स्थिति में भी अपनी पत्नी के प्रतिनिधिरूप में कुशा की पत्नी का निर्माण कर नित्यकर्म करें।

● **कर्म विशेष में पति के समीप पत्नी के बैठने का निर्णय**

सर्वेषु धर्मकार्येषु पत्नी दक्षिणः शुभा।
व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थी-सहभोजने। व्रते दाने मध्ये श्राद्ध पत्नी तिष्ठति दक्षिणे॥
वामे सिन्दुरदाने च वामे चैव द्विरगमे। वामेऽशनैक शय्यायां भवेज्जाया प्रियाधिनी॥

आशीर्वादोऽभिषेके च पादप्रक्षालने तथा शयने भोजने चैव पत्नी तूतरतो भवेत्॥

समस्त धार्मिक कार्यों में पत्नी के लिये अपने पति के दक्षिण भाग में बैठना शुभ कहा गया है। व्रतबन्ध में विवाह में, चतुर्थी कर्म में, सहभोजन में, दान में, यज्ञ में, और श्राद्ध में पत्नी को पति के दक्षिण भाग में बैठना चाहिये। विवाह के समय सिन्दुरदान में, द्विरागमन में, पति के साथ बैठकर भोजन करते समय और पति के साथ शयन करते समय पत्नी को सर्वदा अपने पति के वाम भाग में ही रहना चाहिये। ब्राह्मणों द्वारा आशीर्वाद प्राप्त करते समय, ब्राह्मणों के पाद-पक्षालन के समय, अभिषेक के समय भी अपने पति से वामभाग में बैठना चाहिये।

● **स्त्री को पति की आज्ञा के बिना यज्ञादि करने का निषेध:-** (मनुस्मृति)

नास्ति स्त्रीणां पृथग्रो न व्रतं नायुपोषणम्। पतिं शुश्रूषते येन तेन स्वयं महीयते॥

स्त्रियों को पति की आज्ञा के वगैर स्वतन्त्ररूपेण यज्ञ, व्रत तथा उपवास करने का अधिकार नहीं है। स्त्री तो केवल पति-सेवारूपी यज्ञ के प्रभाव से ही स्वयं में आदर प्राप्त करती है।

● **यज्ञादि में संकल्प की आवश्यकता-** (भविष्यपुराण में)

संकल्पेन विना कर्म यत्किञ्चित्कुरुते नरः। फलं चाप्यल्पकं तस्य धर्मस्यार्द्धक्षयो भवेत्॥
मनुष्य संकल्प के बिना जो कुछ भी कर्म करता है उसका फल बहुत थोड़ा होता है। उसके आधे पुण्य का क्षय हो जात है। संकल्पपमूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः। व्रतानि यमधर्मश्च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः॥ मनु २।३।

● **यज्ञादि में न्यास की आवश्यकता** (शारदातिलक टीका ४ पटल)

पूजाजापार्चना होमाः सिद्धमन्त्रकृता अपि। अङ्गविन्यासवधुरा न दास्यन्ति फलान्यपि॥
न्यासं विना जपं प्राहुरासुरं विफलं बुधः। न्यासात्तदात्मको भूत्वा देवो भूत्वा तु तं यजेत्॥

सिद्ध मन्त्र करने पर भी पूजन, जप, अर्चन तथा होमकर्म अंगन्यासके बिना फलप्रद नहीं होते। न्यासके बिना किया हुआ जप आसुरी कहाता है, उसका कुछ फल नहीं होता। इसलिये न्यासादि कर्मद्वारा देवस्वरूप होकर देवार्चन करना चाहिये- देवो भूत्वा देवान् यजेत्। न्यासहीनं तु यत्कर्म गृह्णन्त्यर्द्धं तु राक्षसाः। न्यासके बिना जो कर्म किया जाता है, उसका आधा फल राक्षस ले लेते हैं।

● **यज्ञादि में एक वस्त्र धारण निषेध**

स्नानं दानं जपं होमं स्वाध्यायं पितृतर्पणम्। नैकवस्त्रो द्विजः कुर्याच्छ्राद्धभोजनसक्रिया॥ (योगियाज्ञवल्क्यः)
एकवस्त्रो न भुञ्जीत श्रौते स्मार्ते च कर्मणि। न कुर्याद्वैकवार्याणि दानं होमं जपं तथा। (गौतमः)

● **प्रशस्त आसन**

शमी काशमरी शल्लः कदंबो वरणस्तथा। पञ्च्यसनानि शस्तानि श्राद्धे देवार्चने तथा॥
कौशेयं कम्बलं चैव अजिनं पट्टमेव च। दारुजं तालपत्रं वा आसनं परिकल्पयेत्॥
शमी, गम्भार, शोणवृक्ष, कदंब और खैर, रमेश, कंबल, मृगचर्म, काष्ठ और तालपत्र इनका आसन श्राद्ध तथा देवार्चन में प्रशस्त कहे गये हैं।

● **आसन के विभिन्न फल**

कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धि-मौंक्षश्रीव्याघ्रचर्मण, वंशाजिने व्याधिनाशः, कम्बले दुःखमोचनम्॥
अभिचारो नीलवर्णं रक्तं वयशादिकर्मणि। शान्तिके कम्बलः प्रोक्तः सर्वेष्ट चित्रकम्बलम्॥
वंशासने तु दारिद्र्यं पाषाणे व्याधिसम्भवः धरण्यां दुःखसमभूतिर्दौर्भाग्यं छिद्रदारुजो।

तूपो धनयशोहानिः पल्लवे चित्ताविभ्रमः॥ काले मृगचर्म पर ज्ञानसिद्धि, व्याघ्र चर्म पर मुक्ति, वंशकल्कल पर व्याधि से मुक्ति, कम्बल पर दुःखनिवृत्ति। अभिचार कर्म में(मारण, मोहने, उच्चाटन आदि में) नीला आसन, किसी की वश में करने के लिए लाल आसन पर, ग्रहपीड़ा, महामारी आदिकी शान्ति के निमित्त किये जा रहे कर्म में कम्बल का आसन कहा गया है। चित्र कम्बल समस्त कार्यों के लिये कहा गया है। बांस के आसन पर दरिद्रता, पत्थर पर व्याधि, भूमि पर दुःख, छिद्रवाले काठ पर दौर्भाग्य, तुणासन पर धन और यश का नाश तथा पल्लवासन पर चित्त-भ्रम होता है।

● **पूजन के समय प्रौढपाद (जाँघ पर पैर रखकर) नहीं बैठना चाहिए।**

स्नानं दानं जपं होमं भोजनं देवतार्चनम्। प्रौढपादो न कुर्वीत स्वाध्यायं पितृतर्पणम्॥

स्नान, दान, जप, होम, भोजन, देवपूजन, वेदका स्वाध्याय और पितृतर्पण में जाघ पर पैर रखकर नहीं बैठना चाहिये। (अत्रिसंहिता)

● **दक्षिणा देने की आवश्यकता**

यज्ञो दक्षिणा साधे पुरेण च फलेन च। कर्मिणा फलदाता चेत्थेवं वेदविदो विदुः॥
देवीभागावत् ६।४५।५०

कृत्वा कर्म च तस्यैव तूर्णं दद्याच्च दक्षिणाम्। तत्कर्म फलमाप्नोति वेदैरुक्तमिदं मुने॥

कर्ता कर्मिण पूर्णोऽपि तत्क्षणात् यदि दक्षिणाम्। न दद्यात् ब्राह्मणेभ्यश्च दैवेनाज्ञानातोऽथवा॥
मुहूर्ते समतीते च द्विगुणा सा भवेद् ध्रुवम्। एकात्रे व्यतीते तु भवेद्वसुणा च सा। (ब्रह्मवैवर्त प्र.ख. ४२।५४)

दक्षिणा से युक्त पुत्ररूप फल के साथ यजमानों को फल प्रदान करता है। तथा कर्म करारकर ब्राह्मणों को शीघ्र दक्षिणा देने से यजमान को तत्काल फलकी प्राप्ति होती है। यज्ञादि कर्म के पूर्ण हो जाने पर भी दैववश अथवा अज्ञानवश ब्राह्मणों को दक्षिणा न देने से प्रतिक्षिण वह दक्षिणा द्विगुणित हो जाती है। एक रात बीत जाने पर वह छः गुनी हो जाती है।

● **तिलक (चन्दन) धारण की आवश्यकता-**

स्नानं सन्ध्या पञ्चयज्ञान् पैथ्यं होमादिकर्म यः। विना तिलकदर्भाभ्यां कुर्यान्निष्फलं भवेत्॥

जो स्नान, सन्ध्या, पञ्चमहायज्ञ, तर्पण, श्राद्ध आदि पितृ कर्म तथा होम आदि कार्य तिलक और दर्भा(कुश) के बिना करता है, उसका फल निष्फल जाता है।

● **यज्ञादि में धौत वस्त्र पहनना चाहिये:-** वशिष्ठ

जपहोमोपचारेषु धौतवस्त्रपरो भवेत्। अलंकृत शुचिर्मनो श्राद्धादौ विजितेन्द्रियः॥

जप, होम आदि शुभ कृत्यों में धौती पहन कर ही कर्म करना चाहिये और श्राद्ध आदि कृत्य में पवित्र वस्त्र को धारण कर तथा जितेन्द्रिय एवं मौनी बनकर श्रद्धापूर्वक कर्म करना चाहिये।

● **कुशके पवित्री (अंगुठी) की महत्ता:-**

जपहोममहरा ह्येते अमुरा दैत्यरूपिणः। पवित्रकृत-हस्तस्य विद्वन्ति दिशो दशा॥

यथा वज्रं सुरेन्द्रस्य यथा चक्रं हरेस्तथा। त्रिशूलं च त्रिनेत्रस्य ब्राह्मणस्य पवित्रकम्॥

जप और होम के फल को हरण करनेवाले दैत्यरूपी असुर हाथमें पवित्र धारण किये हुए ब्राह्मण को देखकर दशों दिशओं में भाग जाते हैं। जैसे इन्द्रका वज्र, विष्णुका चक्र और शिवका त्रिशूल शस्त्र कहा गया है, वैसे ही ब्राह्मण का शस्त्र पवित्री कहा गया है।

● **पवित्री में कुश की संख्या विचार-**

चतुर्भिर्दर्भीपिञ्जलैर्बाह्याणस्य पवित्रकम्। एकैकन्यमुद्दिष्टं वर्णं वर्णं यथाक्रमम्॥

सर्वेषां वा भवेद् द्वाभ्यां पवित्रं ग्रथितं नवम्। चतुर्भिः शान्तिके कार्यं पौष्टिके पञ्चभिस्तथा॥
देवके तु त्रिदर्भाश्च द्वौ दर्भौ नित्यकर्मणि॥ (मार्कण्डेयः)

अर्थात् ब्राह्मण के लिये चार कुशाओं का पवित्री धारण करने के लिये कहा है। क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रके लिये क्रमसे एक-एक कुश कम कर देना चाहिये। अथवा सभी वर्णके लिये नूतन और ग्रन्थियुत दो कुशाओं का पवित्री होना चाहिए। शान्ति कर्म में चार कुशाओं का, पौष्टिक कर्म में पाँच कुशाओं का, पितृकर्म में तीन कुशाओं का और नित्यकर्म में दो कुशाओं का पवित्री बनाना चाहिये।

● **जप करते समय हाथ से माला गिरने या टूट जाने पर प्रायश्चित्त**

माला यदि पतेद्धस्तात्ततथा चैव विनश्यति। सहस्रं तत्र सञ्जप्य ब्राह्मणान् भोजयेत्ततः॥
भोजनं ब्राह्मणानां तु सर्वांनिष्टस्य नाशनम्। गायत्रीं वा जपेत्साष्टशतं भक्त्या समाहितः॥
ततोऽपरं नवां मालां तज्जातीयां वरानने। गृह्णीयात्तु कृते चैवं न विज्यैरभिभूयते॥

यदि जप करते समय माला हाथ से गिर जाय या टूट जाय तो १००० बार मन्त्र का जप करे और ब्राह्मणभोजन करावे। ब्राह्मण को भोजन कराना सकल अरिष्टों का विनाशक है। अथवा एकप्र होकर भक्ति से १०८ बार गायत्री का जप करें। तदनन्तर दूसरी वैसी ही नई माला ग्रहण करें। ऐसा करने से पुरुष को विघ्न क्लेश नहीं होते।

● **जप गणनार्थ (गणना हेतु) विहित वस्तु-**

लाक्षा कुसीदं (रत्नचन्दनम्) सिन्दूरं गोमयं च करीषकम् एभिर्गन्धैः गुटिकां जपसंख्यां तु कारयेत्॥ (यामल)
नाक्षतैर्हस्तपर्वैर्वा न धानधैर्न च पुष्पकैः। न चन्दनैर्मृत्तिकाया च जपसंख्यां तु कारयेत्॥

लाछ, लालचन्दन, कमलगट्टा, सिन्दूर, गोबर के गुटिका बनाकर जपकी गणना करनी चाहिए। अक्षत् से, हाथ के पर्व से, धान्य से, पुष्प से, चन्दन से और मृत्तिका से जपकी गणना न करे।

● **यज्ञादि में यज्ञोपवीत धारण की आवश्यकता-**

द्विज को सर्वदा यज्ञोपवीती होकर और शिखा बाँधकर रहना चाहिये। शिखा और यज्ञोपवीत के बिना वह जो कुछ कर्म करता है, वह न किये हुए के सदृश ही होता है।

● **यज्ञ में जलयात्रा की आवश्यकता-**

शान्तिकं पौष्टिकं वापि जलयात्रां विना बुधः। कुरुते यदि वा मोहात्कर्म तस्य च निष्फलम्॥
तडागादिप्रतिष्ठारु देवतायतनादिषु। लक्षहोमे कोटिहोमेऽप्युत्तहोमे तथैव च॥
व्रतोत्सर्गो महादाने यज्ञे वा कितते शुभे। जलयात्रां पुरा कृत्वा श्रेष्ठ कर्म समाचरेत्॥

जो शान्तिक व पौष्टि यज्ञादि कर्म जलयात्रा के बिना करता है, तो उसका वह कर्म निष्फल जाता है। तडाग आदि की प्रतिष्ठा करनी हो, देवमन्दिर आदिकी स्थापना करनी हो, लक्षहोम, कोटिहोम तथा अयुत हवन करना हो, एकादशी आदि व्रत का उद्यापन करना हो, सुवर्णका दान तुलादान, भूमिदान आदि महादान करना हो एवं मांलमय महायज्ञ करना हो, तो पहले जलयात्रा करके तदुपरान्त श्रेष्ठ शुभ कर्म का अनुष्ठान करना चाहिये। (यज्ञमीमांसा४१३)

गर्भाधान-मुहूर्तः-

अश्वि, रो, मू, उ.३, ह, स्वा, अशु, श्र, ध, श, चि, पुन, पु, नक्षत्रेण। १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु। चं,बु,वृ,शु वारेषु। रात्रौ, रजोऽर्शनिानन्तरं चतुर्धारात्रितः १२ रात्रिं यावत्। शुभैः केन्द्र त्रिकोणौः, पापैस्त्रयात्रिणैः, पुनर्हृदस्थलाने, चन्द्रे विषमशोऽयुमराशौ शुभम्।

सीमन्त-पुंसवन-मुहूर्तः

पुंसवनं गर्भतस्त्रुतीयेमासिकं कार्यम्। सीमन्तान्तर्यं च षष्ठेऽष्टमेमासे वा मासिक मासाधिपतौ सवले कार्यम्। मू, पुष्य, श्र, मू, पुन, हस्त, रो, रे, उ. ३, (जन्मर्भाविना) नक्षत्रेषु । १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, शुक्रपक्षे,कृष्णे ५ यावत्। सू, मं, वृ, वारेषु, मत्तान्तरेण शु, चं, अपि, पूर्वाह्णे, पुंभस्यागौ तदंशं शुभम्। पापैः ३।६।११ स्थितैः, शुभैः १।४।५।७।६।१० स्थितैः, चन्द्रे २।३।४।५।६।१०।११ स्थिति, ४।६।१० पापरहितैः शुभम्।

जातकर्म-मुहूर्तः-

जातकस्य ग्रहदोषनाशाय आयुः श्रीवृद्धय च जन्मकाल एव जातकर्म पिता कुर्यात्। तदतिक्रमे एकादशे द्वारस्योऽह्नि, चि, अनु रे, उ. ३, रो, अश्वि, पुनः, पु, स्वा, श्र, ध, श, नक्षत्रेषु पूर्णिमां विहाय शुभ तिथिदिनलग्नेषु शुभम्।

शिशोर्दुग्धपान मुहूर्तः-

अश्वि, रो, मू, पुष्य, श्र, पुन, हस्त, रे, उ. ३, चि, अनु, धन, शत, रे, नक्षत्रेषु। शुभतिथिषुशुभदिनेषु, वृष-सिंह- वृश्चिक-कुम्भ लग्नेषु स्तनपानं शुभम्। अन्नप्राशनोक्त-दिनतिथिनक्षत्रेषु सूक्तिकापथ्यं शुभम् भक्षणोक्ततिथिदिनक्षत्रेषु औषधिभक्षणञ्च शुभं स्यात्।

सूक्तिकान्दान मुहूर्तः

अश्वि, रो, मू, स्वाती अनु, उ.३, रे, नक्षत्रेषु। रवि, मंगल, गुरु दिनेषु, शुभलग्नेषु शुभद्वयुत्तरेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु सूक्तिकान्दानं शुभम्। आश्लेषा पू.३, ज्ये, ध. शत. नक्षत्रेषु मध्यम्।

प्रसूति-नखच्छेदन-मुहूर्तः-

अश्वि, रो, मू, पुन, पु. उ.३,हस्त,चित्रा, स्वाती,वि. अनु,ज्ये, श्र, ध, शतभिषा नक्षत्रेषु। ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।६।७।८।११ लग्नेषु, शुभदिनेषु पूर्वार्हने शुभम्।

स्त्रीणां लाक्षाभरणधारण-मुहूर्तः

म, आ, अश्ले, म, वि, शत. रहित नक्षत्रेषु। शनि मंगल रहित दिनेषु शुभतिथौ स्त्रीणां लाक्षाभरण (लहरी) धारणं शुभम्।

शिशु निष्क्रमण मुहूर्तः-

जन्मतः तृतीयेचतुर्थे वा मासि यात्रोक्तदिनतिथिनक्षत्रेषु द्वारस्य दिक्से वा शुभं स्यात्।

शिशु-भृन्मुपवेशन मुहूर्तः

आदौ पुष्कौ वराहञ्च सम्पूज्य कृञ्चले पंचमे मासि अ. उत्तरा३, रो. मू, ज्ये, अनु, हस्त, पुष्य, अभिजित् नक्षत्रेषु, रिकामारहिततिथिषु, शुभदिनेषु, वृषसिंह वृश्चिक कुम्भलग्नेषु शिशोः कटिप्रदेशे कटिसूत्रं बद्ध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत्।

शिशु के भूमि पर बैठाने का मन्त्र-

रक्षेनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभम्। आयुः प्रमाणं सकलं निःक्षिपस्व हरिप्रिये॥

अत्रैव शिशोरो वस्त्रम्, शस्त्रम्, लेखिनीम्, पुस्तकम् सुवर्णं यौग्यञ्च स्थाप्यम्। तेषु बालो यं गृह्णति तैस्सस्य वृत्तिः ज्ञातव्यीति।

शिशुदर्शन मुहूर्तः

तृतीये मासे शुभ-तिथिदिन-नक्षत्रेषु पुष्प-फल-वस्त्र-द्रव्यादिना शिशुदर्शनं शुभम्।

नामकरण-मुहूर्तः

विप्राणां ११, १२, क्षत्रियाणां १३, वैश्यानां १६, शूद्राणां ३१ तमे दिने नामकरणं शुभम्। अथवा स्वा, पुन,श्र,ध, अश्वि,पु,अभि,उ.३,रो,मू,रे, चि, अनु, नक्षत्रेषु। १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु। चं, बु, वृ, शु दिनेषु पूर्वाह्णे शुभम्। मध्याह्ने मध्यम् शुभलग्ने शुभैः १।४।५।७।६।१० स्थितै पापैः ३।६।८ स्थितैः। ८।१२ गृहे शुद्ध। चन्द्रे २।३।५।६।१० स्थितौ लग्ने शुभांशे पिप्लुयुवोरचन्द्रताराजुकूले उत्तरायणे शुद्धसमये शुभं नामकरणम्।

अन्नप्राशन - मुहूर्तः

कन्यकानां पञ्चममासतो, विषममासेषु बालकानां षष्ठ्यसममासेषु। रो. उत्तरा.३.मू., रे, चि, अनु, स्वा, पुन, श्र, ध, शत, ह, अश्वि, पु, नक्षत्रेषु। २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु। चं,बु, वृ, शु, दिनेषु। शुक्रपक्षे, पूर्वाह्णे। २।३।४।५।६।७।६।१०।११ लग्नेषु जन्मलग्नशयोरष्टमलग्नमंशञ्च रहितेषु। शभैः १।४।५।७।६।१० स्थितैः। पापैः ३।६।११ गतैः। दशमस्थाने ग्रहरहिते, शुभद्वयुत्तलग्ने ४।६।८।१२ रहिते चन्द्रे अन्नप्राशनं शुभम्।

कण्ठविशे-मुहूर्तः

१।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्रपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। चं, बु,वृ,शु दिनेषु। जन्मतारा विहाय श्र, ध, पुन, ह, अश्वि, पु, अभि,मू,रे, चि, अनु नक्षत्रेषु। ६।७।८। मासे वा विषमवर्षे चैत्र-पौष-हरिशयन-रिक्ता-समवर्षाणि त्यक्तव्या। २।३।४।६।७।६।१२ लग्नेषु। शुभैः १।४।५।७।६।१० गतैः। पापैः३।६।११ गतैः। लग्नस्थे गुरौ शुद्धसमये शुभः।

चूडाकरण (मुण्डन-आद्यकेशकर्तन) मुहूर्तः

चैत्ररहितमाषादिषमासे अग्रहायणे च। ज्येष्ठग्रहणयोः ज्येष्ठस्त्वान्नं विना। विषमवर्षेषु अश्वि, मू, पुन, पु, ह, चि, स्वा, ज्ये, श्र, धन, शत, रे मत्तान्तरेण रोहिणी, उत्तरा३ नक्षत्रेषु। चं, बु, वृ, शु वारेषु २।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषुशुक्र पक्षे, कृष्णे ५ यावत्। २।३।४।५।६।१२ एतद्राशेर्लग्नांशे

शुक्रवर्जिताष्टमशुद्धै। पापैः ३।६।११ गतैः। शुभैः १।४।५।७।६।१० गतैः। जनमशिशलग्नशयोरष्टमेतरलग्ने। ८।१२ रहित चन्द्रे शुभम्।

अक्षरारम्भमुहूर्तः

उत्तरायणे पञ्चमवर्षे (बालो यदि क्षस्तदा तत्पूर्वमपि) गणेशविष्णुसरस्वती लक्ष्मी-नवग्रह-कुलदेव- ग्रामदेवान् विधिवत् सम्पूज्य प्रथमाक्षरारम्भौ विधेयः। अश्वि, पुन, पु, ह, चि, स्वा, अनु, अभि, श्र, रे, नक्षत्रेषु। २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु। शुक्रपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। चं, बु, वृ, शु, दिनेषु, वृष, मिथुन, कन्या, धनु, मीन, लग्नेषु तन्त्रांशे चोत्तमः। कुम्भांशकं विनाऽष्टमशुद्धै, गुरौ दशमे, बुधे सप्तमे, शुके लग्ने ग्रहवलाद्वये शुभम्।

विद्यारम्भमुहूर्तः

उत्तरायणे गणेशं विष्णुं लक्ष्मीं सरस्वतीञ्च सम्पूज्य अक्षरग्रहणे दृढं संजाते सति। सूर्यबुधशुक्रवारेषु। २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु, अश्वि, मू, आ, पुन, पु, आश्ले, ह, चि, स्वा, मू, पूर्वा, ३, श्र, ध, शत. नक्षत्रेषु शुक्रपक्षे कृष्णे ५ यावत्। लग्नाष्टमशुद्धे, शुभैः १।४।५।७।६।१० गतैः। पापैः ३।६।११ गतैः। वृष, मिथुन, कन्या, धनु, मीनान्यतलग्ने तदंशे वा विद्यारम्भः शुभः।

उपनयन (व्रतबन्ध) मुहूर्तः

शुभ समये, उत्तरायणे माषादिषमासेषु, सू. चं. बु. वृ. शु वारेषु (सामवेदीनां मंगलवारेऽपि), जन्ममासनक्षत्रादौ व्रतं शुभम् २।३।५।७।१०।११।१२ तिथिषु शुक्रपक्षे पूर्वाह्णे च शुभम्। मकारार्के पौषे १।१।१२, मकारार्के माघे १२, चैत्रे वैशाखे च तृतीया, वैशाखभिन्न मासानां द्वितीया, आषाढे १०।११ चोपनयने निषिद्धाः। अश्वि, रो, मू, आ, पुष्य, आश्ले, पूर्वा३,उत्तरा३, ह,चि, स्वाति, अनु, मू, श्र, ध, शत, रे, नक्षत्रेषु (क्षत्रियवैश्ययोः पुनर्वसावपि) शुभम्। ब्राह्मणानां पुनर्वसुनक्षत्रे उपनयनं निषिद्धम्। मन्वादियोगादिषु, अपराह्णे, सायं, प्रदोषेऽनव्याये, कृष्णपक्षे चोपनयनं निषिद्धम्। त्रिषडस्थः खलः सर्वे चन्द्रो द्विद्यूनदित्रगः। सौम्याः केन्द्र त्रिकोणस्थाः लाभे सर्वे व्रते शुभाः। लग्नेश-चन्द्र-शुक्र-गुरवः षडष्टगा न शुभाः। चन्द्रशुक्रौ लग्नात् १२ गतौ न शुभा। १।५।८ स्थःपापा न शुभाः।

६।८।१२ गताःशुभाः न शुभप्रदाः।३।६।११ गताः पापाः शुभदाः। पूर्णचन्द्रो वृष-कर्क-लग्न-गतः शुभो नान्यथाः। लग्नेऽर्कः शुभः। गुरुशुद्धि- जन्मराशितः उपनयनकाले २।५।७।६।११ स्थानगतः गुरु शुभः। ४।१०।१२ स्थानगतः शान्त्या शुभः। १।३।६।८ स्थानगतो निषिद्धः। रामाचार्यमते १।३।६।१० स्थान गतो गुरुः शान्त्या शुभः। ४।८।१२ स्थानगतो निषिद्धः। ब्राह्मणानां पञ्चवर्षतः षोडश वर्षपर्यन्तं, क्षत्रियाणां षड्वर्षादारभ्य द्वाविंशतिवर्षपर्यन्तं, वैश्यानामष्टवर्षादारभ्य

चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तमुपनयनकालः। तत्रोपनयनारम्भ- कालात्सर्वेषां यथोत्तरं गौणकालोत्तः समये प्राप्ते सति यथापूर्वम् उपनयनं कार्यम्।

● **प्रदोषनिर्णयः-** यदा तृतीयायां ग्रहराश्वभ्यन्तरे चतुर्थी, द्वारदश्यां मध्यरात्र्यभ्यन्तरे त्रयोदशी, षष्ठ्यां सार्द्धग्रहराश्वभ्यन्तरे सप्तमी तिथिर्भवतिता प्रदोषोऽवगन्तव्यस्तत्रोपनयनं निषिद्धम्।

● **वर-वरण मुहूर्तः-** शुभतिथिदिनलग्नेषु कृत्तिकापूर्वात्रयविवाहोक्तभेषु पुष्पफलवस्त्रादिभिः वरवरणंशुभम्।

● **वर वरण मन्त्र-** ओम् तस्मिन् कालेऽग्नि सान्निध्ये, स्नातः स्नातेह्ययोगिणि अव्यंभे अपतिते क्लीबे(अमुक नाम्नी)कन्यां पिता तुभ्यं प्रदास्याति।

● **कन्या वरण मुहूर्तः-** शुभतिथि दिन लग्नेषु कृषिका पूर्वार्त्रय विवाहेषु च पुष्प फल वस्त्रादिभिः कन्यावरणंशुभम्।

● **विवाह-उपनयनादौ मण्डपादि निर्माण मुहूर्तः**

विवाहोपनयनादिशुभकर्मसु चन्द्रताराजुकूले दिने विवाहमुहूर्ते वैवाहिकमुपनयनादिमुहूर्ते चोपनयनादिकं सम्बद्धं मण्डपादि कार्यं विधेयम्।

विवाहः मुहूर्तः

मार्ग-माष-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढमासेषु सौक्रमेण (देवोत्थानांतरं हरिशयनात्प्रागेव) १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। सू. चं. बु.

वृ. शु वारेषु। अश्वि, रो. मू. म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. धन. रे. नक्षत्रेषु पंचशलाकावेधरहितेषु। वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मीन, लग्नेषु। शुभग्रहेषु १।४।५।७।६।१० स्थितेषु, पापेषु ३।६।११ गतेषु शुभः। विवाहे यदि गुरुर्वा शुक्रौ १।४।५।७।६।१० गतौ भवतदा सकलदोष नाशयति। ज्येष्ठा कन्या, ज्येष्ठो वरः ज्येष्ठमाश्वच त्रिज्येष्ठसंज्ञकस्तत्र विवाहो न कार्यः। ज्येष्ठ-कन्यावरयाः ज्येष्ठमासे विवाहो निषिद्धः, ज्येष्ठद्वयं मध्यमं स्यात्, अवश्यकौ कृत्तिकास्थं सूर्यं त्यक्त्वा ज्येष्ठमासेऽपि ज्येष्ठवरकन्याोर्विवाहः शुभः।

● **विवाहोपरान्त प्रथम नदी-तलावादि में स्नान-मुहूर्तः-**

विवाह दिनाब्दाडशदिनमध्यं तदभावे मासपर्यन्तं । २।३।५।७।१०।१३ तिथिषु। चं,बु,ग, शु, दिनेषु। आर्द्रा, पुनः, पु, आश्ले, म, पूफ, उफा, ह, चि, स्वा, नक्षत्रेषु। वृष, मिथुन, कन्या, तुला, लग्नेषु शुभम्।

● **राहु (काल) वासः**

सौक्रमेण मार्गपौषमाषेषु पूर्वस्थां, फाल्गुनचैत्रवैशाखेषु दक्षिणस्थां, ज्येष्ठाषाढश्रावणेषु पश्चिमायां, भाद्राश्विनकार्तिकेपूतरस्यां कालवासो भवति।

विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिचक्रम्			
ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	गुरुः
शुभः	३।६।१०।११	३।६।७।१०।११	२।५।७।६।११
पुन्यः	१।२।५।७।६	१।२।५।६	१।३।६।१०
निन्दाः	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२

द्विगमनमुहूर्तः- अश्वि, रो. मू. उत्तरा ३. पुन. पुष्य, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. शत. रे, नक्षत्रेषु। १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। शुक्रपक्षे कृष्णपक्षे ५ यावत्। सू.चं.बु.वृ.शु. वारेषु मृत्युयोगादिरहितेषु, २।३।६।७।१२ लग्नेषुशुभयुतदृष्टिषु, शुके १।४।७।१० गते, जीवे ३।६।१०।११ गते। पापैः ३।६।११ स्थितैःशुभम्। विषमवर्षे सौक्रमेण मार्गफाल्गुन वैशाखमासेषु, शुक्रबाल्यस्त्वृद्धत्वभिन्नकाले, वामपुष्ट्यगते शुके, शुक्रादिते द्विगमनं शुभम्। प्रथमवर्षे न शुक्रविचारकार्यः।

तृतीयादिविषमवर्षे शुक्र विचारो विधेयः। शुक्राभ्विहित (रे.अश्वि, रो. मू.) नक्षत्रेषु सम्मुखदक्षिणशुक्राऽपि द्विगमनम् शुभम् व्यतीते पञ्चमे वर्षे न शुक्रविचारो न वा मुहूर्तविचारः। तदानीं यस्मिन् कस्मिन्पि शुभतिथिदिनक्षत्रयुक्तकाले द्विगमनं शुभम्।

नववध्याः पाकारारम्भमुहूर्तः

रो. मू. उत्तरा ३. पुष्य, कृ. वि. ज्ये. श्र. ध. शत. रे. नक्षत्रेषु। बु. वृ. श. वारेषु। शुभतिथिषु, शुक्रपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत्, २।५।८।११ लग्नेषु, लग्नात् चतुर्थ्याष्टमगृहे शुद्धे, शुधे बलाच्चिते सत्तमस्थे शुभः।

वधू-प्रवेश-मुहूर्तः-

विवाहादिकसात्पोडशदिनमध्ये समदिने पंचम-सप्तम-नवमदिने (आचारान्यविषमदिनेऽपि) ततो मासमध्ये विषमदिने ततो वर्षाभ्यन्तरे विषममासे। चैत्र-पौष-भाद्र-क्षयमास-मलमास- भिन्नसमये वधूप्रवेशः प्रशस्त। न अत्र शुक्रविचारः कालविचारो वा १।२।३।५।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। चं,मू,शु.शं, वारेषु, मत्तान्तरेण बुधेऽप्यावश्यकौ। अश्वि,रो.मू,पू,उत्तरा-३ह,चि, स्वा,अनु, मू,श्र,ध,रे, नक्षत्रेषु २।३।५।६।७।८।६।११।१२। लग्नेषु। शुभैः ।१।२।५।७।१०।११ स्थितैः। चतुर्थ्याष्टमशुद्धे शुभः।

यात्रा मुहूर्तः

वामपुष्ट्याहौ। मलमासक्षयमास सौक्रमेण चैत्र,भाद्र,पौष, रहित मासेषु। अ,मू,पुन,पू,ह,ज्ये,अनु,श्र,रे. नक्षत्रेषूत्तमः। रो. पू.३, चि, स्वा, मू,पूषा,ध. नक्षत्रेषु मध्यमः। मृत्युयोगा, दशधतिथि मासान्त-संक्रान्ति-मासादि प्रभृतिदोषरहितौ। अमृतसिद्धि-सर्वार्थसिद्धादिशुभ योगेषु। अमाशुक्रलग्नप्रतिपच्च विहायान्यतिथिषु योगवेशनान्यथा शुभतिथिषु। दिकशूलरहितदिने २।४।८।८।६ ताराषु १।२।३।५।७।६।१०।११ चन्द्रेषु। आवश्यकै ४।१२ चन्द्रेऽपि। द्विगमनान्तरं पितृगृहात्तथाः पुनः पतिगृहगमने दक्षिण-सम्मुख-कालौ त्याज्यौ। तदन्तरमावश्यकं केवलं सम्मुख-कालस्त्यक्तव्यः। दक्षिणकाले च सम्मुख चन्द्रवेशन-यात्राकार्यं

● **सर्व दिगमन नक्षत्राणि-** अश्विनी-मृगशिरा-पुष्य- श्रवणनक्षत्राणि सर्वदिगमने शुभाणि।

● **दिशा शूल विचार-** सोमे शनौ च पूर्वस्थां, वृहस्पतौ दक्षिणस्थां, रवौ शुके च पश्चिमायां,

● **दिशा शूल-परिहारः-** रव्यादिवासरेषु क्रमेण घृत-पयो-गुड-तिल-दधि-यव-माषान् शुक्त्वा शूलदोषोपशान्तये गच्छेत्।

● **विदिक् (कोण) शूल विचार-** शनौ पूर्वै, चन्द्राऽनिकोणे, गुरौ याव्यां, बुधे नैऋत्यां, सूर्ये प्रतीच्यां, शुके वायुकोणे,

● **कालशूलम्-** उषाकाले पूर्वस्थां,मध्याह्ने दक्षिणस्थां, सायंकाले (गोशूल्यां)पश्चिमायां, निशीथे चोत्तरस्थां न गच्छेत्,कालशूलदोषत्वात्।

● **लग्न-चन्द्रयोर्वसः-** मेघसिंहधनुराशिषु पूर्वस्थां, वृषकन्यामकराराशिषु दक्षिणस्थां,मिथुनतुलाकुम्भाराशिषु पश्चिमायां,

● **कर्कश्रविकमीनराशिषु** चोत्तरस्थां लग्नचन्द्रयोर्वसः। सम्मुखदक्षिणलग्नचन्द्रयोः यात्राशुभा।

परं सर्वदिगमननक्षत्रेषु वामपुष्ट्यचन्द्रेऽपि यात्रा शुभा।

● **द्वादशचन्द्रस्य विशेष-** अधशने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वारदशगः शुभः।

● **चन्द्र विचारः-** जन्मनामग्रामादिराशितोऽभिष्ट दिनस्य चन्द्रं यावत् गणनीयम्। तत्र १।२।३।५।६।७।८।१०।११ संख्याकश्चन्द्र

शुभ प्रदः ८ चन्द्रः कष्टप्रदः। ४ कलहप्रदः।१२ हानिकारकः। तत्र दुष्टे चन्द्रे तद् दोषशान्त्यर्थममतण्डुशंख रत्नेतवस्त्रादि दानं कार्यम्।

दीक्षाग्रहण मुहूर्तः-

चै. वै. श्रा. आ. का. मार्गशीर्ष, मा. फा. मासेषु अश्वि. रो. उ.३, रे. अनु. पुन. पुष्य. स्वा. मू. श्र. ध. श. पू.३, चि. नक्षत्रेषु सू. च. बु. वृ. शु. एषमहि भद्रादिदोषवर्जिते सति प्रशस्तम्। २।३।५।७।१०।११।१२ एतत्सुतिथिषु श्रेष्ठः कृष्णपक्षे पंचमी यावत् २।३।४।५।६।७।६।७।२। लननेषुचन्द्रतारानुकूलसति शुभम्। लनान्त् ३।६।११ एषु पापैः १।४।५।७।६।१० एषु शुभैश्चोत्तमः। अष्टम्यां संक्रान्ती रविचन्द्रोपरानो चोत्तमः। गुरुशुक्रोदये श्रेष्ठः।

व्रतोद्यापन-मुहूर्तः-

अश्वि.रो.,पुन.,मू.,पु.,उत्तरा-३,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मू.,श्र.,ध.,श.,रे.,, नक्षत्रेषु। शुद्धसमये क्रियमाणव्रततिथिषु दिवसे वा। कार्तिक, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, मासेषु। शुभलनेषु। कार्तिकव्रतोद्यापनं तुलस्याकाशदीपदानव्रतोद्यापनञ्च शुद्धसमये वृश्चिकसंक्रान्तिपूर्वरात्रौ। एवमेव यस्य व्रतस्य मासविशेषेण सह सम्बन्धस्तस्मिन्नेव मासे शुद्धसमये कार्यम्। शुभैः ।१।४।५।७।६।१०। स्थितैः, पापैः ।३।६।११। स्थितैः, पंचमशे नवमशे गुरौ च बलाद्वये सति शुभमन्यथा ग्रहशुद्ध्यभावेऽपि परमावश्यक

कल्याणार्थशान्तिः-मुहूर्तः

अ. रो. म. पुन. पु. उ.३. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र.ध. शत. रे. नक्षत्रेषु शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। २।३।५।७।६।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु शुद्ध समये आवश्यकेऽशुद्धेऽपि चैत्रपौषभाद्रमलमासक्षयमास रहिते शुभम्। शुभलग्ने लनस्थे गुरौ चतुर्थस्थे चन्द्रे दशमस्थे सूरे अष्टमे लने च पाप रहिते शान्तिः,शुभाः।

नवचण्डी-शतचण्डी-सहस्रचण्डी यज्ञ मुहूर्तः-

वैशाख, फाल्गुन, माघ, श्रावण अग्रहण, आश्विन, कार्तिक मासेषु पूजायां तु शुभावहाः। ३।५।१५।७।१३।१०।१२।६ तिथिषु। सू.चं.बु.गु.शु. वारेषु। अश्वि. रो. स्वा. पु. ज्ये. उत्तरा३, पुन.।

होमाहुतिविचारः-

सूर्यभात्रिभे चान्द्रे सूर्यावच्छुक्रप्रगवः। चन्द्ररेज्यागुणिखिन्नो नेष्टा होमाहुतिः खले।

आहुति दोष परिहारः-

विवाहयाग व्रतबन्ध दीक्षा सीमन्तचण्डी गृहवास्तुशान्तौ। आदित्यसौरीकुजराहु केतवो न दोषदा यवविधायिनां खलु।

दुर्गाहोमे आहुतिचक्र विचारः-

ब्राह्मी च कौमारी च वैष्णवी च वाराहोपेक्षी त्वथ चाण्डिका च। मेघा च माहेश्वरीनारसिंही क्रमेण सूर्याद्विनाशं त्रिकं च। श्रीपुत्रदा शोक भयो धनान्तिहर्तास्तथा राजपदात्तिरोगो। विद्यासुखान्तिपुत्रेश्च लाभः फलानि दुर्गा हवने क्रमेण॥

वर्षेशचरेन मेधिविचारः-

वर्षेश सूर्य वंशस्य, चन्द्रे शिम्बरः, मंगले कदम्बकम्, बुधे उदुम्बकम्, गुरौ आम्रम्, शुक्रे पलाशः, शनौ निम्बम् शुभम्।

कर्णार्पनमुहूर्तः-

मघा,पूफ,उफ. रो ज्ये मू अजु श्र. रे नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलनेषु शुभम्।

धान्यवृद्धिमुहूर्तः-

आ.रो.पुन.पु.उत्तरा३, स्वा.वि.ज्ये. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलनेषु धान्यवृद्धिः शुभा।

बीजस्थापनमुहूर्तः-

रो. मू. मू. ह. स्वा. मू. उषा. पूषा. रे. नक्षत्रेषु चं. बु. गु. शु. वारेषु। शक्लपक्षे, कृष्ण ५ यावत् २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५, तिथिषु, २।५।६।११ लननेषु शुभम्।

वृक्षादिरोपण-मुहूर्तः-

अश्वि.रो.,मू.,पुष्य,उ.३, ह चि., वि., अजु, मू., श., रे., नक्षत्रेषु, चं, वृ., शु. दिनेषु, शुभतिथिषु च शुभम्।

कदलीरोपणम्-

पञ्चक (ध., श., पू.षा., उ.षा., रे) रहित नक्षत्रेषु। १।२।३।४।६ तिथिषु, शुभदिनेषु शुभम्।

नवान्न भक्षण मुहूर्त

अ., रो., मू., पुन., पु., उ.३. ह., चि., स्वा., अनु., श्र., ध., श., रे., नक्षत्रेषु शुभम्, मूले नवान्नप्रावरणं मध्यमम्। सू., च., बु., गु., वारेषु। शुक्ल पक्षे २।३।५।७।६।१०।१२।१५ तिथिषु। वृश्चिकस्य ३।२० अंशानन्तरं, १३ अंशयावत् आवश्यक

वा कार्यम् २।३।४।६।७।६।१२ लननेषु, लनशुभयुद्धष्टे स्वस्वामियुते वा शुभम् नवान्नप्रावरणे जन्मतारा-विशाखस्थसूर्य-कृष्ण पक्षाष्टमचन्द्र-पूर्वात्रय-मघा-भरण्याश्लेषाऽऽर्द्रा-नक्षत्र-सौर-क्रमेणकार्तिक-पाषै-चैत्राहरिशयननन्दानायादेशी-रिक्तामंगलशानि-शुक्रदिनानि निषिद्धानि। अभावे कृष्णपञ्चमी यावत् ग्राह्यः।

पुराणिदि श्रवण मुहूर्तः

रो. उफ. वि. मू. श. पूषा. नक्षत्रेषु। सू. चं. बु. गु. शु. दिनेषु। शुभतिथिषु शुभलग्नेषु च शुभम्।

धान्यछेदनमुहूर्तः-

मू.ज्ये.आष्वे.आर्द्रा, पूषा.ह.कृ. ध.श्र.मू.स्वा.म.उत्तरा३,पूषा, भ. चि. पुष्य नक्षत्रेषु, सू.चं.बु.गु.शु. दिनेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, २।५।६।११ लननेषु शुभम्। अन्यान्यपि यव-गोधूमदीनि एवञ्च छेदानी।

मेधिरोपणमुहूर्तः-

अ. रो. पुनः पु. उत्तरा३,ह. वि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलननेषु च मेधिरोपणं शुभम्।

कूपचक्रंरोहिणीभात्

स्थानम्	न०	फलानि
मध्य	३	शीर्षस्वादु
पूर्व	३	निर्जलम्
अग्नि	३	शीघ्रजलम्
दक्षिण	३	निर्जलम्
नैर्ऋत्यं	३	निर्मलजलम्
पश्चिम	३	शीतजलम्
वायु	३	जलहातिः
उत्तर	३	मधुरजलम्
इशान	३	क्षारजलम्

स्थानम्	न०	फलानि
पूर्व	२	जलशेषः
अग्नि	३	बहुजलम्
दक्षिण	२	जलहातिः
नैर्ऋत्यं	२	अमृतजलम्
पश्चिम	३	स्वादुजलम्
वायु	२	निर्जलम्
उत्तर	३	स्थिरजलम्
इशान	५	नष्टजलम्
मध्य	५	पूर्णजलम्
बाह्य	३	अमृतजलम्

मतदानकर्मणि नामाङ्कनमुहूर्तः-

रिक्तामारहिततिथिषु, सुयोगघाटितरव्यादिदिनेषु। अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसू, पुष्य, पूर्वाषाढ, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, रेवतीनक्षत्रेषु। जन्मराशीशलनशमङ्गलसूर्यदेशेयैः बलान्वितैः। पापैः ३, ६, ११ गतैः शुभैः कन्द्रत्रिकाणधनसहजायस्थितैः वृषामिथुनकर्कसिंहकन्यातुलावृश्चिकधनुकुम्भमीनलग्नेषु जन्मराशिलगनाभ्यामुपचय (३,६,११) राशिलगतलने शुभग्रहयुतदृष्टे, पापहर्तेऽष्टमे नामाङ्कन शुभम्।

राज्याभिषेक(राष्ट्र-राज्य-कार्यभारग्रहण)मुहूर्तः-

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवणा, रेवतीनक्षत्रेषु। रिक्तामा-मङ्गलरहिततिथिदिनेषु। दिवा। जन्मराशीलग्नेशमङ्गलसूर्यदेशेयैः बलान्वितैः। पापैः ३,६,११ गतैः शुभैः केन्द्रत्रिकोणधनसहजायस्थितैः मिथुनसिंहकन्यातुला-वृश्चिककुम्भलग्नेषु। जन्मराशिलगनाभ्यामुपचय (३,६,११) राशिलगतलने शुभग्रहयुतदृष्टे, पापवर्जितेऽष्टमे शुभः।

धान्यरोपणमुहूर्तः-

रो. उफ. वि. मू. श. पूषा. नक्षत्रेषु। सू. चं. बु. गु. शु. दिनेषु। शुभतिथिषु शुभलग्नेषु च शुभम्।

धान्यछेदनमुहूर्तः-

मू.ज्ये.आष्वे.आर्द्रा, पूषा.ह.कृ. ध.श्र.मू.स्वा.म.उत्तरा३,पूषा, भ. चि. पुष्य नक्षत्रेषु, सू.चं.बु.गु.शु. दिनेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, २।५।६।११ लननेषु शुभम्। अन्यान्यपि यव-गोधूमदीनि एवञ्च छेदानी।

मेधिरोपणमुहूर्तः-

अ. रो. पुनः पु. उत्तरा३,ह. वि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलननेषु च मेधिरोपणं शुभम्।

योगिनीवासो युद्धयात्रायाम्

तिथयः	१।६	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०
दिशा	पू.	अ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई
वामवृष्टयायोगिनीशुभ, दक्षिण-समुख अशुभ।								

देवालय-गृहारम्भ-जलाशयारम्भे खातदिज्ञानम्			
खातदिक्	नैर्ऋत्याम्	आग्नेयाम्	ऐशान्याम्
देवालयारम्भे	ध.म.कु.सूर्ये	मी.मे.वृ.सूर्ये	मि.क.सिं.सूर्ये
जलाशयारम्भे	तु.वृ.ध.सूर्ये	म.कु.मी.सूर्ये	मे.वृ.मि.सूर्ये
गृहारम्भे	वृ.मि.क.सूर्ये	सिं.क.तु.सूर्ये	वृ.ध.म.सूर्ये

जलाशयवाटिका-देवादि-प्रतिष्ठा-मुहूर्तः-

सौरक्रमेण-माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढमासेषु शुक्लपक्षे, सू., चं., बु.,गु.,शु., वारेषु ।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५। तिथिषु। मू.रे. वि.अनु.ह.,अश्वि.पु.,स्वा.,पुन.,श्र.ध.,श.,रो., उत्तरा-३, नक्षत्रेषु। अथवा प्रतिष्ठाप्यदेवताकथिति- दिननक्षत्रेषु देवादिप्रतिष्ठा शुभा। सिंहं सूर्यं, कुम्भे ब्रह्माणं, मिथुने शंकरं, स्थापयेत्। द्विस्वभावे देव्याः, चरलग्ने च योगिन्यः स्थापनीयाः सर्वे स्थिरलग्नेषु स्थाप्याः। चन्द्रपापैः ।३।६।११ स्थितैः। शुभैः १२।८ भिन्नस्थानगतैः देवादि प्रतिष्ठा शुभा। ग्राहाः पुष्ये, बुद्ध श्रवणां, गणेशादयो रेवत्यां स्थाप्याः। भगवतो देवोत्थनैकादस्यां रामनवम्यां, कृष्णाष्टम्यां, देव्याः नवरात्रौ दीमालिकायाञ्च, शंकरस्य शिवरात्रौ वा शुभं प्रतिष्ठापनम्।

द्यूवबेल, वोरिंग, टंकी प्रभृति स्थापने शुभ मुहूर्तः-

क. आश्ले, म.,पू.३.भ.,वि.,मू., नक्षत्रेषु। २।४।५।६।७।६।१३।१५ तिथिषु शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत्। चं.बु.वृ.शु. वारेषु। पूर्वाह्णेऽपराह्णे वा, २।३।४।६।७।६।१०।११।१२ लनने शुभयुद्धष्टे शुभैः १।४।५।७।६।१० स्थितैः। पापैः ३।६।११ गतैः शुभम्।

वापी-कूप-तडागादिखनन-मुहूर्तः-

वापीचक्रंरोहिणीभात्			
स्थानम्	न०	फलानि	
पृष्ठे	४	शुभजलं	
नाभे	४	बुद्धिनाशः	
हृदि	४	स्थिरता	
मध्ये	४	कलहः	
नेत्रयोः	४	धनागमः	
पादायोः	८	दुःखम्	

खलरस्थापनमुहूर्तः-

ग्रामसमीपे शुभस्थाने शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभम्।

धान्यस्थापन-मुहूर्तः-

अश्वि.रो.,मू.,पुन.,पुष्य,वि.,ह.,उ.,३,स्वा.,अनु.,मू.,र.,ध., श.,रे. नक्षत्रेषु, शुभतिथिदिन लननेषु, २।३।५।६।६।१०।११।१२ लननेषु शुभम्।

जन्मराशि-नामराशि वेशन-विचारणीयविषयाः-

विवाहे सर्वमङ्गल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशिं न चिन्त्येत्॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारको। नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्त्येत्॥ कार्कायां वर्गशुद्धौ च वारे द्युते स्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता॥

जन्म नक्षत्रे त्याज्याः- जन्मनक्षत्रात्रचन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। क्षौरभैषज्यवादाध्यकत्तनेषु विवर्जयेत्। जन्ममासे त्याज्याः- क्षौरकर्म दीधयात्रा कर्णवधश्च।

गृहारम्भ(वास्तु)मुहूर्तः

वैशाख, आषाढ(पशुगृहं त्यक्त्वा), कार्तिक, अग्रहण, माघ, फाल्गुन, श्रावण(सौरक्रमेण), मासेषु। माघ,ज्येष्ठ मासे मध्यम्, समुख-काल-वर्जित-समये। २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। अ.,रो.,मू.,पुन., पु.,उ.३, ह.,चि., स्वा.,अनु.,मूल.,श्र., ध.,शत.,रे. नक्षत्रेषु। चं., बु., गु., शु., श., वारेषु। दिवा, शुद्धसमये॥ शुद्धवृष-चक्रे, पृथ्वीशयननक्षत्ररहितेषु २।३।५।६।६।११।१२। लननेषु। लनने शुभद्वयुते। शुभैः १।४।५।७।६।१०।स्थितैः पापैः ।३।६।११ स्थितैः, ।८।१२। ग्रहरहिते शुभाः। तृण-काष्ठादि-गृहनिर्माणम् अशुद्धेऽपि परञ्च इष्टिकादि गृहनिर्माणं शुद्धसमये एव। देवालयमठोदि-निर्माणमप्येवैव मुहूर्तेषु शुभम्।

गृहप्रवेश मुहूर्तः

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रं अर्कंभात्	स्थानम्	न०	फलानि
वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, कार्तिक, अग्रहण, माघ (सौरक्रमेण) फाल्गुन, मासेषु माघ, ज्येष्ठ मासे मध्यम्,। २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु शुक्ल पक्षे। कृष्णपक्षे ५ यावत्। अ., रो., मू.,पुन., पु., उ.३, ह., चि., स्वा.,अनु.,मूल.,श्र.,ध.,शत.,रे. नक्षत्रेषु। चं. बु. वृ. शु. श. वारेषु। दिवारात्रौ। शुद्ध समये शुद्धे कुम्भचक्रे। २।५।६।११ लननेषु। ३।६।६।१२ लननेषु मध्यमः। जन्मराशि लगनाभ्यामुपचय-३।६।१०।११ राश्यांशेः स्थिरराशौ, लनान्त् १।३।५।७।६।१०।११ स्थानेषु शुभाः ३।६।११ स्थानेषु पापाः। ४।८ भवने ग्रहरहिते। समुखकाल रहित समये शुभः। इष्टिकादि गृहप्रवेशः शुद्ध-समये तृण-काष्ठादिक-गृह-प्रवेशो-शुद्धसमयेऽपि। अग्निभय राजकोपे दैविके प्रकोपे सति यस्मिन् कस्मिन् शुभ मुहूर्ते गृहारम्भो गृहप्रवेशश्च कार्यः।	मु.	१	अग्निदाहः
	पू.	४	उद्धसनम्
	द.	४	लाभः
	प.	४	धनम्
	उ.	४	कलहः
	म.	४	विनाशः
	अ.	३	स्थिरताः
	क	३	स्थिरता

• तिथिवधप्रवेशः- दिवा तृपप्रवेशः, निशि वधुप्रवेशः, विवात्रौ च गृहप्रवेशः शुभदः प्रोक्तः। पृथ्वीशयननक्षत्राणि मुहूर्तः- सूर्यनक्षत्रात्। ५।७।६।१२।१६।२६ मिते चन्द्र नक्षत्रे पृथ्वी शेते एषु तडागावापीकूपवारस्तृपभृति कार्यं द्यूबेल, वोरिंग, प्रभृति स्थापनञ्च न कर्तव्यम्।

चरणिविचारः-

स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसंयुताम्। अष्टाभिश्च हरेद् भग्न शेषं चरणिरच्यते। तत्फलम्-पशुहनिःपशु रोगः पशुलाभः पशुनाशः पशुबुद्धिः पशुभवे बहुशुः।

अंगस्फुरणफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तके	भूमिलाभः	कुक्षौ	प्रीतिः
ललाटे	पदलाभः	उदरे	धनम्
स्कन्धे	भोगः	लिङ्गे	स्त्रीसमागमः
श्रूमध्ये	सुखम्	वृष्णीं	पुत्रलाभः
कपाले	शुभम्	ओष्ठे	इष्टसिद्धिः
नेत्रयोः	धनान्दिः	हनौ	भयम्
नेत्रकोणयोः	धनम्	कण्ठे	ऐश्वर्यम्
नेत्रसमीपे	प्रियसमागमः	ग्रीवाधः	शत्रुभयम्
नेत्रपश्मणि	राज्यापिः	पृष्ठे	पराजयः
नेत्रपश्मणोः	विजयः	मुखे	मधुरभोजनं
नेत्रोपगो	स्त्रीलाभः	कपोलौ	व्यभिचारः
नासिकयोः	सुखम्	बाहौ	प्रियलाभः
हस्ते	धनलाभः	बाहुमध्ये	धनागमः
वक्षसि	सुखम्	बाहौः	प्रियलाभः
हृदये	इष्टसिद्धिः	उरसी	वस्त्रलाभः
कटिदेशे	प्रमोदः	जानुन्योः	भयम्
नाभौ	स्त्रीनाशः	जंघे	स्थामिप्राप्तिः
कटिपार्श्वे	प्रीतिः	पादयोरपरि	स्थानलाभः
आन्त्रिके	कोषवृद्धिः	पादतले	पराक्रमः
भगो	पतिसमागमः	पादयोः	हानिः

स्वप्न नाशक यन्त्र-

गं	छं	जं	चं
छं	नं	जं	टं
टं	जं	ढं	चं
नं	छं	जं	टं

शुभ मुहूर्ते में भोजपत्र पर अनार की कलम और अष्टगन्ध की स्यायी से लिखकर सविधि पूजन कर गले में धारण करने से दुस्वप्न दोष दूर होता है।

स्वप्नफल (सपना) विचार-

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
जहाज देखना=	परेशानी दूर हो।	जहाज देखना=	परेशानी दूर हो।
अश्वीदेखना	रोगमुक्त,आय वें वृद्धि।	अश्वीदेखना	रोगमुक्त,आय वें वृद्धि।
नदी का पानी पीना=	राज्य से लाभ।	नदी का पानी पीना=	राज्य से लाभ।
लाल फूल देखना=	पुत्र सुख,भाग्योदय	लाल फूल देखना=	पुत्र सुख,भाग्योदय
सफेद फूल देखना=	दुःख हरण।	सफेद फूल देखना=	दुःख हरण।
पश्वर देखना=	मित्र से कष्ट, दुःख	पश्वर देखना=	मित्र से कष्ट, दुःख
बाजार=	शुभ	बाजार=	शुभ
सुराही=	कुसंगति।	सुराही=	कुसंगति।
चश्मा लगाना=	ज्ञान में वृद्धि	चश्मा लगाना=	ज्ञान में वृद्धि
धनुष खींचना=	लाभ प्रद यात्रा।	धनुष खींचना=	लाभ प्रद यात्रा।
येटी खाना=	धनवृद्धि,पदोन्नति।	येटी खाना=	धनवृद्धि,पदोन्नति।
रस्सी=	कष्टकर यात्रा।	रस्सी=	कष्टकर यात्रा।
दाँत टटना=	दुःख, झणझट	दाँत टटना=	दुःख, झणझट
दरवाजा=	मित्रता बढ़े।	दरवाजा=	मित्रता बढ़े।
कोचड़ में फँसना=	कष्ट अपव्यय।	कोचड़ में फँसना=	कष्ट अपव्यय।
घर बनाना=	प्रसिद्धि प्राप्त हो।	घर बनाना=	प्रसिद्धि प्राप्त हो।
लोहा=	धनलाभ।	लोहा=	धनलाभ।
खोड़ा=	संकट से छुटकारा।	खोड़ा=	संकट से छुटकारा।
घास का मैदान=	धन संग्रह।	घास का मैदान=	धन संग्रह।
खोड़ा पर चढ़ना=	पदोन्नति हो।	खोड़ा पर चढ़ना=	पदोन्नति हो।
मोती देखना=	लड़की पैदा हो।	मोती देखना=	लड़की पैदा हो।
मुर्दे से बात करना=	मनोकामनापूरी हो	मुर्दे से बात करना=	मनोकामनापूरी हो
बड़ी दीवाल देखना=	सम्मान मिले।	बड़ी दीवाल देखना=	सम्मान मिले।
जमीन पर बिस्तर लगाना=	आयु वृद्धि	जमीन पर बिस्तर लगाना=	आयु वृद्धि
रूई देखना=	स्वस्थ रहना।	रूई देखना=	स्वस्थ रहना।
भूक मम देखना=	सन्तान से कष्ट	भूक मम देखना=	सन्तान से कष्ट
खैट्टा देखना=	धार्मिक कार्य में रुचि।	खैट्टा देखना=	धार्मिक कार्य में रुचि।
दुग्धन करना=	सुख शान्ति।	दुग्धन करना=	सुख शान्ति।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
पत्रपढ़ना=	शुभसंदेश प्राप्ति	पत्रपढ़ना=	शुभसंदेश प्राप्ति
कुर्छूँ का पानी=	लाभ,विजय	कुर्छूँ का पानी=	लाभ,विजय
आकाशदेखना=	ऐश्वर्यवृद्धि, पुत्रप्राप्ती	आकाशदेखना=	ऐश्वर्यवृद्धि, पुत्रप्राप्ती
रत्न-नागीना=	दुःख,व्यय।	रत्न-नागीना=	दुःख,व्यय।
अग्नि उठाना=	अनुचितधनलाभ	अग्नि उठाना=	अनुचितधनलाभ
आगजलाकरपकड़ना=	कष्ट,अपव्यय।	आगजलाकरपकड़ना=	कष्ट,अपव्यय।
सुखा अन्न खाना=	अनेक कष्ट	सुखा अन्न खाना=	अनेक कष्ट
मेघदेखना=	दुःख,कष्ट	मेघदेखना=	दुःख,कष्ट
बादल देखना=	राज्यलाभ	बादल देखना=	राज्यलाभ
अमैट्टी पहनना=	धनधान्य की वृद्धि	अमैट्टी पहनना=	धनधान्य की वृद्धि
सूखा बागरदेखना=	आपत्ति आना	सूखा बागरदेखना=	आपत्ति आना
बादल देखना=	धनलाभ	बादल देखना=	धनलाभ
कटेबालदेखना=	सन्तानप्राप्ति	कटेबालदेखना=	सन्तानप्राप्ति
मुर्दादेखना=	धनलाभ	मुर्दादेखना=	धनलाभ
जहाजदेखना=	यात्रा	जहाजदेखना=	यात्रा
समुद्रदेखना=	यश एवं धनकी प्राप्ति	समुद्रदेखना=	यश एवं धनकी प्राप्ति
शराबपीना=	अपयश हो	शराबपीना=	अपयश हो
बिल्ली,बन्दरकटना=	रोगी होना।	बिल्ली,बन्दरकटना=	रोगी होना।
कमलदेखना=	उन्नति हो।	कमलदेखना=	उन्नति हो।
कुत्ता देखना=	उत्तममित्र मिले।	कुत्ता देखना=	उत्तममित्र मिले।
खाईदेखना=	धन एवं प्रसिद्धि मिले	खाईदेखना=	धन एवं प्रसिद्धि मिले
टोपीदेखना=	दुःख दूर हो।	टोपीदेखना=	दुःख दूर हो।
कैचीदेखना=	घर में कल हो।	कैचीदेखना=	घर में कल हो।
पूजाकरना=	पदोन्नति,लाभ।	पूजाकरना=	पदोन्नति,लाभ।
दीपक जलतेदेखना=	आयुवृद्धि हो।	दीपक जलतेदेखना=	आयुवृद्धि हो।
सुगन्धलगाना=	विद्वान एवं पण्डित हो।	सुगन्धलगाना=	विद्वान एवं पण्डित हो।
चादर देखना=	बदनामी हो।	चादर देखना=	बदनामी हो।
झरना देखना=	दुःख दूर हो।	झरना देखना=	दुःख दूर हो।
चाँदी देखना=	धन की वृद्धि हो।	चाँदी देखना=	धन की वृद्धि हो।
सिंहासन देखना=	सुखप्राप्त हो।	सिंहासन देखना=	सुखप्राप्त हो।

पल्लीपतनफलबोधकचक्रम	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	जंघयोः	शुभः	लाभः
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	हस्तद्वये	लाभः	लाभः
भ्रूमध्ये	सम्मानम्	हस्तद्वये	लाभः	लाभः
उत्तरोष्ठे	धनहानिः	स्कन्धयो	विजयः	विजयः
अधरोष्ठे	ऐश्वर्यप्राप्तिः	नाभौ	कटिभागो	पशुलाभः
नासाग्रे	रागः	कटिभागो	हानिस्तापः	हानिस्तापः
दक्षिणकर्ण	आयुर्वृद्धिः	वा.मणिबन्धे	कीर्तिनाशः	कीर्तिनाशः
वामकर्ण	लाभः	वा.मणिबन्धे	वामप्राप्तिः	वामप्राप्तिः
नेत्रयोः	धनलाभः	हृदये	मधुरभोजनम्	मधुरभोजनम्
द.पुजे	पराक्रमः	मुखे	कष्टम्	कष्टम्
वामपुजे	राजभयम्	केशान्ते	धनम्	धनम्
कण्ठे	शत्रुनाशः	गुल्फयोः	धनम्	धनम्
स्ननयोः	सौभाग्यम्	द.चरणे	भ्रमणम्	भ्रमणम्
उदरे	आभूषणप्राप्ति	वा.चरणे	बन्धुनिग्रहः	बन्धुनिग्रहः
पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः	पादाभ्यन्तरे	स्त्रीनाशः	स्त्रीनाशः
जानुद्वये	शुभः			

वारतिथिविचार यदिपल्ली(छिपकली)

१।२।३।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक होता है। तथा सोम, बुध, गुरू, शुक्रवार में। पुष्य, अश्वि, रो.मू.पुन.उ.फा.ह. वि.स्वा. ध.रे.अनु.शत. नक्षत्रों में गिरे तो शुभ फल देता है। उपरोक्त में निर्दिष्ट सभी फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वाम अंग में विचार करना चाहिए। पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ फल होता है। यदि छिपकिली या गिरपिट शरीर की दाहिनी तरफ से चढकर बायाँ तरफ से नीचे आ जाय तो दोष नहीं होता।

चुल्लिकाचक्रम् सूर्यभादिनभावविधि

स्थान	नं०	फलम्	स्थान	नं०	फलम्
पृष्ठे	६	धनम्	गर्भे	५	नाशः
शीर्षे	४	मृत्युभयम्	हस्ते	२	भोगः
बाहौ	८	सुखम्	चरणे	२	स्त्रीमृति

सुद्धयात्रायां कुलाकुलचक्रम्

संज्ञा	नक्षत्राणि	तिथियः	दिनानि	फलानि
कुल	पू.३,अश्वि,पुष्य,म.४।८।१२।१४	मं.शु.	स्वाधिवज्रदः	(मुहूर्ताय)
अकुल	मू.श्र.कृ.ज्ये.वि.वि	१।३।५।७।८	सू.च.	यात्रिजयदः
	ह.रो.अनु.पुन.उत्तरा.३	११।१३।१५	वृ.श.	(मुहूर्ते)
कुलाकुल	आर्द्रा,मू.,अभि.,श.	२।६।१०	बुधः	उभयोःसन्धिः

नक्षत्र संज्ञा-

ज्ये. नक्षत्राणि, भद्रा पातयोगश्च।
ऋग्रहणीनिबिद्धसमयः- रविमंगल दिने। संक्रान्तिः। वृद्धियोगः। हस्तनक्षत्रञ्च। एषु ऋणार्पणं शुभम् कुंभ लगनेषु, रविगुरुशनिदिनेषु शुभतिथिषु। चैत्रभाद्रवपौषमलमासक्षयमासभिन्न समये शुभः।

मोटर-बस-साइकिल-यादानी-चालयन मुहूर्तः

अश्वि. मू. पुन. ह. वि. स्वा. अनु. ज्ये. रे. नक्षत्रेषु चं. मं. गु. शु. श. दिनेषु। १।२।३।५।७।८।१०।११।१३।१५ तिथिषु, चतुर्थेश बलवृक्ते १।४।५।७।८।१० स्थिते। लग्नेशदशमेशसत्त्वमेश-नवमेशैरति १।४।५।७।८।१० गतेर्बलवृक्तैः। पापैः ३।६।११ स्थानस्थितैः यानादिचालनं शुभम्।

इष्टिकारम्भ मुहूर्तः

अ, रो, मू, पुष्य, उ.३, ह., ज्ये, श्र, रे. नक्षत्रेषु। वृषिसिंहवृश्चिककुम्भ लग्नेषु, रवि, गुरू, शनिदिनेषु, शुभतिथिषु चैत्र, भाद्र, पौष, मलमास, क्षयमास भिन्नसमये शुभः।

मौल चालन मुहूर्तः

शुभतिथिदिननक्षत्रेषु। १।४।७।१० लग्नेषु। शुभैः १।४।५।७।१० स्थितैः, लग्नेशधनेशसत्त्वमेशैकादशेशेषु बलवृक्तेषु शुभम्

उग्रकर्म मुहूर्तः-

पूर्वा३, भ, मघा, मू. ज्ये, आश्ले. आर्द्रा नक्षत्रेषु मं. श. दिनेषु। १।८।१०।११ लग्नेषु। १।३।४।८।९।१०।११।१४ तिथिषु शुभम्।

इन्धन स्थापन मुहूर्तः

सूर्याकान्तनक्षत्रात् ६ नक्षत्रेषु शुभं, ततः ६ अशुभं, ततः ४ शुभं, ततः ८ अशुभं, ततः ४ शुभम्।

पञ्चवक्त्र भद्रवा)विचारः-

धनिष्ठा-शतभिषा पूर्वभाद्रोत्तरभाद्रे रेवतीनक्षत्राणि पंचकसंज्ञकानि। तत्र दक्षिणदिग्यमन-गृहाच्छादन- प्रेतदाहतृणकाष्ठादि- संग्रहशय्यावितान निर्माणदिकं च त्यजेत्। तत्रापवादः--वस्वादी शतभिषमध्ये पूर्वार्धे चोत्तरान्तके। पञ्च पञ्च घटी त्याज्या रेवती सकलां त्यजेत्।

दग्धतिथि-मासान्तादिविचार-

मीने धनुषि स्थिते सूर्ये द्वितीया तिथिः, वृषे कुम्भे स्थिते सूर्ये चतुर्थी, मेघे कर्के स्थिते सूर्ये षष्ठी, मिथुने कन्यायां स्थिते सूर्ये अष्टमी, सिंह वृश्चिके स्थिते सूर्ये दशमी, तुले मकरे च स्थिते सूर्ये द्वादशी तिथिर्दग्धा भवति। तत्र शुभकार्य निषिद्धम्। एवमेव संक्रान्तिदिनं तत्पूर्वापरदिनञ्च (मासान्तमासादिसंज्ञकम्) यात्रादिसकल शुभकार्येषु त्यज्यम्।

रक्तमोक्षण(ऑपरेशन) मुहूर्तः

अ. रो. मू. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. शत. नक्षत्रेषु सू. मं. वृ. दिनेषु शुभ तिथि लग्नेषु चन्द्र तारा अनुकूले सति शुभम्।

विकित्सा मुहूर्तः-

अ. रो. मू. पु. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. शत. नक्षत्रेषु सू. चं. मं. वृ. शु. दिनेषु शुभ तिथि लग्नेषु शुभाः।

शैषज्य भक्षण मुहूर्तः

अ. मू. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. शत. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिषु सू. चं. वृ. वृ. शु. दिनेषु ३।६।८।१२ लग्नेषु शुभैः। ३।६।८।१२ राशि स्थितैः लग्नात् ७।८।१२ ग्राह रहितेषु औषधिभक्षणं शुभम्। जन्म नक्षत्रे भैषज्यभक्षणं शुभम्।

विपणि मुहूर्तः-

मृग. रेवती, चित्रा, अनुराधा, उत्तरा३, रोहिणी, हस्त, अश्विनी, पुष्य, नक्षत्रेषु १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ तिथिषु सू. चं. वृ. वृ. शु. रां. वारेषु शुक्लपक्षे। कृष्णे १० यावत् १।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।१२ लग्नेषु। लग्ने चन्द्र शुक्रो पापैः ८।१२ रहितैः शुभैः २।१०।११ स्थितैःशुभाः।

वस्तुनाविक्रयः मुहूर्तः-

भ., कृ., आश्ले.वि.पू. ३ नक्षत्रेषु २।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु चं. वृ.वृ.शु. दिनेषु शुभैः। १।२।४।५।७।८।१० स्थितैः पापैः ३।६।११ स्थितैः कुम्भं विना लग्नेषु शुभः।

वस्तुनांक्रयमुहूर्तः-

शुभतिथिदिनलग्नेषु अ.वि.स्वा.श्र.शत.रे. नक्षत्रेषु शुभः।

स्वामिसेवा(नौकरी) मुहूर्तः-

अश्वि. मू. पुष्य, ह. चि. अनु. अभि. रे. नक्षत्रेषु। सू. वृ. गु. शु. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु। लग्ने शुभयुते। सूर्ये कुजे वा १०।११ स्थे। सेव्यसेककयोगानिमैत्र्यां राशीशयोरचापि मैत्र्यां सत्यां सेवारम्भः शुभः।

द्रव्यस्थापनमुहूर्तः- अश्वि. मू. पुष्य, पु. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु। सू. मं. वृ. गु. शु. दिनेषु, शुद्धसमये ३।५।८।१०।१३।१५ तिथिषु शुभग्राहयुक्तलग्नेषुशुभम्।

ऋणप्रदानमुहूर्तः **द्रव्यप्रयोगामुहूर्तः)-** स्वा. पुन. मू. रे. वि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु, लग्ने शुभयुद्दष्टे, ५।८।९ ग्राहरहिते। चं.गु.शु.शु. वारेषु शुभम्।

शिववास एवं फल

तिथिं च द्विगुणीं कृत्वा वाणैः संयोजयेत्ततः।
सत्ताभिरच हरेर्द्वाणं शिववासं समुद्दिशेत्॥
एकेनवासः कैलाशे द्वितीये गौरी सन्निधौ।
तृतीये वृषभारूढः सभायां च चतुष्टये॥
पंचमे भोजने चैव क्रिडायांपणिमते तथा।
रमशाने सप्तशेषे च शिववासः इतीरितः॥

फलम्- कैलाशोलभते सौख्यं गौर्यां च सुखसम्पदः।
वृषभेऽभीष्ट सिद्धिः स्यात् सभा सन्तापकारिणी॥
भोजने च भवेत् पीडा क्रोडायां कष्टमेव च।
रमशाने मरणंश्रेयं फलमेव विचारयेत्॥

शिववास तिथि

शुक्लपक्ष- २, ५, ६, ८, ९, १२, १३
कृष्णपक्ष- १, ४, ५, ८, ११, १२, ३०
विधि-(शुक्लादितिथिंसं. X२+५)÷७=१।२।३
शेष शुभ, अन्याशुभ।

अग्निवास चक्रम्

शुक्लपक्ष में	कृष्णपक्ष में	र.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
१	५	९	२	६	१०	१४	मु.	दि.
२	६	१०	१४	३	७	११	३०	मु.
३	७	११	१५	०	४	८	१२	दि.
४	८	१२	१६	१	५	९	१३	मु.

अग्निवास:- सैकातिथिवारयुताकृताप्ताः शेषे गुणेऽध्रे भुविवह्निवासः।

सौख्याय होमे शशियुमशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च॥

शुक्लादि पक्ष से वह तिथि जिसमें कर्म हो उसकी संख्या ५ या १० जो भी हो उसमें वर्तमान रव्यादि वार की संख्या जोड़कर १ संख्या और जोड़ देनेी चाहिये। फिर ४से भाग देने पर यदि ३ या ०(शून्य)शेष रहे तो अग्नि का वास भूमि में होता और वह सुखकारी होता है। यदि १ या २ शेष रहे तो अशुभ अर्थात् सुख का लेश भी नहीं होता।

अर्थात्-(शुक्लादितिथिंसं.+सूर्यादिदिनसं.+१)÷४=३, ० शेष शुभ
अग्निवास की विशेषता:- विवाहयात्राव्रतगोचरेषु चुड़ोपनीतिग्रहणेत्युगादैः।
दुर्गाविधाने च सुतप्तसूतौ नैवनिचक्रं परिचितं नीयम्॥

नष्ट (खोई-हुई) वस्तु ज्ञान चक्र

संज्ञा	नक्षत्राण	लाभालाभ	दिशा
अन्धाक्ष	रे,पुष्य,उ.फ.,वि.,पू.षा,ध.रे.	शीघ्रलाभ	पूर्व में
मन्दाक्ष	मू.,श्चते.,ह.,अनु.,उ.,षा.,श.,अश्वि.	प्रयत्न से लाभ	दक्षिण में
मध्याक्ष	आर्द्रा,म.,चि.,ज्ये.,अभि.,पू.,भा.,भा.,म.,	दूर श्रवण मात्र	पश्चिम में
सुलोचन	पुन.,पू.,फा.,स्वाति,मू.श्र.उ.भा.,कृ.,	अलाभ	उत्तर में

प्रश्नकालीन तिथि वार नक्षत्र और तन्नांक जोड़ में तीन और जोड़कर पाँच से भाग दें। १ शेष बचे तो भूमि पर प्राप्य, २ बचे तो जल में अप्राप्य, ३ बचे तो किसी ऊँचे स्थान पर अप्राप्य, ४ बचे तो नष्ट, ५ शेष में केवल शोक सन्ताप ही होगा।

सिद्धादियोगचक्र तिथि-नक्षत्र-वशेन

दिनानि	रविः	सोमः	कुजः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः
सिद्धियोगः	३।८।१३	१।६।११	३।८।१३	२।७।१२	५।१०।१५	१।६।११	४।६।१४
अमृतयोगः	४।१०।१५	४।१०।१५	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।६।१४	१।६।११
सर्वाध-	अश्वि. मू.	रो.मू.अनु.	अश्विनी	रोहि.मू.	अश्वि.पुन.	अश्वि.पुन.	रोहिणी स्वा.
सिद्धियोगः	पुष्य. हस्त.	श्रवण.पुष्य		हस्त अनु.	पु.अनु.रे.	अनु.श्र.रे.	श्रवण
मृत्युयोगः	१।६।११	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।६।१४	२।७।१२	५।१०।१५
राज्यप्रदयोगः	००	०० ००	४।६।१४	०० ००	०० ००	०० ००	४।६।१४
मध्यमयोगः	१२	११	१०	३	६	२	७

ताराचक्रम्

तारा	जन्म	सम्यत्	विपत्	क्षेमः	वधः	साधकः	प्रत्यरी	मित्रम	अतिमित्रम्
नक्षत्राणि	१।१०।१६	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	७।१६।२५	६।१५।२४	५।१४।२३	८।१७।२६	६।१८।२७
फलानि	मध्यमम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	शुभम्
दानानि	शकम्	००	गुडम्	००	तिताः	००	लवणम्	००	००

♦ व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है।
गुरु की होरा- विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोष संग्रह, नविन कव्वा लेखन आदि के लिए शुभ है।
शुक्र की होरा- भूमि मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मणौनरी, मिलस कार्गिरम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।
शनि की होरा- भूमि मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मणौनरी, मिलस कार्गिरम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।
प्रत्येक होरा एक घण्टे का होता है। जिस दिन जो वार होता है, उस वार के आरम्भ(अर्धात्) सूर्योदय के समय) से १ घण्टा उसी वार को होरा होता है इस के बाद एक घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय समय के अनुसार ही उस होरा में (१ घण्टे) में वह कार्य करेंगे, तो अवश्य सफलता मिलेगी।
ऋषियों ने होरा का **क्षणवार** कहा है। वार से भी क्षण वार में प्रधानता मानी गयी है। इसलिए यदि वार और क्षणवार दोनों अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नहीं हो तो **क्षणवार** अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। जैसे- पश्चिम को यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो, तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इस लिए समय सोम की होरा(क्षणवार) हो, उस समय

रात का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग
चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल
लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल
चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल

अर्धपहरा बोधक चक्रम्

दिन	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दिवा	४।५	२।७	२।६	३।५	७।८	३।४	१।६।८
रात्रि	४।६	४।७	०।२	५।७	५।८	०।३	१।६।८

सर्व कार्य सिद्धि के लिये होरा मुहूर्त- सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त पूर्ण फलदायक और अचूक है। होरा मुहूर्त के अनुसार कार्गारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं।
सूर्य की होरा- टेड्डर देन व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है।
मंगल की होरा-युद्ध या कर्ज लेने देने, सभा सोसायटी में आना जाना और मुकदमा कार्यों में अच्छी होती है।
बुध की होरा- में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन ♦

माहेन्द्रादि योग फल-

न वार तिथि नक्षत्रं न योगः करणन्तथा।
शिवस्वाज्ञां समासाद्य देवकार्यं विचारयेत्॥
माहेन्द्र विजयो नित्यममृते कार्यशोभनम्।
वर्के कार्यविनाशः स्याच्छून्ये मरणं ध्रुवम्॥
ज्योतिषां ग्राह शास्त्राणां सारमुधृत्य यन्ततः।
क्रियते मिहिरेणर्दं नाराणां हितकाम्यया॥
अयं रव्यदिवारिषु माहेन्द्रादियोगः श्लोकद्वयप्रमाण कालेन व्यतीते भवतीति चक्रं विलोकनीयम्॥
माहेन्द्रादिचक्र के प्रयोग की विधि- चैत्र वैशाख श्रावण भाद्र माघ फाल्गुन मास हो तो रविवार को सूर्योदय के पश्चात् पहला २ घटी माहेन्द्रयोग है, फिर ८घटी अमृतयोग आगे १० घटी वक्रयोग आदि होगा।
वक्रय एवं शून्य योग अशुभ है, जबकि माहेन्द्र एवं अमृतयोग शुभ है। यदि अति आवश्यक हो तो यात्रा मुहूर्त न होने पर भी माहेन्द्र एवं अमृत योगों में यात्रा की जा सकती है।

यात्रा में चौघड़िया मुहूर्त

उद्वेगश्चापमृते रोगो लाभः मृतिः।
सूर्यः शुक्रो बुधश्चन्द्रो मन्दो जीवो धरापुतः॥
सूर्यादौ क्रमतो ज्ञेयो रात्रौ पच्यमगो ह्येषट्।
सूर्यो बृहस्पतिश्चन्द्रः शुक्रो भौमः शनिर्बुधः॥
शीर्षता में कोई मुहूर्त न मिलता हो तथा अचानक यात्रा करनी पड़े, तो उस समय चौघड़िया मुहूर्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर, अर्थात् १२ घण्टे का दिन तथा १२ घण्टे का रात्रि हो, तब एक चौघड़िया १.३०(डेढ़)घण्टा अर्थात् पौने चार घटी का होगा।
जिस रोज दिन में यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टमांश घटी पल का घण्टा मिनेट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जायें, तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़ीयों का समय ज्ञात होगा। उस आठों चौघड़ीयों में कौन सा ग्राह्य और कौन सा त्यज्य है, यह दिन की चौघड़ीया के चक्र में उस दिन के वारके सामने चक्र में देखकर जान लें। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो, तो उसदिन के रात्रि मान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा-मिनेट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमशः रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जायेगा।
शुभ, लाभ, अमृत एवं चंचल शुभ होते हैं। काल, रोग एवं उद्वेग अशुभ होते हैं।

महेन्द्रादियोगचक्रम्

चैत्रवैशाखश्रावणभाद्रमाघफाल्गुनमासेषु
रवि- मार अट व१० शूट मार शूर अट शूट वट मार व४ अर चन्द्र- मा४ शूट व१२ मार अर शूर वर माट व२ मार व२२
मंगल- व४ शूर माट व४ शूर अ४ शूर अट व४ शूर वट अट शू४,अ४ बुध- व४ अ४ वट अ४ शूर व४ मार व४ शू४ अट शूट वट शूट गुरु- अट शू४ व४ अट वट अ४ व४ मा४ अर वट अ४ शू४ अ४ शुक- शूर अ१६ वट अर शूर व४ शूट अट अट वट अर शूर शनि- शू४,व४,शूट,अ४,शूरअ४,शूरअ४,शू४,व४,अ४,व४,अ४,अ४,शूर

न्येष्ठ आषाढमासयोः

रवि- शू४ अट माट वट शूर व४ अर शू४ माट शू४ वट शूर मा४ व४ चन्द्र- वट अ४ शूट अट माट वट अट वट शू४ व४ मंगल- अ४ शू४ व४ शूर अ४ वर माट शूर वट अ४ व४ अर शूर वर अट व४ बुध- शूर व४ अट वट अट शूर अ४ शू४ अ४ शूर वट अट शू४ व४ गुरु- अर शूर अ४ वट अट शूर अट शू४ अ४ शूर वट अट शू४ व४ शुक- शू४ अ१४ वट अर शूर व४ शूर अट शूट अट माट शूर शनि- शू४ वट अट शूर व४ अ४ शूट व४ अट व४ अ४ शूर अर वट

आश्विन-कार्तिक-मार्ग-पौष-मासेषु
रवि- माट वट अट शूर मा४ शूट व४ अ४ व४ अट शूर अ४ शूर चन्द्र- अ४ व४ अट व२२ अट वट अ४ वट मंगल- मार वट अ१० वट शूर व१२ अर शूर अट व४ मा४ व४ बुध- शू४ अ४ माट शू४ वट शूर वट अ४ वट अट शूट गुरु- अ४ वट अट शू४ वट शूट अट व४ अट वट माट शुक- अर वट शूट वट अट व१४ शू४ मार अट माट शनि- मा४ शू४ अट शूट अ४ शूर अ१२ शू४ वट माट शूट

सर्व कार्य सिद्धि के लिये होरा मुहूर्त-

होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा
वार	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र
चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल
मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल

दिव्य-पितृ तर्पण-

दक्षिणाभिमुख आ अपसव्य भए भूमि पर रही तऽ वाम जांच के खसेने दक्षिणाग्र तेकुशा पर अथवा सराय मे राखल जल मे, जल मे रही तऽ ठाढ़े तिल लए पितृतीर्थ (अंगुष्ठ आ तर्जनीक मध्यक मूल भाग)सँ हाथ मे मोड़ा राखने तिलसहित अथवा विना तिलो के तीन-तीन बेर जल दैत अग्निष्वात आदिक तर्पण करी।

ॐ अनिष्वात्नादय आगच्छन्तु। आवाहन करी।
ॐ अनिष्वात्सृष्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।
ॐ सौम्याः तृष्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।
ॐ हविषन्तः तृष्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।
ॐ उष्मपाः तृष्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।
ॐ सुकालिनः तृष्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।
ॐ वहिषदः तृष्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।
ॐ आन्धपाः तृष्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

यम तर्पण

ऊपर मे वर्णिते विधि के अनुसार १४ यमक तर्पण करी।
ॐ यमादय आगच्छन्तु। आवाहन करी।
ॐ यमाय नमः। ॐ धर्मराजाय नमः। ॐ मृत्यवे नमः। ॐ अन्तकाय नमः। ॐ वैवस्वताय नमः। ॐ कालाय नमः। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः। ॐ औदुम्बराय नमः। ॐ दध्नाय नमः। ॐ नीलाय नमः। ॐ परमेष्ठिने नमः। ॐ वृकोदराय नमः। ॐ चित्राय नमः। ॐ चित्रगुप्ताय नमः। तकर बाद ॐ चतुर्दशैते यमाः स्वस्ति कुर्वन्तु तर्पिताः। ई वाक्य पढ़ी।

पितृ-तर्पण-

(उपयुक्ते विधि सँ पितृ-तर्पण करी। पुरुष पक्ष के ३-३ बेर आ मातृपक्ष के १-१ बेर तिलमिश्रित अथवा तिलरहित जल दी। तिलक अभाव मे “सतिलम्” नहि पढ़ी।) अगिला मन्त्र सँ सब पितरकें तीन-तीन अञ्जलि जल दी
ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्तु अपोऽञ्जलिम्।

जल लय अपन बन्धु अबन्धु एवं अन्य जन्मक बन्धु कै जल दी-

ॐ येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।

ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति॥

पुनः नीचाँ लीखल मंत्र पढ़ि स्नान कायल भिजलाहा कटिक्स्त्रक (धोती) जल तेकुशा पर दक्षिण मुँहे मंत्र पढ़ि पितृ तीर्थ सँ गाड़ि अपना वंशक अतृप्त पितर कै दी-

ॐ ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।

ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिषीडनोदकम्॥

एहि मंत्रें वस्त्रक जल कुश पर गाड़ि पूब मुँह भय यज्ञोपवीत सव्य कय सूर्य कै तीन बेर अर्घ्य दी-

ॐ नमो विवस्वते बहन्। भास्वते विष्णुतेजसे।

जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने॥

एषो अर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ॥११॥

ॐ एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते।

अनुकम्प्य माम् भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

एष द्वितीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ॥१२॥

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन् नमृतं मर्त्यं च

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। एष

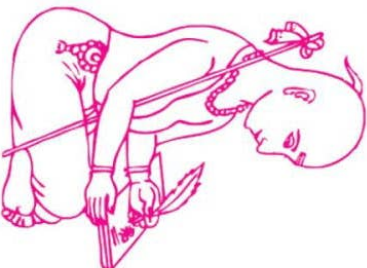
तृतीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ॥१३॥

अर्घक बाद हाथ में लाल फूल लय सूर्य कै प्रणाम करी-

ॐ जपा कुसुम संकाशं कास्य पेयं महाद्युतिम्।

ध्वान्तरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

इति वाजसनेयि तर्पण समाप्तिः



छन्दोगक तर्पण विधि-

दहिना हाथ मे तेकुशा लए सव्य (वामस्कन्धस्थापित यज्ञोपवीती) भए वाम हाथ के दहिना हाथक नीचा भाग मे स्पर्श कयने भूमि पर रही तऽ पूब, उत्तर अथवा ईशानकोणाभिमुख बैसि दहिना जांच के खसेने पवित्र भूमि पर राखल तेकुशा पर अथवा एक टा सराय मे राखल जल मे (ओहि जल मे विना तेकुशा राखने), यदि जल मे ठाढ़ रही तऽ पूर्वाभिमुख भए देवतीर्थ (अंगुलिसभक अग्रभाग) सँ पहिने देवतर्पण करी। यथा परिस्थिति तेकुशा पर अथवा जल मे तीन बेर जल दैत पढ़ी-

ॐ देवास्तृष्यन्ताम्। तकर बाद उत्तराभिमुख आ नीवीती (यज्ञोपवीत कै कण्ठावलम्बित कए) भए कायतीर्थ (कनिष्का अंगुलिक मूल भाग) सँ नीचा लिखल मन्त्र सँ ऋषि तर्पण तीन बेर जल दैत करी-

ॐ ऋषयस्तृष्यन्ताम्। पुनः पूर्वाभिमुख भए प्रजापत्य तीर्थ (कनिष्ठा अंगुलीक मूल भाग) सँ नीचा लिखल मन्त्र सँ प्रजापति तर्पण एक बेर जल दैत करी-

ॐ प्रजापतिस्तृष्यन्ताम्।

दक्षिणाभिमुख आ अपसव्य भए भूमि पर रही तऽ वाम जांच के खसेने दक्षिणाग्र तेकुशा पर अथवा सराय मे राखल जल मे, जल मे रही तऽ ठाढ़े तिल लए पितृतीर्थ (अंगुष्ठ आ तर्जनीकक मध्य मूल भाग) सँ हाथ मे मोड़ा राखने तिलसहित अथवा विना तिलो पुरुष पक्ष तिलरहित जल दी। तिलक अभाव मे “सतिलम्” नहि पढ़ी।)

अगिला मन्त्र सँ सब पितरकें तीन-तीन अञ्जलि जल दी।

ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्तु अपोऽञ्जलिम्।

पितर क आवाहन क अगिला मन्त्रे तर्पण करी-

ॐ अद्य अमुक गोत्रः (गोत्र) पिता अमुक (पिता का नाम) शर्मा तृष्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा (ई पढ़ि पहिल बेर जल दी)। तस्मै स्वधा। (ई पढ़ि दोसर बेर जल दी), पुनः तस्मै स्वधा। (ई पढ़ि तेसर बेर जल दी) एहिना आगुओ सभ मे। ॐ अद्य अमुक गोत्रः (अपन गोत्र) पितामहः अमुक (बाबा क नाम) शर्मा तृष्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा। ३ बेर॥ ॐ अद्य अमुक गोत्रः (अपन गोत्र) प्रपितामहः अमुक (प्रपितामहक नाम) शर्मा तृष्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा। ३ बेर॥ अन्त मे- “ॐ तृष्यध्वम्-३” ई वाक्य ३ बेर पढ़ि जल दी॥

ॐ अद्य अमुक गोत्रः (नानाक गोत्र) मातामह अमुक (नानाक नाम) शर्मा तृष्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा ३ बेर॥ प्रमातामह अमुक (नानाक नाम) शर्मा तृष्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा ३ बेर॥ ॐ अद्य अमुक गोत्रः (नानाक गोत्र) वृद्धप्रमातामहः अमुक (वृद्धप्रमातामहक नाम) शर्मा तृष्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा॥ अन्त मे ॐ तृष्यध्वम्-ई वाक्य ३ बेर पढ़ि जल दी

स्त्रीपक्ष में १-१ अंजलि जल दी-

ॐ अद्य अमुकी गोत्रा (अपन गोत्र) माता अमुकी (माताक नाम) देवी तृष्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा १ बेर॥ ॐ अद्य अमुक (गोत्र) गोत्रा पितामही अमुकी (दादी क नाम) देवी तृष्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१ । ॐ अद्य अमुक (गोत्र) गोत्रा प्रपितामही अमुकी (पर दादी के नाम) देवी तृष्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१ । अन्त मे “ॐ तृष्यध्वम्” ई वाक्य एक बेर पढ़ि जल दी॥

ॐ अद्य अमुकी (नानाक गोत्र) गोत्रा मातामही अमुकी (नानी क नाम) देवी तृष्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा (गोत्र) गोत्रा वृद्धप्रमातामही अमुकी (पर नानी नाम) देवी तृष्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१ । ॐ अद्य अमुकी (गोत्र) गोत्रा वृद्धप्रमातामही अमुकी (वृद्ध परनानी कनाम) देवी तृष्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। अन्त मे “ॐ तृष्यध्वम्” ई वाक्य एक बेर पढ़ि जल दी॥

एहि मंत्रें वस्त्रक जल कुश पर गाड़ि पूब मुँह भय यज्ञोपवीत सव्य कय सूर्य कै तीन बेर अर्घ्य दी-

ॐ नमो विवस्वते बहन्। भास्वते विष्णुतेजसे।

जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने॥

एषोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ॥११॥

ॐ एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते।

अनुकम्प्य माम् भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

एष द्वितीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ॥१२॥

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन् नमृतं मर्त्यं च

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। एष

तृतीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ॥१३॥

अर्घक बाद हाथ में लाल फूल लय सूर्य कै प्रणाम करी-

ॐ जपा कुसुम संकाशं कास्य पेयं महाद्युतिम्।

ध्वान्तरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

इति वाजसनेयि तर्पण समाप्तिः

एष तृतीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ॥१३॥

अर्घक बाद हाथ में लाल फूल लय सूर्य कै प्रणाम करी-

ॐ जपा कुसुम संकाशं कास्य पेयं महाद्युतिम्।

ध्वान्तरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

इति वाजसनेयि तर्पण समाप्तिः

छन्दोग सन्ध्या- वन्दन विधि

स्नान कए शुद्ध वस्त्र पहिर पवित्र आसन पर सुविधानुसार पूर्वाभिमुख उत्तराभिमुख वा ईशान कोणाभिमुख (पूर्वोत्तर कोणाभिमुख) बैसि चानन कए दहिना हाथक अनामिका आंगुर मे कुशक पवित्री अथवा सोना अथवा चाँदीक अंगूठी पहिरि अथवा हाथ मे तेकुशा ग्रहण कए जा जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि अचामन करी

१. ॐ केशवाय नमः, २. ॐ नारायणाय नमः, ३. ॐ माधवाय नमः। हाथ धोली ॐ गोविन्दाय नमः, ॐ हृषिकेशाय नमः। मार्जन विनियोग मन्त्र-जल लय-ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्पस्य वामदेव ऋषिः, विष्णुर्देवता, गायत्रीच्छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः। पुनः हाथ में जल लय अपन शरीर केँ सिक्त करी-ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ् गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः।। ॐ पुण्डरीकक्षः पुनातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः। अपना ऊपर जल सँ सिक्त कय सभ वस्तु केँ सिक्त करी। तकर बाद दहिना हाथक अनामिका आँगुर में कुशक पवित्री(अंकुटी) धारण करी-ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्तुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।। पुनः जल लय आसन केँ सिक्त करी (आसन पर ढींटी)- ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनापवेशने विनियोगः। दहिना हाथ **सँ आसन स्पर्श कय मन्त्र पढ़ि आसन पवित्र करी-**

ॐ पृथिव त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धाराय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

शिखा स्पर्श करी- चिदरूपिणि! महामाये! दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥

चन्दन करी- ॐ चन्दनं वन्दयते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम् आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा। **तकर बाद कुश आ जल लय सन्ध्याक**

● **सकल्य करी-** ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ अह... उपातदुरितक्षयपूर्वक-श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं संध्यापासनं करिष्ये।

आचमन- अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतञ्च सत्यचाभीद्धतपसोऽध्यजायत। ततोरात्रजायत। ततः समुद्रोः अर्णवः॥

समुद्रार्णवादीथ सम्बत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथे स्वः॥

एहि मन्त्रें जल केँ अभिमन्त्रित कए ओहि जल सँ तीन बेर आचमन करी।

तकर बाद निम्न मन्त्रें जल के अभिमन्त्रित कए रक्षा हेतु ओहि जल सँ देह केँ दहिना सँ पाछु दिश दए वेष्टित करी- ॐ आपो मामभिरक्षन्तु।

तदुत्तर ● प्राणायाम सँ पूर्व ऋष्यादिक स्मरण करी- ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दोऽनिर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवताः प्राणायामे विनियोगः।

शिरसः प्रजापतिऋषिः ब्रह्माग्नि-वायुसूर्यो देवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः।

ई विनियोग पढ़ैत ऋष्यादि स्मरण कय आसन स्थिर कय आँखि मूनि मौन भय अगिला मन्त्र तीन-तीन बेर अथवा एक-एक बेर पढ़ैत पूरक, कुम्भक आ रेचक नामक प्रणायाम करी-

● **प्राणायाम मन्त्रः-** ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।

१ दहिना हाथक अँगूठा सँ नाकक दहिना पूड़ाकेँ दाबि वाम पूड़ा सँ वायु ग्रहण करैत नाभिमे श्यामवर्णा चतुर्भुज विष्णुक ध्यान करैत पूरक नामक प्राणायाम करी।

२. द्वितीय अनामिका आंगुर सँ वाम पूड़ा केँ दाबि वायुकेँ धारण करैत हृदयसँ कमलासनस्थ रक्तवर्ण चतुर्भुज ब्रह्माक ध्यान करैत कुम्भक नामक प्राणायाम करी।
३. तृतीय दहिना पूड़ा सँ अँगूठा छोड़ाय शनैः शनैः वायु छोड़ैत, ललाटमे शुक्लवर्ण त्रिनेत्र शिवक ध्यान करैत रेचक नामक प्राणायाम करी।

प्राणायामक बाद तीन बेर आचमन कए वाम हाथ मे जल राखि तेकुशा लए चारि बेर मार्जन करी अर्थात् ओहि जल सँ माथ केँ सिक्त करी-

● **पहिल बेर-** ॐ ई पढ़ी। ● **दोसर बेर-** भूर्भुवःस्वः ई पढ़ी।

● **तेसर बेर-** ॐ तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ई पढ़ी।

● **चारिम बेर-** ॐ आपो हिष्टेत्यादित्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।

१. ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः। २. ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ३. ॐ महेरणाय चक्षसे। ४. ॐ यो वः शिवतमो रसः। ५. ॐ तस्य भाजयतेह नः। ६. ॐ उशतीरिव मातरः।

७. ॐ तस्मा अरं गमाम वः। ८. ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ९. ॐ आपो जनयथा च नः ई पढ़ी। तदुत्तर दहिना हाथक तरहस्थी मे जल लए नाक मे जल के स्पर्श करैत श्वास धारण कएने निम्नलिखित मन्त्र पढ़लाक बाद ओहि जल केँ अपन वाम भाग में बिना देखने नीचा खसा दी-

अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धतपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः।

समुद्रार्णवादीथ संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्- विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्या-चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चाऽन्तरिक्षमथो स्वः॥ **तदुत्तर दहिना हाथ मे जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि ओहि जल सँ आचमन करी-** ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्॥

तदुत्तर सूर्यसंमुख ठाड़ भए अगिला मन्त्रें अर्घ्य दी- ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। एहि मन्त्र सँ सूर्य के अर्घ्य प्रदान कए प्रातः आ सायं काल में बद्धाञ्जलि भए आ मध्याह्न काल मे ऊर्ध्वबाहु भए निम्नलिखित मन्त्र सँ सूर्योपस्थान करी-

● **प्रातः ' कालीन सन्ध्याक समय में सूर्योपस्थापनः-**

ॐ उदुत्पत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्
ॐ चित्रं देवानामुद्गादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याऽग्नेः।

आप्रा द्यावपृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।

ॐ उद्वयं तमसः परिस्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।

(**नोट तर्पणाधिकरी व्यक्ति तर्पण कयलाक बाद गायत्री मन्त्रक जप करथि)**

● गायत्री जप विधि:-

षडङ्गन्यासः- गायत्री मन्त्रकेँ जपसँ पूर्व षडङ्गन्यास करवा क विधान अछि। अतः आगू लिखल एक-एक मन्त्रकेँ उच्चारण करैत नीचा देल क्रमश हृदयादि अंगक स्पर्श करी।

१. ॐ हृदय नमः २. ॐ भूः शिरसे स्वाहा। ३. ॐ भुवः शिखायै वषट्। ४. ॐ स्वः कवचाय हुम्। ५. ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौषट्। ६. ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् तदनन्तर कलजोड़ि ई विनियोग वाक्य पढ़ी-

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः अग्निर्देवता सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

● व्याहृतित्रयस्य प्रजापतिऋषिर्गायत्री उष्णिग्-नुष्टुभश्छन्दांस्यग्नि वाक्यादित्या देवता जपे विनियोगः।

● गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

तदुत्तर कलजोड़ि गायत्रीक ध्यानमन्त्र पढ़ी-

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च शोभिता॥

आदित्यमण्डलास्था ब्रह्मलोकगताऽथवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा॥

कलजोड़ि अगिला मन्त्रें गायत्रीक आवाहन करी-

ॐ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि। गायत्रीच्छन्दसां मातर्जपे मे सन्निधीभव॥ गायन्तं त्रायसे यस्माद् गायत्री त्वं ततः स्मृता॥

तदुत्तर न्यूनतम १० बेर अथवा यथासाध्य १०८ अथवा १००० बेर गायत्री मन्त्र जपी- **ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥**

तदनन्तर एहि मन्त्र सँ कलजोड़ि भगवती गायत्री केँ जप समर्पित करी-
ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्यी त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

तदनन्तर अर्घा मे जल लए ओहि जल सँ अगिला मन्त्रें गायत्री देवीक विमर्जन करी-
ॐ उत्तरे शिखरे जाते भूय्यां पर्वतवासिनि। ब्रह्मणा समनुज्ञाते गच्छ देवि यथासुखम्॥

तदनन्तर अर्घा वा हाथ मे जल लए अगिला मन्त्रें सूर्य केँ अर्घ्य दए प्रणाम करी-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन्! भास्वते विष्णुतेजसे। जगत्सवित्रे शुचाये सवित्रे कर्मदायिने॥ एषोऽर्घ्यः ॐ भगवते श्रीसूर्याय नमः।

तदुत्तर सूर्य केँ प्रणाम करी-ॐ जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।

ध्वान्त्वारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

॥ इति सन्ध्या वन्दना विधि॥

नित्य पार्थिव पूजन विधि:-

देवताओं की पूजा दिन में उत्तर या पूर्वाभिमुख होकर और रात्रि में उत्तराभिमुख होकर करें। पूजा के आरम्भ में दिन में सूर्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की तथा रात्रि में गणपत्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की पूजा करें। (सधवा विष्णु की जगह गौरी पूजा करें। गौरि इहा, गौर्यै नमः)

9. **पञ्चदेवता पूजा**- तैकुशा, अक्षत् लेकर आवाहन करी ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्यादिपञ्चदेवताः इहागच्छत इह तिष्ठत। **जल लेकर**- एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय-स्नानीय-पुनराचमनीयानि ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। **चन्दन**- इदमनुलेपनम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। **अक्षत्**- इदमक्षतम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। **पुष्प**- एतानि पुष्पानि ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें- एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग नानाविध-नैवेद्यानि ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। **जल**- इदमाचमनीयम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। **फूल तें पुष्पांजलि दें**- एष पुष्पाञ्जलिः ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।

२. **विष्णु पूजा**: जौ तिल लेकर आवाहन करें- ॐ भूर्भुवः स्वः भगवन् श्रीविष्णोः इहागच्छ इह तिष्ठ। **जल**-एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय- स्नानीय पुनराचमनीयानि ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। **चन्दन**-इदमनुलेपनम् ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। यवतिल-एते यवतिलाः ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। **पुष्प लय**-इदं पुष्पम् ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। **तुलसी पत्र**-इदं तुलसी पत्रम् ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। **जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें**- एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप- ताम्बूल-यथाभाग-नानाविध नैवेद्यानि ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। **जल**-इदमाचमनीयं भगवते श्रीविष्णवे नमः। **दुनु हाथ में फूल ले**-एष पुष्पाञ्जलिः ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। (मूर्ति या शालाग्राम हो तो आवाहन-विसर्जन नहीं करें) इसके बाद स्वेष्टदेवता की पूजा जप आदि करें।)

३. **कीर्त्तिमुख पूजा**: तैकुशा अक्षत् लेकर आवाहन करी- ॐ भूर्भुवः स्वः कीर्त्तिमुख इहागच्छ इह तिष्ठ। जल लेकर - एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय-स्नानीय-पुनराचमनीयानि ॐ भूर्भुवः स्वः कीर्त्तिमुख नमः। पुष्प-एतानि पुष्पाणि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। विल्वपत्र-एतानि विल्वपत्राणि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें- एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग नानाविध-नैवेद्यानि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। जल- इदमाचमनीयम् ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। फूल तें पुष्पांजलि दें- एष पुष्पाञ्जलिः ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः॥

४. **पार्थिव पूजन**- ॐ हराय नमः इस मंत्र से पवित्र मूर्तिका ग्रहण कर ॐ महेश्वराय नमः इस मंत्र से महादेव बनाकर शूलपाणये नमः ॐ शूलपाणे इह सुप्रतिष्ठितो भव। इस मन्त्र से अक्षत् लगाकर पात्र में शिव को सामने रख ध्यान करें-

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंस।

रत्नाकलोज्ज्वलाङ्गं परशुमुगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्॥

पद्मसीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृतिं वसानं।

विशवाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

परचात्-ॐ पिनाकधृमिहागच्छ इह तिष्ठ से आवाहन कर। जल लेकर एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय-स्नानीय-पुनराचमनीयानि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। चन्दन-इदमनुलेपनम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, अक्षत्- इदमक्षतम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। पुष्प-एतानि पुष्पाणि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। विल्वपत्र-एतानि विल्वपत्राणि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें- एतानि गन्धपुष्प-धूपदीपताम्बूल-यथाभागनानाविधनैवेद्यानि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, पशुपतये नमः॥ जल-इदमाचमनीयम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, पशुपतये नमः॥ इसके बाद पुष्पाक्षत चन्दन-जल से महादेव के पूर्व, ईशान, उत्तर आदि चारों ओर तथा अन्त में महादेव के उपर अष्टमूर्ति की पूजा करें-

१. ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः पूर्व मे। २. ॐ भवाय जलमूर्तये नमः ईशानकोण में। ३. ॐ रुद्रायानिमूर्तये नमः उत्तर दिशा में। ४. ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः वायव्यकोण में। ५. ॐ भीमायाकाशमूर्तये नमः पश्चिम में। ६. ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः नैऋत्यकोण में। ७. ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः दक्षिण में। ८. ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः अग्निकोण में। ९. ॐ महादेवाय नमः पार्थिव लिंग पर। अन्त में जलपुष्पाक्षतचन्दनादि से ॐ ब्रह्मणे नमः इस मन्त्र से ब्रह्मा की पूजा भूमि पर करें। उसके यथा योग्य पाट-जप स्तुत्यादि कर, पूजाक्रम से जल लेकर विसर्जन करें। ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताः पूजिताः स्थः क्षमध्वं स्वस्थानं गच्छत। ॐ भगवन् विष्णो पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ कीर्त्तिमुख पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ साम्बसदाशिव पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। तदुत्तर ॐ विष्वक्सेनाय नमः मन्त्र से भगवान पर से तथा ॐ चण्डेश्वराय नमः इससे महादेव पर से निर्माल्य हटावें।

अथ कलश-स्थापन

व्रती अर्थात् पूजन कर्ता नित्यकर्म (सन्ध्या-चन्दन आदि) कय पूजास्थान आबि शुद्धासन पर बैसि, तीन बेरि आचमन करथि १. ॐ केशवाय नमः, २. ॐ नारायणाय नमः, ३. ॐ माधवाय नमः। **हाथ बोली** ॐ गोविन्दाय नमः, ॐ हृषिकेशाय नमः। **पुनः दहिना हाथ में जल लय** ॐ अवित्रः पवित्रो वा सर्ववैश्वः गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः। अपना ऊपर जल से सिकत कय सभ वस्तु कें सिकत करी।

‘तकर बाद दहिना हाथक अनामिका आँगुर मे कुशक पवित्री (अंकुठी) धाण कौ- ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्सुनाभ्य खिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छक्रेय॥

पुनः जल लब आसन के सिकत करी(आसन पर छोटी)-ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतल छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः।

आसन पवित्र करथि- ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥ शिखा स्पर्श करी- चिद्रूपिणि। महामाये। दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि। शिखामध्ये तेजोवर्द्धिं कुरुष्व मे॥ तकर बाद चन्दन करी-ॐ चन्दनं वन्द्यते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम् आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा।

कलश-स्थापन

सोन चाँनी वा माटिक छिद्र रहित चिकन कलश पछारि कऽ, २१ आंगुर वा ८ आंगुर चाकर ६ आंगुर ऊँच पीड़ी (वेदी) वनाय पहिने अक्षत् पुष्प, चन्दन, जल लय ॐ आधारशक्तये नमः **एहि मन्त्र सँ वेदी क पूजन कय तदुत्तर मध्यमा आ अनामिका आंगुर सँ भूमि स्पर्श**- ॐ भूरसि भूमिस्स्यदितिरसि विश्वधाय्या विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवी दृ ११ ह पृथिवीं माहि गुं सीः॥

● **आगुक मन्त्र सँ गोबरसँ वेदी के नीपथि**- ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषुरीरिषः मानो वीरान्द्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्रा हवामहे।

● **आगुक मन्त्रें गंगाजल सँ सिकत करथि**- ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यायते प्रणीतो अग्निरग्निना॥

● **आगुक मन्त्र सँ यव वा धान देखि धान्यप्रक्षेपणः**- ॐ धान्यमसि धिगृहि देवान् प्राणाय त्वोदानायत्वा व्यानायत्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषेधां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रति गृष्णात्त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि॥

ॐ यव त्वं यवरूपोऽसि यज्ञार्थे निर्मितो विधेः देवानां तृप्तिकृद्यस्मात् तस्मात्त्वं वरदो भव॥ तखन अगिला मन्त्र सँ सुन्दर अलंकृत सुदृढ कलश पीड़ी (वेदी) पर मध्य मे राखथि-कलश स्थापन-ॐ आजिन्न कलशं मद्या त्वा विप्रानित्त्वन्दवः। पुनरुर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं भुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रीयः॥

● **कलश मे दही-अक्षत् मिलक लगावथि**- ॐ दधिक्राब्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्याजिनः। सुरभि नो मुखाकर्त् प्रणऽआयू ११ षि तारिषत्॥

● **जलपूर्ण कलश मे वरुण के आवाहन करथि-कलशमें जल**- ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदस्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद॥

● **कलश में गंगा जल देखि**- ॐ गङ्गाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च। सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम(यजमानस्य) दुरितक्षयकारकः॥

● **सप्तमूर्तिकाः**- ॐ स्थोना पृथिवि नो भवा नृक्षरा निवेशनी यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥

● **सर्वोषधीः**- ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रुनावहा शतं धामानि सप्त च॥

● **पञ्चरत्न**- ॐ परिवाज पतिः कविरनिर्हव्यान्क्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।

● **सुपाड़ी और जायफलः**- ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुषा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ११ हसः॥

● **द्रव्य(पैसा)**- ॐ हिरण्य गर्भः समवर्त ताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

● **दूर्भी(दूर्वा)देथिः**- ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्मरि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

● **पञ्चपरल्लव या आम्रपरल्लव दे**- ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णो वो वंसतिष्कृता॥ गोभाजऽइतिकलासथ यत्सनवथ पूरषम्। ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः। तेषा मूं सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि॥

● **पूर्णापात्र राखथिः**- ॐ पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनर पत। वस्नेव विक्रीणावहा ईषमूर्ज ११ शतक्रतो॥

● **नारियलः**- ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यातम्। इष्ट त्रिषाणा मुम इषाण सर्वलोकम् इषाण॥

● **वरत्रक स्पर्श करथि**- ॐ युवा सुवासाः परिवीत अगात् सउश्रेयान् भवति। जायमानः। तन्धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्व्यो मनसा देवयन्तः

● **दुनु हाथ सँ कलश स्पर्शक स्थिर करथि**- ॐ स्थिरो भव वीडवङ्ग आशुर्भव वाज्यर्वन्। पृथुर्भव सुखदस्त्वमनेः पुरीषवाहाणः॥

● **पुष्प अर्पण करथि**- ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यातम्। इष्पत्रिषाणमुम इषाण सर्वलोकम् इषाण॥

● **चन्दन**- ॐ गन्धद्वारा दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहापहृदये श्रियम्॥

● **पुन यवदि (सप्तधान्य) जयन्तीनिमित्त वपन करथि**- ॐ ब्रीहयश्च मे यवराश्च मे तिलराश्च मे मुद्रगराश्च मे खल्वराश्च मे प्रियङ्गवराश्च मे प्रणवराश्च मे श्यामाकारश्च मे नीवारराश्च मे गोधूमाश्च मे मसुराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥

● **अल्ला अर्पण करथि**- ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यज्व। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

● सिन्दुर-ॐ सिन्धोरवि प्राध्वने शूचनानसो वातप्रमियः पतयन्ति यद्वाः। घृतस्य धारा आरुधेन वाजीकाष्ठा भिन्दन्मूर्तिभिः पिन्वमानः। कलश क स्पर्श क -ॐ मनोजूर्तिर्जुष्टता-माचमस्य बृहस्पतिर्वाग्मिमन्तनो-त्वरिष्टं यज्ञं श्ं समिमं दधातु विश्वे देवा स इहमादयन्तामो प्रतिष्ठा। प्राण-प्रतिष्ठा क शान्तिकलश के पूजन करधि- ॐ शान्तिकलश इहगच्छ इह तिष्ठ आवाहन क ॐ शान्तिकलशाय नमः सै पञ्चोपचार पूजन क पुष्प सै पुष्पाञ्जलि दैधि- ॐ शान्तिकुम्भ महाभाग सर्वकामफलप्रद। पुष्पं गृहाण शुभं यच्छ देवाधार नमोऽस्तु ते॥ कलश पर गणपति क आवाहन आ पूजन करधि -अक्षत् पुष्प लऽ- गणानान्त्वा गणपति श्ं हवामहे व्वसो मम ऽआहम जानि गर्भधामात्वमजासि गर्भधम्। ॐ सर्वाविजहरो देव एकदन्त गजानन। पुष्पं गृहाण शुभं यच्छ देवाधार नमोऽस्तु ते॥ ॐ भूर्भुवः स्वर्भगवन् गणपते इहगच्छ इह तिष्ठ सै आवाहन क ॐ गं गणपतये नमः सै पंचोपचार पूजन क पुष्पाञ्जली दैधि- ॐ एकदन्त महाकायं लंबोदरगजाननम्। विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहम्॥ एष पुष्पाञ्जलिः ॐ गंगणपतये नमः। ॥ इति कलश स्थापनम्॥		
आशिवनदुर्गा पूजनक संकल्प - ॐ अद्य आशिवने मासि शुक्ले पक्षे प्रतिपत्तिथौ एतद् (गामक नाम) ग्रामवासिनां नानानां गोत्राणां सकलजनानाम् एतत्पूजोप- कारकाणामन्यग्राम वासिनां च उपरिस्थ-शरीराविरोधेन (व्यक्तिगत पूजन में- अमुक (गोत्र) गोत्रस्य अमुक (नाम) शर्मणः ममसदारापत्यमित्रस्य सकलवाहनस्य च उपरिस्थतशरीराविरोधेन। नवग्रहोपग्रह जनिनसकलारिष्ट इटिति- प्रशमनपूर्वकदीर्घायुष्ट्व बलपुष्टि-नैरुज्य-प्रतिपूर्वक-धनधान्याकण टक- राज्यभोगय- सन्तति- सुखान्वितिनिखिल- मनोऽभिप्रातित-फलप्राप्तिपूर्वक- साङ्गसायुध सवाहन सपरिवार श्रीदुर्गाप्रीतिकामो वार्षिकशरत्कालीन पूजाङ्गभूत कलशस्थापनमहं करिष्ये।		
हवन-विधि बनायल हवन कुण्ड या हवन वेदी क कुश सै बहारि ओहि कुश के ईशान कोन में फेकि गोबर जल सै नीपि सुक्क जडि सै पहिने दक्षिण भाग प्रदेश मात्र पूर्वाग्र रेखा कय पुनः ताहि सै उत्तर द्वितीय रेखा ताहि सै उत्तर तृतीय रेखा कऽ तीनु रेखाक मध्य सै दहिना हाथ क अनामिका अंगुष्ठा सै माटि फेकि जल सै सिक्क कऽ कासाक पात्र मे आगि लऽ अपना समुख चूपहि रेखा पर अग्नि स्थापित करधि। ब्रह्मास्थापन- अग्निनक दक्षिण भाग कुश पर अक्षत-चन्दन-पुष्पादि लय-ॐ अग्निम्कर्मणि त्वमे ब्रह्मा भव। ● प्रणीता पात्र आगाँ राखि जल सै भरि कुश सै झाँपि ब्रह्मादिश देखैत आगिक उत्तर कुश पर प्रणीता पात्र राखि दैधि। ● तखन ६४ कुश सै अग्नि कै परिस्तरण करी तदुत्तर सोलह कु हाथ में लऽ अग्निकोन सै ईशान कोन धरि कुश राखि पुनः ब्रह्मा सै अग्नि पर्यन्त, नैऋत्य कोन सै वायव्य कोन धरि, अग्नि सै प्रणिता पर्यन्त कुश राखिथि। ● तखन पैता वनेवाक कुश दोसर कुश सै लगाय तोडि प्रदेश मात्रक दू गोट पैता वनाय पैता सहित दहिना हाथें प्रणीताक जल तीनि बेरि प्रोक्षणीपात्र में दऽ दुहू हाथक अनामिका अंगुष्ठा सै उत्तराग्र पैता धऽ प्रोक्षणीक जल तीनि बेरि अपना ऊपर छीटिथि। ● तखन प्रोक्षणीपात्र वाम हाथ से लऽ दहू पैता दहिन हाथक अनामिका अंगुष्ठा सै धऽ पुनः तीनि बेरि प्रोक्षणीक जल अपना ऊपर छीटिथि। ● तखन प्रणीताक जल सै प्रोक्षणी कै सिक्क कै प्रोक्षणीक जल सै संवटित सभी वस्तु कै सिक्क करिथि। ● तखन अग्नि प्रणीताक बीच प्रोक्षणी पात्र राशि दैधि। ● घृतक पात्र मे भी दऽ आगि पर चढ़ाय जैत खढ़ घीक ऊपर प्रदक्षिणक क्रमे घुमाय आगि में छोडि दैधि। तखन सुव कै तपावाधि ● कुश सै सुव के जडि सै जडि बीच सै बीच अन्त सै अन्त भाग के झाडि सुव के पुनः तीन बेरि तपाय दहिन भाग सुव कै राखि दैधि। ● घी कै तीन बेरि आगि पर सै उत्तारि दुहू हाथक अनामिका अंगुष्ठा सै पैता लऽ प्रीक्षणी जेकाँ घी कै तीन बेरि अपना ऊपर छीटि पुनः दुहू पैता दहिना हाथक अनामिका अंगुष्ठा सै लऽ वाम हाथें घीक पात्र धयने पैता सै तीनि बेरि अपना उपर छीटि पैता प्रोक्षणी मे दऽ ● घी कै देखि किछु अधलाह वस्तु होतैं बाहर कऽ विरनी कुश वाम हाथ में लऽ तीनि गोट आमक काटी पे घी लगाय ऊटि मन सै प्रजापतिक ध्यान कऽ चुपहि आगि मे छोडि दैधि। तखन बैसि पैता सहित प्रोक्षणीक जल सै प्रदक्षिण क्रमै आगि कै कऽ प्रणीता पात्र मे पैता राखि ● घी सै बारह आहुति हवन करधि- ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये॥ (एहि मंत्र क मन मे ही उच्चारण करी) ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय। ॐ अग्नये स्वाहा इदं अग्नये॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय। ॐ भूः स्वाहा इदं सूर्याय। ॐ भुवः स्वाहा इदं अग्नये। ॐ स्वः स्वाहा इदं वायवे। ॐ त्वन्नोऽग्रने व्वरुणस्य विद्वान्वेवस्य हेडोऽउतव्यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्देवा श्ं सि प्रमुमुध्व स्मत् स्वाहा। इदमग्निवरुणायाम्। (प्रत्येक बेर सुक्क अवशेष.... जल में त्यागिदी) ॐ सत्त्वन्नोऽग्रनेऽवमो भवोतीनेदिष्ठोऽअस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणश्ं राणां व्वीहिमुडीक श्ं सुहवोनऽग्धि स्वाहा इदमग्निवरुणायाम्। ॐ अथाश्चानोऽस्यनभि शस्ति पाश्चसत्य मित्व मया अग्नि। अया नो यज्ञं वह्नास्यया नो धेहि भेषज श्ं स्वाहा। इदमग्नये। ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञिताः पाशा वितता महान्तः तेभिर्वाऽअद्य सवितेत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्कर्भेभ्यः। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम श्ं श्रेयाय। अश्वावयमादित्यवते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा, इदं वरुणाय।		
● नवग्रह समिधा सै हवन- ● सूर्य-अर्क(आकन) लकड़ी लऽ-ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा, इदं सूर्याय। ● चन्द्रपलाशक लकड़ी लऽ-ॐ इमं देवा असपत्नवं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। ● इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाश्ं राजा स्वाहा, इदं चन्द्राय। ● मंगल-खैरक लकड़ी लऽ-ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्सतिः पृथिव्या अयम् अपाशं रेताशं सि जिवति स्वाहा, इदं कुजाय। ● बुधु-चिरचिर लकड़ी लऽ-ॐ उदबुधस्वाननेः प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूरतै सशं सुजेशमयज्य। असमिन्सधस्ये अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत स्वाहा इदं बुधाय। ● बृहस्पति-पीपरक लकड़ी लऽ-ॐ वृहस्पते अतिवद्यो अर्हाहुमद्भिभाति क्रतुमज्जनेषु। यहीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविण्यधेहि चित्रम् स्वाहा, इदं बृहस्पतये ● शुक्र-गुलरकके लकड़ी लऽ-ॐ अन्नात्परिसृतो रसं ब्रह्मणा व्यापिवक्षेत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानश्ं शुक्रमध्वम इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा, इदं शुक्राय ● शनि-समि लऽ- ॐ शन्नो देवी रथिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरथिभ्रवन्तु नः स्वाहा, इदं शनैश्चराय। ● राहु-दूबि लऽ- ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा। कया शचिष्टया वृता स्वाहा, इदं राहवे ● केतु-कुश लऽ- ॐ केतुं कृण्वन् केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः स्वाहा इदं केतवे ● शाकल्य सै प्रधान देवता क हवन प्रारम्भ करी तदुपरान्त आवाहित पूजितादि देवता क हवनोपरान्त तर्पण, मार्जन कऽ ● तदुत्तर परिस्तरण वला कुश सभ समेटि घी लगाए आगुक मंत्र सै हवन से दैधि- ॐ देवा गातुवितो गातुं कित्वा गातुमित। मनसस्मत्तऽइमं देव यज्ञश्ं स्वाहा वाते धाः स्वाहा॥ ब्रह्मा क दक्षिणा ● ब्रह्मदक्षिणा- कुश, तिल, यव, द्रव्य लऽ- ॐ अद्य अमुके मासे अमुके पक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुक गोत्रोत्पन्न (यजमानक गोत्र) अमुकशर्मा (यजमानक नाम), वृत्तैतत् अमुक (जप, पाठ) होमकर्म प्रतिष्ठार्थम् इद पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतम् अमुक- गोत्राय (ब्राह्मण क गोत्र नाम) अमुकशर्मणोब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणान्तुध्वमहं सम्प्रददे। इ कहि ब्रह्मा कै दैधि। ● प्रणीता सै दुहू पैता दुहू हाथक अनामिका अंगुष्ठा सै उत्तराग्र धऽ- ॐ सुमित्रियानऽ आप ओषधयः सन्तु। एहि मन्त्र सै दुहू पैता सै प्रणीताक जल अपना ऊपर छीटि शेष जल- ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यज्व वयं द्विष्मः। कहि ईशान कोन में पलटि दैधि। ● पूर्णाहुति- सुवा मे पान, नारियल दहिन हाथें लऽ कटि आगु क मंत्र सै पूर्णाहुति करी-ॐ मूर्द्धनि दिवो ऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृतऽ आजातमग्निम्। कविश्ं सम्राजमतिथिज्जनानामासत्रापात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा। ● तदुत्तर घी सै अखण्ड धार सै वसोधारा करी- ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुत्वा कामधुक्षः स्वाहा। अग्नि में अखण्ड घीक धार दैधि, आ सुक्क अवशेष प्रोक्षणीक पात्र में त्यागी। ● सक्क पृष्ठ भाग सै भस्म लऽ त्रायुष करधि- ॐ त्रायुषं जमदग्नेः इति ललाटे। लालट मे लगाविथि।		
सर्व कर्म उपयोगी शान्तिकलश अभिषेक मंत्र- कलश हाथ में उठवैत- ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्ये महे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्रप्राशुर्भवासवाः। आमक पल्लव सै कलशक जल में घुमवैत आगुक मंत्र पढ़ि- ॐ सुरास्त्वामभिषिज्न्तु ब्रह्मविष्णु महेश्वराः। वासुदेवी जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते। आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निऋतिस्तथा॥ वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः। ब्रह्मणा सहितः शेषो दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥ कीर्तिर्लक्ष्मीधृतिर्मैधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः। बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः तुष्टिः कान्तिश्च मातरः॥ एतास्त्वामभिषिज्यन्तु देवपत्न्यः सभागताः। आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः॥ ग्रहास्त्वामभिषिज्यन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः। देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः॥ ऋषियो मनवो गावो देवमातर एव च। देवपत्न्यो हुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः॥ असत्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च। औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये॥ सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः। एते त्वामभिषिज्यन्तु सर्वकामार्थ सिद्धये॥ ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः। ॥ इति व्यास रचित अभिषेकम्॥		

१४	३१	२	२८
२०	३०	१५	१४
२०	१५	१६	१८
४४	६	१८	१८

रोग भगाने का यंत्र-

इस यंत्र को भोजपत्र पर शुभ मुहूर्त में लिखकर काले धागे में बांधकर रोगी के गले में धारण कराने से रोग जल्द ठीक हो जाता है।

गर्भ संबंधि प्रश्न:-

नवद्वयं गर्भिणीनामयुक्तं तिथिप्रयुक्तं रससंयुतञ्च।

एकेन उन् नवभागधेयं समे कुमारी विषमे कुमारः॥

स्त्री के नाम राशि को ७ से गुणाकर तत्कालिक तिथि का योगकर उसे ८ का भाग दे। भाग देने पर समराशि, २, ४, ६, ८ शेष रहे तो कन्याजन्म, विषम राशि १, ३, ५, ७ शेष रहे तो पुत्र जन्म और शून्य रहने पर गर्भस्थ जातक की मृत्यु होगी ऐसा कहना चाहिये।

अपर विधि:- तिथिवारं च नक्षत्रं गर्भिणी नामसंयुतम्। सप्तभिश्च हरेर्दभां शेषं च फलमादिशेत्॥ समे च कन्या विषमे पुत्रो निःशेषभां मरणाय नूनम्।

पुत्र पुत्री जन्म विचार:- प्रश्नवर्णीमात्रौतिथिवारक्षं च संयुतम्। सप्तभर्विशेषेण समेस्त्री विषमे पुमान्। सन्तानचिन्ता प्रश्न:- प्रश्न के दिन की संख्या को ३ से गुणा करके उसमें प्रश्नकाल की तिथि को भी जोड़ देवे और उसमें २ से भाग दे यदि १ शेष बचे तो सन्तान की सम्भावना होगी, किन्तु २ या ० शून्य बचे तो संतान की सम्भावना नहीं करनी चाहिये।

गर्भ स्थिर रहने का यंत्र- जिस राविवार को मूल नक्षत्र पड़े, उसी दिन यह यंत्र बनाकर गर्भवती स्त्री को धारण कराने से गर्भ खण्डन (गर्भपात) नहीं होता है और गर्भ स्थिर रहता है। यंत्र, भोजपत्र पर अष्ट गनध की स्याही तथा अनार की कलम से लिखें।

	ओं	ओं	ओं	ओं
	ओं	ओं	ओं	ओं
	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	१
	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	७
६२	८८	२	७	
७	३	६२	६५	
६८	६३	८	२	
६४	५	६४	६७	

कार्य भविष्यतिनवा:-

दिशा प्रहर संयुक्तम् तारकावारमिश्रितम्।

अष्टाभिश्च हरेर्दभां शेषं प्रश्नस्य लक्षणम्॥

पंचके त्वरिता सिद्धिः षटतुर्यं च दिनत्रयम्।

त्रिसप्तके विलम्बं च द्वौ चाष्टौ न च सिद्धिदौ॥

वरप्राप्ति हेतु उपाय:-

प्रथमविधि- स्वयं कन्या स्नान करके दीपक व धूप जलाकर गन्धाक्षत पुष्प से श्री माँ पार्वती की अर्चना कर **वं पं कर्त्ती** का १०८ बार जप करें तदन्तर अधोलिखित मंत्र का प्रतिदिन प्रातः व सायं पाँच पाँच माला जप करें। यह प्रयोग ४५ दिन का है। रजस्वला समय में पाँच दिनों तक बन्द रखें। **मन्त्र:- ॐ कर्त्ती काल्यावनी महामाये महायोगिन्य धीश्वरी कर्त्ती ॐ दं पं नन्दगोप सुतं देवि पतिं मे कुरुते नमः पं दं।** अन्त में ७ कन्याओं एवं २ बटुक को खीर व बेसन के बने पदार्थों का भोजन करावें।

८	३	१०	पं	लं	ह्रीं
८	७	५	ऐं	कर्त्ती	पं
४	११	६	दं	लं	पं

द्वितीय विधि- इस मंत्र को कन्या प्रारम्भ कर मृगशिरा नक्षत्र में केला ओष्ठ के नीचे की भाग पर- नाक के बाई तरफ- दाहिने भुजा पर- बायी भुजा पर- दाहिनी छाती पर- बांयीछातीपर- दोनो छाती के बीच- कमर मे- पेटपर- पीठपर- दाहिने हाथ के पुष्ठपर- बायी हाथ के पुष्ठपर- दाहिने हथेलीपर- बायी हथेलीपर- पेट के मध्य में- दाहिने पैर पर- बाये पैरपर-

अथ विवाह प्रश्न:-

कर्क तौली वषाश्चन्द्रयुक्ताः शुभनिरीक्षिताः। पृच्छाकाले तदा नृणां कन्या लाभो भवेद् शुभम्॥ योषिद् ग्रहस्थिताः शेषाः पश्यन्ति स्त्रीनवांशकम्। लगने च स्यात्तदा लाभः स्त्रियां पुंसोऽपि तादृशः॥

वशीकरणमंत्र-

ॐ नमो महायक्षिणी पतिं वश्यं आनय कुरु कुरु स्वाहा इस मंत्र को गुरु पुष्प योग में या शुभ मुहूर्त में ११ माला जप ११ दिन तक करें। तदन्तर कपूर, चन्दन और तुलसीदल को गो दुध में पीसकर मस्तक पर तिलक लगाने से पति वश में हो जाता है।

तिल-विचार:-

मस्तकपर - दाहिने आँखपर- बायी आँखपर- दोनो भौहों के बीच- ठुड्ढी में- दाहिने गाल पर- बाये गाल पर- ओष्ठ पर- गर्दनपर- कानपर- नाकपर- नाक के अग्रभागपर- ओष्ठ के नीचे- नाक के अग्रभाग पर- ओष्ठ के नीचे की भाग पर- नाक के बाई तरफ- दाहिने भुजा पर- बायी भुजा पर- दाहिनी छाती पर- बांयीछातीपर- दोनो छाती के बीच- कमर मे- पेटपर- पीठपर- दाहिने हाथ के पुष्ठपर- बायी हाथ के पुष्ठपर- दाहिने हथेलीपर- बायी हथेलीपर- पेट के मध्य में- दाहिने पैर पर- बाये पैरपर-	धनवान स्त्री से प्रेम स्त्री से कलह अधिक यात्रा स्त्री से कटुता धनवान खर्चअधिक कामसक्ति आराम-मयजीवन। अलपायु अधिकयात्रा काम मे सरलता निरधनता कार्यासिद्धि निरधनता धूर्त सम्मान व यशप्राप्ति झगड़ालू स्त्री से प्रेम। स्त्री से कलह। सुखमयजीवन। कष्टमय जीवन। उत्तमभोजनप्रिय यात्रामय जीवन धनवान। अलपव्ययी। शक्तिशाली अधिक खर्चालु डरपोक बुद्धिमान अधिकव्ययी।
--	--

ग्रहों का विशेष विवरण तथा यंत्र

ग्रह-सूर्य (Sun) रत्न- माणिक्य (Ruby) उपरत्न- लालड़ी, लाल तामड़ा, लाल हकीक धातु- स्वर्ण, ताम्बा अंगुली- तर्जनी, अनामिका रत्ती में- ३, ५ दिन- रवि, सोम, गुरु अंगुली- तर्जनी, अनामिका दानवस्तु- गोहूँ, गुड़, कमल, पुष्प, लालचन्दन, लालवस्त्र, सोना, तौबा, दक्षिणा दान समय - रविवार सूर्योदय समय। जपसंख्या - ७०००। कलियुग में - २८००० ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- सूर्य के अरिष्ट निवारण एवं कुष्ठरोग, क्षयरोग, सिर दर्द, रक्तचाप, नेत्रदोष, रक्तविकार आदि रोगों में लाभ	मंगल (Mars) रत्न- मूंगा (Coral) उपरत्न- गारनेट, लाल हकीक लालगोमेद धातु- स्वर्ण, ताम्बा अंगुली- अनामिका तर्जनी रत्ती - ६, ८, १०, १२ दानवस्तु - मूँगा, भूमि, मसूरदाल, लालवृष, गुड़, लालचन्दन वस्त्रपुष्प, सुवर्ण जपसंख्या - १०००० कलियुग में ४०,००० ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- रक्तविकार, भूतप्रेतबाधा, हृदयरोग, वायु, कफ, विकार, पित्तादि, उदर, विकार आदि।	बुध (Mercury) रत्न- पन्ना (Emerald) उपरत्न- फियोजा,हरा हकीक,मराज, ओनेक्स धातु - स्वर्ण या कांसा अंगुली - कनिष्ठा रत्ती - ३, ५, ७, दिन - बुधवार दानवस्तु - कांस्थपात्र, हरित वस्त्र, गजदन्त घृत मूँग सुवर्ण, सर्पपुष्प, कपूर जपसंख्या - ८००० कलियुग में- ३२,००० ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- त्वचा विकार, पथरी, बहुमूत्र, दमा, गुर्दा रोग, पाण्डुरोग या मानसिक रोग में लाभ।	शुक्र (Venus) रत्न- हीरा (Diamond) उपरत्न- स्फेद हकीक, स्फटिक, ओपल धातु- प्लेटिनम अंगुली- मध्यमा/कनिष्ठा रत्ती- ३,५ दिन- शुक्र दानवस्तु-ताण्डुल, श्वेतचन्दनवस्त्र, घृत, दधि, श्वेतगौ जप-संख्या ११००० कलि में - ४४,००० ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ -वीर्य विकार, दौर्बल्य, नपुंसकता, वायु प्रकोप, प्रमेह, श्वेदप्रदर, हृदय रोग, मानसिक कमजोरी आदि।	बृहस्पति (Jupiter) रत्न- पुखराज (Sapphire) उपरत्न-पीला मोती, सुनैला पीला, जिरकान धातु-स्वर्ण अंगुली-तर्जनी रत्ती-८,७ दिन- गुरुवार दानवस्तु-चने की दाल, पीतवस्त्रपुष्प, हरीदी, पुस्तक, मधु, लवणादि जप संख्या १६००० कलियुग में - ६४,००० ग्रहजन्य बाधा-मधुमेह, लीवर, पीलिया, प्रेत बाधा।	शनि (Saturn) रत्न- नीलम (Sapphire) उपरत्न-नीला जिरकान, कटैला पाइनल धातु-पंचधातु धातु या स्टील। अंगुली-मध्यमा। रत्ती-५,७, ६,१२। दिन- शनिवार दानवस्तु-माष, तैल, तिल, कालवस्त्र गौ पुष्प कुशभी, लोहा, कस्तूरी सुवर्णादि। जप संख्या २३०००।ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- दमा, क्षय, ग्रन्थीय, अर्जीण, हृदय रोग, कुष्ठ रोग आदि।
---	---	---	--	--	--

रत्न- पुखराज (Sapphire)

उपरत्न-पीला मोती, सुनैला पीला, जिरकान धातु-स्वर्ण

अंगुली-तर्जनी

रत्नी-८,७

दिन- गुरुवार

दानवस्तु-चने की दाल, पीतवस्त्रपुष्प, हरदी, पुस्तक, मधु, लवणादि

जप संख्या १६००० कलियुग में - ६४,०००

ग्रहजन्य बाधा-मधुमेह, लीवर, पीतिया, प्रेत बाधा।

रत्न- (Venus)

हीरा (Diamond)

उपरत्न-सफेद हकीक, स्फटिक, ओपल धातु- प्लेटीनम

अंगुली- मध्यमा/कनिष्ठा

रत्नी- ३,५

दिन- शुक्र

दानवस्तु-तण्डुल, श्वेतचन्दनवस्त्र, घृत, दधि, श्वेतगौ

जप-संख्या ११००० कलियुग में - ४४,०००

ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-वीर्य विकार, दौर्बल्य, नपुंसकता, वायु प्रकोप, प्रमेह, श्वेतप्रदर, हृदय रोग, मानसिक कमजोरी आदि।

रत्न- नीलम (Sapphire)

उपरत्न-नीला जिरकान, कैटैला पाइनल धातु-पंचधातु धातु या स्टील।

अंगुली-मध्यमा। रत्नी-५,७, ६,१२। दिन- शनिवार

दानवस्तु-माष, तैल, तिल, कालवस्त्र गौ पुष्प कुशुंधी, लोहा, कस्तूरी। मुक्तादि।

जप संख्या २३०००।ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- दमा, क्षय, ग्रन्थीय, अर्जीण, हृदय रोग, कुष्ठ रोग आदि।

राहु (Rahu)

रत्न- गोमेद (Zircon)

उपरत्न- गोमेद रंग का हकीक धातु-अष्टधातु या चाँदी अंगुली-मध्यमा।

रत्नी-७, ६। दिन- शनि, दानवस्तु-माषात्र, कस्तूरी, हेमनाग, तिलतैल, लोहासूप, कम्बल।

जप संख्या १८००० ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ -लकवा, ल्वचा रोग, मस्तिष्क दुर्बलता, वातजन्य रोग आदि।

केतु (Ketu)

रत्न- लहसुनिया (Cals Eye)

धातु- पंचधातु या चाँदी

अंगुली-मध्यमा। रत्नी-७,६ दिन- शनि-बुध,

दानवस्तु-माषात्र, कम्बल, कस्तूरी, तिल, लोहा, बकरा, शास्त्र, सम्यधानादि जप संख्या ७०००। ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ -वायु विकार, प्रमेह, हृदयरोग, श्वेतप्रदर, मानसिक दुर्बलता, आँत की बीमारी आदि।

कामना पूरक यन्त्रम्-

इस मंत्र को लाल चन्दन से बिल्व पर १०८ बार लिखकर श्रावण मास के सोमवार को शिव लिंग पर चढ़ाने से इच्छा शक्ति एवं मनो कामना पूर्ति होती है।

सौभाग्य वृद्धि यंत्र-

अष्ट गन्ध की स्याही एवं अनार के कलम से भोजपत्र पर लिखकर तथा सविधि त्रिगुणात्मिका दुर्गा की पूजन कर स्त्री धारण करें तो सौभाग्य की वृद्धि होती है।

गये हुए व्यक्ति को वापस बुलाने का यंत्र-

इस यंत्र को जमीन पर उंगली से लिखें, तो गया आदमी शीघ्र घर लौटा आता है। वापसी तक प्रतिदिन यंत्र लिखा करें।

१०	५	१२
११	६	७
६	१३	८

वं

वं

वं

वं

पं

पं

पं

पं

दं

दं

दं

दं

लं

लं

लं

लं

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	६

११ ६ | १३ |

१२ १० | ८ |

७ १४ | ६ |

१३	८	८
१४	१२	१०
६	१६	११

१३ ८ | ८ |

१४ १२ | १० |

६ १६ | ११ |

१३	११	६
८	१५	१०

१३ ११ | ६ |

८ १५ | १० |

५	६	३	६
४	४	७	७
६	६	३	५
५	४	७	४

५ ६ | ३ | ६ |

४ ४ | ७ | ७ |

६ ६ | ३ | ५ |

५ ४ | ७ | ४ |

२	३	५	५
६	७	५	८
४	११	६	८

२ ३ | ५ | ५ |

६ ७ | ५ | ८ |

४ ११ | ६ | ८ |

महामृत्युञ्जय मन्त्र जपविधि:-

श्री गणेशादिस्मरणपूर्वकशान्तिपाठं कृत्वा कुशत्रय तिलजलान्यादाय संकल्प:- ॐ अद्य अमुके मासि अमुके पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्रस्य श्री अमुक शर्मणः उपस्थित शरीरा-विरोधेन अखिलारिष्टझटिति प्रशमनपूर्वकं-दीर्घायुष्ट्व-बलपुष्टिनैरुज्य-प्राप्तिकामः अद्यारभ्य यथाकालं यजुर्वेदान्तात् माध्विन्दुशाखीय 'ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारिकमिव बन्ध नान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरो जूं सः हौं ॐ' इति महामृत्युंजय मन्त्रस्य एतत्सहस्र-संख्यकजपमहं करिष्ये।

विनियोगः:- ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेवकहोल-वशिष्टाः ऋषयः, पौक्तर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दोसि सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रा देवता हौं बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं महामृत्युंजयप्रीतये ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः:- वामदेव-कहोल-वशिष्टऋषिभ्यो नमः शिरसि। पौक्तर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे। सदाशिवमहामृत्युञ्जय- रुद्रदेवताभ्यो नमः हृदि। हौं बीजाय नमः नाभौ। जूं शक्तये नमः पादयोः। सः कीलकाय नमः सर्वाङ्ग्ये॥

हृदयादिन्यासः:- ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा, ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरशि जटिने स्वाहा शिखायै वषट्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारिकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुत्रान्तकाय हौं हौं कवचाय हुम्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवतेरुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्रत्रयाय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमोभगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्वालनाय मां रक्ष रक्ष अघोराय अस्त्राय फट्। इति षडङ्गन्यासः

ध्यान-चन्द्रोद्भासितमूर्द्धंजं सुर्पतिं पीयूषपात्रं वहद्वल्गुनाब्जेन दधत्सुदीप्तममलं हास्यास्पकंकेहम्। सूर्यैर्द्वानिविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्राङ्गुशाम्भोजं विश्रमस्रन् सुर्पतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्

इत्यनेन ध्यात्वा यथोपचारैः सम्पूज्य मन्त्रं जपेत्। जपसमाप्तौ शाकल्यदिभिः दशांशक्रमेण होम तर्पणमार्जनं ब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्।

लघुमृत्युंजयमन्त्रः ॐ जूं सः।

यजुर्वेदीय न्यास सहित नवग्रह मंत्र-

सूर्य मन्त्र- ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न-मृतममर्त्यञ्च।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

विनियोगः:-ॐ आकृष्णति मन्त्रस्य हिरण्यसूपाङ्गिरा ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।
❖ **देहाङ्गन्यास-** आकृष्णेन शिरसि। रजसा ललाटे। वर्तमानो मुखे। निवेशयन् हृदये। अमृतं नाभौ। मर्त्यं च कट्याम्। हिरण्ययेन सविता ऊर्वोः। रथेना जान्वोः। देवो याति जंघयोः। भुवनानि पश्यन् पादयोः।
❖ **करन्यासः:-** आकृष्णेन रजसा अंगुष्ठाभ्यां नमः। वर्तमानो निवेशयन् तर्जनीभ्यां नमः। अमृतं मर्त्यं च मध्यमाभ्यां नमः। हिरण्ययेन अनामिकाभ्यां नमः। सविता रथेना कनिष्ठिकाभ्यां नमः। देवो याति भुवनानि पश्यन् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

❖ **हृदयादिन्यासः:-** आकृष्णेन रजसा हृदयाय नमः। वर्तमानो निवेशयन् शिरसे स्वाहा। अमृतं मर्त्यं च शिखायै वषट्। हिरण्ययेन कवचाय हुँ सविता रथेना नेत्रत्रयाय वौषट्। देवो याति भुवनानि पश्यन् अस्त्राय फट्। ध्यानम्- पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सत्तत्तुरङ्गवाहनः। दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः॥

❖ **चन्द्र का वैदिक मन्त्र-** ॐ इमन्देवा असपत्नश्च सुबध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्योन्द्रियाय। इमममुख्य पुत्रममुख्ये पुत्रमस्यै विशाण्व वोऽमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणानाश्च राजा।

❖ **विनियोगः:-** इमन्देवेतिमन्त्रस्य गौतम ऋषिः, सोमो देवता, विशट् छन्दः, सोमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।
❖ **देहाङ्गन्यास-** इमं देवा शिरसि। असपत्न त्वं ललाटे। सुबध्वं नासिकायाम्। महते क्षत्राय मुखे। महते ज्येष्ठ्याय हृदये। महते जानराज्याय उदरे। इन्द्रस्योन्द्रियाय नाभौ। इममुख्य कट्याम्। पुत्रममुख्ये मेढ्रे। पुत्रमस्यै ऊर्वोः। विशाण्व वो जान्वोः। मीराजा जंघयोः। सोमोऽस्माकं गुल्फयोः। ब्रह्मणानां त्वं राजा पादयोः।
❖ **करन्यास-** इमं देवा असपत्न त्वं सुबध्वं अंगुष्ठाभ्यां नमः। महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय तर्जनीभ्यां नमः। महते जानराज्याय इन्द्रस्योन्द्रियाय मध्यमाभ्यां नमः। इमममुख्य पुत्रमस्यै पुत्रमस्यै अनामिकाभ्यां नमः। विशाण्व वोऽमीराजा कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सोमोऽस्माकं ब्रह्मणानां त्वं राजा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।
हृदयादिन्यासः:- इमं देवा असपत्न त्वं सुबध्वं हृदयाय नमः। महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय शिरसे स्वाहा। महते जानराज्याय इन्द्रस्योन्द्रियाय शिखायै वौषट्। इमममुख्य पुत्रमस्यै पुत्रमस्यै कवचाय हुम्। विशाण्व वोऽमीराजा नेत्रत्रयायवौषट्। सोमोऽस्माकं ब्रह्मणानां त्वं राजा अस्त्राय फट्।
❖ **ध्यानम्-** श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः। चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः॥

❖ मंगल वैदिक मंत्र-

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्सतिः पृथिव्या, अयमपाश्च रेताश्चसि जिन्वति।
❖ **विनियोगः:-** ॐ अग्निर्मूर्द्धाति मन्त्रस्य विरूपाङ्गिरस ऋषिः, अग्निदेवता, गायत्री छन्दः, भौमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।
❖ **देहांगन्यासः:-** ॐ अग्निः शिरसि। मूर्द्धा ललाटे, दिवः मुखे, ककुत् हृदये, पतिः उदरे। पृथिव्या नाभौ, अयं कट्याम्, अपाग्वं जान्वो, रेताग्वीस गुल्फयोः, जिन्वति पादयोः। ❖ **करन्यासः** ॐ अग्निः मूर्द्धा

अंगुष्ठाभ्यां नमः, दिवः ककुत् तर्जनीभ्यां नमः पतिः मध्यमाभ्यां नमः। पृथिव्या अयम् अनामिकाभ्यां नमः, अपाग्वं रेताग्वीस कनिष्ठिकाभ्यां नमः, जिन्वति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ❖ **हृदयादिन्यासः:-** ॐ अग्निः मूर्द्धा हृदयाय नमः, दिवः ककुत् शिरसे स्वाहा, पतिः शिखायै वषट्। पृथिव्या अयं कवचाय हुम्। अपाग्वं रेताग्वीस नेत्रत्रयाय वौषट्, जिन्वति अस्त्राय फट्। ध्यान- रक्तम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेघगतो गदाभूत। धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदायमस्मद्वरदः प्रसन्नः॥

❖ बुध का वैदिक मंत्र-

ॐ उद्बुधध्यानेः प्रतिजागृहि त्वामिष्टपूर्ते सश्रे सुज्ञेशामयञ्च।
अस्मिन्सधस्ये अष्ट्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥
❖ **विनियोगः:-** ॐ उद्बुधस्येति मन्त्रस्य परमेष्ठी प्रजापति ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः बुधो देवता, बुधप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।
देहांगन्यासः:- ॐ उद्बुधस्येति शिरसि, अग्नेः प्रति ललाटे, जागृहि त्वं मुखे, इष्टापूर्ते हृदये, सग्वं सुज्ञेशामयञ्च नाभौ, अस्मिन्सधस्ये कट्याम्, अष्ट्युत्तरस्मिन् ऊर्वोः, विश्वेदेवा जान्वोः यजमानश्च गुल्फयोः सीदत पादयोः।
❖ **करन्यासः** ॐ उद्बुधध्यानेः प्रतिजागृहि त्वम् अंगुष्ठाभ्यां नमः, इष्टापूर्ते तर्जनीभ्यां नमः, सग्वं सुज्ञेशामयञ्च मध्यमाभ्यां नमः, अस्मिन्सधस्ये अष्ट्युत्तरस्मिन् अनामिकाभ्यां नमः, विश्वेदेवा यजमानश्च कनिष्ठिकाभ्यां नमः, सीदत करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।
❖ **हृदयादिन्यासः:-** ॐ उद्बुधध्यानेः प्रतिजागृहि त्वम् हृदयाय नमः, इष्टापूर्ते शिरसे स्वाहा, सग्वं सुज्ञेशामयञ्च शिखायै वषट् , अस्मिन्सधस्ये अष्ट्युत्तरस्मिन् कवचय हुम्, विश्वेदेवा यजमानश्च नेत्रत्रयाय वौषट्, सीदत अस्त्राय फट्। **ध्यानम्** - पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्च हारी। चर्मसिंशुक सोमसुतो गदाभूत् सिंहधिरूढो वरदो बुधश्च॥

❖ गुरु(बृहस्पति) वैदिक मंत्र-

ॐ बृहस्पते अतिवदथ्यो अर्हाहुमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणस्येहि चित्रम्॥
❖ **विनियोगः-**बृहस्पतेति मन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः, ब्रह्मा देवता, बृहस्पतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।
❖ **देहांगन्यासः:-** ॐ बृहस्पते शिरसि, अतिवदथ्यो ललाटे, अर्हाहुमत् मुखे, विभाति क्रतुमत् हृदये, जनेषु नाभौ, यद्दीदयत् कट्याम्, ऋतप्रजात ऊर्वो, तदस्मासु द्रविणं जान्वोः, धेहि गुल्फयोः चित्रं पादयोः।
❖ **करन्यासः:-** ॐ बृहस्पते अतिवदथ्यो अंगुष्ठाभ्यां नमः, अर्हाहुमत् तर्जनीभ्यां नमः, द्रविणं धेहि चित्रम् करतल करपृष्ठाभ्यां नमः, यद्दीदयच्छ शवसऋतप्रजात-तदस्मासु कनिष्ठिकाभ्यां नमः, द्रविणं धेहि चित्रम् मध्यमाभ्यां नमः, जनेषु अनामिकाभ्यां नमः, यद्दीदयच्छ शवसऋतप्रजात-तदस्मासु कनिष्ठिकाभ्यां नमः, द्रविणं धेहि चित्रम् विभाति क्रतुमत् शिखायै वषट्, जनेषु कवचाय हुम्, यद्दीदयत् ऋतप्रजात-तदस्मासु नेत्रत्रयाय वौषट्, द्रविणं धेहि चित्रम् अस्त्राय फट्।
ध्यानम्- पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजोः देवगुरुः प्रशान्तः। तथाऽक्षसूत्रं च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च बिभ्रद्भरदोऽस्तु मह्यम्॥

❖ शुक्र का वैदिक मन्त्र-

ॐ अत्रात् परिभुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबक्षत्रमपयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विषानश्च शुक्रमन्थस इन्द्रस्ये-न्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥
❖ **विनियोगः** अत्रालपरिभुतेति मन्त्रस्य प्रजातिऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शुक्रो देवता, शुक्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

❖ **देहांगन्यासः:-** ॐ अत्रात् परिभुतः शिरसि, रसं ब्रह्मणा ललाटे, व्यपिबक्षत्रं मुखे, पयःसोमं हृदय, प्रजापतिः नाभौ, ऋतेन सत्त्वं कट्याम्, इन्द्रियं विषान त्वं गुदे, शुक्रमन्थस ऊर्वो, इन्द्रस्ये-न्द्रियं जान्वोः, इदं पयः गुल्फयोः, अमृतं मधु पादयोः। ❖ **करन्यासः:-** ॐ अत्रात् परिभुतः रसं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ब्रह्मणा व्यपिबक्षत्रं तर्जनीभ्यां नमः, पयःसोमं प्रजापतिः मध्यमाभ्यां नमः, ऋतेन सत्यमिन्द्रियं अनामिकाभ्यां नमः, विषानत्वं शुक्रमन्थस कनिष्ठिकाभ्यां नमः, इन्द्रस्योन्द्रियमिदमयोमृतं मधु करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ❖ **हृदयादिन्यासः:-** ॐ अत्रात् परिभुतः रसं हृदयाय नमः, ब्रह्मणा व्यपिबक्षत्रं शिरसे स्वाहा, पयःसोमं प्रजापतिः शिखायै वषट्, ऋतेन सत्यमिन्द्रियं कवचाय हुम्, विषानत्वं शुक्रमन्थस नेत्रत्रयाय वौषट्, ऋतेन सत्यमिन्द्रियं कवचाय हुम्, विषानत्वं शुक्रमन्थस नेत्रत्रयाय वौषट्, इन्द्रस्योन्द्रियमिदमयोमृतं मधु अस्त्राय फट्।
❖ **ध्यानम्-** श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दैत्यगुरुः प्रशान्तः। तथाऽक्षसूत्रञ्च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च बिभ्रद्भरदोऽस्तु मह्यम्॥

❖ शनि का वैदिक मन्त्र-

ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंख्योरभिभवन्तु नः।
❖ **विनियोगः:-** शन्नो देवीति मन्त्रस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः गायत्रीछन्दः, आपो देवता, शनिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।
❖ **देहांगन्यासः:-** शन्नो शिरसि, देवीः ललाटे, अभिष्टय मुखे, आपो कण्ठे, भवन्तु हृदये, पीतये नाभौ, शं कट्याम्। योः ऊर्वो, अभि जान्वोः, भवन्तु गुल्फयोः नः पादयोः।
❖ **करन्यासः:-** शन्नो देवीः अंगुष्ठाभ्यां नमः, रभिष्टये तर्जनीभ्यां नमः, आपो भवन्तु मध्यमाभ्यां नमः, पीतये अनामिकाभ्यां नमः, शंख्योरभि कनिष्ठिकाभ्यां नमः, भवन्तु नः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖ **हृदयादिन्यासः:-** शन्नो देवीः हृदयाय नमः, रभिष्टये शिरसे स्वाहा, आपो भवन्तु शिखायै वषट्, पीतये कवचाय हुम्, शंख्योरभि नेत्रत्रयाय वौषट्, भवन्तु नः अस्त्राय फट्।
❖ **ध्यानम्:-** नीलाम्बर शूलधरः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्पान्। चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽस्तु मह्यं वरदोऽल्पगामी॥

❖ राहु का वैदिक मंत्र-

ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्यया वृता॥
❖ **विनियोगः:-** कया नश्चित्रेति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, राहुदेवताः, राहुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।
❖ **देहांगन्यासः:-** कया शिरसि, न ललाटे, चित्रं मुखे, आ कण्ठे, भुव हृदये, दूती नाभौ, सदा कट्याम्। वृधः मेढ्रे, सखा ऊर्वोः। कया जान्वोः, शचिष्यया गुल्फयोः, वृता पादयोः।
❖ **करन्यासः:-** कया नः अंगुष्ठाभ्यां नमः, चित्र आ तर्जनीभ्यां नमः, भुवदूती मध्यमाभ्यां नमः, सदावृधः सखा अनामिकाभ्यां नमः। कया कनिष्ठिकाभ्यां नमः, शचिष्यया वृता करतल करपृष्ठाभ्यां।
❖ **हृदयादिन्यासः:-** कया नः हृदयाय नमः चित्र आ शिरसे स्वाहा, भुवदूती शिखायै वषट्, सदावृधः सखा कवचाय हुम्। कया नेत्रत्रयाय वौषट्, शचिष्यया वृता अस्त्राय फट्।
ध्यानम्- नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी करालवक्त्रः करवालयशूली। चतुर्भुजश्चक्रधरश्च राहुः सिंहधिरूढो वरदोऽस्तु मह्यम्॥

केतु का न्यास सहित वैदिक मंत्र-

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशा मर्याअपेशसे। समुषदभिरजायथाः।
❖ विनियोगः- केतुं कृण्वन्निति मन्त्रस्य मधुच्छन्द ऋषिः, गायत्री छन्दः, केतुर्देवता, केतुप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः। ❖ देहांगन्यासः- केतुं शिरसि, कृण्वन् लग्नाटे, अकेतवे मुखे, पेशो हृदये, मर्या नाभौ, अपेशसे कट्याम्। सं ऊर्ज्याः। उषर्दधिः जात्योः, अजायथाः पादयोः।
❖ करन्यासः- केतुं कृण्वन् अंगुष्ठाभ्यां नमः, अकेतवे तर्जनीभ्यां नमः, पेशो मर्या मध्यमाभ्यां नमः, अपेशसे अनामिकाभ्यां नमः, समुषर्दधिः कनिष्ठिकाभ्यां नमः, अजायथाः कारतलकर पृष्ठाभ्यां नमः, अपेशसे अनामिकाभ्यां नमः, अकेतवे शिरसे स्वाहा, पेशो मर्या शिखायै वषट्।
❖ हृदयादिन्यासः- केतुं कृण्वन् हृदयाय नमः, अकेतवे शिरसे स्वाहा, पेशो मर्या शिखायै वषट्।
❖ ध्यानम्- धूम्रो द्विबाहुर्दरो गदाधरो गृध्रानस्थो विकृताननश्च। किरीट- केयूरविभूषितो यः सदाऽस्तु मे केतुगणः प्रशान्तः।

सूर्यादि ग्रहो का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र-
सूर्य का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ हाँ हीं सः सूर्याय नमः

विनियोगः- ॐ श्रीसूर्यमन्त्रस्य अत्र ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता हां बीजम्, हीं शक्तिः, सः कीलकम् श्रीसूर्यप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।
❖ ऋध्यादिन्यासः- ॐ अत्र ऋषये नमः शिरसि। ॐ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे। ॐ सूर्यदेवतायै नमः हृदि। ॐ हाँ बीजाय नमः गुह्ये। ॐ हीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।
❖ अंगन्यासः- ॐ आं हीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ आं हीं तर्जनीभ्या नमः। ॐ ऊँ हीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ऐं हीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ औं हीं कार्तिकाभ्यां नमः। ॐ अः हीं कारतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।
❖ हृदयादिन्यासः- ॐ आं हीं हृदयाय नमः। ॐ ई हीं शिरसे स्वाहा। ॐ ऊँ हीं शिखायै वषट्। ॐ ऐं हीं कवचाय हुम्। ॐ औं हीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अः हीं अस्त्राय फट्।
❖ ध्यानम्- ॐ रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं, भानुं समस्त जगतामधिपं भजामि।
पद्मद्वयाभय-वराट्- धर्तं कराब्जैर्भाणिक्य-मौलिमरुणाङ्गरुचिं त्रिनेत्रम्॥

❖ चन्द्र का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ सों सोमाय नमः।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीसोममन्त्रस्य भृगुऋषिः पौक्तिशछन्दः सोमो देवता, सों बीजम् नमः शक्तिः, सोमप्रीतिये जपे विनियोगः।
❖ ऋध्यादिन्यासः- ॐ भृगुऋषये नमः शिरसि, ॐ पौक्तः छन्दसे नमः मुखे, ॐ सोमदेवतायै नमः हृदि, ॐ सों बीजाय नमः गुह्ये, ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः॥
❖ करन्यासः- ॐ सों अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ सों तर्जनीभ्यां नमः, ॐ सूं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ सों अनामिकाभ्यां नमः, ॐ सों कनिष्ठकाभ्यां नमः, ॐ सों कारतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥
❖ हृदयादिन्यासः- ॐ सों हृदयाय नमः, ॐ सों शिरसे स्वाहा, ॐ सूं शिखायै वषट्, ॐ सों कवचाय हुम्, ॐ सों नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ सः अस्त्राय फट्।
❖ ध्यानम्- ॐ कर्पूरस्कटिकावतामनिशं पूर्णोद्भू-बिम्बाननं मुक्तादामविभूषितेन वपुषा निर्मूलयन्तं तमः। हस्ताभ्यां कुमुदं वरञ्च दधत् नीलालकोद्भासितं, स्वीयाकंस्थमृगोदितलश्रयणुणं सोमं सुधाभिर्भजे॥

मंगल का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र- ॐ अं अंगारकाय नमः।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीभौममन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, अंगारको देवता, अं बीजं, आपः शक्तिः, अंगारकप्रीतये जपे विनियोगः।
❖ देहांगन्यासः- ॐ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि, ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे, ॐ अंगारक देवतायै नमः हृदये, ॐ अं बीजाय नमः गुह्ये, ॐ आपः शक्तये नमः पादयोः।
❖ करन्यासः- ॐ आं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ अः कारतलकरपृष्ठाभ्यां नमः, ❖ हृदयादिन्यास - ॐ आं हृदयाय नमः, ॐ ई शिरसे स्वाहा, ॐ ऊं शिखायै वषट्, ॐ ऐं कवचाय हुम्, ॐ औं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ अः अस्त्राय फट्।
❖ ध्यानम् - नमाम्यंगारकं देवं रक्ताम्बरविभूषणम्। जानुस्थवामहस्ताब्दं साभयेतरपाणिकम्।

बुध का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र- ॐ वुं बुधाय नमः।

❖ विनियोगः- ॐ अस्य श्रीबुधमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पौक्तिशछन्दः, बुधो देवता, वुं बीजं, आपः शक्तिः बुध प्रीतये जपे विनियोगः।
❖ देहांगन्यासः- ब्रह्माऋषये नमः शिरसि। ॐ पौक्तिशछन्दसे नमः मुखे। ॐ बुधदेवतायै नमः हृदये। ॐ वुं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ आपः शक्तये नमः पादयोः।
❖ करन्यासः- ॐ वुं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ वुं तर्जनीभ्या नमः। ॐ वुं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ वुं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ वुं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ वुं कारतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः।
❖ हृदयादिन्यासः- ॐ वुं हृदयाय नमः। ॐ वुं शिरसे स्वाहा, ॐ वुं शिखायै वषट्, ॐ वुं कवचाय हुम्, ॐ वुं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ वुं अस्त्राय फट्।
❖ ध्यानम्:- ॐ वन्दे बुधं सदा देवं पीताम्बरसुभूषणम्। जानुस्थवामहस्ताब्दं साभयेतरपाणिकम्॥

गुरु (बृहस्पति) का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ वूं बृहस्पते नमः।

विनियोगः- ॐ अस्यश्रीबृहस्पतिमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप्छन्द, बृहस्पतिर्देवता, वूं बीजम्, नमः शक्तिः, श्रीबृहस्पतिप्रीतये जपे विनियोगः।
❖ ऋध्यादिन्यासः- ॐ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि, ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे, ॐ बृहस्पतिर्देवतायै नमः, हृदये, ॐ वूं बीजाय नमः गुह्ये, ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः, ❖ करन्यासः- ॐ वाँ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ वाँ तर्जनीभ्यां नमः, ॐ वाँ मध्यमाभ्यां नमः, ॐ वाँ अनामिकाभ्यां नमः, ॐ वाँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ व्रः कारतल करपृष्ठाभ्यां नमः।
❖ हृदयादिन्यासः- ॐ वाँ हृदयाय नमः, ॐ वाँ शिरसे स्वाहा, ॐ वाँ शिखायै वषट्, ॐ वाँ नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ व्रः अस्त्राय फट्।
❖ ध्यानम्- तेजोमयं शक्तित्रिशूलहस्तं सुरेन्द्रसंघस्तुतपादपंकजम्। मेधानिधिम मत्स्यागतं द्विबाहुं गुरुं भजे मानस पंकजेऽहम्॥

शुक्र का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र- ॐ शुं शुक्राय नमः।

❖ विनियोगः- ॐ अस्य श्रीशुक्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पौक्तिशछन्दः, शुक्रो देवता, शुं बीजं, स्वाहाम् शक्तिः, श्रीशुक्र प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।
❖ ऋध्यादिन्यासः- ॐ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि, ॐ पौक्तिशछन्दसे नमः मुखे, ॐ शुक्रदेवतायै नमः, हृदये, ॐ शुं बीजाय नमः गुह्ये, ॐ स्वाहा शक्तये नमः पादयोः, ❖ करन्यासः- ॐ शुं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ शुं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ शुं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ शुं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ शुं कारतल करपृष्ठाभ्यां नमः।
❖ हृदयादिन्यासः- ॐ शुं हृदयाय नमः, ॐ शुं शिरसे स्वाहा, ॐ शुं शिखायै वषट्, ॐ शुं कवचाय हुम्, ॐ शुं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ शुं अस्त्राय फट्।
❖ ध्यानम्- ॐ सत्तत्प- काञ्चननिषं द्विभुजं द्यालुं पीताम्बरं धृतसरोरह-केशयुग्मम्। क्रौञ्चाननं असुरसौवितपादपदं शुक्र भजे द्विनयनं हृदि पंकजेऽहम्॥

शनि का मंत्र- ॐ शं शनैश्चराय नमः।

❖ विनियोगः- ॐ अस्य श्रीशनैश्चरमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, गायत्री छन्दः, शनैश्चरो देवता, शं बीजम्, आपः शक्तिः, श्रीशनैश्चरप्रीतये जपे विनियोगः।
❖ हृदयादिन्यासः- ॐ शं हृदयाय नमः, ॐ शं शिरसे स्वाहा, ॐ शं शिखायै वषट्, ॐ शं कवचाय हुम्, ॐ शं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ शं अस्त्राय फट्।
❖ ध्यानम्- ॐ नीलाञ्जनाभं मिहिरस्य पत्रं ग्रहेश्वरं पाशभुजंगपाणिम्। सुरसुराणां भयर्दं द्विबाहुं भजे शनिं मानस पंकजेऽहम्॥

राहु का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ रां राहवे नमः।

❖ विनियोगः- ॐ अस्य श्रीराहु मन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, पौक्तिशछन्दः, राहुर्देवता, रां बीजम्, वेशः शक्तिः, श्रीराहुप्रीतये जपे विनियोगः।
❖ देहांगन्यासः- ॐ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि, ॐ पौक्तिछन्दसे नमः मुखे, ओं राहुदेवतायै नमः हृदय, ओं रां बीजाय नमः गुह्ये, ओं वेशः शक्तये नमः पादयोः।
❖ करन्यासः- ॐ रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ रां तर्जनीभ्यां नमः, ॐ रां मध्यमाभ्यां नमः, ॐ रां अनामिकाभ्या नमः, ॐ रां कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ रां कारतल करपृष्ठाभ्यां नमः।
❖ हृदयादिन्यासः- ॐ रां हृदयाय नमः, ॐ रां शिरसे स्वाहा, ॐ रां शिखायै वषट्, ॐ रां कवचाय हुम्, ॐ रां नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ रां अस्त्राय फट्।
❖ ध्यानम्- वन्दे राहुं धूम्रवर्णं अर्धकायं कृताञ्जलिम्।
विकृतायस् रक्तनेत्रं धूम्रालङ्कारमन्त्रहम्॥

केतु का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ के केतेवे नमः

❖ विनियोगः- ॐ अस्य श्रीकेतुमन्त्रस्य श्रीब्रह्माऋषिः पौक्तिशछन्दः, केतुर्देवता, के बीजं, वेशः शक्तिः, श्रीकेतुप्रीतये जपे विनियोगः।
❖ ऋध्यादिन्यासः- ॐ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि, ॐ पौक्तिशछन्दसे नमः मुखे, ॐ केतुर्देवतायै नमः हृदये, ॐ के बीजाय नमः गुह्ये, ॐ वेशः शक्तये नमः पादयोः
❖ करन्यासः- ॐ के अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ के तर्जनीभ्यां नमः, ॐ के मध्यमाभ्यां नमः, ॐ के अनामिकाभ्यां नमः, ॐ के कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ के कारतल करपृष्ठाभ्यां नमः।
❖ हृदयादिन्यासः- ॐ के हृदयाय नमः, ॐ के शिरसे स्वाहा, ॐ के शिखायै वषट्, ॐ के कवचाय हुम्, ॐ के नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ के अस्त्राय फट्।
❖ ध्यानम्- ॐ वन्दे केतुं कृष्णवर्णं कृष्णवस्त्रविभूषणम्।
वागोरन्त्यस्ततद्धस्तं साभयेतरपाणिकम्।

ग्रहों का सामवेदीयशान्ति मन्त्र-

सूर्य- ॐ उदुत्यञ्जतावदेसं देवं वहन्ति केवतः। दृशे विशवायसूर्यम्।
चन्द्र- ॐ सन्ते पयसीस समयन्तुवाजाः संवृण्वान्मर्याभिमातिषाहः।
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांर्युतमानिधिष्व॥
कुजस्य- ॐ अग्निर्मूर्द्धीदिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयमअपा म्वं रेतार्गुंसि जिन्वति
बुधः- ॐ अग्ने विवश्वदुषसश्चित्रां राह्नो अमर्त्य आदाशुषे।
जातवेदो वहलत्वमद्या देवो उषर्बुधः॥
गुरोः- ॐ वृहस्पते परिदीयारथेन रक्षोहामित्रां अपवाधमानः।
प्रभञ्जत्सेनाः प्रमुणो युधाजयन्समाकमेध्यावितल रथानाम्॥
शुक्रस्यः- शुक्रन्ते अन्यद्यजन्ते अन्यद्विपुरुषे अहनी द्यौर्वासि विशवाहि माया॥
अवसि स्वधावन् भद्रा ते पूषन्निह रातिस्तु।
शनेः- ॐ शन्तो देवीरभिपट्य शन्तो भवन्तु पीतये। संयोरभिप्रवन्तु नः।
राहोः- ॐ कयानश्चित्र आशुवदूती सदा वृधः सख्वा। कयाशचिष्यया वृता॥
केतोः- ॐ केतुं कृण्वन् केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषर्द्धिरजायथाः।

योगिनीशान्तिमन्त्रः-

मङ्गला- ॐ हीं मंगले मंगलायै स्वाहा। पिङ्गला- ॐ रत्नौ पिङ्गले वैरिकारिणि प्रसीद फट् स्वाहा॥
धान्या- ॐ श्रीं धनदे धान्यायै स्वाहा। भ्रामरी- ॐ भ्रामरि जगतामधीश्वरि कर्तौ स्वाहा॥
भद्रिका- ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा। उल्का- ॐ उल्के मम रोगं नाशय जूँभय स्वाहा॥
सिद्धा- ॐ हीं सिद्धे मे सर्व मानसं साधय स्वाहा॥ सकंटा- ॐ हीं संकटे मम रोगं नाशय स्वाहा॥

शत्रुनाशक बगलामुखी प्रयोगः मन्त्र-

ॐ हीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय हीं ॐ स्वाहा॥
विनियोगः- ॐ अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य नारद ऋषिःत्रिष्टुप् छन्दः श्रीबगलामुखी देवता, हीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकं ममाभीष्ट सिद्धयर्थं च शत्रुणां स्तंभनार्थं जपे विनियोगः।
❖ करन्यासः- ॐ हीं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ श्रीबगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः, सर्वदुष्टानां मध्यामाभ्यां नमः, वाचं मुखं पदं स्तंभय अनामिकाभ्यां नमः। जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः, बुद्धिं विनाशय हीं ॐ स्वाहा कारतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।
❖ षडङ्गन्यासः- ॐ हीं हृदयाय नमः, ॐ श्रीबगलामुखी शिरसे स्वाहा, सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्, वाचं मुखं पदं स्तंभय कवचाय हुम्, जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्, बुद्धिं विनाशय हीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।
❖ ध्यानम्- सौवर्णासन संस्थिता त्रिनयनां पीतांशुकोटलासिनीम् हेमभाङ्गरुचिं शशांकं मुकुटां सव्यम्पक प्रयुताम्। हस्तैर्मुद्गर पाश वज्र रसनाः संबिभर्ती भुषणै र्व्याघ्राङ्गी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तीम्मनीं चिंतयेत्॥
बगलामुखी शाबर मंत्र- शाबर मंत्र शीघ्र प्रभावी होते हैं- ॐ मलयचाल बगला भगवती महाक्रीरी महाकाराली राजमुखबधनं ग्राम मुखबधनं ग्राम पुरुमुखबधनं कालमुख बधनं चौरमुखबधनं व्याघ्रमुखबधनं सर्वदुष्टग्रहबधनं सर्वजनबधनं वशीकुरु कुरु हुं फट् स्वाहा॥

विष्णु द्वादश अक्षर मन्त्रजप प्रयोग

मन्त्र- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

विनियोग:- ॐ अस्य श्रीद्वादशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापति ऋषिर्गायत्रीछन्दः, श्रीविष्णुः परमात्मा देवता, मम सर्वपापविनाश-पूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

❖ **करन्यास:-** ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, नमो तर्जनीभ्यां नमः, ॐ भगवते मध्यमाभ्यां नमः, ॐ वासुदेवाय अनामिकाभ्यां नमः, ॐ नमो भगवते कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ वासुदेवाय करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

❖ **हृदयादिन्यास:-** ॐ हृदयाय नमः, नमो शिरसे स्वाहा, ॐ भगवते शिखायै वषट्, ॐ वासुदेवाय कवचाय हुम्, ॐ नमो भगवते नेत्रत्रयाय वीषट्, ॐ वासुदेवाय अस्त्राय फट्।

❖ **ध्यानम्-** ॐ विष्णु शरदचन्द्रकोटिसदृशं शंखं रथाङ्गदहारकुण्डलं-महामौलिं स्फुरत्कंकणं श्रीवत्सांकमुदार-कौस्तुभधरं वन्दे मुनीन्द्रैः स्तुताम्।

शिवपञ्चाक्षर मन्त्र जप विधि:-

ॐ नमः शिवायः।

विनियोग:- ॐ अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः पत्तिश्रृङ्गन्दः, सदाशिवो देवता, ॐ बीजं, नमः शक्तिः शिवायेति कीलकं, चतुर्विधापुरुषार्थसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

❖ **ऋयादिन्यास:-** ॐ वामदेवऋषये नमः शिरसि, ॐ पत्तिश्रृङ्गन्दसे नमः मुखे, ॐ श्रीसाम्बसदाशिवदेवतायै नमः हृदये, ॐ बीजाय नमः गुह्ये, ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः। ॐ शिवाय कीलकाय नमः सर्वाङ्गे,

❖ **कनादिन्यास:-** ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ यं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

❖ **हृदयादिन्यास:-** ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ नं शिरसे स्वाहा, ॐ मं शिखायै वषट्, ॐ शिं कवचाय हुम्, ॐ वां नेत्रत्रयाय वीषट्, ॐ यं अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं, चारुचन्द्रावतंसं, रत्नाकरपञ्जवलाङ्गं पशुमुगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तारतुलामरगणैर्व्याघ्रकृतिं वसानं, विश्रवाद्यं विश्रववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्। ॐ नमः शिवाय।

न्यास सहित नवार्ण मन्त्र जप:- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

विनियोग:- ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुरुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिगानुष्टुभश्छन्दसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वत्योः देवताः, ऐं बीजम् ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

❖ **ऋयादिन्यास:-** ब्रह्माविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि, गायत्र्युष्णिगानुष्टुपछन्दोभ्यो नमः मुखे, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि, ऐं बीजाय नमः गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, क्लीं कीलकाय नमः नाभौ, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इस मूल मन्त्र से हाथोंकी शुद्धि करके करन्यास करें।

❖ **करन्यास:-** ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः, ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

❖ **हृदयादिन्यास-** ॐ ऐं हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्लीं शिखायै वषट्, ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्, ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वीषट्, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

❖ **अक्षरन्यास:-** ॐ ऐं नमः शिखायाम्, ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे, ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे, ॐ चां नमः दक्षिणकर्णौ ॐ मुं नमः वामकर्णौ, ॐ डां नमः दक्षिणनासापुटे ॐ यैं नमः वामनासापुटे, ॐ विं नमः मुखे, ॐ च्वैं नमः गुह्ये।

❖ **दिन्यास:-** ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः, ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यानम्- खड्गं चक्रगद्गेषुचापपरिखञ्जूलं भुशुण्डीं शिरः, शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्। नीलाश्रमद्युतिमान्मृपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौलस्त्वपि ते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्। अक्षम्रक्मरशृं गदधुकुलिशं पदमं धनुष्कुण्डिकां, दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्। शूलं पाशसुदशीने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां, सेवे सैरिषमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्। यण्टशूलहलानि शङ्खमुखसले चक्रं धनुः सायकं, हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्ताविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्। गौरीदेहसमृद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुष्मभिदैर्दयार्दिनीम्।

मालापूजन- ॐ ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः इस मन्त्र से मालाकी पूजा करके प्रार्थना करें- ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥ ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्ध्ये॥ ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय मे स्वाहा। इसके बाद ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इस मन्त्र का जप करें। गुह्यातिगुह्यगोष्यौ त्वं गृहाणाम्मन्त्रं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥ इस श्लोक से भगवति को जप अर्पण करें।

नवार्णमन्त्र के विविध कामना मन्त्रभेद (षट्कर्म प्रयोग)- मन्त्रों के स्वरूप:-

- वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (नाम) नामानं वषट् कुरुकुरु स्वाहा। वीशकरण के लिए।
- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं (व्यक्तिकनाम) फट् उच्चाटनं कुरुकुरु स्वाहा। उच्चाटन के लिए।
- क्लीं क्लीं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं (नाम) क्लीं क्लीं मोहनं कुरुकुरु क्लीं क्लीं स्वाहा। सम्मोहन के लिए।
- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं रं रं खे खे मारयमारय रं रं शीघ्रं भस्मी कुरुकुरु स्वाहा। मारण के लिए।
- ॐ टं टं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं ह्रीं वाचं मुखं पदं स्तंभयस्तंभय
- ह्रीं जिह्वाकीलयकीलय ह्रीं बुद्धिं विनाशयविनाशय ह्रीं ॐ टं टं स्वाहा। स्तम्भन के लिए।
- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं वं वं शीघ्रमाकर्षय आकर्षय स्वाहा। आकर्षण के लिए।
- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे हुं अमुकामुकेन सह विद्वेषणं कुरुकुरु स्वाहा। विद्वेषण के लिए।

नवार्ण महामन्त्र स्वरूप-

दायक है इसका न्यासादि पूर्ववत् ही होगा।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महादुर्गे नवाक्षरीनवदुर्गे नवात्मिके नवचण्डीमहामाये महामोहे महायोगनिद्रे जये मधुकैटभ विदद्राविणि महिषासुरमर्द्दिनि धूम्रलोचनसंहवि चंडमुंडविनाशिनि रक्तबीजांतके निशुंभध्वंसिनि शुंभदर्पीञ्ज देवि अष्टादशबाहुके कपाल-खट्वांग-शूलखड्ग-खेटकध शशिणि छिन्नमस्तक धारिणि रुधिरमांसभोजिनि समस्तभूत प्रेतादियोगध्वंसिनि ब्रह्मेन्द्रादिसृते देव मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् नाशय नाशय ह्रीं फट् हुं फट् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

संपुटित पाठ मे होम आहुति विचार-

संपुटित पाठ होम में किसी आचार्य का मत है

संपुटे हवनं नास्ति के अनुसार ७०० होम आहुति होगी तो किसी आचार्य के अनुसार संपुट होम आहुति संख्या २१०० होगी। कर्मठगुरु-सम्पुटे हवनं नास्ति प्रत्यहेऽपि तथैव च। नानार्थसिद्धिवैकल्ये होमन्तु विपुलं चरेत्॥ अर्थात् संपुट का हवन नहीं करे परन्तु बहुधा करते हैं, दुर्गाकल्पतरु एवं अनुष्ठान प्रकाश मे आहुति संख्या २१०० स्पष्ट लिखी गई है। यथा- होमकाले बीजसंयोगे दुर्गा मन्त्रेण पृथक् हुनेत्। कामना बीज संयोगे दुर्गा मन्त्रेण हुनेत्॥ दुर्गास्तवन मन्त्राणां संख्यां सप्तशतं भवेत्। कामना मन्त्र संख्या च शतं चैव चतुर्दश॥ मध्ये मन्त्रान् सप्तशतं होमकाले तु योजयेत्। पाठे मन्त्रं पुटं वाच्यं होम मन्त्राः पृथक् पृथक्। होमसंख्या च मन्त्राणां शतं वै चैकविंशतिः। पाठे बीजं पुटं वाच्यं होमे बीज पुटं हुनेत्। दुर्गापाठ मन्त्र को अगर किसी ऐं, ह्रीं, श्रीं, या किसी बीज मन्त्र से संपुटित किया जाता है तो सम्पुटित कामना मन्त्र के अलग होम की आवश्यकता नहीं है। बीज मंत्र एकाक्षरी हो या ५-७ बीजाक्षर होवे तो भी एक ही आहुति होगी। अतः ७०० आहुति देवे। अस्त संपुट- में एक ही आहुति होगी क्यों कि इसमें अंत में आहुति देवे। अस्त संपुट- में एक ही आहुति होगी क्यों कि इसमें अंत में कामना मंत्र या बीजाक्षर विलोम होगा। व्याहृति व बीजाक्षरों का संपुट मंत्र के आदि व अंत में लोम विलोम ही लगाता है अतः विलोमाक्षर का पृथक् होम नहीं करने पर केवल ७०० आहुति देवे। मरणादि मंत्रों में लोम कामना मंत्र फिर दुर्गा मंत्र फिर विलोमाक्षर कामना मन्त्र की आहुति देने पर २१०० आहुति देवे।

निकर्षी- प्राय उदय संपुट पाठ ही करते हैं अर्थात् दुर्गा मन्त्र के आदि-अंत में कामना मंत्र लोम ही लगाते हैं अतः २१०० आहुति देवे।

संपुटित पाठ प्रकार एवं विधि-

पाठ मंत्र से आगे पीछे कामना मंत्र लगाने से संपुटीकरण कहते है।

संपुट पाठ १. उदय संपुट, २. अस्त संपुट, ३. अर्द्धसंपुट

१. उदय संपुट- उदय संपुट में कामना मंत्र सप्तशतीपाठ मंत्र के आदि व अंत में लगाया जाता है।

२. अस्त संपुट- अस्तसंपुट बीजमंत्र या कामना मंत्र पाठ के आदि में पढ़े फिर दुर्गापाठ मंत्र पढ़े अंत में कामना मंत्र विलोम रूप से उच्चारण करे यथा- हो जूं सः ऐं मार्कण्डेय उवाच सः जूं हौं। ३. अर्द्धसंपुट- कामनामंत्र दुर्गापाठ मंत्र के आदि या अन्त में केवल एक बार पढ़े। इसका फल न्यून है परन्तु विपरीत प्रभाव नहीं होता है। प्राय सर्वत्र उदय संपुट का ही प्रचलन है। ४. तंत्र मार्ग के अनुसार व्याहृति व बीजाक्षर का संपुट प्रारंभ में लोभ तथा कामना मंत्र इष्ट के बाद विलोम क्रम से होता है तथा इनकी आहुति भी एक ही होती है। ५. भिन्नपाद प्रयोग - मंत्र के चरण भेद मध्य में बीजमंत्र या अन्य मन्त्र के संयोजन से मंत्र उपासना या दुर्गा उपासना की जा सकती है।

कामनानुसार दुर्गा पाठ के द्वादश क्रमभेद-

दुर्गा सप्तशती में तीन चरित्र है, इनको अलग अलग क्रम से करने पर अलग-अलग कामना फल विशेष रूप से मिलता है। जो निम्न प्रकार हैं- (तन्त्रग्रन्थ एवं निर्णय सिन्धु) ,

- महाविद्या क्रम- प्रथम, मध्यम उत्तर चरित्र- सर्वकामना हेतु। २. महातन्त्री- उत्तर, मध्यम, प्रथम चरित्र- शत्रुनाश, लक्ष्मीप्राप्ति हेतु। ३. चण्डी- उत्तर, मध्यम, प्रथम चरित्र-शत्रुनाश। ४. महाचण्डी- उत्तर, प्रथम, मध्यम चरित्र-शत्रुनाश, लक्ष्मीप्राप्ति हेतु। ५. सप्तशी- मध्यम, प्रथम, उत्तर चरित्र-लक्ष्मी व ज्ञान प्राप्ति एवं उल्कीलना। ६. मृतसंजीवनी- मध्यम, उत्तर, प्रथम चरित्र-आरोग्यलाभा ७. रूप दीपिका- प्रथम, उत्तर, मध्यम चरित्र-विजय व आरोग्य। (रूपं देहि जवं देहि से संपुटित)। ८. निकुंभला- मध्यम, प्रथम, उत्तर चरित्र-रक्षा हेतु, विजय हेतु (शूलेन पाहि नो देवि से संपुटित)।
- योगिनी- बालीपद्मव शमना। (प्रत्येक चरित्र से पहले सम्बोधित योगिनियों का पाठ एवं प्रत्येक मंत्र को वं शं षं सम्पुटित।
- योगिनी- बालीपद्मव शमना। (प्रत्येक चरित्र से पहले सम्बोधित योगिनियों का पाठ एवं प्रत्येक मंत्र को वं शं षं सम्पुटित।
१०. विलोम (संहार क्रम)- ७०१ वें श्लोक से प्रथम श्लोक तक विलोम क्रम से। ११. अक्षरशः विलोम पाठ- १२ वें अध्याय से प्रथम अध्याय तक काशी के पुराने विद्वानों के पास मिल सकती है १०० वर्ष पहले छपी हुई है। इसी तरह प्रत्येक चरित्र के पहले भैरव नामवलि पाठ का विधान भी मिलता। गढ़वाल क्षेत्र व अन्य सम्प्रदायों में हर अध्याय पहले भैरव नामवलि का पाठ करने का क्रम भी मिलता है। कई विद्वान कहते हैं कि सप्तशती के बाहर के मंत्र का संपुट नहीं लगा सकता, परन्तु योगिनी क्रम से यह साफ जाहिर है कि अन्य मंत्रों के संपुट लग सकते हैं। दुर्गा सप्तशती के सभी दशमहाविद्याओं के मंत्र, गायत्री मन्त्र, भगवत के मन्त्रों का, वैदिक मंत्रों का व अन्य कोई मंत्रों का संपुट लगाया जा सकता है दुर्गावर्चनसूतिः, अनुष्ठान प्रकाश में दुर्गा के बाहर के मन्त्रों के संपुट के विषय में लिखा है। स्वयं रावण भी निकुंभला का उपासक था वह भी सप्तशतीक्रम से पाठन शूलेन पाहिनो...। का संपुट लगाता था।

दुर्गापाठ मे निषिध आहुति विचार-

चण्डी स्तवे प्रतिश्लोकमेकाहुतिरिह्यते। रक्षा कवचागैमन्यै तत्र न कारयेत्॥ अर्थात्-

- कवच मंत्र एवं अस्र शस्त्र मंत्रों का हवन नहीं होता है। वैसे अगर कवच सिद्ध करना हो तो गुगुल व घृत से होम करे। क्यों कि घृत से अग्नि का आचमन होता है। २. सौभाग्य द्रव्य सिन्दुरादि का भी होम नहीं होता है मरण कर्म में सिन्दुरादि से हवन अवश्य होता है उसमें तो अग्नि का १६ वां मूलक संस्कार कुण्डानि का होता है पश्चात् विधि होम प्रारम्भ होता है। ३. चतुर्थ अध्याय के शूलेन पाहिनो देवि इत्यादि चार मन्त्रों का हवन नहीं होता, इसी तरह खड्गिनी शूलिनी मन्त्र का भी उच्चारण कर हवन नहीं करना चाहिए उक्त मन्त्र के स्थान पर नवार्ण मन्त्र अथवा श्री महालक्ष्म्यै स्वाहा से हवन करें अथवा मन्त्र को मानसिक उच्चारण कर हवन करें। ४. पांचवें अध्याय में दूत उवाच दो बार आया है इस मन्त्र से आहुति देने से फल का भाग दूत को जाता है अतः कर्मफल में न्यूनता आती है। अतः मनसा पढकर ऐं सरस्वत्यै नमः से आहुति प्रदान करें।

वास्तु विचार

ग्रामवास. विचार- मस्तक पञ्चलाभाय मुखे ऋणि धनक्षयः। कुक्षी पञ्च धनं धान्यं षट्पादे स्त्री दरिद्रता।। पृष्ठे चैक पादहनिर्नाभौ चत्वारि संपदः। गुह्ये चैक भयं पीडा हस्ते चैक तु क्रन्दनम्। वामे चैक करे भेदो ग्राम चक्रं नराकृतिः।

गणप्येज्जन्मनक्षत्रं ग्राम नक्षत्रतः सदा॥।

-ग्राम के नक्षत्र से वास पुरुष के नक्षत्र तक गिने तदनन्तरं अधोलिखित चक्र में में								
ग.न.से.								
पु.ज.न.	५	३	५	६	१	४	१	१
अवयव	मस्तक	मुख	पेट	पैर	पीठ	नाभि	गुर्त	दाय हाथ
फल	लाभ	धन	धन	स्त्री	पैर में	धन	भय	युद्ध
	हानि	धान्य	अभाव	पीड़ा	सम्पत्ति	भीड़ा		मत् भैर

भूमिपरीक्षण:-गृह निर्माण के पूर्व भूमि परीक्षण आवश्यक है। वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत भूमि की बहुत सी विधियां दी गयी है। किन्तु लोकव्यवहार में ये विधियां अत्यधिक प्रचलित हैं जो अधोलिखित है।

मध्येगृहे हस्तमित खनित्वा सम्पूरेष्यशुभिराश्रुतस्य।

सम्पूरयित्वा धिकलागुपेयः परशुर्धृदा तद्गृहमुत्तम स्यात्॥

समे समं न्यूनतरे सदोषं न कारयेत्तत्र गृहं दाचित्।

जिस भूमि पर मकान बनाना हो तो उसके बीचों बीच एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा, एक हाथ गहरा गड्ढा खोदना फिर उसी निकली हुई मिट्टी से उस गड्ढे को भर देना चाहिये यदि गड्ढा भरने से मिट्टी बच जाय तो उत्तम, बराबर हो जाय तो सम और मिट्टी कम हो जाय तो निषिद्ध होता है। इस भूमि पर मकान नहीं बनवाना चाहिये।

तदा निशादौ तत्कृत्वा पानीयेन प्रपूयेत्।

प्रातर्दृष्टे जले वृद्धिः समः पौ व्रणे क्षयः।

पूर्व विधि से गड्ढा खोदकर पानी से साव काल में पूर्णरूप से भरकर प्रातःकाल देखने पर यदि जल दिखाई पड़े तो शुभ, केवल कीचड़ बचा रहे तो सम और मिट्टी फट जाय तो भूमि हानिकारक होती है। वास्तुरत्नाकार के अनुसार जिस भूमि पर ओषधियाँ, वृक्ष, लतायें तथा हरी भरी घासें हों एवं भूमि समतल हो ऐसी भूमि निवास के लिये प्रशस्त मानी गयी है।

गजपृष्ठान्दि भूमि विचार:-गजपृष्ठ जिस स्थान में दक्षिण, पश्चिम,

नैऋत्य और वायव्य कोण की ओर भूमि ऊँची हो उसके गज पृष्ठ कहा गया है। उस भूमि पर घर बनाकर रहने से धन-धान्य, संतान, आयु की वृद्धि होती है। **कर्मपृष्ठ:-** जहाँ की भूमि मध्य में ऊँची हो और चारों दिशाओं में झुकाव हो, वह कर्मपृष्ठ भूमि कहलाती है। उस स्थान पर वास करने से नित्य उत्साह, धन-धान्य, संतान, आयु, आरोग्य, यश और प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है।

दैत्यपृष्ठ:- ईशानकोण, पूर्व और अग्निकोण में भूमि उच्च हो और पश्चिम में नीच हो तो वह दैत्यपृष्ठ कहलाती है। उसमें निवास करने से अशुभ फल मिलता है।

नागपृष्ठ:- जहाँ दक्षिण और उत्तर दोनों दिशा में भूमि उच्च हो, बीच में नीच हो तो वह भूमि नागपृष्ठ कहलाती है। यहाँ वास करने से सभी प्रकार की हानि होती है।

चारों वर्णों के आधार पर भूमि विवेचन:-

मधुरा दर्भसंयुक्ता घृतान्धा च या मही। अन्तरप्रवणा ज्ञेया ब्राह्मणानां च सा शुभा। रक्तगान्धा कषाया च शरीरेण संयुता। रक्ताप्रक्त्रावणज्ञेया क्षत्रियाणां च सा मही।। दक्षिण प्रवणा भूमिर्गर्जास्त्वा दूर्वाभिर्मन्विता। अन्नगन्धा च वैश्यानां पीत वर्णा प्रशस्यते॥ पश्चिमप्रवणा कृष्णा विकृण्ठा काश संयुता॥। मद्यगन्धा मही धन्या शूद्राणां कटुका तथा॥।

स्पष्टार्थ चक्र

ब्रह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	वर्ण
उत्तरएलव	पूर्वएलव	दक्षिणएलव	पश्चिमएलव	एलव
मधुर	कषाय	अम्ल	कटु	रस
घृतागन्ध	रक्तगन्ध	अन्नगन्ध	मद्यगन्ध	गन्ध
दर्भयुक्त	शपतयुत	बूवयुक्त	कशुयुक्त	
रक्तेवणा	रक्तेवर्ण	पीतवर्ण	कृष्णवर्ण	वर्ण

सूर्य-चन्द्र वेध विचार:- चन्द्र वेधो मकान एवं जलशयि सूर्य वेधो शुभ होता है। हृद या वाटिका सूर्य एवं चन्द्र वेधो दानों से शुभ होता है। पूर्व पश्चिम लम्बा मकान सूर्य वेधो और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधो होता है- चन्द्रवेधो

मकान में धन और कुल की वृद्धि एवं सूर्यवेधो मकान में धन-धान्य एवं संतति की क्षति होती है। बाग-बगीचा सूर्यवेधो और चन्द्रवेधो दोनों प्रशस्त माना गया है। देवालय आदि के लिये सूर्यवेध और चन्द्रवेध का विचार नहीं होता। (वास्तुरत्नाकरे)

पिण्ड ज्ञान- मकान की लम्बाई X चौड़ाई = मकान का पिण्ड होता है।

भवन के आय आदि का विचार:-

गृहपिण्ड को नव स्थानों में रखकर क्रम से ६ । ६। ६। ३। ८। ८। ४। ८। इन अंकों से अलग अलग दो २ का गुणा करके गुणनफल में क्रमशः- ८। ७। ६। १२। ८। २७। १५। २७। १२०।

इन अंकों से भाग देने पर जो शेष बचे वह क्रम से आय, वार, अंश, द्रव्य, ऋण, नक्षत्र, तिथि, योग और आयु होती है। कम आयु वाला मकान शुभ नहीं होत है।

१. आय:-ध्वज, धूम, सिंह, श्वान, वृष, खर, गज, उष्ट्र अथवा काक ये आठ प्रकार के होते है इसमें विषय आय १, ३, ५, ७ हो तो शुभ एवं सम हो २, ४, ६, ८ तो अशुभ होता है।

वार तथा अंश- सूर्य मंगल के वार राशियां और अंश मेघादिनवांश सर्वदा अग्नि भय करने वाले होते है। तथा शेष ग्रहो का वारादि अभीष्ट सिद्धि दायक होता है।

द्रव्य या धन- यदि ऋण की अपेक्षा धन अधिक हो तो गृह शुभ होता है। ऋण अधिक हो तो अशुभ होता है।

नक्षत्र- गृह और गृह स्वामी का नक्षत्र एक हो तो गृह स्वामी की मृत्यु होती है। **तिथि:-** शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ करके अमान्त तक ३० तिथियां होती है, उनमे ये ४, ६, १४, १६, १४, १७, १६, ३० तिथियां अशुभ होती हैं तथा शेष शुभ होती हैं।

योग:- अतिगण्ड, शूल, गण्ड, व्याघात, वज्र, व्यतीपात, परिध एवं वैधृति ये योग गृह में वर्जित है। **आयु:-** दीर्घायु मकान शुभ होता है एवं अल्पायु अशुभ होता है। आयु विहीन गृहे तु दुर्भाग्य प्रजायते।

राशि:- वासकर्ता का नाम राशि से २, ६, ५, १०, ११ स्थानो में ग्राम की राशि हो तो वास कर्ता के लिये वह ग्राम, मुहल्ला शुभ एवं १, ३, ४, ७, ८ और १२ स्थानो में हो तो अशुभ होता है।

भवन के लाभ आदि का विचार:- अपनी २ वर्ग संख्या को द्वि गुणित कर उसमें ग्रामादि वर्ग संख्या को जोड़कर उसमें ८ का भाग देने से जिसका शेष अधिक हो वह ऋणि होता है। अतः वासकर्ता की काकणी से गाँव, मुहल्ला या शहर की काकणी हमेशा अधिक होनी चाहिये।

स्पष्टार्थ-चक्र

क्र.	वर्ग	नामाक्षर	वर्गोश	वर्ग संख्या	वर्ग की दिशा या कोण
१.	अवर्ग	अ.इ.उ.ए.ऐ.ओ.औ	गरुण	१	पूर्व दिशा
२.	कवर्ग	क,ख,ग,घ,ङ	मार्जार	२	आग्नेय कोण
३.	चवर्ग	च,छ,ज,झ,ञ	सिंह	३	दक्षिण
४.	टवर्ग	ट,ठ,ड,ढ,ण	श्वान	४	नैऋत्य कोण
५.	तवर्ग	त,थ,द,ध,न	सर्प	५	पश्चिम
६.	पवर्ग	प,फ,ब,भ,म	मूषक	६	वायव्य कोण
७.	यवर्ग	य,र,ल,व	मृग	७	उत्तर
८.	शवर्ग	श,ष,स,ह	मेघ	८	ईशान कोण

मण्डलानयन:- पिण्ड की लम्बाई + चौड़ाई में नव से भाग देने पर क्रम से १. दाता २. भूपति ३. कर्त्तब ४. चोर ५. पण्डित ६. भोगी ७. धनाढ्य ८. दरिद्र ९. कुबेर ये नव प्रकार के मण्डल होते है। इनका फल नामक सदृश होता है।

मण्डलेशानयन:- स्वाभिहस्तप्रमाणेन दीर्घाविस्तरासंयुतम्। द्विगुणं चाष्टभिर्भक्त मण्डलाधिप उच्यते॥ इन्द्रो विष्णुर्धर्मो वायुः कुबेरो धूर्जटिस्तथा। विधत्ता विष्णुराजश्च मण्डलेशाः प्रकीर्तिताः॥ इन्द्र सौख्यं यशो विष्णुर्धर्मो दुःखं निरन्तरम्। वायश्चोच्चाटनं कुर्यात् कुबेरो धनदो भवेत्। धूर्जटिः कलहो नित्यं धाता सौख्यप्रवृद्धिदम्। सर्वसिद्धिं गणाधीशः फलमुक्तं मनीषिभिः॥।

स्पष्ट चक्र							
१	२	३	४	५	६	७	८
इन्द्र	विष्णु	यम	वायु	धन	महादेव	विधाता	गणेश
सुखद	यश	दुःख	उच्चाटन	कुबेर	कलह	सुखशान्ति	सर्वसिद्धि
							शेष देव फल

आँगन विचार- आँगन की लम्बाई चौड़ाई को आठ से गुणा करके नव से भाग देने पर क्रम से १. तत्कर २. भोगी ३. पण्डित ४. दाक्षा ५. नृपति ६. नपुंसक ७. कुबेर ८. दरिद्र ९.भयदाता ये नव प्रकार के आँगन होते हैं। इनका फल नाम के समान होता है। बीच में आँगन ऊँचा और चारो तरफ नीचा शुभ फल दायक होता है। इसके विपरीत होने पर सन्तान नाशक होता है।

राहु दिशा विचार- देवालय, जालशय और मकान के नींव खोदते समय राहु की दिशा का विचार आवश्यक होता है।

देवालये गोहे विधौ जलाशये राहोर्मुखं शम्भुदिशोर्विलोमतः।

मीनार्कः सिंहार्कः मृगाकर्मस्त्रिभेखाते मुखात्पृष्ठविदिक्शुभाभवते।

नींव या जलाशय आदि खोदते समय राहु के मुख भाग को छोड़कर पृष्ठ भाग से खोदना शुभ होता है।

कक्ष विवेचनं मुहूर्त चिन्तामणौ:-

स्नानाग्निपाकशयनास्त्रभुजश्च धान्यभांडारदैवतगृहाणि च पूर्वतःस्युः।

तन्मध्यतस्तुमध्यान्ध्यपुरीषविद्याध्यासमध्यरोदनरतौषध सर्वधाम्॥

स्नान कक्ष:- वास्तुशास्त्र के अनुसार स्नान घर बाधरूम भवन के पूर्व में होना चाहिये। स्नान घर में गिजर वाल सुखाने की मशीन आग्नेय कोण में स्थापित करना चाहिये। कक्ष के फर्श की ढाल उत्तर दिशा या पूर्व दिशा में रखनी चाहिये। शौचालय स्नान कक्ष के अन्दर नहीं होना चाहिये। किन्तु देशकाल के अनुसार स्नान कक्ष में शौचालय रखना हो तो नैऋत्य कोण व दक्षिण दिशा के मध्य तथा नैऋत्य कोण व पश्चिम दिशा के मध्य में बनवाना चाहिये। नल फव्वारा इत्यादि उत्तर पूर्वी क्षेत्र में साफ करने के लिये स्थान पश्चिम दिशा में होना चाहिये। यदि कपड़े धोने की मशीन स्नान घर में रखनी है तो केवल दक्षिण पूर्व कोने में रखनी चाहिये।

भोजनालय:- इसके लिये सबसे उत्तम स्थान भवन को अग्नेय कोण में होता है। यह सम्भव न हो सके तो दूसरा स्थान अग्नेय कोण या पूर्व के मध्य में रखना चाहिये। भोजनालय में शुद्धजल हेतु नल ईशान कोण में व पूर्व दिशा के मध्य में गैस सिलेण्डर व गैसचूल्हा अग्नेय कोण में, खाद्यान्य भण्डार

पूर्व दिशा में बरतन आदि दक्षिण या पश्चिम दिशा में रखना चाहिये। भोजन कक्ष पश्चिम दिशा में बनवाना चाहिये। अगर भोजनालय मे ही भोजन करना है तो पश्चिम दिशा में उत्तम स्थान माना जाता है। भण्डार रूम स्टोर रूम वायव्य में उत्तम होता है।

शयन कक्ष:- गृह स्वामी का शयन कक्ष दक्षिण व पश्चिम में होना चाहिये। सर्वदा पूर्व या दक्षिण की तरफ शिरा सोना चाहिये।

प्राकशिरः शयने विद्याद् धनमायुश्च दक्षिणे।

पश्चिमे प्रबला चिन्ता हानि मृत्युर्नश्नोत्तरे॥

पूजाघर:- ईशान कोण में देवताओं का वास होता है। इसलिये ईशान में पूजा घर शुभ होता है। पूजा के समय उत्तर दिशा या पूर्वदिशा की तरफ मुख होना चाहिये। पूजा घर में शयन नहीं करना चाहिये। स्थानाभाव में यदि शयन करना हो तो पूजा स्थल पर लाल फटा डाल कर रखें। हवन आदि की व्यवस्था अग्नि कोण में करना चाहिये। पूजा की दीवार एवं फर्श सफेद या हल्के पीला रंग का होना चाहिये। नैऋत्य कोण में अस्त्रशस्त्र कक्ष, अग्नि कोण में बिजली, जनरेटर अर्थात् ऊर्जा से संबंधित कक्ष, उत्तर दिशा में कोषधर, वायव्य में पशु गृह, अग्निकोण तथा पूर्व दिशा के मध्य में घृत दीधिमथन आदि का कक्ष उत्तर पश्चिम में अतिथि कक्ष या सामान्य कक्ष, नैऋत्य पश्चिम में अध्ययन कक्ष, वायव्य उत्तर में रति कक्ष, ईशान कोण मे चिकित्सा कक्ष, एवं नैऋत्य कोण में प्रसूति कक्ष बनवाना चाहिये।

द्वार विवेचन:- मकान की लम्बाई जिस दिशा में द्वार बनाना हो उस दिशा की लम्बाई बराबर-बराबर नव ८ भागो करके पाँच भाग दाहिने और तीन भाग बायें की तरफ छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिये।

शिलान्यास:- पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अंदरपूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिये, बाकी ४ शिलाओं को स्वम्प-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिये।

गृहारम्भे वास्तु पुरुष स्थिति ज्ञानम्- गृहारम्भ की तिथि संख्या में ४ जोड़कर दूना करके उसमे गृहपति के नामाक्षर संख्या को जोड़कर ३ का भाग देना, यदि १ शेष बचे तो स्वर्ग में, २ शेष बचे तो पाताल में एवं ० शून्य शेष बचे तो मृत्युलोक में वास्तु पुरुष का निवासो होता है। स्वर्ग एवं पाताल में वास्तु पुरुष का निवास होने पर लाभ एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा मृत्युलोक में निवास होने पर कष्टदायक एवं मृत्युदायक होता है।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का- ब्रह्मा के मन्दिर के बगल में तथा विष्णु, सूर्य, शिव-मन्दिर के सामने, जैन-मन्दिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

वास्तुदोष निवारण के उपाय:- १. घर में वास्तुदोष होने पर उचित यही है कि उसे यथा संभव वास्तुशास्त्र के अनुसार ठीक करके ध्यान रहे निर्मित मकान का अधिक तोड़ फोड़ करने से वास्तुभंग दोष लगता है, ऐसी स्थिति में उसे बेच कर दुसरा मकान बनाकर रहना उचित होता है। ऐसा संभव न हो सके तो वास्तुदोष के निवारणार्थ वर्ष में कम से कम एक बार नवरात्रि में दुर्गासप्तशती का पाठ, श्रीरामचरितमानस का पाठ अष्टाण्ड कीर्तन या भागावत यज्ञ आदि अवश्य करें। २. अमावस्या तिथि को गाय के उपले एवं समी की लकड़ी, तिल, चावल, जौ, शक्कर, गुगुल, जटामशी तथा चन्दन चूर्ण मिलाकर मन्त्र द्वारा ११०० आहुति करने से वास्तुदोष दूर हो जाता है। यह वर्ष में एक बार करना चाहिये। घर में तुलसी का पौधा लगाने से गृह में सुखशान्ति रहती है।

तिथयः	दिनानि	तिथि	तिथि	नक्षत्राणि	नक्षत्राणि	योगः	कणाणि	चन्द्राणयः	स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	मु०	ने०	अ०
द. प.	घ. मि.	द. प.	घ. मि.	द. प.	घ. मि.	द. प.	घ. मि.	रात्र्यादि	रात्र्यादि	घं. मि.	घं. मि.	ता०	ता०	ता०	ता०
१	गुरु	३८।१७	रा.८।४०	श्र.३२।०२	सं.६।१०	आ.४६।५५	बा.०६।५५	मकर	३।१२।५२।४५	३३।१६	५।२१	६।३६	१६	१४	३०
२	शुक्र	४०।८	रा.८।२४	ध.३५।३२	रा.७।३४	सौ.४८।४२	तै.८।१३	म.दि.६।५२	३।१३।४८।५७	३३।१३	५।२१	६।३६	१७	१५	३१
३	शनि	४०।३१	रा.८।३४	शत.३७।४५	रा.८।२६	शो.४६।२४	च.१०।२०	कुम्भ	३।१४।४७।०८	३३।१०	५।२२	६।३८	१८	१६	३१
४	रवि	३८।३२	रा.८।१२	पू.३३।४१	रा.८।५१	अ.४३।०७	बज.१०।०२	कु.दि.२।४६	३।१५।४४।२१	३३।०७	५।२३	६।३७	१८	१७	२
५	सोम	३७।३०	रा.८।२३	उ.३३।२८।२६	रा.८।४५	सु.३८।५०	कौ.८।३१	मीन	३।१६।४१।३३	३३।०४	५।२३	६।३७	२०	१८	३
६	मंगल	३४।२१	रा.७।८	रे.३७।०२	रा.८।१३	धू.३३।४४	गर.५।५६	मी.रा.८।१३	३।१७।३८।४४	३३।०१	५।२४	६।३६	२१	१८	४
७	बुध	३०।१५	सं.५।३०	अ.३४।५६	रा.७।२२	शू.२७।५१	वि.२।१८	मेघ	३।१८।३५।५५	३२।५८	५।२४	६।३६	२२	२०	५
८	गुरु	२५।२१	दि.३।३३	भ.३१।५४	सं.६।१०	ग.२१।१८	कौ.२५।२१	मे.रा.११।४८	३।१८।३३।०६	३२।५३	५।२५	६।३५	२३	२१	६
९	शुक्र	१८।४७	दि.१।२०	कृ.२८।१७	दि.४।४४	चू.१४।१४	गर.१८।४७	वृष	३।२०।३०।२४	३२।५२	५।२५	६।३५	२४	२२	७
१०	शनि	१३।५२	दि.११।५८	रो.२४।१६	दि.३।८	शु.६।५१	वि.१३।५२	वृ.रा.२।१८	३।२१।२७।४१	३२।५०	५।२६	६।३४	२५	२३	८
११	रवि	७।४२	दि.८।३२	मु.२०।०५	दि.१।२८	ह.५।३२	बा.७।४२	मिथुन	३।२२।२४।५८	३२।४७	५।२७	६।३३	२६	२४	९
१२	सोम	१।३१	प्रा.६।०३	आ.१५।५६	दि.११।४८	क.४३।५८	तै.१।२१	मि.रा.४।३८	३।२३।२२।१५	३२।४४	५।२७	६।३३	२७	२५	१०
१४	मंगल	४८।५१	रा.१।२४	पुन.१२।०१	दि.१०।१६	सि.३६।४०	वि.२३।१०	कर्क	३।२४।१८।३२	३२।४१	५।२८	६।३२	२८	२६	११
३०	बुध	४४।१४	रा.११।०८	पु.८।३०	दि.८।५२	व्य.२८।४८	च.१७।०३	कर्क	३।२५।१६।४८	३२।३८	५।२८	६।३२	२८	२७	१२

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

अर्धग्रहराब्धचक्रम्

तिथयः	दिनानि	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	मिश्रमानम्	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिंह.अं.	कन्या.अं.	तुला.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
रात्र्यादि	रात्र्यादि	रात्र्यादि	रात्र्यादि	रात्र्यादि	रात्र्यादि	रात्र्यादि	रात्र्यादि	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.
१. गुरु	१।२६।३०।१७	२।२६।२३।५४	३।१३।१५।१७	४।२८।५६।५०	११।२०।०८।१४	१०।०८।०१।२८	४६।३८	०।३७	२।१७	४।१८	६।३४	८।५२	११।०८	१३।२४	१५।४२	१७।५८	२०।००	२१।४०	२२।५८	दि.३।२१।६।३८
२. शुक्र	१।२७।१०।४७	२।२७।४७।१४	३।१३।२८।४५	४।२८।५६।३३	११।२०।०७।२५	१०।०८।५८।१७	४६।३६	०।३३	२।१३	४।१४	६।३०	५।४८	११।०४	१३।२०	१५।३८	१७।५५	२०।५६	२१।३६	२२।५४	दि.८।४१-१२।००
३. शनि	१।२७।५१।१७	२।२८।१०।३४	३।१३।४२।१३	५।००।५६।१६	११।२०।०५।३६	१०।०८।५५।०६	४६।३४	०।३०	२।१०	४।११	६।२७	८।४५	११।०१	१३।१७	१५।३५	१७।५२	२०।५३	२१।३३	२२।५१	प्रा.५।२२-७।१।३७-३।१६।सं.४।५५-६।३८
४. रवि	१।२८।३१।४६	३।००।३३।५४	३।१३।५५।४१	५।०१।५५।५८	११।२०।०३।४७	१०।०८।५१।५५	४६।३२	०।२६	२।०६	४।०७	६।२३	८।४१	१०।५७	१३।१३	१५।४८	१७।४८	२०।४८	२१।२८	२२।४७	दि.१०।२०-१।३८
५. सोम	१।२८।१२।१५	३।०१।५७।१३	३।१४।०८।०८	५।०२।५५।४२	११।२०।०१।५८	१०।०८।४८।४४	४६।३१	०।२३	२।०३	४।०४	६।२०	८।३८	१०।५४	१३।१०	१५।२८	१७।४५	२०।४२	२१।२६	२२।४४	दि.७।२-८।४१।दि.३।१७-४।५६
६. मंगल	१।२८।५२।४४	३।०३।२०।३२	३।१४।२२।३७	५।०३।५५।२५	११।२०।००।०८	१०।०८।४५।३३	४६।३०	०।१६	१।५८	४।००	६।१६	८।३४	१०।५०	१३।०६	१५।२२	१७।४२	२०।४२	२१।२२	२२।४०	दि.७।३-८।४२।दि.१।३८-३।१८
७. बुध	२।००।३३।१३	३।०४।४३।५१	३।१४।३६।०५	५।०४।५५।०७	११।१८।५८।२०	१०।०८।४२।२२	४६।२८	०।१६	१।५६	३।५७	६।१३	८।३१	१०।४७	१३।०३	१५।२१	१७।३८	२०।४०	२१।१८	२२।३७	दि.८।४२-१०।२१।दि.१।००-१।३८
८. गुरु	२।०१।१३।४२	३।०६।०७।१०	३।१४।४३।३२	५।०५।५४।४८	११।१८।५६।३०	१०।०८।३८।११	४६।२८	०।१३	१।५३	३।५४	६।१०	८।२८	१०।४४	१३।००	१५।१८	१७।३६	२०।१६	२१।१६	२२।३४	दि.३।१६-६।३५
९. शुक्र	२।०१।५३।३१	३।०७।४३।३२	३।१५।०२।३६	५।०६।५२।१०	११।१८।५४।३३	१०।०८।३६।००	४६।२६	०।०८	१।४८	३।५०	६।०६	८।२४	१०।४०	१३।५६	१५।१४	१७।३२	२०।३३	२१।१२	२२।३०	दि.८।४३-१२।००
१०. शनि	२।०।३३।२०	३।०८।१८।५४	३।१५।१५।४०	५।०७।४८।३१	११।१८।५२।३६	१०।०८।३२।४८	४६।२४	०।०३	१।४६	३।४७	६।०३	८।२१	१०।३७	१३।५३	१५।११	१७।२८	२०।३०	२१।०८	२२।२७	प्रा.५।२६-७।४।दि.१।३८-३।१७।दि.४।५५-६।३४
११. रवि	२।०३।१३।०८	३।१०।५६।१६	३।१५।२८।४४	५।०८।४६।५२	११।१८।५०।३८	१०।०८।२८।३८	४६।२२	१।४३	१।४३	३।४४	६।००	८।१८	१०।३४	१३।५०	१५।०८	१७।२६	२०।०६	२१।०६	२२।२४	दि.१०।२१-०।३७
१२. सोम	२।०३।५२।५६	३।१२।३२।३८	३।१५।४१।४८	५।०८।४४।१३	११।१८।४८।४२	१०।०८।२६।२७	४६।२०	१।३६	१।३६	३।४०	५।५६	८।१४	१०।३०	१३।४६	१५।०४	१७।२३	२०।२३	२१।०२	२२।२०	दि.७।५-८।४३।दि.१।५५-४।५३
१४. मंगल	२।०४।३२।४४	३।१४।०८।००	३।१५।०६।५१	५।१०।४१।३४	११।१८।४६।४५	१०।०८।२३।१६	४६।१८	२।३५	१।३६	३।३७	५।५३	८।११	१०।२७	१३।४३	१५।०१	१७।१८	२०।२०	२१।५८	२२।१७	दि.७।६-८।४४।दि.१।३८-३।१६
३०. बुध	२।०५।१२।३२	३।१५।४५।२२	३।१६।०७।५४	५।११।३८।५५	११।१८।४४।४८	१०।०८।२०।०५	४६।१८	२।३४	१।३२	३।३३	५।४८	८।०७	१०।२३	१३।३८	१४।५७	१७।१५	२०।१६	२१।५६	२२।१३	दि.८।४४-१०।२२।दि.१।००-१।३८

श्रावण कृष्ण पक्ष

सन् १४३४ साल, सं.-२०८३, शके १९४८, सौम्यगोलः, गाम्यायनम्, वर्षर्तुः (राहु) पश्चिमेकालः अशुद्धसमयः

दिनांकः ३० जुलाई से १२ अगस्त २०२६ ई०

श्रावणर्तुर्ज्येष्ठश्रम, भद्रवारम्भः सं. ६।१० उ., दक्षिणां विना यात्रा श्रावणायां, शिववासः रा. ८।४० या, विश्वमित्रता द्विसः

अशुभशयन व्रतं, द्वितीयायां मृत्युयोगः, अग्निवासः

अगस्त मासारम्भः, भद्रा-१०।१० उ. ४०।३१ या, सिद्धयोगः रा. ९।२४ उ.

श्रीगणेश ४ व्रतं, शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः रा. ९।१२ उ.

मौन-५ मनसादेव्युत्थानं, मधुश्रावणी पूजारम्भः, श्लेषायां रविः ४६।५८ पु. स्त्री. चं. चं. योगो अश्व वाहनं वह्नि नाडी तदीशो भौमः वायुवृष्टि योगः, दशतिथिः रा. ८।२३ उ., ❖

भद्रा-३४।२१ उ., भद्रा समाप्ति रा. ८।१३ उ., दशतिथिः सं. ७।८ या, गंड दि. ३।२५ उ. रा. ९।२५ या, मृत्युयोगः सं. ७।८ या. ततः अमृतयोगः, सर्वाथसिद्धयोगः रा. ८।४५ उ.

मन्वन्तरादिः, शिववासः दि.३।३३ या, अमृतयोगः दि.३।०३ या. ततः मृत्युयोगः

भद्रा २।१८ या, उत्तरां विना यात्रा सप्तम्यां, शिववासः सं. ५।३० उ., अग्निवासः, सिद्धयोगः सं. ५।३० या. ततः मृत्युयोगः

भद्रा ४६।५० उ., अग्निवासः, अमृतयोगः दि.१।२० या.

व्या. योग ५।२।२३, भद्रा १३।५२ या, मृत्युयोगः दि.११।५९ या. ततः शिववासः-अमृतयोगश्च, सर्वाथसिद्धयोगः दि. ३।०८ या.

कामदा ११ व्रतं सर्वेषां, सूतीन्मनं, पश्चिमां विना यात्रा द्वादश्यां मुगशिरसि, शिववासः, अग्निवासः-मृत्युयोगश्च दि. ८।३२ या. ततः मध्यमयोगः, भारत छोड़ो आन्दोलन

१३तिथि ५।३।५८, प्रदोष-१३व्रतं, दूर्वादलेन पारणम्, भद्रा-५।३।२२ उ., सोमवारी व्रतं, शिववासः-मृत्युयोगश्च प्रा. ६।०३ या. ततः अग्निवासः

प्रदोष-१४व्रतं, भद्रा-२३।१० या, पश्चिम यात्रा पुनर्वसौ ततो उत्तरां विना यात्रा चतुर्दश्यां, रात्र्यप्रदयोग रा. १।२४ या.

श्रावणी-३० स्नानदानादिः, गंड दि. ६।२८ उ., शुभवारान्वितदर्श सुभिक्षं च प्रजासुखम्, शिववासः रा. ११।०९ या, अग्निवासः

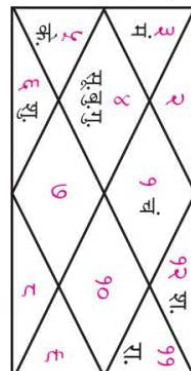
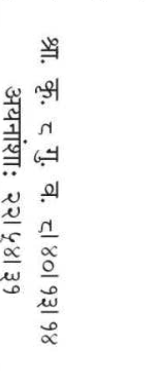
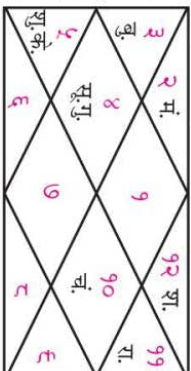
विविधविषयाः- सोमव्रतं- सोमवारे व्रतं कार्यं श्रावणे वै यथाविधि।

शक्तानुष्ठापणं कार्यमथवा निशिभोजनम्। कस्यापि कृतव्रतस्याध्यापनावश्यकता नदिपुराणे- कुर्यादध्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यतु तद् व्रतं निष्फलं भवेत्। श्रावणकृष्णपञ्चम्यां मनसादेव्याः उत्थापनं पूजनञ्च कार्यम्। अस्यामन्तकिक्त (निष्पन्नबीजपूर) रससेवनं पुष्टिकरम्। सायंकाले च मूषकमृत्तिकादुरधलाजान् सर्पमन्त्रेणाभिमन्त्र्य गृहेषु विकिरेत्।

सर्पमन्त्रस्तु- हू सपर्पा चौसपर्पा झाड़े सारे कारे विषा आस्तीक आस्तीक आस्तीक। आस्तीकेति वचः शुल्का यः सर्पो न निवर्तते शतधा भिद्यते मूर्द्धा शिंशवृक्ष फलं यथा।

पञ्चम्यां नाग पूजनं- श्रावणे मासि पञ्चम्यां कृष्णपक्षेऽथवा सिते। द्वारस्थोभयतो लेख्यो गोमयेन विषोलेव्णाः। पूजयेद्विधिवद्वीर दधि दूर्वाकुरैः कुशैः। गन्धपुष्पोपहारैश्च ब्राह्मणानां च तर्पणैः। ये त्वस्यां पूजयन्तीह नागान् भक्तिपुरस्सराः। तेषा सर्पतो वीर भयं भवति न कुत्रचित्।

पञ्चम्यां शकुन्म्- श्रावणशुक्लपञ्चम्यां दक्षिणपश्चिमवार्यौ दुर्भिक्षमन्यथा सुभिक्षम्। नभसि शुक्ल दलेऽचलेसंज्ञके रवितिथाबुदयो। रविचन्द्रयोः। भवति चेज्जलदैरिह संवृता वसुमती जलदा बहुतोयदाः।



तिथयः	दिनानि	तिथि	तिथि	नक्षत्राणि	नक्षत्राणि	योगः	कणाणि	चन्द्राणयः	स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	मु०	ने०	अ०
दिनानि	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घ. मि.	रात्र्यादि	घं. मि.	घं. मि.	ता०	ता०	ता०	ता०
१	शनि	५।००	दि.७।५१	उ.फ.२०।५८	दि.२।१५	शु.२६।१०	बक्.५।००	कन्या	४।२५।११।२६	३०।४६	५।५१	६।०८	१	२७	१२
२	रवि	३।५२	दि.७।२५	ह.२१।५२	दि.२।३७	शु.२६।०१	कौ.३।५२	क.रा.३।०२	४।२६।०८।५१	३०।४२	५।५२	६।०८	२	२८	१३
३	सोम	३।५८	दि.७।२७	चि.२४।००	दि.३।२८	ब.२३।४७	गर.३।५८	तुला	४।२७।०८।१६	३०।३८	५।५२	६।०८	३	२८	१४
४	मंगल	५।२६	दि.८।०३	स्वा.२७।२६	दि.४।५१	ए.२२।३५	वि.५।२६	तुला	४।२८।०६।४१	३०।३४	५।५३	६।०७	४	३०	१५
५	बुध	७।५८	दि.८।०६	वि.३१।५७	रा.६।४१	कै.२२।१३	बा.७।५८	तु.दि.१२।१४	४।२८।०५।०५	३०।३१	५।५४	६।०६	५	३१	१६
६	गुरु	११।४५	दि.१०।३७	अनु.३७।२७	रा.८।५४	वि.२२।४४	तै.११।४५	बुधिचक्र	५।००।०३।२८	३०।२८	५।५५	६।०५	६	१	१७
७	शुक्र	१६।१५	दि.१२।२५	ज्ये.४३।३५	रा.१०।२१	प्री.२३।४८	क.१६।१५	वृ.रा.१०।२१	५।०१।०२।११	३०।२४	५।५५	६।०५	७	२	१८
८	शनि	२१।२१	दि.२।२८	मूल.५०।०५	रा.१।५८	आ.२५।१२	बक्.२१।२१	धनु	५।०२।००।५३	३०।२०	५।५६	६।०४	८	३	१८
९	रवि	२६।२८	दि.४।३२	पूषा.५६।३१	रा.४।३३	सौ.२६।४२	कौ.२६।२८	धनु	५।०२।५८।३५	३०।१६	५।५७	६।०३	९	४	२०
१०	सोम	३१।१६	सं.६।२८	उ.षा.६०।००	अहोरात्र	शो.२७।५३	गर.३१।१६	ध.दि.११।१०	५।०३।५८।१६	३०।१२	५।५८	६।०२	१०	५	२१
११	मंगल	३५।२३	रा.८।०७	उ.षा.२।२३	प्रा.६।५५	अ.२८।४५	क.३।१८	मकर	५।०४।५६।५७	३०।०८	५।५८	६।०२	११	६	२२
१२	बुध	३८।२८	रा.६।२२	श्र.७।२७	दि.८।५८	सु.२८।३१	बक्.६।५५	म.रा.६।४५	५।०५।५५।३८	३०।०४	५।५८	६।०१	१२	७	२३
१३	गुरु	४०।३१	रा.१०।१२	धनि.११।२५	दि.१०।३४	धृ.२७।३४	कौ.६।२८	कुंभ	५।०६।५४।१८	३०।००	६।००	६।००	१३	८	२४
१४	शुक्र	४१।१०	रा.१०।२८	शत.१४।१३	दि.११।४२	शु.२५।३७	गर.१०।५०	कुंभ	५।०७।५३।१७	२८।५६	६।०१	५।५८	१४	९	२५
१५	शनि	४०।३०	रा.१०।१४	पू.षा.१५।४६	दि.१२।२०	मं.२२।४०	वि.१०।५०	कु.६।११	५।०८।५२।१५	२८।५२	६।०२	५।५८	१५	१०	२६

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिरथ

दैनिकलनसारणी चक्रम्

तिथियः	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	मिश्रमानम्	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिंह.अं.	कन्या.अं.	तुला.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
दिनानि	रात्र्यादि	रात्र्यादि	रात्र्यादि	रात्र्यादि	रात्र्यादि	रात्र्यादि	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.
१. शनि	रा.२५।०२।४३	५।१०।३५।४५	३।२२।५६।५६	६।०४।२६।०८	११।१७।५४।४८	१०।०६।४१।२४	४५।२३	२१।५४	२३।३३	१।३५	३।५२	६।१०	८।२६	१०।३८	१५।००	१५।१८	१७।१८	१८।५७	२०।२६
२. रवि	रा.२५।३६।३०	५।१२।१८।२१	३।२३।०८।१५	६।०४।५३।०८	११।१७।५०।००	१०।०६।३८।१३	४५।२१	२१।५१	२३।३०	१।३२	३।४८	६।०७	८।२३	१०।३५	१५।५७	१७।१५	१८।५४	२०।२३	२०।२३
३. सोम	रा.२६।१६।१७	५।१४।००।५६	३।२३।२१।३३	६।०५।१७।१०	११।१७।४५।१३	१०।०६।३५।०२	४५।१८	२१।४७	२३।२६	१।२८	३।४५	६।०३	८।१८	१०।३१	१५।११	१७।११	१८।५०	२०।१८	२०।१८
४. मंगल	रा.२६।५३।०४	५।१५।४३।३१	३।२३।३३।५१	६।०५।४१।११	११।१७।४०।२६	१०।०६।३१।५१	४५।१७	२१।४४	२३।२३	१।२५	६।००	८।१६	१०।२८	११।५०	१५।०८	१७।०८	१८।४७	२०।१६	२०।१६
५. बुध	रा.२७।२६।५१	५।१७।२६।०६	३।२३।४६।०८	६।०६।०५।१२	११।१७।३५।३८	१०।०६।२८।४०	४५।१५	२१।४१	२३।२०	१।२२	३।३६	५।५७	१०।२५	१२।४७	१५।०५	१७।०६	१८।४४	२०।१३	२०।१३
६. गुरु	रा.२८।०६।३८	५।१६।०८।४१	३।२३।५८।२७	६।०६।२६।१३	११।१७।३०।५२	१०।०६।२५।२८	४५।१४	२१।३८	२३।१६	१।१८	३।३५	५।५४	१०।२२	१२।४४	१५।०२	१७।०३	१८।४१	२०।१०	२०।१०
७. शुक्र	रा.२८।४२।४७	५।२०।४३।१६	३।२४।१०।२२	६।०६।४०।३५	११।१७।२५।५५	१०।०६।२२।१८	४५।१२	२१।३४	२३।१२	१।१४	३।३१	५।५०	१०।१८	१२।४०	१५।५८	१६।५८	१८।३७	२०।०६	२०।०६
८. शनि	रा.२९।१८।५६	५।२२।१७।५१	३।२४।२२।१७	६।०६।५१।५७	११।१७।२०।५८	१०।०६।१६।०७	४५।१०	२१।३१	२३।०८	१।११	३।२८	५।४७	१०।१५	१२।३७	१५।५५	१६।५६	१८।३४	२०।०२	२०।०२
९. रवि	रा.२९।५५।०५	५।२३।५२।२६	३।२४।३४।१२	६।०७।०३।१८	११।१७।१६।०१	१०।०६।१५।२६	४५।०८	२१।२७	२३।०५	१।०७	३।२४	७।५८	१०।११	१२।३३	१५।५१	१६।५२	१८।३०	२०।१८	२०।१८
१०. सोम	रा.००।३१।१३	५।२५।२७।००	३।२४।४६।०७	६।०७।११।४१	११।१७।११।०४	१०।०६।१२।४५	४५।०६	२१।२३	२३।०१	१।०३	३।२०	७।५५	१०।०७	१२।२६	१५।४७	१६।४८	१८।२६	२०।१६	२०।१६
११.मंगल	रा.०१।०७।२१	५।२७।०१।३४	३।२४।५८।०२	६।०७।२६।०३	११।१७।०६।०७	१०।०६।०८।३८	४५।०४	२१।२०	२३।५८	१।००	३।१७	७।५२	१०।०४	१२।२५	१५।४४	१६।४५	१८।२३	२०।१५	२०।१५
१२. बुध	रा.०१।४३।२८	५।२८।३६।०८	३।२५।०८।५७	६।०७।३७।२५	११।१७।०१।१०	१०।०६।०६।२३	४५।०२	२१।१६	२३।५४	०।५६	३।१३	७।४८	१०।००	१२।२१	१५।४०	१६।४१	१८।१६	२०।१४	२०।१४
१३. गुरु	रा.०२।१६।३७	६।००।१०।४२	३।२५।२१।५१	६।०७।४८।४७	११।१६।५६।१३	१०।०६।०३।१२	४५।००	२१।१२	२३।५०	०।५२	३।०८	७।४४	१२।१७	१५।४३	१५।४७	१६।४३	१८।१५	२०।१३	२०।१३
१४. शुक्र	रा.०२।५४।४६	६।०१।३२।४३	३।२५।३३।१८	६।०७।४२।४२	११।१६।५१।००	१०।०६।००।०१	४४।५८	२१।०८	२३।४७	०।४८	३।०६	७।४१	१२।२३	१२।१४	१५।३३	१६।३४	१८।१२	२०।१८	२०।१८
१५. शनि	रा.०३।२६।५५	६।०२।५४।४४	३।२५।४४।४७	६।०७।३६।३७	११।१६।४५।४७	१०।०५।५६।५०	४४।५६	२१।०५	२३।४३	०।४५	३।०२	७।३७	१२।४८	१२।१०	१५।२८	१६।३०	१८।०८	२०।१६	२०।१६

धर्मशास्त्र-हरितालिका- चतुर्थीसंहिता यातु सातवीया फलप्रदा। अथैकव्यकरा स्त्रीणां पुत्रपौत्रप्रवर्धिनी।। तिथितत्त्वचिन्तामणि-कृतिसाराग्राह्याधुनिक- निबन्धे साचतुर्थीयुताग्राह्या। हरितालिका व्रतस्यैव नामान्तर लोके तीज इति। कलाकाष्ठा मुहूर्ताऽपि द्वितीया यदि दृश्यते। सा तृतीया न कर्तव्या गणसंयुता।। **भाद्रचतुर्थी अर्घ्य दान मन्त्र-** शंख मे फल-पुष्प-दुध लय चन्द्रार्घ्य दी-★

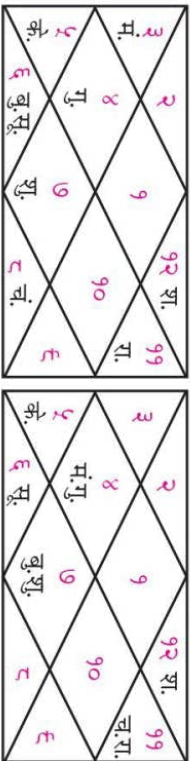
भाद्र शुक्ल पक्ष

सन् १९३४ साल, सम्बत् २०८३ शके १९४८, सौम्यगोलः, यान्यायनम्, वर्षर्तुः ता. १७ तः शरद्वर्तुः, अशुद्धसमयः ता. १७ तः शुद्धसमयः (राहु) उत्तरेकालः

दिनांकः १२ सितंबर से २६ सितंबर २०२६ ई०

चन्द्र दर्शनं, सुभिक्षकारकम्, द्वितीयायां त्रिपुष्कर योगः, अमृतयोगः दि. ७।५१ या. ततः शिववासः पूर्वं दक्षिण यात्रा तृतीयायां, **भाद्रमासीय रविव्रतं**, वाराहावतरः, शिववासः-अग्निवासश्च दि. ७।२५ या. ततः सिद्धयोगः, सर्वार्थसिद्धयोगः दि. २।३७ या. **हरितालिका (तीज) व्रतं**, विनायक ४ चन्द्रदर्शनं, **चौदचण पूजा**, भद्रा-३४।४२ उ., उत्तर फाल्गुन्यां रविः १९।५४ स्त्री. स्त्री. सू. सू. योगो मङ्ककवाहनं वह्नि नाडी तद्विशो भौमः वायुवृष्टिः, हिन्दी त्रिवसः भद्रा ५।२६ या., पश्चिम दक्षिण यात्रा, चतुर्थ्यां, अग्निवासः-राज्यप्रदयोगश्च दि. ८।०३ या. ततः शिववासः, **श्री गणेशपूजा** नागमैत्र ५, **ऋषिपंचमी**, मासास्तः, शिववासः, अग्निवासः-अमृतयोगश्च दि. ९।०६ उ., सर्वार्थसिद्धयोगः सं. ६।४१ उ. पर्पट षष्ठी, कन्यायां रविः ४४।५३ सु. १५ फलमहर्ष षडशीति सं. पु. कालः दि. १२ उ., **विश्वकर्मा पूजा**, शिववासः-अग्निवासश्च दि. १०।३७ या., सर्वार्थसिद्धयोगः रा. ८।५४ या., **दीक्षाग्रहणं** भद्रा १६।१५ उ. ४८।४८ या., दशतिथिः दि. १२।२५ उ., गंड ८।५७ उ. रा. २।५७ या., मासादिः, मृत्युयोग दि. १२।२५ या. ततः अग्निवासः गोपाष्टमी, **राधाष्टमी**, श्री महालक्ष्मी कथारम्भः, दशतिथिः दि. २।२८ या. नवम्यां मूले उत्तर यात्रा, अग्निवासः दि. २।२८ या. ततः शिववासः दशम्यां पूर्वं दक्षिण यात्रा पूवाषाढ, महानन्दनवमी, शिववासः दि. ४।३२ या., ततः अमृतयोगः, अग्निवासः अच्युत दशमी, सुगंध दशमी, वृक्षादिरोपणं, अमृतयोगः रा. ६।२८ या. ततः सिद्धयोगः, विपणि, **दीक्षाग्रहणं** हरेः पार्वपरिवर्तनं **कर्मा-धर्मा ११ व्रत सर्वेषां**, भद्रा ३।१९ उ. ३५।२३ या., सूतीन्तानं, अग्निवासः, मृत्युयोगः रा. ८।०७ या. ततः अमृतयोगः हविषकेश १२ कुष्माण्डेन पारणम्, इन्द्रोत्थानं-**इन्द्रपूजारम्भः**, **भद्रवारम्भः दि. ८।५८ उ.**, उत्तरां विना यात्रा श्रवणार्थां, **हरिवारस योगः**, शिववासः, सिद्धयोगः रा. ९।२२ या. ततः मृत्युयोगः, **दीक्षाग्रहणं** प्रदोष १३ व्रतं, प्रदोष शिव परिवर्तनोत्सवः, शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः रा. १०।१२ या. ततः मृत्युयोगः **अनन्त पूजा १४ व्रतं**च तडुगेरक धारणंच, श्री गणेश विस्र्जनं, प्रदोष-१४ व्रतं, अमृतयोगः रा. १०।२९ या., वक्री शुक्रः ५९।२२ भद्रो पूर्णिमा पूर्णिमा व्रतच, **अगस्त्यध्वदानं**, शिवार्चनं, भद्रा १०।५० या., अग्निवासः

अर्धग्रहावेधचक्रम्



चतुर्थी-चन्द्रदर्शन मन्त्रः- दही आ डाली सभके एका-एकी हाथमे लऽ निम्न मंत्र पढाइ।

नमः सिंहः प्रसेनमवधीत सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यम्मतकः। **तदुत्तर आगुक मन्त्र सै प्रणाम करी-** नमः शुभांशवे तुष्यं द्विजाजाय ते नमः। रोहिणीतये तुष्यं लक्ष्मी भ्रात्रे नमोऽस्तु ते॥ **दक्षिण-तुषारायं क्षीरो-दार्णव-सम्भवम्।** नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुट-भूषणम्॥

चतुर्थी चन्द्र के प्रार्थना मन्त्र- मृगांक-रोहिणीनाथ शम्भोः शिरसि भूषणां व्रतं सम्पूर्णतां यातु सौभाग्यं च प्रवच्छ मे॥ **रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवन् देहिमे।** धर्मान् देहि, धनं देहि सर्वान् कामान् प्रदेहिमे॥

अगस्त्य-अर्घ्यदान-मन्त्रः- ऋषि तर्पण के बाद शंख में जल अक्षत श्वेतपुष्प (काशपुष्प) फल द्रव्य आदि लय जनेउ सख्य ही के दक्षिण दिशा मे मुह कय आगुक मन्त्र सै अर्घ्य दी-

कुम्भयोनिसमुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तमा। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घ्योऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ **शंखं पुष्पं फलं तोयं रत्नानिविविधानि च।** उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घ्योऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

काशपुष्पप्रतीकाशं वह्निमभरतसंभव। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घ्योऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ **अगस्त्य-प्रार्थनामन्त्रः-** आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः। समुद्र-शोषितो येन स मेजगस्त्यः प्रसीदतु॥

तिथयः	दिनानि	तिथि	तिथि	नक्षत्राणि	नक्षत्राणि	योगाः	कणाणि	चन्द्राण्यः	स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	मु०	ने०	अ०
दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घ. मि.
१	रवि	३८।३८	रा.८।३०	उ.भा.१६।५	दि.१२।२८	तृ.१८।४४	बा.८।३४	मीन	५।०८।५१।१३	२८।४८	६।०२	५।५८	१६	११	२७
२	सोम	३५।४२	रा.८।२०	रे.१५।१७	दि.१२।१०	शु.१३।५४	तौ.७।१०	मी.दि.१२।१०	५।१०।५०।१०	२८।४४	६।०३	५।५७	१७	१२	२८
३	मंगल	३१।४७	रा.६।४७	अ.१३।२७	दि.११।२७	व्या.८।१५	व.३।४७	मेष	५।११।४८।०७	२८।४०	६।०४	५।५६	१८	१६	२८
४	बुध	२७।०३	दि.४।५४	भ.१३।५३	दि.११।३६	ह.१।५४	बा.२७।०३	मे.दि.४।५८	५।१२।४८।०४	२८।३७	६।०५	५।५५	१८	१४	३०
५	गुरु	२१।३८	दि.२।४५	कृ.७।०८	दि.८।३२	सि.४७।३६	तै.२१।३८	वृष	५।१३।४८।०१	२८।३४	६।०५	५।५५	२०	१५	३०
६	शुक्र	१५।५३	दि.१२।२७	रो.३।३६	दि.७।३१	व्या.३८।५७	व.१५।५३	वृ.सं.६।४४	५।१४।४६।१४	२८।३०	६।०६	५।५४	२१	१६	२
७	शनि	८।४८	दि.१०।०२	आर्.५५।१८	रा.४।१४	व्री.३२।०८	बा.८।४८	मिथुन	५।१५।४५।२७	२८।२६	६।०७	५।५३	२२	१७	३
८	रवि	३।४५	दि.७।३८	पु.५१।११	रा.२।३६	प.२४।२६	कौ.३।४५	मि.रा.८।१	५।१६।४४।४०	२८।२२	६।०८	५।५२	२३	१८	४
१०	सोम	५२।१७	रा.३।०३	पु.४७।२६	रा.१।०६	शि.१६।५३	व.२५।०२	कर्क	५।१७।४३।५३	२८।१८	६।०८	५।५२	२४	१८	५
११	मंगल	४७।१४	रा.१।०२	शु.४४।१२	रा.१।५०	सि.८।३८	ब.१८।४५	क.रा.११।५०	५।१८।४६।०६	२८।१४	६।०८	५।५१	२५	२०	६
१२	बुध	४३।०१	रा.११।२२	म.भा.४१।४६	रा.१०।५२	सा.२।५६	कौ.१४।३७	सिंह	५।१८।४२।१८	२८।१०	६।१०	५।५०	२६	२१	७
१३	गुरु	३८।३८	रा.१०।०३	पू.फ.४०।०७	रा.१०।१४	शु.५१।३६	ग.११।२०	सिं.रा.४।१०	५।२०।४१।३०	२८।०६	६।११	५।४८	२७	२२	८
१४	शुक्र	३७।२०	रा.८।०८	ऊ.फ.३८।३१	रा.१०।००	ब.४७।०३	वि.८।२८	कन्या	५।२१।४०।५८	२८।०२	६।१२	५।४८	२८	२३	८
३०	शनि	३६।१६	रा.८।४२	ह.४०।०८	रा.१०।१५	रुं.४३।२८	च.६।४८	कन्या	५।२२।४०।२८	२८।५८	६।१२	५।४८	२८	२४	१०

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

अर्धग्रहराब्धचक्रम्

तिथयः	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	मिश्रमानम्	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिंह.अं.	कन्या.अं.	तुला.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
दिनानि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.
१. रवि	श.०४।०५।०४	६।०४।१६।४५	श.२५।५६।१५	६।०७।३०।३२	११।१६।४०।३५	१०।०५।२३।३८	४४।५४	२१।०१	२२।३८	०।४१	३।०२	५।१७	७।३३	८।४५	१२।०६	१४।२५	१६।२६	१८।०४	१८।३२
२. सोम	श.०४।४०।१३	६।०५।३८।४६	श.२६।०७।४३	६।०७।२४।२७	११।१६।३५।२३	१०।०५।५०।२८	४४।५२	२०।५७	२२।३५	०।३७	२।५८	५।१३	७।२८	८।४१	१२।०२	१४।२१	१६।२२	१८।००	१८।२८
३. मंगल	श.०५।१५।२२	६।०७।००।४६	श.२६।१६।११	६।०७।१८।२२	११।१६।३०।११	१०।०५।४७।१७	४४।५०	२०।५४	२२।३२	०।३४	२।५५	५।१०	७।२६	८।३८	११।५८	१४।१८	१६।५७	१८।५७	१८।२५
४. बुध	श.०५।५०।३१	६।०८।२२।४६	श.२६।३०।३८	६।०७।११।१७	११।१६।२४।५८	१०।०५।४४।०६	४४।४८	२०।५०	२२।२८	०।३०	२।५१	५।०६	७।२२	८।३४	११।५५	१४।१४	१६।५५	१८।५३	१८।२१
५. गुरु	श.०६।२५।४०	६।०८।४४।४६	श.२६।४२।०५	६।०७।०६।१३	११।१६।१८।४७	१०।०५।४०।५५	४४।४७	२०।४६	२२।२४	०।२६	२।४७	५।०२	७।१८	८।३०	११।५१	१४।१०	१६।११	१८।४८	१८।१७
६. शुक्र	श.०७।००।०७	६।१०।४६।०८	श.२६।५२।५२	६।०६।४४।०३	११।१६।१४।५१	१०।०५।३७।४४	४४।४५	२०।४२	२२।२०	०।२२	२।४३	४।५८	७।१४	८।२६	११।४७	१४।०६	१६।०७	१८।४५	१८।१३
७. शनि	श.०७।३४।३४	६।११।४७।३१	श.२७।०३।३८	६।०६।२१।२३	११।१६।०८।५५	१०।०५।३४।३३	४४।४३	२०।३८	२२।१७	०।१८	२।४०	४।५५	७।११	८।२३	११।४४	१४।०३	१६।०४	१८।४१	१८।०८
८. रवि	श.०८।०८।०१	६।१२।४८।५३	श.२७।१४।२६	६।०५।२८।४३	११।१६।०५।००	१०।०५।३१।२२	४४।४१	२०।३५	२२।१३	०।१५	२।३६	४।५१	७।०७	८।१८	११।४०	१६।५८	१८।३७	१८।०५	१८।०५
१०. सोम	श.०८।४३।२८	६।१३।५०।१५	श.२७।२५।१३	६।०५।३७।३३	११।१६।००।०५	१०।०५।२८।११	४४।३८	२०।३१	२२।०६	०।११	२।३२	४।४७	७।०३	८।१५	११।३६	१५।५६	१८।३३	१८।०१	१८।०१
११.मंगल	श.०८।१७।५५	६।१४।५१।३७	श.२७।३५।५८	६।०५।१५।२३	११।१५।५५।१०	१०।०५।२५।००	४४।३७	२०।२८	२२।०६	०।०८	२।२८	४।४३	७।००	८।१२	११।३३	१५।५२	१८।३०	१८।५८	१८।५८
१२. बुध	श.०८।५२।२२	६।१५।५२।५८	श.२७।४६।४५	६।०४।२३।१३	११।१५।५०।१५	१०।०५।२१।४८	४४।३५	२०।२४	२२।०२	०।०४	२।२४	४।३८	८।५६	८।०८	११।२८	१५।४८	१८।४८	१८।५४	१८।५४
१३. गुरु	श.१०।२६।४८	६।१६।५४।२१	श.२७।५७।३१	६।०४।३१।०३	११।१५।४५।२०	१०।०५।१८।३८	४४।३३	२०।२०	२१।५८	००।००	२।२०	४।३५	८।५२	८।०४	११।२५	१५।४५	१८।२२	१८।५०	१८।५०
१४. शुक्र	श.११।००।१८	६।१६।२४।१४	श.२८।०७।३३	६।०३।५५।२२	११।१५।४०।०८	१०।०५।१५।२७	४४।३१	२०।१६	२१।२४	२३।५६	२।१६	४।३१	८।४८	८।००	११।२१	१५।४०	१८।१८	१८।४६	१८।४६
३०. शनि	श.११।३३।४८	६।१७।५४।०७	श.२८।१७।३५	६।०३।१८।४२	११।१५।३४।५६	१०।०५।१२।१६	४४।२८	२०।१२	२१।२०	२३।५२	२।१२	४।२७	८।४४	८।५५	११।१७	१५।३६	१८।१७	१८।४२	१८।४२

आश्विन कृष्ण पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८३ शाके १९४८, सौम्यालः, याभ्यानाम्, श्रावर्तुः (राहु) उत्तरेकालः, अशुद्धसमयः ता. २४ तः शुद्धसमयः

दिनांकः २७ सितंबर से १० अक्टूबर २०२६ ई०

महालयारम्भः, पितृपक्षीय पार्वणारम्भः, दुग्धयज्ञोद्धारिवने, हस्तेरविः ५.७.५६, स्त्री चं. सू. योगो मूकवाहनं वह्नि नाडी तदीशो भौमः वायुवृष्टिः, शिववासः-मृत्युयोगश्च रा. १.३० या., विपणि सूतीस्नानं, भद्रवा समधिः दि. १२।१० उ., गंड दि. ७।२२ उ. दि. १।२२ या., अग्निवासः, मृत्युयोगः रा. ८।२० या., विपणि, दीक्षाग्रहणं भद्रा ३।४७ उ. ३१।४७ या., सूतीस्नानं, उत्तरां विना यात्रा अश्विन्यां, श्रीगणेश चतुर्थी व्रतं, सिद्धयोगः रा. ६।४७ या. ततः रात्र्यप्रदयोगः, सर्वाश्विसिद्धयोगः दि. ११।२७ या. वज्रयोगः ५.३।०४, एकदन्त ४ व्रतं, शिववासः, अग्निवासः दि. ४।५४ या.

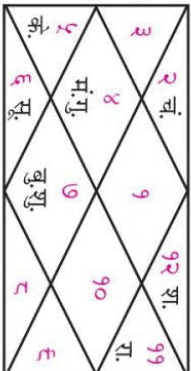
अक्कूर मासारम्भः, पूर्व यात्रा रोहिण्यां, शिववासः दि. २।४५ या., सिद्धयोगः दि. २।४५ या. ततः मध्यमयोगः-अग्निवासश्च

श्री जीमूतवाहन व्रतं (जितिया) श्री जीमूतवाहन पूजनं प्रदोषे, द्वाधतिथिः दि. १०।०२ उ., शिववासः, अग्निवासः दि. १०।०२ उ. ९ तिथि ५.४।०२ नवम्यां जीमूतवाहन व्रतं पारणं दि. ७।३८ उपरि, मातृ नवमी कृत्यं, द्वाधतिथिः दि. ७।३८ या., शिववासः-सिद्धयोगश्च दि. ७।३८ या. भद्रा-२५।०२ उ. ५.२।१७ या., पूर्वा विना यात्रा पुष्ये, अग्निवासः, अमृतयोग, सर्वाश्विसिद्धयोगः, विपणि

इन्दिरा ११ व्रतं सर्वेषां गंड रा. ७।२६ उ. रा.१।२६ या., शिववासः, मृत्युयोग रा. १।०२ या. ततः अमृतयोगः शुभयोगः ५.३।५९, गुडने पारणम्, शिववासः, अग्निवासः, सिद्धयोगः रा. ११।२२ या. ततः मृत्युयोगः प्रदोष १३ व्रतं, भद्रा ३१।३९ उ. पूर्वोत्तर यात्रा त्र्योदश्यां, अमृतयोगः रा. १०।०३ या., ततः मृत्युयोगः, वायुसेना दिवसः प्रदोष १४ व्रतं, भद्रा ८।२९ या., अग्निवासः, अमृतयोगः रा. १।०८ या.

आश्विनी-३० स्नानदानादिः, महालया ३०, पितृपक्षीय पार्वणान्तः क्षीणः शुक्रः-४९।५७ (अशुद्धारम्भः) शिववासः, आश्विनस्यमावस्यां शनिवारो यदा भवेत्। मध्यमं वर्षमथवा दुष्कालः खंडः, राट्टिय डाक दिवसः

आ. कृ. ५ गु. व. ८।४०।१४।१०
अयनांशः २२।५४।३८



तिथयः	दिनानि	तिथि	तिथि	नक्षत्राणि	नक्षत्राणि	योगः	कणाणि	चन्द्राणयः	स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	मु०	ने०	अं०
दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घ. मि.	राश्यादि	राश्यादि	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	ता०	ता०	ता०
१	मंगल	५।०८	दि.८।२८	भरणी.३०।१२	सं.६।३५	सि.१६।२२	कौ.५।०८	मे.रा.१२।१२	६।०८।३६।०३	२७।५२	६।२६	५।३४	१६	१०	२७
२	बुध	००।४८	प्रा.६।४५	कृ.२७।००	सं.५।१४	व्य.१२।३३	गर.०।४८	वृष	६।१०।३६।०२	२७।४८	६।२६	५।३४	१७	११	२८
४	गुरु	४८।४७	रा.२।२२	सो.२३।१६	दि.३।४५	व्य.१२।३३	व्य.१२।३३	वृ.रा.२।५६	६।११।३६।०१	२७।४६	६।२७	५।३३	१८	१२	२८
५	शुक्र	४३।४८	रा.१२।००	मृ.१६।१०	दि.२।०८	सि.१६।४५	कौ.१६।४८	मिथुन	६।१२।३६।१७	२७।४२	६।२८	५।३२	१८	१३	३०
६	शनि	३७।४८	रा.६।३५	आर्द्रा.१४।५५	दि.१२।२६	सि.४१।५५	गर.१०।४८	मि.रा.५।१२	६।१३।३६।३३	२७।३८	६।२८	५।३२	२०	१४	३१
७	रवि	३१।५६	रा.७।१५	पुन.१०।४७	दि.१०।४८	सा.३३।१४	चि.४।५२	कर्क	६।१४।३६।४८	२७।३४	६।२८	५।३१	२१	१५	१५
८	सोम	२६।३१	दि.५।०६	पु.६।५७	दि.६।१७	शु.२६।४८	कौ.२६।३१	कर्क	६।१५।३७।०५	२७।३१	६।३०	५।३०	२२	१६	२
९	मंगल	२१।३३	दि.३।०७	श्ल.३।३५	दि.७।५६	शु.१६।५५	गर.२१।३३	क.दि.७।५६	६।१६।३७।२१	२७।२८	६।३०	५।३०	२३	१७	३
१०	बुध	१७।२५	दि.१।२८	मघा.०।५३	प्रा.६।५२	क्र.१३।३१	वि.१७।२५	सिंह	६।१७।३७।३७	२७।२५	६।३१	५।२८	२४	१८	४
११	गुरु	१४।०७	दि.१२।११	उ.फ.५।०१	रा.५।४८	पुं.७।४८	बा.१४।०७	सिंह	६।१८।३७।५३	२७।२२	६।३२	५।२८	२५	१८	५
१२	शुक्र	११।५४	दि.११।१८	हस्त.५।३०	रा.५।५६	वै.२।५६	तै.११।५४	कन्या	६।१९।३३।०८	२७।१८	६।३२	५।२८	२६	२०	६
१३	शनि	१०।५५	दि.१०।५५	चित्रा.६।००	अश्लेषा	प्री.५६।०४	क.सं.६।१५	क.सं.६।१५	६।२०।२८।२५	२७।१६	६।३३	५।२७	२७	२१	७
१४	रवि	११।१२	दि.११।०२	चित्रा.०।०२	प्रा.६।३४	आ.५४।०७	श.११।१२	तुला	६।२१।२३।४१	२७।१३	६।३३	५।२७	२८	२२	८
३०	सोम	१३।५२	दि.१२।०७	स्वा.२।५१	दि.७।४२	सो.५३।१०	ता.१३।५२	तु.रा.२।५४	६।२२।१८।५७	२७।१०	६।३४	५।२६	२८	२३	८

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

अर्धग्रहराब्धचक्रम्

तिथयः	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	मिश्रमानम्	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिंह.अं.	कन्या.अं.	तुला.अं.	वृ.अं.	घ.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
दिनानि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१. मंगल	३।२०।४४।११	६।१५।०८।१६	४।००।५५।११	५।२१।२५।२८	११।१४।१७।००	१०।०४।८।०८	४३।५५	१६।१५	२०।५८	२२।५६	१।१३	३।३१	५।४७	८।०२	१०।२३	१२।४२	१४।४३	१६।२०	१७।४८
२. बुध	३।२१।१५।२५	६।१४।२३।२७	४।०१।०३।३८	५।२०।५६।१७	११।१४।१३।०८	१०।०४।१४।५८	४३।५४	१६।११	२०।५५	२२।५२	१।०८	३।२७	५।४३	७।५८	१०।१८	१२।३८	१४।३६	१६।१६	१७।४४
४. गुरु	३।२१।४६।३८	६।१३।३८।३८	४।०१।१२।०७	५।२२।२७।०७	११।१४।०८।१८	१०।०४।११।४७	४३।५३	१६।०७	२०।५१	२२।४८	१।०१	३।१८	५।३५	७।५५	१०।१५	१२।३४	१४।३५	१६।१२	१७।४०
५. शुक्र	३।२२।१६।३६	६।१३।००।४२	४।०१।१६।२६	५।२२।१४।२१	११।१४।०४।४३	१०।०४।०८।३६	४३।५१	१६।०३	२०।४७	२२।४४	१।०१	३।१८	५।३५	७।५०	१०।११	१२।३०	१४।३१	१६।०८	१७।३६
६. शनि	३।२२।४६।३३	६।१२।२२।४६	४।०१।२६।४५	५।२२।०१।३५	११।१४।००।०७	१०।०४।०५।२५	४३।४८	१६।५८	२०।४३	२२।४०	०।५७	३।१५	५।३१	७।४६	१०।०७	१२।२६	१४।२७	१६।०४	१७।३२
७. रवि	३।२३।१६।३०	६।११।४४।५०	४।०१।३४।०४	५।२१।४८।४८	११।१३।५५।३२	१०।०४।०२।१४	४३।४७	१६।५५	२०।३८	२२।३६	०।५३	३।११	५।२७	७।४२	१०।०३	१२।२३	१४।२३	१६।००	१७।२८
८. सोम	३।२३।४६।२७	६।११।०६।५४	४।०१।४१।२२	५।२१।३६।०२	११।१३।५०।५७	१०।०३।५८।०३	४३।४५	१६।५१	२०।३५	२२।३२	०।४८	३।०७	५।२३	७।३८	६।५८	१२।१८	१४।२०	१६।५६	१७।२४
९. मंगल	३।२४।१६।२४	६।१०।२८।५८	४।०१।४८।४०	५।२१।२३।१७	११।१३।४६।२२	१०।०३।५२।२२	४३।४३	१६।४७	२०।३१	२२।२८	०।४५	३।०३	५।१८	७।३४	६।५५	१२।१५	१४।१५	१६।५२	१७।२०
१०. बुध	३।२४।४६।२०	६।०८।५१।०२	४।०१।५५।५८	५।२१।१०।३१	११।१३।४१।४७	१०।०३।५२।४१	४३।४२	१६।४३	२०।२७	२२।२४	०।४१	३।१५	५।१५	७।३०	६।५१	१२।११	१४।१२	१६।४८	१७।१६
११. गुरु	३।२५।१६।१६	६।०८।१३।०५	४।०२।०३।१६	५।२०।५७।४५	११।१३।३७।१२	१०।०३।४८।३०	४३।४१	१६।४०	२०।२४	२२।२१	०।३८	३।१६	५।१२	७।२७	६।४७	१२।०८	१४।१५	१६।४५	१७।१३
१२. शुक्र	३।२५।४४।४२	६।०८।१४।०५	४।०२।०८।४०	५।२०।५४।४८	११।१३।३३।४७	१०।०३।४६।१८	४३।३८	१६।३६	२०।२०	२२।१७	०।३४	३।१५	५।०८	७।२३	६।४४	१२।०४	१४।०५	१६।४१	१७।०८
१३. शनि	३।२६।१३।०८	६।०८।१५।०५	४।०२।१४।०४	५।२१।०१।५३	११।१३।३०।२२	१०।०३।४३।०८	४३।३७	१६।३२	२०।१६	२२।१३	०।३०	३।४८	५।०४	७।१८	६।४०	१२।००	१४।०१	१६।३७	१७।०५
१४. रवि	३।२६।४१।३४	६।०८।१६।०५	४।०२।१६।२७	५।२१।०८।५६	११।१३।२६।५७	१०।०३।३८।५७	४३।३५	१६।२८	२०।१२	२२।०८	०।२६	३।४४	५।००	७।१५	६।३६	११।५६	१३।३३	१६।३३	१७।०१
३०.सोम	३।२७।१०।००	६।०८।१७।०५	४।०२।२४।५०	५।२१।१५।५८	११।१३।२३।३३	१०।०३।३६।४६	४३।३४	१६।२४	२०।०८	२२।०५	०।२२	३।४०	४।५६	७।१३	६।३२	११।५२	१३।५३	१६।२८	१६।५७

कार्तिक कृष्ण पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८३, शाके १९४८, चाम्पगोलयानम् (राहु) उतरेकालः अशुद्धसमयः, २७ तः शुद्धारम्भः

दिनांकः २७ अक्टूबर से ६ नवम्बर २०२६ ई०

“कार्तिके द्विदलत्यजेत्” तुलसीदत्तलेखेण कार्तिकयोऽर्चयेद्भिरम्, शिववासः-अग्निवासः-मृत्युयोगश्च दि. ८।२९ या. ततः अमृतयोगः, पुष्टः शुक्रः ३।२४ ३ तिथि ५।४।४०, भद्रा २८।३२ उ. ५।१२८ या., सिद्धयोगः प्रा.६।४५ या. ततः अग्निवासः-मृत्युयोगश्च सर्वार्थसिद्धयोगः सं. ५।१४ उ.

परिच योगः ५।२।२२, दशमहृत्ती-४, कृष्णपिङ्गाक्ष ४ व्रतं, कर्त्तव्यचौथ, शिववासः, मृत्युयोग रा. २।२२ या. ततः सिद्धयोगः

मृगाशिरसि पश्चिमां विना यात्रा, जातकर्म नामकरणं, शिववासः, अग्निवासः, गृहारम्भः दि. २।८ या.

अशोक चन्दन षष्ठी, भद्रा ३७।४८ उ., पुनर्वसौ दक्षिण पश्चिम यात्रा, श्रीस्कन्दषष्ठी, अमृतयोगः रा. १।३५ या. ततः मध्यमयोगः

नवम्बर मासारम्भः, भद्रा ४।५२ या., पश्चिमां विना यात्रा अष्टम्यां, अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धयोगः दि. १।१७ या. पूर्वा विना यात्रा पुष्ये, शिववासः सं. ५।०६ या., सर्वार्थसिद्धयोगः दि. १।१७ या.

गङ्ग दि. १।३२ या., अग्निवासः-राज्यप्रदयोगश्च दि. ३।०७ या. ततः मध्यमयोगः

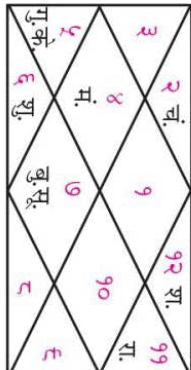
पू.फ. न. ५।८।१०, भद्रा १७।२५ या., एकादश्यां पूर्व यात्रा, विषाणि प्रा. ६।५२ उ. दि. १।२९ या. ततः शिववासः-अमृतयोगश्च रा. १।२११ या. ततः शिववासः-अमृतयोगश्च

वि. योगः ५।६।०४, गोवत्स १२, तुलसीदलेन पारणम्, प्रदोष-१३ व्रतं, सिमरियाधाम्नि अमृतप्राप्त्युत्सवः, धन्वंतरि जयंती, धनतेरस, दधतिथिः दि. १४।१८ या, शिववासः-मृत्युयोगश्च दि. ११।१८ या.

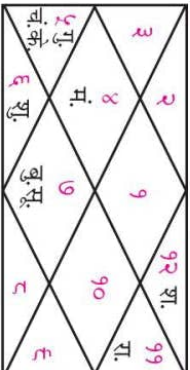
प्रदोष १४ व्रतं, शिवादीना दीपदानं, प्रदोषे हनुमत्जन्मोत्सवः, हनुमदध्वज दानं, यमदीप दानं, विशाखायां रविः ८।५८ उ., चतुर्दश्यां दक्षिण यात्रा, अग्निवासः दि. १०।५५ या. ततः राज्यप्रदयोगः, मार्गीशुक्रः २५।५६ दीपावली, सुखरात्रिः प्रदोषे लक्ष्मी पूजनं, उत्क्राध्रमाणं, पितृविसर्जनं, निशीथे कालीतारादि पूजनं, हरिमुखी स्मृति दिवसः, शिववासः दि.११।०२ उ., अग्निवासः

कार्तिकी-३० स्नानदानादिः, सोमवती अमावस्या व्रतं च अश्वत्थमूर्ते अष्टातरशत प्रदक्षिणं, प्रतिपदि अन्नकूटः, गौपूजा, गोवर्धनपूजा स्वाध्यायं, शिववासः दि. १२।०७ या., अग्निवासः, सिद्धयोगः

का. कृ. ४ गु. व. ८।४०।१४।३८
अयनांशाः २२।५४।४३



का. कृ. ११ गु. व. ८।४०।१४।४३
अयनांशाः २२।५४।४४



- कार्तिके शुक्रसन्धिमतम्।
- धातु छाया में ब्राह्मणभोजन फल- धात्रीच्छायां समाश्रित्य भुङ्क्ते योऽजं हि मानवः। ब्राह्मणन् भोजयित्वा तु वार्षिक कालिचष हरेत्।।
- आकाशदीपदानफलम्- तुलायां तिलतैलेन सायंकाले समागते। आकाशदीपं यो दद्यात् मासमेकं हरिं प्रति। महतीं श्रियमवाप्नोति रूपसौभाग्यसंपदः।।
- कार्तिकस्नानः- कार्तिके सकलं मासं प्रातःस्नानी जितेन्द्रियः। जपन् हविष्यभुक् शान्तःसर्वपापैः प्रमुच्यते।।
- स्नानमन्त्रः- कार्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातः स्नानं जनार्दन। प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर ममा सह।।
- अमायां लक्ष्मीपूजा- देशकालौ संकृत्य मम गृहेऽचललक्ष्मी निवासाय लक्ष्मी पूजनम् अहं करिष्ये। विहितोपचारैः संपूज्यान्ते
- प्राथर्थाः- नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्स्वदर्चनात्।।
- लक्ष्मी-अर्थमंत्र- व्रतिनः कार्तिके मासि स्नातस्य विधिः सम्यक्। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं दनुजैर्ननिषुदना। नित्यनैमित्तिके कृष्ण कार्तिके पापनाशिने। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं राधया सहितो हरेः।।
- दीपदानमन्त्रः- दामोदराद्य नभसि तुलायां लीलयं सह। प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे।।
- उत्क्राध्रमणमन्त्रः- शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानां भूतदर्शयोः। उज्ज्वलज्योतिषा देहं निदंहे व्योमवह्निना।।
- अग्निदग्धराश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते वान्तु परमाङ्गतिम्।।
- विसर्जनक मन्त्र- ॐ यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये। उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्स प्रपश्यन्तो ब्रजन्तु ते॥

सन् १४३४ साल, सम्वत् २०८३, शाके १९४८, याम्यागोलः याम्यायनम्, शारदश्रुतुः, ता. १७ तः हेमन्तश्रुतुः (शुद्ध) उत्तरकालः ता. १७ तः पूर्वकालः शुद्धसमयः

कार्तिक शुक्ल पक्ष

सन् १४३४ साल, सम्वत् २०८३, शाके १९४८, याम्यागोलः याम्यायनम्, शारदश्रुतुः, ता. १७ तः हेमन्तश्रुतुः (शुद्ध) उत्तरकालः ता. १७ तः पूर्वकालः शुद्धसमयः

दिनांकः १० नवम्बर से २४ नवम्बर २०२६ ई०

जयन्ती

तिथयः	दिनानि	तिथि	व. मि.	नक्षत्राणि	व. मि.	योगः	क.प.गानि	चन्द्राणयः	स्मृत्युसर्वः	दिनमानम्	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	मु०	ने०	अ०
१	मंगल	१६।३५	दि.१।१३	वि.६।४८	दि.६।१८	शो.५३।०२	बक्.१६।३५	वृश्चिक	६।२३।१४।१३	२७।०६	६।३५	५।२५	१	२४	१०
२	बुध	१६।३२	दि.२।२४	अमृ.११।५३	दि.११।२०	अ.५३।४१	कौ.१६।३२	वृश्चिक	६।२४।०६।२८	२७।०४	६।३५	५।२५	२	२५	११
३	गुरु	२४।१६	दि.३।१८	ज्ये.१७।४५	दि.१।४२	सु.५४।४८	गर.२४।१६	धनु	६।२५।०४।५३	२७।०२	६।३६	५।२४	३	२६	१२
४	शुक्र	२६।३१	सं.६।२४	मूल.२४।०८	दि.३।१५	शु.५६।१०	वि.२६।३१	धनु	६।२६।०६।५७	२६।५८	६।३६	५।२४	४	२७	१३
५	शनि	३४।५२	रा.८।३४	पू.षा.३०।३६	सं.६।५३	शु.५७।२६	बक्.२।११	धनु	६।२७।१५।११	२६।५५	६।३७	५।२३	५	२८	१४
६	रवि	३८।४७	रा.१०।०६	उ.षा.३६।५२	रा.६।२३	गं.५८।२०	कौ.६।४६	मकर	६।२८।२०।२५	२६।५२	६।३८	५।२२	६	२९	१५
७	सोम	४४।०४	रा.१२।१६	श्रवण.४२।२०	रा.११।३४	वृ.५८।४१	गर.११।२५	मकर	६।२९।२५।३८	२६।४६	६।३८	५।२२	७	३०	१६
८	मंगल	४७।१६	रा.१।२३	ध.४६।५३	रा.१।२४	शु.५८।०५	वि.१५।४०	म.दि.१२।२६	७।००।३०।५१	२६।४६	६।३८	५।२१	८	३१	१७
९	बुध	४८।२४	रा.२।२५	शत.५०।१८	रा.२।४६	व्या.५६।४३	वा.१८।२०	कुंभ	७।०१।३६।०४	२६।४३	६।३८	५।२१	९	३२	१८
१०	गुरु	५०।०८	रा.२।४३	पू.षा.५२।२६	रा.३।४०	ह.५४।१७	तै.१६।४६	कुंभ	७।०२।४१।१७	२६।४०	६।४०	५।२०	१०	३३	१९
११	शुक्र	४६।३४	रा.२।३०	उ.षा.५३।२२	रा.४।०१	व.५०।५१	व.६।४१	मीन	७।०३।४२।४४	२६।३७	६।४०	५।२०	११	३४	२०
१२	शनि	४७।३६	रा.१।४५	रे.५३।०३	रा.३।५४	सि.४६।२५	बक्.१८।३६	मी.रा.३।५४	७।०४।४४।१०	२६।३४	६।४१	५।१६	१२	३५	२१
१३	रवि	४४।५६	रा.१२।४२	अ.५।१३६	रा.३।२२	व्य.४१।११	कौ.१६।१६	मेघ	७।०५।४५।३६	२६।३१	६।४२	५।१८	१३	३६	२२
१४	सोम	४१।१२	रा.११।११	भरणी४६।२६	रा.२।२८	व.२५।०८	गर.१३।५	मेघ	७।०६।४७।०२	२६।२८	६।४२	५।१८	१४	३७	२३
१५	मंगल	३६।३४	रा.६।२१	क्र.४६।२३	रा.१।१६	प.२८।२६	वि.८।५३	मे.दि.८।२१	७।०७।४८।२८	२६।२६	६।४३	५।१७	१५	३८	२४

★ दि. ११।२० या., अग्निवासः

चन्द्रदर्शनं द्वितीयायां, परिचम यात्रा सुभिक्षकं, मृत्युयोगः दि. १।१३ या. ततः अमृतयोगः-शिववासश्च, कालिदासः जयन्ती यमद्वितीया, भ्रातृद्वितीया, भगिनी गृहेभोजनं, श्रीचित्रगुप्तपूजा, अनुराधायां परिचम यात्रा, शिक्षा दिवसः, शिववासः सिद्धियोगश्च दि. २।२४ या. ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धयोगः विपणि-दीक्षाग्रहणं च

★ दि. ११।२० या., अग्निवासः

प्रतिहार षष्ठी व्रतीनां निरामिष भोजनं, गंड दि. ११।१८ उ. ५।१८ या., अमृतयोगः दि. ४।१८ या. ततः मृत्युयोगः श्री गणेश ४ व्रतं, प्रतिहार षष्ठी व्रतीनां संयमः (नहाय-खाय), भद्रा २१।३१ या., पूर्वोत्तर यात्रा, अग्निवासः, अमृतयोगः सं. ६।२४ या. प्रतिहार षष्ठी व्रतीनां एकभुक्तं (खरना), शिववासः, मृत्युयोगः रा. ८।३४ या. ततः अमृतयोगः, गृहप्रवेशः सं. ६।५३ तः रा. ८।३४ या.

★ दि. ११।२० या., अग्निवासः

प्रतिहार षष्ठीव्रतं, सायंकालिकार्घदानं, जातकर्म, नामकरणं, सूतीस्नानं, शिववासः, अग्निवासः, मृत्युयोगः रा. १०।०६ या., विपणि रा. ६।२३ या., दीक्षाग्रहणं प्रातःकालिकार्घदानं पारणं, सामापूजासम्भः, जगद्धात्री पूजारसम्भः, भद्रवारसम्भः रा. ११।३४ उ., मासान्तः, मृत्युयोगः रा. १२।१६ या., सर्वार्थसिद्धयोगः रा. ११।३४ या., दीक्षाग्रहणं गोपाष्टमी, गौ पूजा, भद्रा-१५।४० या., वृश्चिके रविः-२।२४ मु. ३० फलं साम्यं विष्णुपदी सं. पु. कालो दि.३२ या., सिमरियाधाणि कल्पवास समान्तिः, अग्निवासः, सिद्धयोगः रा. १।२३ या. ततः राजप्रदयोगः अक्षय नवमी, गंगास्नानदानादिः, धात्री छायायां भोजनं, दीक्षाग्रहणं, त्रेतायुगादिः, दग्धतिथिः रा. २।२५ उ., मासादिः, रत्नगर्भं कुष्माण्डादिदानं धात्रीमूले भोजनं, अहिल्याजयन्ती, शिववासः जगद्धात्री विसर्जनं, दग्धतिथिः रा. २।४३ या., अग्निवासः, सिद्धयोगः, गृहप्रवेशः रा. ३।४० उ., दीक्षाग्रहणं

★ दि. ११।२० या., अग्निवासः

देवोत्थान ११ व्रतं सर्वेषां, भीष्मपंचक व्रतारसम्भः, गृहारसम्भः-गृहप्रवेशश्च, भद्राः ४९।३४ या., अनुराधायां रविः २१।१४, पूर्वादिः शुक्रः २६।४२, सिद्धयोगः रा. २।३० या. ततः मृत्युयोगः, दीक्षाग्रहणं रामोदार-१२, तुलसी दत्तनेपाणाम्, भद्रवा समान्तिः रा. ३।५४ उ., गंड रा. ११।०६ उ. रा. ५।६ या., गृहारसम्भः-गृहप्रवेशश्च, तुलसीविवाहः, अग्निवासः, शिववासः, विपणि रा. १२।४२ या., प्रदोष-१३ व्रतं, विद्यापति स्मृतिदिवसः, सूतीस्नानं-विवाहः-द्विगमनश्च त्रयोदश्यां, परिचमां विना यात्रा, सर्वार्थसिद्धयोगः, रविव्रतारसम्भः, शिववासः, अग्निवासः, सिद्धयोगः, विपणि रा. १२।४२ या., प्रदोष-१४ व्रतं, भद्रा ४९।१२ उ., पुष्ये शुक्रः २६।४२

★ बाबासाहेब-रामकृष्णपरमहंस स्मृति दिवसः

कार्तिकी पूर्णिमा, गंगा स्नानदानादिः, सामाविसर्जनं, भीष्मपंचक व्रतं समान्तिः, कार्तिकेयावतारः, सर्वदेव्युत्थानं, औत्तम मन्वादिः, निम्बार्क नानकदेव जयन्तीम्, अग्निवासः, सोनपुर मेला

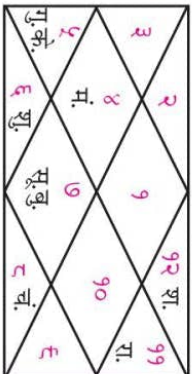
दैनिकलनसारणी चक्रम्

अर्धग्रहावेधचक्रम्

तिथयः	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	मिश्रमानम्	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिंह.अं.	क.म.अं.	तुला.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
दिनानि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.
१. मंगल	३।२७।३८।२५	६।०६।१८।०६	४।०२।३०।१३	५।२१।२३।०२	११।१३।२०।०६	१०।०३।३३।२५	४३।३३	१८।२०	२०।०४	२२।०१	०।१८	२।३६	४।५२	७।०७	६।२८	११।४८	१३।४६	१५।२५	१६।५३
२. बुध	३।२८।०६।५०	६।१६।१६।०७	४।०२।३५।३६	५।२१।३०।०५	११।१३।१६।४५	१०।०३।३०।२४	४३।३२	१८।१५	१६।५६	२१।५६	०।१३	२।३१	४।४७	७।०२	६।२३	११।४३	१३।४४	१५।२०	१६।४८
३. गुरु	३।२८।३५।१५	६।०६।२०।०८	४।०२।४७।५६	५।२१।३७।०८	११।१३।१३।२१	१०।०३।२७।१३	४३।३१	१८।१०	१६।५४	२१।५१	०।०८	२।२६	४।४२	७।००	६।१८	११।३८	१३।३६	१५।१५	१६।४३
४. शुक्र	३।२६।०२।१३	६।१०।००।३३	४।०२।५३।०१	५।२१।५५।४८	११।१३।१०।३२	१०।०३।२४।०२	४३।३६	१८।०६	१६।५०	२१।४७	०।०४	२।२२	४।३८	६।५३	६।१४	११।३४	१३।३५	१५।११	१६।३८
५. शनि	३।२६।२६।११	६।१०।४०।५८	४।०२।५८।०३	५।२२।१४।२८	११।१३।०७।४३	१०।०३।२०।५१	४३।२७	१८।०२	१६।४६	२१।४३	०।००	२।१८	४।३४	६।४६	६।१०	११।३०	१३।३१	१५।०७	१६।३५
६. रवि	३।२६।५६।०८	६।११।२१।२३	४।०३।०३।०४	५।२२।३३।०८	११।१३।०४।५४	१०।०३।१७।४०	४३।२५	१७।५८	१६।४२	२१।४६	०।०३	२।१४	४।३०	६।४५	६।०६	११।२६	१३।२७	१५।०३	१६।३१
७. सोम	४।००।२३।०७	६।१२।०६।४८	४।०३।०८।०५	५।२२।५१।४७	११।१३।०२।०५	१०।०३।१४।२८	४३।२३	१७।५४	१६।३८	२१।३५	०।०३	२।१०	४।२६	६।४१	६।०२	११।२२	१३।२३	१५।५६	१६।२७
८. मंगल	४।००।५०।०५	६।१२।४२।१३	४।०३।१३।०६	५।२३।१०।२६	११।१२।५६।१६	१०।०३।११।१८	४३।२२	१७।५०	१६।३४	२१।३१	०।०३	२।०६	४।२२	६।३७	६।५८	११।१८	१३।२४	१५।५५	१६।२३
९. बुध	४।०१।१७।०२	६।१३।२२।३८	४।०३।१८।०७	५।२३।२६।०५	११।१२।५६।२७	१०।०३।०८।०७	४३।२१	१७।४५	१६।२६	२१।२६	०।०३	२।०१	४।१७	६।३२	६।५३	११।१३	१३।२४	१५।५०	१६।१८
१०. गुरु	४।०१।४३।५६	६।१४।०३।०३	४।०३।२३।०८	५।२३।४७।४४	११।१२।५३।३८	१०।०३।०४।५६	४३।२०	१७।४१	१६।२५	२१।२२	०।०३	२।०७	४।१३	६।२८	६।४८	११।०६	१३।२५	१५।४६	१६।१४
११. शुक्र	४।०२।०८।३१	६।१५।११।०४	४।०३।२७।१६	५।२४।२१।२०	११।१२।५१।२४	१०।०३।०१।५५	४३।१८	१७।३६	१६।२०	२१।१७	०।०३	२।०३	४।०८	६।२३	६।४४	११।०४	१३।२५	१५।४९	१६।०८
१२. शनि	४।०२।३३।०३	६।१६।१६।०४	४।०३।३१।३०	५।२४।५४।५६	११।१२।४६।१०	१०।०२।५८।३४	४३।१६	१७।३२	१६।१६	२१।१३	०।०३	२।०३	४।०४	६।१६	६।४०	११।००	१३।२७	१५।५०	१६।०५
१३. रवि	४।०२।५७।३५	६।१७।२७।०४	४।०३।३५।४१	५।२५।२८।३२	११।१२।४६।५६	१०।०२।५५।२३	४३।१५	१७।२७	१६।११	२१।०८	०।०३	२।०३	४।०४	६।१६	६।४४	११।०५	१३।२८	१५।५१	१६।००
१४. सोम	४।०३।२२।०७	६।१८।३५।०४	४।०३।३६।५१	५।२६।०२।०८	११।१२।४४।४२	१०।०२।५२।१२	४३।१४	१७।२२	१६।०६	२१।०३	०।०३	२।०३	४।०४	६।१६	६।४०	११।०५	१३।२९	१५।५२	१६।०१
१५. मंगल	४।०३।४६।३६	६।१९।४३।०४	४।०३।४४।०१	५।२६।३५।४४	११।१२।४२।२८	१०।०२।४६।०१	४३।१३	१७।१८	१६।०२	२०।५६	०।०३	२।०३	४।०५	६।०५	६।२६	१०।४६	१२।४७	१५।५१	१६।०२

का. शु. ३ गु. व. ८।४०।१४।५२

अयनांशाः २२।५४।४५



तिथयः	दिनानि	तिथि	तिथि	नक्षत्राणि	नक्षत्राणि	योगः	कणाणि	चन्द्राणयः	स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	मु०	ने०	अ०
	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	राश्यादि	राश्यादि	घं. मि.	घं. मि.	म०	ता०	न०	ता०
१	बुध	३१।१८	रा.७।१४	रा.४२।४७	रा.११।५०	शि.२१।१३	बा.३।५६	वृष	७।०८।४६।५४	२६।२४	६।४३	५।१७	१६	६	२५
२	गुरु	२५।३७	सं.४।५६	मृग.३८।४५	रा.१०।१४	मि.१३।३७	गर.२५।३७	वृ.दि.११।०२	७।०६।५१।२०	२६।२२	६।४४	५।१६	१७	१०	२६
३	शुक्र	१९।४३	दि.२।३७	आ.३४।३३	रा.८।३३	सा.५।४८	वि.१६।४३	मिथुन	७।१०।५२।२२	२६।२०	६।४४	५।१६	१८	११	२७
४	शनि	१३।४८	दि.१२।१६	पुन.३०।२३	रा.६।५३	शु.५०।०७	बा.१३।४८	मि.दि.१।१८	७।११।५३।२४	२६।१८	६।४४	५।१६	१८	१२	२८
५	रवि	०८।०३	दि.६।५८	पु.२६।२५	सं.५।१८	ब्र.४२।३१	तै.८।०३	कर्क	७।१२।५४।२६	२६।१६	६।४५	५।१५	२०	१३	२८
६	सोम	०२।४०	दि.७।४८	रत्ने.२२।५४	दि.३।५८	पुं.३५।२१	व.२।४०	क.दि.३।५८	७।१३।५५।२८	२६।१५	६।४५	५।१५	२१	१४	३०
८	मंगल	५३।४८	रा.४।१६	मघा.२०।०२	दि.२।४६	तै.२८।४२	बा.२५।४७	सिंह	७।१४।५६।३०	२६।१४	६।४५	५।१५	२२	१५	३०
८	बुध	५१।३५	रा.३।२३	पू.फ.१८।०१	दि.१।५७	वि.२२।४५	तै.२२।४१	सिं.सं.७।५१	७।१५।५७।३१	२६।१३	६।४५	५।१५	२३	१६	२
१०	गुरु	४८।३१	रा.२।१०	उ.फ.१६।५२	दि.१।३१	प्री.१७।३५	व.२०।०३	कन्या	७।१६।५८।३२	२६।१२	६।४६	५।१४	२४	१७	३
११	शुक्र	४६।३८	रा.२।३८	ह.१६।५३	दि.१।३१	आ.१३।१८	बव.१६।०५	क.रा.१।४६	७।१७।५६।४२	२६।१०	६।४६	५।१४	२५	१८	४
१२	शनि	४८।०५	रा.२।००	चित्रा.१८।०४	दि.२।००	सौ.१०।०१	कौ.१८।५२	तुला	७।१६।००।५२	२६।०८	६।४६	५।१४	२६	१८	५
१३	रवि	४६।५५	रा.२।४५	स्वा.२०।३३	दि.३।००	शो.७।४३	गर.१६।००	तुला	७।२०।०२।०२	२६।०६	६।४७	५।१३	२७	२०	६
१४	सोम	५२।४८	रा.३।५४	वि.२४।१८	दि.४।३०	अ.६।२७	वि.२१।२१	तु.दि.१०।०८	७।२१।०३।११	२६।०५	६।४७	५।१३	२८	२१	७
३०	मंगल	५६।५२	रा.५।३२	अजु.२६।०७	सं.६।२६	सु.६।००	च.२४।५०	वृश्चिक	७।२२।०४।२०	२६।०४	६।४७	५।१३	२८	२२	८

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	सन् १४३४ साल, संवत् २०८३, शके - १९४८, याभ्यागोलः, याभ्यायनम्, हेमन्तर्तुः (राहु) पूर्वकालः, शुद्धसमयः
पूर्व दक्षिण यात्रा, सर्वार्थसिद्धियोगः, शिववासः अमृतयोगश्च रा. ७।१४ या. ततः सिद्धियोगः, विवाहः, द्विरागमनं भद्रा-५२।४० उ., सूतीस्नानं, दक्षिणां विना यात्रा-पुण्डन-विवाहः-द्विरागमनश्च मृगाशिरसि, गृहारम्भः, धान्यछेदनं, नवान्नपार्वण, अग्निवासः, अमृतयोगः सं. ४।४८ उ. शुभ यागः ५२।०६, श्री गजानन-४ व्रतं, भद्रा-१९।४३ या., शिववासः अमृतयोगश्च दि. २।३७ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः रा. ८।३३ उ. परिचय दक्षिण यात्रा चतुर्थ्या, गृहारम्भः पञ्चम्या, रविपुष्ययोगः-दीक्षाग्रहणं, शिववासः, अग्निवासः, रात्र्यप्रदयोगः दि. १२।१६ या. ततः मृत्युयोगः वीड-५ मनसादेवी शयनं, सूतीस्नानं, परिचयं विना यात्रा-द्विरागमनश्च पुष्ये, नवान्नपार्वण, शिववासः अमृतयोगश्च दि. ६।५८ या. ततः मृत्युयोगः, अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः विपणि च सं. ५।१८ या. सप्तमी तिथि ५५।०७, भद्रा २।४० उ. ३०।१४ या., गंड दि. ११।३९ उ. सं. ५।३९ या., अग्निवासः-सिद्धियोगश्च दि. ७।४८ या. ततः मृत्युयोगः, विवाहो मयायां दिसम्बर मासारम्भः, श्रीकालभैरवाष्टमी, कालभैरव व्रतं पूजनं, पूर्वं फाल्गुन्यां पूर्वयात्रा, कामेश्वरसिंह जयन्ती, शिववासः, अग्निवासः, सिद्धियोगः अन्वाष्टका श्राद्धम्, दधतिथिः रा. ३।२३ उ. भद्रा २०।३ उ. ४८।३९ या., ज्येष्ठयां रविः १०।०६, दधतिथिः रा.२।१० या., सूतीस्नानं, अग्निवासः, सिद्धियोगः, विपणि भद्रा २०।३ उ. ४८।३९ या., ज्येष्ठयां रविः १०।०६, दधतिथिः रा.२।१० या., सूतीस्नानं, अग्निवासः, सिद्धियोगः, विवाहो दिवासात्रौ, नैसेना दिवसः उत्पन्ना-११ व्रतं सर्वेषां, पूर्वदक्षिण यात्रा एकादश्यां, शिववासः, सिद्धियोगः रा. २।३८ या. ततः मृत्युयोगः, विवाहो दिवासात्रौ, नैसेना दिवसः गो मूत्रेण पारणम्, कृष्ण वस्त्र नीलमादि रत्न धारणम्, शिववासः, अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि. २।०० उ. प्रदोष-१३ व्रतं, भद्रा ४९।५५ उ., विवाहः-दक्षिण यात्राश्च स्वात्यां, सिद्धियोगः प्रदोष-१४ व्रतं, भद्रा २१।२९ या., अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि. ४।३० उ. मार्ग-३० स्नानदानादिः, पाक्वणं, अशुभवारान्तिवर्ते दशै दुर्भिक्षं च प्रजाभयम्, शिववासः	सन् १४३४ साल, संवत् २०८३, शके - १९४८, याभ्यागोलः, याभ्यायनम्, हेमन्तर्तुः (राहु) पूर्वकालः, शुद्धसमयः

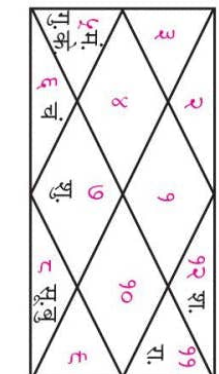
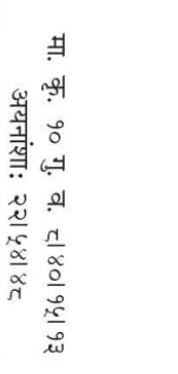
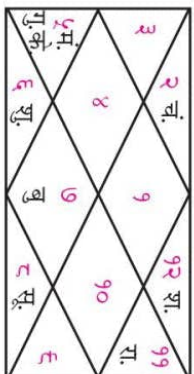
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलान्तिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

अर्धग्रहाराबोधचक्रम्

तिथियः	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	मिश्रमानम्	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिंह.अं.	कन्या.अं.	तुला.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
दिनानि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.
१. बुध	४।०४।११।११	६।२०।५१।०४	४।०३।४८।११	५।२७।०६।२३	११।१२।४०।१४	१०।०२।४५।५०	४३।१२	१७।१४	१८।५८	२०।५५	२१।१२	१।३४	३।४६	६।०१	८।२२	१०।४२	१२।४३	१४।१६	१५।४७
२. गुरु	४।०४।३५।४३	६।२१।५६।०४	४।०३।५२।२१	५।२७।४२।५४	११।१२।३८।०१	१०।०२।४२।३८	४३।११	१७।०८	१८।५३	२०।५०	२१।०७	१।२६	३।४१	५।५६	८।१७	१०।३७	१२।१८	१४।१४	१५।४२
३. शुक्र	४।०४।५८।२३	६।२३।२४।०६	४।०३।५४।४५	५।२८।२६।२७	११।१२।३७।०३	१०।०२।३६।२८	४३।१०	१७।०४	१८।४८	२०।४५	२१।०२	१।२४	३।३६	५।५१	८।१२	१०।३२	१२।३३	१४।०८	१५।३७
४. शनि	४।०५।२१।०३	६।२४।४६।०८	४।०३।५७।०८	५।२६।०६।५८	११।१२।३६।०५	१०।०२।३६।१७	४३।०८	१७।००	१८।४४	२०।४१	२१।५८	१।२०	३।३२	५।४७	८।०८	१०।२८	१२।२६	१४।०५	१५।३३
५. रवि	४।०५।४३।४३	६।२६।१४।१०	४।०३।५६।३३	५।२६।५३।३१	११।१२।३५।०७	१०।०२।३३।०६	४३।०८	१६।५६	१८।४०	२०।३७	२१।५४	१।१६	३।२८	५।४३	८।०४	१०।२४	१२।२५	१४।०१	१५।२३
६. सोम	४।०६।०६।२३	६।२७।३६।१२	४।०४।०१।५७	६।००।३७।०३	११।१२।३४।१०	१०।०२।२६।५५	४३।०७	१६।५२	१८।३६	२०।३३	२१।५०	१।१२	३।२४	५।३६	८।००	१०।२०	१२।२१	१४।५७	१५।२५
८. मंगल	४।०६।२६।०३	६।२८।०४।१३	४।०४।०४।२१	६।०१।२०।३५	११।१२।३३।१३	१०।०२।२६।४४	४३।०६	१६।४७	१८।३१	२०।२८	२२।४५	१।०७	३।१८	५।३४	७।५५	१०।१५	१२।१६	१४।२०	१५।२०
८. बुध	४।०६।५१।४३	७।००।२६।१४	४।०४।०६।४४	६।०२।०४।०७	११।१२।३२।१६	१०।०२।२३।३३	४३।०५	१६।४३	१८।२७	२०।२४	२२।४१	१।०२	३।१४	५।२८	७।५१	१०।११	१२।१२	१४।१८	१५।१६
१०. गुरु	४।०७।१४।२३	७।०१।५४।१५	४।०४।०६।०७	६।०२।४७।३८	११।१२।३१।१८	१०।०२।२०।२२	४३।०४	१६।३८	१८।२२	२०।१८	२२।३६	०।५७	३।०८	५।२४	७।४६	१०।०६	१२।०७	१४।४३	१५।११
११. शुक्र	४।०७।३२।४०	७।०३।२६।३४	४।०४।१०।१६	६।०३।३३।३६	११।१२।३२।०४	१०।०२।१७।११	४३।०३	१६।३४	१८।१८	२०।१८	२२।३२	०।५३	३।०५	५।२०	७।४२	१०।०२	१२।०३	१४।३६	१५।०७
१२. शनि	४।०७।५०।५७	७।०५।०४।५२	४।०४।११।२५	६।०४।५६।३७	११।१२।३२।४८	१०।०२।१४।००	४३।०२	१६।२८	१८।१३	२०।१०	२२।२७	०।४८	३।००	५।१५	७।३७	१०।५७	१२।३४	१४।०२	१५।०२
१३. रवि	४।०८।०६।४४	७।०६।१०।१०	४।०४।१२।३४	६।०५।५।३६	११।१२।३३।३४	१०।०२।१०।४८	४३।०१	१६।२४	१८।०८	२०।०५	२२।२२	०।४३	३।०५	५।१०	७।३२	१०।५२	१२।३२	१४।५७	१५।०७
१४. सोम	४।०८।२७।३१	७।०८।१५।२८	४।०४।१३।४३	६।०५।५१।३४	११।१२।३४।०८	१०।०२।०७।३८	४३।००	१६।१८	१८।०३	२०।००	२२।१७	०।३८	३।०५	५।०५	७।२७	१०।४७	१२।४८	१४।५२	१५।५२
३०. मंगल	४।०८।४५।४८	७।०६।५०।४६	४।०४।१४।५२	६।०६।३७।३२	११।१२।३५।०४	१०।०२।०४।२७	४२।५८	१६।१४	१७।५८	२२।५२	२२।१२	०।३३	३।०५	५।००	७।२२	१०।४२	१२।४३	१४।१८	१५।४७

दिवार्धग्रहस	निशार्धग्रहस
दि.६।२१-१०।४०।दि.१२।००-१।१८	रा.१२।००-१।४०।रा.३।२१-५।०२
दि.२।३८-५।१६	रा.१२।००-१।४१।रा.५।०३-६।४५
दि.६।२२-१२।००	रा.८।३८-१०।१८
प्रा.६।४४-८।०३।दि.१।१८-२।३८।रा.५७-५।१६	सं.५।१६-६।५७।रा.१।४१-३।२२।रा.५।०३-६।४५
दि.१०।४१-१।१८	रा.१०।१८-१२।००।रा.१।४१-३।२२
दि.८।३-६।२२।दि.२।३७-३।५६	रा.१०।१८-१२।००।रा.३।२२-५।०३
रा.६।५६-८।३७	रा.६।५६-८।३७
दि.६।२२-१०।४१।दि.१२।००-१।३८	रा.१२।००-१।४१।रा.३।२२-५।०३
रा.१२।००-१।४१।रा.५।०३-६।४७	रा.१२।००-१।४१।रा.५।०३-६।४७
दि.६।२३-१२।००	रा.८।३७-१०।१८
प्रा.६।४६-८।०४।दि.१।१८-२।३७।रा.५५-५।१४	सं.५।१४-६।५५।रा.१।४१-३।२३।रा.५।०४-६।४७
रा.१०।१८-१२।००।रा.१।४१-३।२३	रा.१०।१८-१२।००।रा.१।४१-३।२३
रा.६।५४-८।३६	रा.६।५४-८।३६



विविध विषयः-रविव्रतं- आदौ वृश्चिकमेघान्ते रविवारो यदा भवेत्। तदा रविव्रतारम्भविसर्गौ शास्त्रसम्मतौ। शुक्लपक्षे व्रतं कुर्यात् सम्यग्देवस्य भास्वतः।। **मार्गशीर्ष काल भौरवाष्टमी-सा च रात्रिव्यापिनी** ग्राह्या। मार्गशीर्षिसताष्टम्यां कालभैरवसन्निधौ। उपोष्य जागरणं कुर्वन् सर्व पापैः प्रमुच्यते। इतिकाशी-खण्डाद्रात्रिव्रतत्वावगतेः। ‘रुद्रव्रतेषु सर्वेषु कर्तव्या सम्मुखीतिथिः’। इतिब्रह्मवैवर्तेउच्यते। मार्गकृष्णकालभैरवोत्पत्तिदिनमस्तिदिने तत्पूजनमुपवासश्च कार्यः।

अष्टाङ्गार्घ्यः- आपः क्षीरं कुशाग्रानि घृतञ्च दधितण्डुलाः। सिद्धार्थकारश्च पुष्पाणि चाष्टाङ्गार्घ्यः प्रकथ्यते।।

अष्टाङ्गप्रणामः- उरसा शिरसा दृष्ट्या मनसा वचसा तथा पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामेऽष्टाङ्क ईरितः।।

चरणोदकग्रहणमन्त्रः- अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् देव्याः (विष्णोः) पादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम्।।

सन् १४३४ साल, संवत् २०८३, शाके १९४८ चाय्पागोलः, चाय्पायनम्, हेमन्तर्तुः (राहु) पूर्वकालः, ता. १७ तः अशुद्धसमयः

दिनांकः ६ दिसम्बर से २४ दिसम्बर २०२६ ई०

❖ अमृतयोगश्च दि. ३।३२ या. ततः सिद्धियोगः, वक्रकीगुरः ४५।३५, दीक्षाग्रहणं

❖ अमृतयोगश्च दि. ३।३२ या. ततः सिद्धियोगः, वक्रकीगुरः ४५।३५, दीक्षाग्रहणं

❖ अमृतयोगश्च दि. ३।३२ या. ततः सिद्धियोगः, वक्रकीगुरः ४५।३५, दीक्षाग्रहणं

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

हरिश्चो व्रतं, गंड सं. ६।१८ उ. रा. १२।१८ या., विवाहः-द्विगमनश्च मूले, पश्चिम यात्रा ज्येष्ठायाम्, अमृतयोगः

चन्द्रदर्शनं, पूर्वोत्तर यात्रा, विवाहः-द्विगमनश्च मूले, सुप्रभक्षकं, शिववासः दि. ७।२६ उ., अग्निवासः, दीक्षाग्रहणं प्रा. ७।२९ उ.

यशस्मति स्मृति दिवसः, तुतीयायां पूर्वोत्तर यात्रा, विवाहः द्विगमनश्च उत्तराषाढे, शिववासः-मृत्युयोगश्च दि. ८।३८ या., दीक्षाग्रहणं

श्री उमामहेश्वर व्रतं, श्री गणेश ४ व्रतं, भद्रा ४५।१०० उ., सिद्धियोगः विपणि च दि. १।१४ या. ततः अग्निवासः

भद्रा १७।३१ या., भद्रवारम्भः रा.६।४० उ., पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां, द्विगमनं, शिववासः-अग्निवासः-अमृतयोगश्च दि. १।४८ उ., दीक्षाग्रहणं दि. १।४९ उ.

विवाहपंचमी, श्री सीताराम विवाहोत्सवः, जनकपुरे सीतारामदर्शनं, मुण्डनं, विवाहः दिवायात्रौ, द्विगमनं, गृहप्रवेशः, दक्षिण यात्रा मकरस्थे चंद्रे ततो दक्षिण पश्चिम यात्रा, शिववासः, अग्निवासः-❖

मासान्तः, स्कन्दपट्टी व्रतं, चम्पाषट्ठी व्रतं, शिववासः-मृत्युयोगश्च सं. ४।४८ या. ततः अमृतयोगः-अग्निवासश्च

भद्रा २७।१०८ उ. ५।७।३१ या., मूले धनुषि रविः ३२।१०८ या. शुद्धः मु. ३० फलं साम्यं षडशीति सं. पु. कालो दि. १२।१०० उ., खरमासारम्भः, विजय दिवसः, अग्निवासः, सिद्धियोगः सं. ५।४० या. ततः मृत्युयोगः

मासादिः, सोनी स्मृति दिवसः, अमृतयोगः सं. ५।५८ या. ततः मृत्युयोगः

दशम्यां उत्तरयात्रा, महानंदा नवमी, शिववासः-अग्निवासः-अमृतयोगश्च सं. ५।४५ या. सर्वाथसिद्धियोगः दि. १।३६ उ.

परिष्वयोगः ५५।१००, भद्रा ५४।१०५ उ., भद्रका समाप्तिः दि. ११।३७ उ., गंड प्रा. ६।४८ उ. १२।४८ या., एकादश्यां पूर्वा विना यात्रा, अग्निवासः-मृत्युयोगश्च सं. ५।०२ या. ततः अमृतयोगः

मोक्षदा-११ व्रतं सर्वेषां, भद्रा २२।३९ या., सूतीस्नानं, संगीता स्मृतिदिवसः, गीताजयन्ती, मृत्युयोगः दि. ३।५४ या. ततः शिववासः, सर्वाथसिद्धियोगः दि. १।१० या.

केशवद्वादशी, गोमूत्रेण पारणम्, प्रदोष १३ व्रतं, शिववासः, मृत्युयोगः दि. २।०८ या. ततः अग्निवासः, उमाकान्त स्मृति दिवसः

प्रदोष-१४ व्रतं, सोहय्यां पूर्व-दक्षिण यात्रा, सिद्धियोगः-शिववासश्च दि. १।३१ या. ततः राज्यप्रदयोगः

मृग. न. ५६।१०५, पूर्णिमा व्रतं, भद्रा ८।५३ उ. ३६।४ या., रोहिण्यां पूर्व-दक्षिण यात्रा, सर्वाथसिद्धियोगः, किसान दिवसः, अग्निवासः, सर्वाथसिद्धियोगः दि. ७।५२ या.

मार्गी पूर्णिमा स्नानदानादिः, १ तिथि ५४।१०६, क्षेत्र स्नानं, हरिहरनाथपूजनं दर्शनं, भगवान् दत्तात्रेयावतार दिवसः, त्रेता युगान्तः, दशतिथिः रा. ५। ४७ उ., सिद्धियोगः दि. ८।०८ या. ततः शिववासः

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथयः	दिनानि	तिथि	घ. मि.	नक्षत्राणि	घं. मि.	योगाः	दं. प.	कणाणि	दं. प.	चन्द्राण्यः	स्पष्टसूर्यः	राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदयः	घं. मि.	सूर्यास्तः	घं. मि.	मु०	ता०	ने०	ता०	अ०	ता०
१	बुध	६।०।००	अहोरात्र	ज्ये.३४।४८	रा.८।४२	धृ.१०।५६	किं.२६।१७	बृ.रा.८।४२	७।२३।०५।२६	२६।०३	५।३३	३०	२३	६	५।४७	५।३३	३०	२३	२३	२३	२३	२३	२३
१	गुरु	१।४२	प्रा.७।२६	मूल.४१।०६	रा.१।१४	शू.७।२०	बक.१।४२	धनु	७।२४।०६।३८	२६।०२	६।४८	५।३२	१	२४	५।३२	५।३२	१	२४	२४	२४	२४	२४	२४
२	शुक्र	७।०४	दि.८।३८	पू.५।४७।३८	रा.१।५१	ग.८।३८	कौ.७।०४	धनु	६।२५।०७।५५	२६।००	६।४८	५।३२	२	२५	५।३२	५।३२	२	२५	२५	२५	२५	२५	२५
३	शनि	१२।२६	दि.१।१४	उ.५।५३।५६	रा.४।२२	चू.८।५८	ग.१।२६	मकर	६।२६।०८।१२	२५।५८	६।४८	५।३२	३	२६	५।३२	५।३२	३	२६	२६	२६	२६	२६	२६
४	रवि	१७।३१	दि.१।४८	श्र.५६।३८	रा.६।४०	शु.१०।५८	वि.१०।३१	मकर	७।२७।१०।२६	२५।५६	६।४८	५।३२	४	२७	५।३२	५।३२	४	२७	२७	२७	२७	२७	२७
५	सोम	२१।४८	दि.३।३२	धनि.६०।००	अहोरात्र	व्या.१।३०	बा.२।१४	म.सं.७।३८	७।२८।१।४५	२५।५५	६।४८	५।३२	५	२८	५।३२	५।३२	५	२८	२८	२८	२८	२८	२८
६	मंगल	२५।००	सं.५।४८	धनि.४।२६	दि.८।४५	ह.१।१५	तै.२५।००	कुंभ	७।२८।११।०३	२५।५४	६।४८	५।३२	६	२८	५।३२	५।३२	६	२८	२८	२८	२८	२८	२८
७	बुध	२७।०८	सं.५।४०	शत.८।१३	दि.१०।०६	च.१०।०७	च.२७।०८	कु.रा.४।५२	८।००।११।१८	२५।५३	६।४८	५।३२	७	२९	५।३२	५।३२	७	२९	२९	२९	२९	२९	२९
८	गुरु	२७।५३	सं.५।५८	पू.५।१०।४४	दि.१।०८	सि.८।००	बक.२७।५३	मीन	८।०१।१५।३५	२५।५२	६।५०	५।३०	८	२९	६।५०	६।५०	८	२९	२९	२९	२९	२९	२९
९	शुक्र	२७।१८	सं.५।४५	उ.५।१।५५	दि.१।३६	व्य.४।५२	कौ.२७।१८	मीन	८।०२।१६।५७	२५।५१	६।५०	५।३०	९	३०	६।५०	६।५०	९	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१०	शनि	२८।३०	सं.५।०२	रे.१।५८	दि.१।३७	वरी.००।४४	ग.२५।३०	मी.दि.१।३७	८।०३।१८।१८	२५।५०	६।५०	५।३०	१०	३०	६।५०	६।५०	१०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
११	रवि	२९।३६	दि.३।५४	अ.१।०४	दि.१।१०	शि.४६।५४	वि.२२।३६	मेघ	८।०४।१९।४१	२५।४८	६।५०	५।३०	११	३०	६।५०	६।५०	११	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१२	सोम	१८।१८	दि.२।०८	भ.८।५०	दि.१।०२	सि.४३।२५	बा.१८।१८	मे.दि.३।५८	८।०५।२१।०३	२५।४८	६।५०	५।३०	१२	३०	६।५०	६।५०	१२	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१३	मंगल	१४।०८	दि.१।३१	कु.५।०१	दि.८।५१	सा.३६।१८	तै.१४।०८	वृष	८।०६।२२।२५	२५।४७	६।५१	५।०८	१३	३०	६।५१	६।५१	१३	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१४	बुध	८।५३	दि.१।०४	रो.२।३२	दि.७।५२	शु.२८।४७	व.८।५३	वृष	८।०७।२३।४७	२५।४६	६।५१	५।०८	१४	३०	६।५१	६।५१	१४	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१५	गुरु	३।१४	दि.८।०८	आ.५।४।२७	दि.४।३८	शु.२०।५८	बक.३।१४	मिथुन	८।०८।२५।०८	२५।४६	६।५१	५।०८	१५	३०	६।५१	६।५१	१५	३०	३०	३०	३०	३०	३०

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथयः	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	मिश्रमानम्	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिंह.अं.	कन्या.अं.	तुला.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.	दि.अं.
१. बुध	४।०८।०४।०५	७।१।२६।०४	४।०४।१६।०१	६।०७।२३।३०	१।१।२५।४८	१।०२।०१।१६	४३।०१	१६।०८	१७।५३	१८।५०	२२।०७	०।२८	२।४०	४।५५	७।१७	६।३७	१।३३	१३।१४	१।४२	दि.८।२३-१०।४१।दि.१२।००-१।१८
१. गुरु	४।०८।२२।२२	७।१३।०१।२२	४।०४।१७।१०	६।०८।०८।२८	१।१।३६।३२	१।०१।५८।०५	४३।०१	१६।०४	१७।४८	१८।४५	२२।०२	०।२३	२।३५	४।५०	७।१२	६।३२	१।३३	१३।०८	१।३७	दि.२।३६-५।१२
२. शुक्र	४।०८।४३।२३	७।१४।४३।०२	४।०४।१७।०१	६।०८।०२।५०	१।१।३६।४८	१।०१।५४।५४	४३।००	१६।००	१७।४५	१८।४१	२२।५८	०।१६	२।३१	४।४६	७।०८	६।२८	१।२८	१३।०५	१।३३	दि.६।२४-१२।००
३. शनि	४।१०।०४।२४	७।१६।२४।४२	४।०४।१६।५२	६।०८।२६।१२	१।१।३७।०५	१।०१।५१।४३	४२।५८	१७।५६	१७।४१	१८।३७	२२।५४	०।१५	२।२७	४।४२	७।०४	६।२४	१।२५	१३।०१	१।२८	सं.५।१२-६।५४।रा.१।४२-३।२४।रा.५।०६-६।४८
४. रवि	४।१०।२५।२४	७।१८।०६।२२	४।०४।१६।४३	६।१०।४८।३४	१।१।३७।२१	१।०१।४८।३२	४२।५८	१७।५१	१७।३६	१८।३२	२२।४८	०।११	२।२३	४।३८	६।५८	६।१८	१।२०	१३।५६	१।२४	दि.१०।४२-१।१७
५. सोम	४।१०।४६।२४	७।१८।४८।०१	४।०४।१६।३४	६।११।४२।५६	१।१।३७।३७	१।०१।४५।२१	४२।५७	१७।४७	१७।३२	१८।२८	२२।४५	०।०७	२।१६	४।३४	६।५५	६।१५	१।१६	१३।५२	१।२०	दि.८।६-८।२४।दि.१।३६-३।५३
६. मंगल	४।११।०७।२४	७।२१।२६।४०	४।०४।१६।२६	६।१३।३६।१८	१।१।३७।५३	१।०१।४२।१०	४२।५६	१७।४४	१७।२६	१८।२५	२२।४२	०।०४	२।१६	४।३१	६।५२	६।१२	१।१३	१३।४८	१।१७	दि.८।६-८।२४।दि.१।१८-२।३६
७. बुध	४।११।२८।२४	७।२३।१।१६	४।०४।१६।१८	६।१३।२६।१०	१।१।३७।०८	१।०१।३८।५८	४२।५६	१७।३८	१७।२३	१८।१८	२२।३६	०।०४	२।१७	४।२५	६।४६	६।०६	१।०७	१३।४३	१।१७	दि.८।२४-१०।४२।दि.१।२०-१।१७
८. गुरु	४।११।४६।२४	७।२४।५२।५८	४।०४।१६।१०	६।१४।२३।०१	१।१।३७।२५	१।०१।३५।४८	४२।५६	१७।३२	१७।१७	१८।१३	२२।३०	०।०४	२।१८	४।१८	६।४०	६।००	१।०१	१३।३७	१।१७	दि.२।३६-५।१०
९. शुक्र	४।११।५६।४६	७।२६।३६।०६	४।०४।१६।३७	६।१५।२२।०७	१।१।३७।५१	१।०१।३३।३७	४२।५६	१७।२७	१७।१२	१८।०८	२२।२५	०।०४	२।१८	४।१४	६।३५	६।५५	१।०५	१३।३२	१।१७	दि.८।२५-१२।००
१०. शनि	४।१२।१०।०७	७।२८।१६।१४	४।०४।१६।०४	६।१६।२१।१२	१।१।३७।१७	१।०१।२६।२६	४२।५४	१७।२२	१७।०७	१८।०३	२२।२०	०।०४	२।१८	४।०८	६।३०	६।५०	१।०५	१३।२७	१।१७	प्रा.६।५०-८।०७।दि.१।१७-२।३५।दि.३।५२-५।१०
११. रवि	४।१२।२०।२८	८।००।०२।२२	४।०४।१६।३२	६।१७।२०।१७	१।१।३७।४३	१।०१।२६।१५	४२।५३	१७।१७	१७।०२	१८।५८	२२।१५	०।०४	२।१८	४।०४	६।२५	६।४५	१।०५	१३।२२	१।१७	सं.५।१०-६।५२।रा.१।४२-३।२४।रा.५।०७-६।५१
१२. सोम	४।१२।३०।४८	८।०३।४५।२६	४।०४।१६।००	६।१८।१६।२२	१।१।३७।४३	१।०१।२३।०४	४२।५३	१७।१२	१६।५७	१८।५३	२२।१०	०।०४	२।१८	४।०४	६।२०	६।४५	१।०५	१३।१७	१।१७	दि.१०।४२-१।१७
१३. मंगल	४।१२।४१।१०	८।०३।२८।३६	४।०४।०८।२८	६।१८।१८।२७	१।१।३७।४३	१।०१।२३।५३	४२।५३	१७।०७	१६।५											

तिथयः	दिनानि	तिथि	ब. मि.	नक्षत्राणि	ब. मि.	योगः	कणाणि	चन्द्राण्यः	स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	मु०	ने०	अ०
२	शुक्र	५१।१७	रा.३।२१	पुन.४६।२७	रा.२।३७	ब्र.१३।०३	तै.२४।१८	मि.रा.६।०७	रा.०६।२६।३४	२५।४८	६।५०	५।१०	१६	१०	२५
३	शनि	४५।४३	रा.१।०७	पु.४६।१८	रा.१।२१	पें.५।१३	क.२८।२८	कर्क	रा.१०।२७।५८	२५।५०	६।५०	५।१०	१७	११	२६
४	रवि	४०।२५	रा.११।००	श्रु.४२।४३	रा.११।५५	वि.५०।०८	क.रा.११।५५	क.रा.११।५५	रा.११।२६।२४	२५।५२	६।५०	५।१०	१८	१२	२७
५	सोम	३५।३७	रा.६।०८	मघा.३६।४१	रा.१०।४१	प्री.४३।१८	कौ.८।०१	सिंह	रा.१२।३०।४८	२५।५३	६।४८	५।११	१८	१३	२८
६	मंगल	३१।४२	सं.७।३०	पू.फ.३७।३१	रा.६।४८	आ.३७।०८	गर.३।३८	सिं.रा.३।४७	रा.१३।३२।१४	२५।५४	६।४८	५।११	२०	१४	२८
७	बुध	२८।४०	सं.६।१७	ऊ.फ.३६।०८	रा.६।१७	सौ.३०।४१	वि.०।११	कन्या	रा.१४।३३।३८	२५।५५	६।४८	५।११	२१	१५	३०
८	गुरु	२६।४४	सं.५।३१	ह.३५।५५	रा.६।११	शो.२७।०५	कौ.२६।४४	कन्या	रा.१५।३५।०४	२५।५६	६।४८	५।११	२२	१६	३१
९	शुक्र	२५।००	सं.४।४८	चि.३६।५२	रा.६।३३	अ.२३।०७	गर.२५।००	क.दि.६।२१	रा.१६।३६।३०	२५।५८	६।४८	५।१२	२३	१७	१
१०	शनि	२६।३४	सं.५।०२	स्वा.३६।०४	रा.१०।२६	सु.२०।४८	वि.२६।३४	तुला	रा.१७।३७।५५	२६।००	६।४८	५।१२	२४	१८	२
११	रवि	२८।३०	सं.६।१२	वि.४२।३५	रा.११।५०	झ.१६।१३	बा.२८।३०	कु.रा.५।२८	रा.१८।३६।२०	२६।०२	६।४८	५।१२	२५	१९	३
१२	सोम	३१।२८	रा.७।२२	अनु.४७।१०	रा.१।३८	शू.१८।२६	तै.३१।२८	तुल्यचक्र	रा.१९।४०।४५	२६।०३	६।४७	५।१३	२६	२०	४
१३	मंगल	३५।४३	रा.६।०४	ज्ये.५२।४४	रा.३।५३	ग.१८।३५	गर.३।३५	वृ.रा.३।५३	रा.२०।४२।१०	२६।०४	६।४७	५।१३	२७	२१	५
१४	बुध	४०।३८	रा.११।०२	मूल.५४।५७	रा.४।४६	वृ.१८।२२	वि.८।१०	धनु.	रा.२१।४३।३५	२६।०५	६।४७	५।१३	२८	२२	६
३०	गुरु	४६।०१	रा.१।११	पू.षा.६०।००	अहोरात्र	झ.२०।३२	च.१३।१८	धनु.	रा.२२।४५।००	२६।०६	६।४७	५।१३	२८	२३	७

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिरथ

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

अर्धग्रहराब्धचक्रम्

तिथयः	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	मिश्रमानम्	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिंह.अं.	कन्या.अं.	तुला.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
दिनानि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	मिश्रमानम्	ब. मि.	व. मि.	मि. मि.	क. मि.	सिंह. मि.	कन्या. मि.	तुला. मि.	वृ. मि.	ध. मि.	म. मि.	कु. मि.	मी. मि.
२. शुक्र	४।१३।१५।१५	रा.०८।३५।२१	४।०४।०३।५५	६।२२।०७।३५	११।१२।४४।५३	१०।०१।१०।२०	४२।५४	१४।५२	१८।३७	१८।३३	२०।५०	२३।१२	१।२४	३।३८	६।००	८।२०	१०।२१	११।५७	१३।२५
३. शनि	४।१३।२८।३८	रा.१०।१५।५२	४।०४।०२।१६	६।२२।५८।३३	११।१२।४८।२१	१०।०१।०७।०८	४२।५५	१४।४७	१८।३२	१८।२८	२०।४५	२३।०७	१।१८	३।३४	५।५५	८।१५	१०।१६	११।५२	१३।२०
४. रवि	४।१३।४२।००	रा.११।५६।२३	४।०४।०१।३७	६।२३।४६।३०	११।१२।५१।४८	१०।०१।०३।५८	४२।५६	१४।४२	१८।२३	१८।२३	२०।४०	२३।०२	१।१४	३।२८	५।५०	८।१०	१०।११	११।४७	१३।१५
५. सोम	४।१३।५५।२२	रा.१३।३६।५४	४।०३।५८।५८	६।२४।४०।२७	११।१२।५५।१७	१०।०१।००।४७	४२।५७	१४।३७	१८।२२	१८।१६	२०।३५	२३।५७	१।०८	३।२४	५।४५	८।०५	१०।०६	११।४२	१३।१०
६. मंगल	४।१४।०८।४४	रा.१५।१७।२५	४।०३।५७।१८	६।२५।३१।२४	११।१२।५८।४५	१०।००।५७।३६	४२।५८	१४।३२	१८।१७	१८।११	२०।३०	२३।५२	१।०४	३।१८	५।४०	८।००	१०।०१	११।३७	१३।०५
७. बुध	४।१४।२२।०६	रा.१६।५७।५५	४।०३।५५।४०	६।२६।२२।२१	११।१३।०२।१२	१०।००।५४।२५	४२।५८	१४।२७	१८।१२	१८।०६	२०।२५	२३।४७	०।५८	३।१४	५।३५	७।५५	११।३२	१३।००	१३।००
८. गुरु	४।१४।३५।२८	रा.१८।३८।२५	४।०३।५४।०२	६।२७।१३।१८	११।१३।०५।३८	१०।००।५१।१४	४२।५८	१४।२२	१८।०७	१८।०१	२०।२०	२३।४२	०।५४	३।०८	५।३०	७।५०	११।२७	१३।५५	१३।५५
९. शुक्र	४।१४।३७।३८	रा.२०।२६।५३	४।०३।४८।२७	६।२८।२५।१८	११।१३।०४।१०	१०।००।४८।०३	४२।५८	१४।१७	१८।०२	१७।५६	२०।१५	२३।३७	०।४८	३।०४	५।२५	७।४५	११।२२	१३।५०	१३।५०
१०. शनि	४।१४।३८।५०	रा.२२।१५।२१	४।०३।४७।५२	६।२८।३७।१८	११।१३।०८।४०	१०।००।४४।५२	४३।००	१४।१२	१७।५७	१७।५१	२०।१०	२३।३५	०।४४	३।०५	५।२०	७।४०	११।१७	१३।४५	१३।४५
११. रवि	४।१४।४२।००	रा.२४।०३।४८	४।०३।४७।१७	७।००।४८।१८	११।१३।१०।१०	१०।००।४१।४१	४३।०१	१४।०७	१७।४६	१७।४६	२०।०५	२३।२७	०।३८	३।०५	५।१५	७।३५	११।१२	१३।४०	१३।४०
१२. सोम	४।१४।४४।१०	रा.२५।२२।१७	४।०३।४३।४२	७।०२।०१।१८	११।१३।११।४०	१०।००।३८।३०	४३।०२	१४।०२	१७।४७	१७।४१	२०।००	२३।२२	०।३४	३।०५	५।१०	७।३०	११।०७	१३।३५	१३।३५
१३. मंगल	४।१४।४६।२०	रा.२७।४०।४५	४।०३।२६।०७	७।०३।१२।१८	११।१३।१३।१०	१०।००।३५।१८	४३।०३	१४।५७	१७।४२	१७।३६	२०।५३	२३।१७	०।२८	३।०५	५।०५	७।२५	११।०२	१३।३०	१३।३०
१४. बुध	४।१४।४८।३०	रा.२८।२६।१३	४।०३।२०।३२	७।०४।२३।१८	११।१३।१४।४०	१०।००।३२।०८	४३।०३	१४।५२	१७।३७	१७।३१	२०।४८	२३।१२	०।२४	३।०५	५।००	७।२०	११।०२	१३।२५	१३।२५
३०. गुरु	४।१४।५०।४०	रा.०१।१७।४०	४।०३।१४।५८	७।०५।३४।१८	११।१३।१६।१०	१०।००।२८।५७	४३।०३	१४।४७	१७।३२	१७।२६	२०।४३	२३।०७	०।१८	३।०५	५।५५	७।१५	११।१६	१३।५२	१३।२०

पौष कृष्ण पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८३, शाके १९४८, चाम्यागोलः चाम्यागमम्, हेमन्तर्तुः (राहु) पूर्वकालः, अशुद्धसमयः

दिनांकः २५ दिसम्बर २०२६ से ७ जनवरी २०२७ ई०

पौषे कौशिकी स्नानं पुण्यप्रदं, दशतिथिः रा. ३।२१ या, अग्निवासः, मृत्युयोगः
वैधृति योगः ५।२।१८, भद्रा १८।२८ उ. ४५।४३ या.
श्री लम्बोदर ४ व्रत, गंड सं. ७।३१ उ. १।३१ या, शिववासः
पूर्व फालगुन्यां उतथात्रा, शिववासः, अमृतयोगः रा. ६।०८ या. ततः सिद्धयोगः
भद्रा ३१।४२ उ., पूर्वाषाढे रविः २५।४४, सप्तम्यां पूर्वफालगुन्यां पूर्व यात्रा, मृत्युयोगः, सं. ७।३० या. ततः अमृतयोगः
सूर्यसप्तमी, गंगा स्नानं सूर्यग्रहण समफलं, भद्रा. ००।१९ या, अग्निवासः, सिद्धयोगः सं. ६।१७ या. ततः मृत्युयोगः, सर्वाश्वसिद्धयोगः रा. ६।१७ उ.
अपूर्वाष्टकाष्टमी, अष्टम्यां पूर्व यात्रा, शिववासः-अमृतयोगश्च सं. ५।३१ या. ततः मृत्युयोगः
जनवरी- २०२७ ई० आरम्भः, अन्वष्टका नवमी, पूर्व दक्षिण यात्रा, अग्निवासः, अमृतयोगः सं. ४।४८ या.
एकादश्यां स्वात्पां दक्षिण पश्चिम यात्रा, मृत्युयोगः सं. ५।०२ या. ततः अमृतयोगः-शिववासश्च, सर्वाश्वसिद्धयोगः रा. १०।२६ या, विश्व हास्य दिवसः
सफला-११ व्रत सर्वेषां, श्री पार्श्वनाथ जयंती, शिववासः, अग्निवासः, मृत्युयोगः सं. ६।१२ या.
गोमयेन पाणम्, शिववासः-मृत्युयोगश्च सं. ७।२२ या, सर्वाश्वसिद्धयोगः रा. १।३६ या, परस् पालियो दिवसः
प्रदोष १३ व्रत, भद्रा ३५।४३ उ., गंड रा.१।३१ उ., पश्चिम यात्रा, दशातारकारम्भः, अग्निवासः, सिद्धयोगः, रा. ६।०४ या. ततः राज्यप्रदयोगः
प्रदोष-१४ व्रत, भद्रा ८।१० या, गंड प्रा. ७।३१ या.
पौषी ३० स्नानदानादिः, पार्वणं, शुभवारान्तरे दर्शं सुभिक्षं च प्रजासुखम्, शिववासः, अग्निवासः

शकुन्तम्-पौषादितो मासचतुष्टयेषु यस्यातिथौ तोयधरो हि दृश्यः।

तत्सप्तमे मासि तिथौ च तस्यां वृष्टिःप्रवाच्या नियमेन विज्ञेः।

दशातारकविचारः- पौषेमूलभरण्यन्तं चन्द्रचारेण गर्भति। आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यचारेण वर्धति।। एवं चैत्रे तथा ज्येष्ठे शुक्लपक्षे प्रयत्नतः। आर्द्रादिदशताराणां ज्ञात्वा गर्भं वदेत्फलम्।

गर्भपुष्टिविचारः- वाताभ्रगर्जतडितोदकानि हिमप्रपातः कनकावधतः।

अकालसन्ध्यापरिवेषणञ्च नवप्रकारैः प्रभवन्ति गर्भाः। तत्र पुष्टेगर्भं सुवृष्टिः समे मध्यमा वृष्टिहीने चाल्पा वृष्टिरिति।

गोचरशान्तादिविचारः- द्विजन्मनि पंचम- सप्त- मगाश्चतुराष्टक द्वादशधर्मयुताः। धनधान्यहिरण्य-विनाशकरा रकिराहुशनैश्चर भूमिसुताः।

कौशिकिग्नानमन्त्रः- गाधिराजसुते देवि विश्वामित्र मुने श्वसः।

ऋचिकर्णार्थे सत्यायं पापं मे हर कौशिकि।

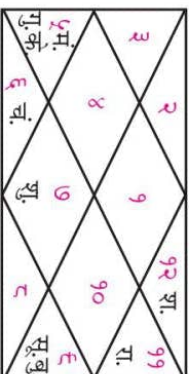
पौषामावास्यायामद्वादययोगे भारते:- अमार्कपातश्रवणैर्युक्ता

चेर्यौषमावयोः। अर्द्धोदयः स विज्ञेयः किञ्चिन्नयूने महोदयः।। किञ्चिन्नयूने

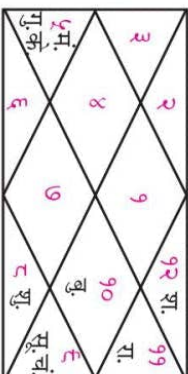
महोदय इति नक्षत्रयोगयोरन्यतरस्याभाव इत्यर्थः। अर्कवासरस्य

प्राधान्यादित स्त्रधरीयवर्षकृत्ये। अयमपि योगः दिवैव भवति, दिवैव योगः

शस्तोऽयमित्युक्तत्वात्।



पौ. कृ. ३० गु. व. रा. ४०।१५।४८
अयनांशाः २२।५४।५२



तिथयः	दिनानि	तिथि	तिथि	नक्षत्राणि	नक्षत्राणि	योगः	कणाणि	चन्द्राणयः	स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	मु०	ने०	अ०
१	शनि	२४।००	दि.४।१८	पुष्य.६।५१	दि.६।२६	प्री.१२।५१	कौ.२४।००	कर्क	६।०६।०६।२६	२६।३२	६।४२	५।१८	१५	६	२३
२	रवि	१८।४५	दि.२।११	श्र्ले.३।१०	दि.७।५७	आ.५।२३	ग.१८।४५	क.दि.७।५७	६।१०।०७।४२	२६।३६	६।४१	५।१६	१६	१०	२४
३	सोम	१४।०२	दि.१२।१७	पू.फ.५.६।५६	रा.५।२८	शो.५।५६	वि.१४।०२	सिंह	६।११।०८।५५	२६।३६	६।४०	५।२०	१७	११	२५
४	मंगल	१०।१३	दि.१०।४५	उ.फ.५.६।०५	रा.५।०६	अ.४.६।१७	बि.१०।१३	मि.दि.१।२२	६।१२।१०।०८	२६।४२	६।४०	५।२०	१८	१२	२६
५	बुध	०७।१७	दि.६।३४	ह.५.५।३६	रा.४।५३	सु.४।२६	तै.६।१७	कन्या	६।१३।११।२१	२६।४५	६।३६	५।२१	१६	१३	२७
६	गुरु	५।२७	दि.८।४६	चि.५.६।१७	रा.५।०६	धू.३।२६	व.५।२७	क.सं.५।००	६।१४।१२।३३	२६।४८	६।३८	५।२२	२०	१४	२८
७	शुक्र	०४।५१	दि.८।३४	स्वा.५.८।१४	रा.५।५६	शू.३.४।३२	बक.४।५१	तुला	६।१५।१३।३३	२६।५२	६।३८	५।२२	२१	१५	२६
८	शनि	०५।३१	दि.८।४६	वि.६।०।००	अहोरात्र	ग.३.२।३६	कौ.५।३१	तु.रा.१।००	६।१६।१४।३२	२६।५५	६।३७	५।२३	२२	१६	३०
९	रवि	०७।३६	दि.६।४०	वि.१।२७	प्रा.७।११	चू.३.१।३७	ग.७।३६	वृश्चिक	६।१७।१५।३१	२६।५८	६।३७	५।२४	२३	१७	३१
१०	सोम	११।०८	दि.११।०३	अमृ.५।४६	दि.८।५४	शु.३.१।३१	वि.११।०८	वृश्चिक	६।१८।१६।३०	२७।०१	६।३६	५।२४	२४	१८	१ क.
११	मंगल	१४।५४	दि.१२।३३	ज्ये.११।०६	दि.११।०३	व्या.३.२।१४	बा.१४।५४	वृ.दि.११।०३	६।१६।१७।२६	२७।०४	६।३५	५।२५	२५	१६	२
१२	बुध	१६।५६	दि.२।३५	मूल.१७।१४	दि.१।२६	ह.३.३।२०	तै.१६।५६	धनु	६।२०।१८।२८	२७।०७	६।३५	५।२५	२६	२०	३
१३	गुरु	२५।२२	दि.४।४३	पू.षा.२.३।४७	दि.४।०५	व.३.४।४२	व.२.५।२२	ध.रा.१०।४६	६।२१।१६।२७	२७।१०	६।३४	५।२६	२७	२१	४
१४	शुक्र	३०।४०	रा.६।४६	उ.षा.३.०।१६	सं.६।३६	सि.३.६।०१	श.३.०।४०	मकर	६।२२।२०।२७	२७।१४	६।३३	५।२७	२८	२२	५
३०	शनि	३५।३७	रा.८।४७	श्र.३.६।१८	रा.६।०३	व्या.३.६।५७	च.३.०।०८	मकर	६।२३।२१।२६	२७।१८	६।३२	५।२८	२६	२३	६

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलनसारणी चक्रम्

अर्धग्रहावेधचक्रम्

तिथयः	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	मिश्रमानम्	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिंह.अं.	कन्या.अं.	तुला.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
दिनानि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.	व. मि.
१. शनि	४।१३।२३।०७	६।२४।४६।३४	४।०१।३८।२६	७।२३।१६।४१	११।१४।२१।२०	६।२६।३८।०१	४३।१६	१२।३८	१४।२३	१६।१८	१८।३४	२०।५८	२३।१०	१।२५	३।५१	६।०६	८।०७	६।४३	११।११
२. रवि	४।१३।११।२६	६।२५।५५।३६	४।०१।३१।१७	७।२४।२७।५३	११।१४।२६।११	६।२६।३४।५०	४३।१४	१२।३३	१४।१८	१६।१३	१८।२६	२०।५३	२३।०५	१।२०	३।४६	६।०१	८।०२	६।३८	११।०६
३. सोम	४।१२।५६।४५	६।२७।०४।३८	४।०१।२४।०८	७।२५।३६।०५	११।१४।३१।०२	६।२६।३१।३६	४३।२०	१२।२६	१४।१४	१६।०६	१८।२५	२०।४६	२३।०१	१।१६	३।४२	५।५७	७।५८	६।३४	११।०२
४. मंगल	४।१२।४८।०४	६।२८।१३।३६	४।०१।१६।५६	७।२६।४४।१७	११।१४।३५।५३	६।२६।२८।२८	४३।२२	१२।२४	१४।०४	१६।०४	१८।२०	२०।४४	२३।५६	१।११	३।३७	५।५२	७।५३	६।२६	१०।५७
५. बुध	४।१२।३६।२३	६।२६।२२।४०	४।०१।०६।५०	७।२७।५२।२६	११।१४।४०।४४	६।२६।२५।१७	४३।२३	१२।१६	१४।०४	१६।००	१८।१५	२०।३६	२३।५१	१।०६	३।३२	५।४७	७।४८	६।२४	१०।५२
६. गुरु	४।१२।२४।४२	१०।००।३१।४१	४।०१।०२।४१	७।२६।००।४१	११।१४।४५।३५	६।२६।२२।०६	४३।२४	१२।१५	१४।००	१५।५५	१८।११	२०।३५	२३।४७	१।०२	३।२८	५।४३	७।४४	६।२०	१०।४८
७. शुक्र	४।१२।०६।०६	१०।०१।२०।२२	४।००।५४।४२	८।००।१०।१२	११।१४।५१।१६	६।२६।१८।५५	४३।२६	१२।१०	१५।५०	१८।०६	२०।३०	२३।४२	२६।५७	०।५७	३।२३	५।३८	७।३६	६।१५	१०।४३
८. शनि	४।११।५३।३६	१०।०२।०६।०२	४।००।४७।४३	८।०१।१६।४३	११।१४।५७।०२	६।२६।१५।४४	४३।२८	१२।०५	१५।४५	१८।०१	२०।२५	२३।३७	२६।५२	०।५२	३।१८	५।३३	७।३४	६।१०	१०।३८
९. रवि	४।११।३८।०३	१०।०२।५७।४२	४।००।३६।४४	८।०२।२६।१४	११।१५।०२।४५	६।२६।१२।३३	४३।३०	१२।००	१५।४५	१७।५६	२०।२०	२३।३२	२६।५७	०।४७	३।१३	५।२८	७।२६	६।०५	१०।३३
१०. सोम	४।११।२२।३१	१०।०३।४६।२२	४।००।३१।४६	८।०३।३८।४५	११।१५।०८।२८	६।२६।०६।२२	४३।३२	१२।५६	१५।३६	१७।५२	२०।१६	२३।२८	२६।५६	०।४३	३।०६	५।२४	७।२५	६।०१	१०।२६
११.मंगल	४।११।०६।५६	१०।०४।३५।०२	४।००।२३।४८	८।०४।४८।३६	११।१५।१४।११	६।२६।०६।११	४३।३३	१२।५१	१५।३१	१७।४७	२०।११	२३।२३	२६।५७	०।३८	३।०४	५।१६	७।२०	८।५६	१०।२४
१२. बुध	४।१०।५१।२७	१०।०५।२३।४२	४।००।१५।५०	८।०५।५६।४७	११।१५।१६।५४	६।२६।०३।००	४३।३४	१२।४६	१५।३१	१७।४२	२०।०६	२३।१८	२६।५८	०।३४	३।००	५।१४	७।१५	१०।१६	१०।१८
१३. गुरु	४।१०।३५।५५	१०।०६।१३।२२	४।००।०६।५२	८।०७।०७।१७	११।१५।२५।३७	६।२६।५६।४६	४३।३५	१२।२६	१५।२१	१७।३७	२०।०१	२३।१३	२६।५८	०।२८	३।५५	५।०६	७।१०	८।४६	१०।१४
१४. शुक्र	४।१०।०४।५२	१०।०६।०४।५८	३।२६।५८।४८	८।०८।१७।५०	११।१५।३१।२१	६।२६।५६।३८	४३।३७	१२।२२	१५।१७	१७।३३	२०।१५	२३।१६	२६।५८	०।२४	३।५१	५।०५	७।०६	८।४२	१०।१०
३०. शनि	४।०६।३३।५०	१०।०५।५६।३४	३।२६।५०।४४	८।०६।२८।२३	११।१५।३७।०५	६।२६।५३।२७	४३।३६	१२।३२	१५।१७	१७।२८	२०।५१	२३।०४	२६।५१	०।१६	३।४६	५।००	७।०१	८।३७	१०।०५

माघ कृष्ण पक्ष

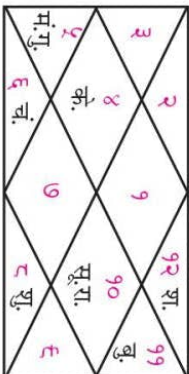
सन् १४३४ साल, संवत् २०८३, शाके १९४८, याग्यगोलः, सौम्यायनम्, शिशिरर्तुः, (राहु) पूर्वकालः, शुद्धसमयः

दिनांकः २३ जनवरी से ६ फरवरी २०२७ ई०

माघे (मकरे) कमलान्नानं पुण्य प्रदं, माघे मूलकंत्याज्यं, गंड रा. ३।३३ उ., पुष्ये पूर्वा विना यात्रा, शिववासः-अग्निवासः-अमृतयोगश्च दि. ४।१८ या., विपणि दि. ६।२६ या., सुषाण जयंती मघा न. ५.६।४९, सौ. योगः ५.२।५९, श्रवणे रविः ४.१।१४, गंड दि. ९।३३ या., अग्निवासः, सिद्धयोगः दि. २।११ उ. विवाहो मघायां, दीक्षाग्रहणं दि. ७।५७ उ. श्री भालचन्द्र-४ व्रतं, भद्रा १४।०२ या., शिववासः दि. १२।१७ उ., दीक्षाग्रहणं दि. १२।१७ या., मतदाता दिवसः गणतंत्र दिवसः राष्ट्रियव्जोत्थोलनपूर्वकं राष्ट्रगानं, शिववासः, अग्निवासः, राज्यप्रदयोगः दि. १०।४५ या. पूर्वदक्षिण यात्रा हस्ते, सर्वार्थसिद्धियोगः, शिववासः दि. ६।३४ या. ततः अमृतयोगः, मुण्डनं, विपणि भद्रा ५।२७ उ. ३.५।०९ या., विवाहो दिवायात्रौ, पूर्व यात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो पश्चिम यात्रा, अग्निवासः श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती, विवाहो स्वात्न्यां, मृत्युयोगः दि. ८।३४ या. ततः शिववासः शाकाष्टकान्वमी, अपराह्णे अष्टका श्राद्धम्, अग्निवासः, शिववासः दि. ८।४६ या., शहीद दिवसः अन्वष्टकान्वमी, भद्रा ३९।२४ उ., अनवष्टकाश्राद्धम्, अग्निवासः-अमृतयोगः-विपणि च दि. ६।४० उ., विवाहो दशम्यां फरवरी मासारम्भः, भद्रा-११।०८ या., पश्चिमोत्तर यात्रा, अग्निवासः-अमृतयोगश्च दि. ११।०३ या. ततः शिववासः-सिद्धयोगश्च, सर्वार्थसिद्धियोगः-विपणि च दि. ८।५४ या. गोदुग्धेन पारणम्, दधतिथिः दि. २।३५ या., प्रदोष १३ व्रतम्, शिववासः-अग्निवासः-सिद्धयोगश्च दि. २।३५ या. ततः मृत्युयोगः भद्रा २५।२२ उ. ५.८।०९ या., पूर्वाषाढे पूर्वोत्तर यात्रा, नरकनिवारणचतुर्दशी, अमृतयोगः दि. ४।४३ या. ततः अग्निवासः-मृत्युयोगश्च प्रदोष १४ व्रतं, अर्कोदयात् पूर्व यम तर्पणं, अग्निवासः, अमृतयोगः रा. ६।४६ या. ततः सवार्थसिद्धियोगः रा. १।०३ उ., शिववासः, सवार्थसिद्धियोगः रा. ६।०३ या. ततः अमृतयोगः माघी ३० स्नानदानादिः, मौनी अमावस्या, पार्वणं, धनिष्ठ्यायां रविः ४.७।०५, भद्रवारम्भः रा. १।०३ उ., शिववासः, सवार्थसिद्धियोगः रा. ६।०३ या. ततः अमृतयोगः

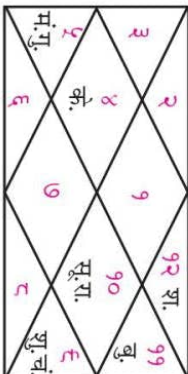
मा. कृ. ६ गु. व. ८।४०।१६।०६

अयनांशाः २२।५४।५६



मा. कृ. १३ गु. व. ८।४०।१६।१६

अयनांशाः २२।५४।५७



मा. कृ. १३ गु. व. ८।४०।१६।१६

अयनांशाः २२।५४।५७

चतुर्दश्यां नरकनिवारण चतुर्दशीव्रतं- चतुर्दशीसमं नास्ति व्रतं पापक्षयापहम्। यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।। अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च। प्राप्नोति तत्फलं सर्वं नात्र कार्या विचारणा।।

तिथयः	दिनानि	तिथि	तिथि	नक्षत्राणि	नक्षत्राणि	योगः	कणाणि	चन्द्राणयः	स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	मु०	ने०	अ०
द. प.	घ. मि.	द. प.	घ. मि.	द. प.	घ. मि.	द. प.	द. प.	राध्यादि	राध्यादि	घं. मि.	घं. मि.	ता०	ता०	ता०	ता०
१	रवि	३६।४४	रा.१०।२६	घ.४१।३८	रा.११।११	वरी.३७।१८	कि.७।४०	म.दि.१०।०८	६।२४।२२।२५	२७।२२	६।३२	५।२८	३०	२४	७
२	सोम	४२।४२	रा.११।३६	शत.४५।५२	रा.१२।५२	प.३६।४६	बा.१।१३	कुम्भ	६।२५।२३।२४	२७।२५	६।३१	५।२८	१	२५	८
३	मंगल	४४।३४	रा.१२।२३	पू.भा.४६।००	रा.२।६	शि.३५।२५	तौ.१३।३८	कु.सं.७।४७	६।२६।२४।२३	२७।२८	६।३०	५।३०	२	२६	८
४	बुध	४५।०५	रा.१२।३२	उ.भा.५०।५२	रा.२।५१	सि.३३।०२	क.१४।४८	मीन	६।२७।२५।२२	२७।३१	६।३०	५।३०	३	२७	१०
५	गुरु	४४।१६	रा.१२।११	२.५१।२८	रा.३।०४	सा.२६।३८	बब.१४।४०	मी.रा.३।४	६।२८।२६।२१	२७।३४	६।२८	५।३१	४	२८	११
६	शुक्र	४२।१६	रा.११।२२	अ.५०।५३	रा.२।४८	शु.२५।१४	कौ.१३।१६	मेघ	६।२९।२७।०८	२७।३८	६।२८	५।३२	५	२८	१२
७	शनि	३६।१३	रा.१०।०८	भ.४६।१६	रा.२।१०	शु.२०।०१	गर.१०।४४	मेघ	१०।००।२७।५५	२७।४१	६।२८	५।३२	६	१	१३
८	रवि	३५।१५	रा.८।३३	कू.४६।५०	रा.१।११	ब.१४।०१	वि.७।१४	मे.दि.७।५५	१०।०१।२८।४२	२७।४४	६।२७	५।३३	७	१४	१४
९	सोम	३०।२८	सं.६।३८	सो.४३।४०	रा.११।५५	ऐं.७।२३	बा.२।५१	वृष	१०।०२।२८।२८	२७।४७	६।२७	५।३३	८	३	१५
१०	मंगल	२५।०८	दि.४।२८	मू.३६।५७	रा.१०।२५	वै.०।१२	गर.२५।०८	वृ.दि.१।१०	१०।०३।३०।१६	२७।५०	६।२६	५।३४	९	४	१६
११	बुध	१६।२६	दि.२।११	आ.३५।५५	रा.८।४७	प्री.४४।५५	वि.१६।२६	मिथुन	१०।०४।३१।०३	२७।५३	६।२५	५।३५	१०	५	१७
१२	गुरु	१३।२८	दि.१।४८	पुन.३१।४५	रा.७।०७	आ.३७।०२	बा.१३।२८	मि.दि.१।३२	१०।०५।३१।५०	२७।५६	६।२५	५।३५	११	६	१८
१३	शुक्र	०७।३५	दि.६।२६	पुष्प.२७।४२	सं.५।२८	सौ.२६।२८	तौ.७।३५	कर्क	१०।०६।३२।२५	२८।००	६।२४	५।३६	१२	७	१९
१४	शनि	०१।५५	दि.७।०८	शत.२३।५५	दि.३।५७	शो.२१।४७	क.१।५५	क.दि.३।५७	१०।०७।३३।००	२८।०४	६।२३	५।३७	१३	८	२०

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

अर्धग्रहरावधेयचक्रम्

तिथयः	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	मिश्रमानम्	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिंह.अं.	कन्या.अं.	तुला.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
दिनानि	राध्यादि	राध्यादि	राध्यादि	राध्यादि	राध्यादि	राध्यादि	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.
१. रवि	४।०६।०२।४८	१०।०५।४८।११	३।२६।४२।४१	८।१०।३८।५६	११।१५।४२।४८	६।२८।५०।१६	४३।४१	११।२७	१५।१२	१७।०७	१७।२३	१६।४६	२१।५८	०।१४	२।४१	४।५५	६।५६	८।३२	१०।००
२. सोम	४।०८।३१।४६	१०।०५।३६।४८	३।२६।३४।३८	८।११।४६।२८	११।१५।४८।३१	६।२८।४७।०५	४३।४३	११।२३	१५।०८	१७।१८	१६।४२	२१।५५	०।१०	२।३७	४।५१	६।५२	८।२८	८।५६	१०।००
३. मंगल	४।०८।००।४४	१०।०५।३१।२५	३।२६।२६।३५	८।१३।००।००	११।१५।५४।१४	६।२८।४३।५४	४३।४५	११।१८	१३।०३	१४।५८	१७।१४	१६।३७	२१।५०	०।०५	२।३२	४।४६	६।४७	८।२३	८।५१
४. बुध	४।०७।२६।४३	१०।०५।२३।०२	३।२६।१०।३२	८।१४।१०।३२	११।१५।५६।५७	६।२८।४०।४३	४३।४६	११।१३	१२।५८	१४।५३	१७।०८	१६।३२	२१।४५	०।००	२।२७	४।४१	६।४२	८।१८	८।४६
५. गुरु	४।०६।५८।४२	१०।०५।१४।३६	३।२६।१०।२८	८।१५।२१।०४	११।१६।०५।४०	६।२८।३७।३२	४३।४७	११।०५	१२।५३	१४।४८	१७।०४	१६।२७	२१।४०	२।२२	४।३६	६।३७	८।१३	८।४१	८।४१
६. शुक्र	४।०६।०७।४८	१०।०४।३८।४३	३।२६।०१।४३	८।१६।३६।२४	११।१६।१२।३३	६।२८।३४।२१	४३।४८	११।०३	१२।५०	१४।४३	१७।००	१६।२२	२१।३५	२।१७	४।३१	६।३४	८।०८	८।३८	८।३८
७. शनि	४।०६।०६।५६	१०।०४।०२।४७	३।२६।५२।५८	८।१७।५१।४४	११।१६।१६।२६	६।२८।३१।१०	४३।५१	११।०१	१२।४७	१४।३८	१६।५८	१६।२१	२१।३१	२।१३	४।२८	६।३०	८।०४	८।३८	८।३८
८. रवि	४।०६।०६।०३	१०।०३।२६।५१	३।२६।४४।१३	८।१६।०७।०४	११।१६।२६।१८	६।२८।२७।५८	४३।५३	११।०४	१२।४४	१४।४५	१६।५५	१६।२०	२१।२८	२।१०	४।२७	६।२८	८।००	८।३६	८।३६
९. सोम	४।०६।०५।१०	१०।०२।५०।५५	३।२६।३५।२८	८।२०।२२।२४	११।१६।३३।१२	६।२८।२४।४८	४३।५५	११।००	१२।४०	१४।४१	१६।५३	१६।१६	२१।२७	२।०६	४।२३	६।२४	७।५८	८।३२	८।३२
१०.मंगल	४।०६।०४।१७	१०।०२।१४।५८	३।२६।२६।४३	८।२१।३७।४३	११।१६।४०।०५	६।२८।२१।३७	४३।५६	११।०५	१२।३६	१४।३७	१६।५१	१६।१२	२१।२६	२।०२	४।१८	६।२०	७।५४	८।२८	८।२८
११. बुध	४।०६।०३।२४	१०।०१।३६।०४	३।२६।१७।५८	८।२२।५३।०२	११।१६।४६।५७	६।२८।१८।२६	४३।५७	११।५१	१२।३१	१४।३२	१६।४८	१६।०७	२१।२३	१।५७	४।१४	६।१५	७।५२	८।२३	८।२३
१२. गुरु	४।०६।०२।३१	१०।०१।०३।०८	३।२६।०६।१३	८।२४।०८।२१	११।१६।५३।४८	६।२८।१५।१५	४३।५८	११।४७	१२।२७	१४।२८	१६।४५	१६।०३	२१।१८	१।५३	४।१०	६।११	७।५०	८।१८	८।१८
१३. शुक्र	४।०५।३४।४८	१०।००।१६।३१	३।२६।००।४८	८।२५।१५।३६	११।१७।००।३८	६।२८।१२।०४	४४।००	११।४३	१२।२३	१४।२४	१६।४१	१६।५८	२१।१५	१।४८	४।०६	६।०७	७।४७	८।१५	८।१५
१४. शनि	४।०५।०७।०५	०८।२६।२६।५३	३।२७।५२।२३	८।२६।२३।५१	११।१७।०७।२८	६।२८।०८।५३	४४।०२	११।३८	१२।१८	१४।२०	१६।३७	१६।५५	२१।११	१।४५	४।०२	६।०३	७।४३	८।११	८।११

माघ शुक्ल पक्ष

शिशिर नवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, श्री दुर्गापूजनोत्सवः, विवाहः धनिष्ठ्यायां, अग्निवासः, मृत्युयोगः रा. १०।२६ या.	सन् १४३४ साल, संवत् २०८३, शाके १९४८, याग्यगोलः, सौम्यायनम्, (राहु) पूर्वकालः, ता. १३ तः दीक्षिणेकालः, शुद्धसमयः
चन्द्रदर्शनं, रेमन्त पूजा, मुण्डनं, देवादिप्रतिष्ठा, शिववासः, मृत्युयोगः रा. ११।३६ या., दीक्षाग्रहणं	दिनांकः ७ फरवरी से २० फरवरी २०२७ ई०
परिचय दक्षिण यात्रा पूर्वभादे, उपनयनं छन्दोगानां, अग्निवासः, सिद्धयोगः, रा १२।२३ या. ततः राध्यप्रदयोगः	❖ रा. ४।१६ या., सूतीस्नानं, सर्वार्थसिद्धयोगः, शिववासः, अग्निवासः, सिद्धयोगः, विपणि, दीक्षाग्रहणं
भद्रा १४।४९ उ. ४५।०५ या. श्री गणेश चतुर्थी व्रतं, कुन्द कुसुमे सदाशिवपूजनं, विवाहः पञ्चम्यां	
वसन्त-५ सरस्वत्यावतारः, श्री सरस्वतीपूजनं, हल पंचमी, परिचमोत्तराभिमुखे हल प्रवाहः, उपनयनं, मुण्डनं, विवाहः दिवागत्रौ, द्विरागमनं, देवादिप्रतिष्ठा, भद्रा समादिः रा. ३।०४ उ., गंड रा. १०।१६ उ. ❖	
गज पूजा, विल्वार्चिमंत्रणं, मासान्तः, शिववासः, सिद्धयोगः रा. ११।२२ या. ततः मृत्युयोगः-सर्वार्थसिद्धयोगः-विपणि च	★ रविरास जयन्ती सिद्धयोगः दि. ७।०८ या. ततः अग्निवासः-मृत्युयोगश्च
महाष्टमी व्रतं, दीक्षाग्रहणं, व्रताग जागरण, मासादिः, सिद्धयोगः रा. ८।३३ या.	
महानवमी व्रतं, हवनादिः, भद्रा-७।१४ या., विवाह-द्विरागमन-गृहप्रवेशश्च दशम्यां, श्री हरसू ब्रह्मदेव जयंती, शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः रा. ६।२८ उ., सर्वार्थसिद्धयोगः	
वि० योगः ५.२।२७, विजयादशमी, अपराजिता पूजनं, देवीविसर्जनं, जयन्ती धारणं नवरात्र पारणंच, उपनयनं छन्दोगानां, सूतीस्नानं, उत्तरां विना यात्रा मुगशिरसि, अग्निवासः-मृत्युयोगश्च दि. ४।२८ उ.	
भैमी-११ व्रतं सर्वेषां, भद्रा ११।२६ या. एकादशी व्रतोद्यापनं, उपनयनं, द्विरागमनं-गृहप्रवेशश्च पुनर्वसौ, अग्निवासः-अमृतयोगश्च दि. ११।४८ उ.	
माधव १२, गोदुधेन पारणम्, प्रदोष-१३ व्रतं, मुण्डनं, द्विरागमनं, गृहप्रवेशः, देवादिप्रतिष्ठा, शिववासः, अग्निवासः-अमृतयोगश्च दि. ११।४८ उ.	
प्रदोष १४ व्रतं, शतभिषायां रविः ५.४।३०, मुण्डनं, गृहारम्भः-गृहप्रवेशः देवादिप्रतिष्ठाश्च त्रयोदश्यायां, परिचमां विना यात्रा पुष्ये, शिववासः-अग्निवासः-विपणि च दि. ८।२६ या. ततः अमृतयोगः	
माघीपूर्णिमा स्नानदानादिः, १५ तिथि ५.४।४७, पूर्णिमा व्रतं, कमलायां जीवकत्सायां स्नानं दानंच शिवार्चनं पुण्यप्रदं, भद्रा १५.५ उ. २१।१९ या., गंड दि. ११।३३ उ. दि. ५।३३ या., ★	

मा. शु. ५ गु. व. ८।४०।१६।२३
अयनांशाः २२।५४।५८

मा. शु. १२ गु. व. ८।४०।१६।३०
अयनांशाः २२।५४।५८

अचलासप्तम्यां-
सप्तार्कवदरीपत्राणि
शिरसि निधाय मौनी सन्
स्नायात्तत्र।।

स्नानमन्त्रः- यद्यजन्मकृतं पापं मयासप्तसु जन्मसु। तन्मे रोगज्वशोकज्व माकरी हन्तु सप्तमी।। एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम् । मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाता ज्ञातज्व यत्पुनः।। इति सप्त विधं पापं स्नानं मे सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवी हर माकरि सप्तमी।।

सूर्य का अर्घ्य दे- सप्तसप्तरेहः प्रीते सप्तलोकप्रदीपन। सप्तमीसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर।। अर्घ्योपरान्त प्रणाम करें-जन्नी सर्वलोकानां सप्तमीसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि नमस्ते सूर्य मूर्तये।।

अष्टम्यां भीषतर्पण मन्त्रः- वैयाघ्रपादगोत्राय सांकृति प्रकराय च। अपुत्राय द्दाम्येतत्सलिलं भीष्म वर्मणे।। वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च। अर्घ्यं द्दामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे।। भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः। आभिरद्धिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।। अनेन सन्ततिलाभः संवत्सकृतपापक्षयश्च।

माघी पूर्णिमा- परयुतग्राह्या। यथोक्तं ब्रह्मवैवर्ते “भूतविद्धे न कर्तव्ये दशपूर्णं कदाचन।।

माघस्थयोश्च जीवेन्द्वेमहामाघीति कथ्यते। ज्योतिषे मेघपृष्ठे यदासौरिः सिंहं च गुरु चन्द्रमाः। भास्करः श्रवणक्षौ च महामाघीति सा स्मृता।।

सन् १४३४ साल, संवत् २०८३, शाके १९४८, चाम्पगोलः सौम्यायनम्, शिशिरर्तुः, (राहु) दक्षिणकालः, शुद्धसमयः

काल्पित कथा पक्ष

दिनांक: २९ फरवरी से ८ मार्च २०२७ ई०

विषयः	दिनादि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घ. मि.	योगः दं. प.	करणाणि दं. प.	चन्द्रराशयः	स्मृत्युक्तः राशयदि	दिनामानम्	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अ० ता०
१	रवि	५२।०२	या.३।११	मघा.२०।३८	दि.२।३७	अ.१४।४०	बा.२४।२२	सिंह	१०।०८।३३।३५	२८।०८	६।२२	५।३८	१४	६	२१
२	सोम	४८।१२	या.१।३६	पू.फ.१८।०४	दि.१।३६	सु.८।०७	तै.२०।०७	सिंह	१०।०८।३४।०८	२८।१२	६।२२	५।३८	१५	१०	२२
३	मंगल	४५।२१	या.१२।२६	उ.फ.१६।१८	दि.१२।५२	धृ.२।१६	व.१६।४६	कन्या	१०।१०।३४।४३	२८।१६	६।२१	५।३६	१६	११	२३
४	बुध	४३।३४	या.११।४६	ह.१५।३५	दि.१२।३४	ग.५।३।०२	व.१४।२७	क.रा.१२।४०	१०।११।३५।१७	२८।२०	६।२०	५।४०	१७	१२	२४
५	गुरु	४२।५८	या.११।३०	चि.१६।०२	दि.१२।४४	वृ.४८।५०	कौ.१३।१६	तुला	१०।१२।३५।५१	२८।२४	६।१६	५।४१	१८	१३	२५
६	शुक्र	४३।४५	या.११।४८	स्वा.२२।३८	दि.३।२२	शु.४७।३८	ग.१३।२१	तुला	१०।१३।३६।१२	२८।२८	६।१८	५।४२	१९	१४	२६
७	शनि	४५।५४	या.१२।४०	वि.२०।४०	दि.२।३४	व्या.४६।२६	वि.१४।४८	तु.दि.८।४६	१०।१४।३६।३३	२८।३२	६।१८	५।४२	२०	१५	२७
८	रवि	४६।०६	या.१।५५	अनु.२४।४५	सं.४।११	ह.४६।०८	बा.१७।३०	वृश्चिक	१०।१५।३६।५४	२८।३६	६।१७	५।४३	२१	१६	२८
९	सोम	५३।२४	या.३।३८	ज्ये.२६।५७	सं.६।१४	वज्र.४६।४०	तै.२१।१५	वृ.सं.६।१४	१०।१६।३७।१५	२८।४०	६।१६	५।४४	२२	१७	२९
१०	मंगल	५८।२१	या.५।३५	मू.३५।५५	या.८।३७	मि.४७।४१	व.२५।५२	धनु	१०।१७।३७।३६	२८।४४	६।१५	५।४५	२३	१८	३०
११	बुध	६०।००	अहोरात्र	पू.षा.४२।२६	या.१।१३	व्य.४६।०६	व.३१।०२	ध.या.५।५३	१०।१८।३७।५७	२८।४७	६।१५	५।४५	२४	१९	३१
१२	गुरु	०३।४४	दि.७।४४	उ.षा.४८।५८	या.१।५०	व.५।०२	बा.३।४४	मकर	१०।१९।३८।१८	२८।५०	६।१४	५।४६	२५	२०	३२
१३	शुक्र	०६।०१	दि.८।४६	श्र.५५।१०	या.४।१७	प.५।१४०	तै.६।०१	मकर	१०।२०।३८।२५	२८।५४	६।१३	५।४७	२६	२१	३३
१४	शनि	१३।४६	दि.११।४२	धनि.६।०।००	अहोरात्र	शि.५।२।०७	व.१३।४६	म.सं.५।२२	१०।२१।३८।३२	२८।५८	६।१२	५।४८	२७	२२	३४
१५	रवि	१७।४५	दि.१।१८	धनि.०।४०	श्र.६।२८	मि.५।२।०६	श.१७।४५	कुम्भ	१०।२२।३८।३८	२८।०२	६।१२	५।४८	२८	२३	३५
१६	सोम	२०।३२	दि.२।२४	शत.५।१३	दि.८।१६	सा.५।१।०४	ता.२०।३२	कु.या.३।१६	१०।२३।३८।४६	२८।०६	६।११	५।४६	२९	२४	३६

फाल्गुने वागमती स्नानं पुण्यप्रदं, शिववासः, मृत्युयोगः, विवाहो मयाया

कणमदन पूर्वफल्गुन्या, मुण्डन, विवाहः-द्विरागन-गृहारम्भश्च उत्तरफाल्गुन्या, अग्निवासः, मृत्युयोगः रा. १।३६ या., दीक्षाग्रहण

शूल यागः ५४।५६, भद्रा १६।४६ उ. ४५।२१ या., दध्वाताथः रा. १२।२१ उ., सूतास्नान, तृतायाया हस्त पूर्व दक्षिण यात्रा, साङ्ख्यागः रा. १२।२६ या. ततः राज्यप्रदयाग

हरम-४ ब्रत, दयालताधः १. ११४६ था., ववाहः-दुगामश्वन पञ्चम्या, शिववसः, अमनवसः, सवाभमकुयोगः १. १२३४ था., कन्दय शुक्ल दवम

वैश्वम वात्रा नवपद्मा, मुण्डन, प्रवाहि प्रवारत्रा, छुरागमन, गृहारम्भः, शिववासः, साञ्जवागः र. ११ ३० वा., दाक्षामहो

नदी ०२।०५ उ., ब्राह्मण नदी, ता. ११०८ ब्रा. ॥३॥ मुमुक्षुनाथ
नदी ०२।०६ मा. तालाब, मन्दिरोत्तर माता सिद्धि दि. १।०७ त. मा. ०२।०९ मा.
०२।१० मा. तालाब, मन्दिरोत्तर माता सिद्धि दि. १।०७ त. मा. ०२।१० मा.

शाकान्तरकाश्रमी अन्तराणां उन्म दानाणि षिवात्मः मिष्टियोमः ग १।१५, द्वा मष्टिया विज्ञान दिवम्

मार्च मासगर्भः अन्वष्टका नवमी गृहं द्वि ३५१ उ ग १५१ या विवाहः

भद्रा २५॥५२ उ. ५८।२१ या. दशम्यां पर्व यात्रा

पूर्व यात्रा पूर्वाषाढे, शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः, विवाहः उत्तराषाढे

विजया-११ व्रतं सर्वेषां, सुतीस्नानं, विवाहः दिवा रात्रौ, शिववासः, अग्निवासः दि. ७।४४ या., दक्षिणां विना यात्रा श्रवणायां, सुरक्षा दिवसः

गादङ्गा पारणम्, प्रदोष १३ व्रतं, पूर्वं भाद्रपद रविः १।४८, **भदवारम्भः रा. ४।१७ उ.**, शिववासः-मृत्युयोगश्च दि. ६।४६ या. ततः अग्निवासः, सर्वार्थासिद्धियोगः

प्रदाष-१४ व्रत, भद्रा १३।४६ उ. ४५।४६ या., चतुर्दश्या मकरस्थ चंद्र दीक्षणा यात्रा तता पश्चिम यात्रा, महाशिवरात्रि, अग्नवांसः इ. ११।४२ या. ततः साङ्ख्याः।

[illegible][illegible]

अर्थप्रहराबोधचक्र

तिथिचयः	मांगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	मिश्रमासम्	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिंह.अं.	कन्या.अं.	तुला.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
दिनादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि		घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.
१. रवि	४।०४।३६।२२	६।२८।४३।१५	३।२७।४३।५८	८।२७।३०।०६	१।१।१४।१८	६।२८।०५।४२	४४।०४	१०।३४	१२।१४	१४।१५	१६।३२	१८।५०	२१।०६	२३।२२	१।४०	३।५८	५।५८	७।३८	६।०६
२. सोम	४।०४।११।३८	६।२७।५६।३७	३।२७।३५।३३	८।२८।३७।२१	१।१।१७।२१।०८	६।२८।०२।३१	४४।०६	१०।३०	१२।१०	१४।११	१६।२८	१८।४६	२१।०२	२३।१८	१।३६	३।५४	५।५५	७।३४	६।०२
३. मंगल	४।०३।४३।५६	६।२७।०६।५८	३।२७।२७।०८	८।२८।४४।३५	१।१।१७।२७।५७	६।२७।५६।२०	४४।०८	१०।२६	१२।०६	१४।०७	१६।२४	१८।४२	२०।५८	२३।१४	१।३२	३।५०	५।५१	७।३०	६।५८
४. बुध	४।०३।१६।१३	६।२६।२३।२१	३।२७।१८।४४	६।००।५१।४८	१।१।१७।३४।४६	६।२७।५६।०८	४४।१०	१०।२१	१२।०१	१४।०२	१६।१८	१८।३७	२०।५३	२३।०८	१।२७	३।४५	५।४६	७।२५	६।५३
५. गुरु	४।०२।४८।३०	६।२५।३६।४४	३।२७।१०।२०	६।०१।५६।०३	१।१।१७।४१।३५	६।२७।५२।५८	४४।१२	१०।१७	११।५७	१३।५८	१६।१५	१८।३३	२०।४८	२३।०५	१।२३	३।४१	५।४२	७।२१	६।४८
६. शुक्र	४।०२।२६।१६	६।२५।२६।०२	३।२७।०१।५७	६।०३।११।१४	१।१।१७।४८।४६	६।२७।४६।४७	४४।१४	१०।१३	११।५३	१३।५४	१६।११	१८।२६	२०।४५	२३।०१	१।१८	३।३७	५।३८	७।१७	६।४५
७. शनि	४।०२।०४।०२	६।२५।२२।२०	३।२६।५३।३४	६।०४।२३।२५	१।१।१७।५५।५६	६।२७।४६।३६	४४।१६	१०।०८	११।४८	१३।५०	१६।०७	१८।२५	२०।४१	२३।५७	१।०७	३।३३	५।३४	७।१३	६।४१
८. रवि	४।०१।४१।४८	६।२५।१३।३८	३।२६।४५।१२	६।०५।३५।३६	१।१।१८।०३।०६	६।२७।४३।२५	४४।१८	१०।०४	११।४४	१३।४५	१६।०२	१८।२०	२०।३६	२३।५२	१।०२	३।२८	५।२८	७।०८	६।३६
९. सोम	४।०१।१६।३६	६।२५।०५।५६	३।२६।३६।५०	६।०६।४७।४६	१।१।१८।१०।१६	६।२७।४०।१४	४४।२०	१०।००	११।४०	१३।४१	१५।५८	१८।१६	२०।३२	२३।४८	०।५८	३।२४	५।२५	७।०४	६।३२
१०. मंगल	४।००।५७।२३	६।२४।५७।१४	३।२६।२८।२८	६।०७।५६।५६	१।१।१८।१७।२६	६।२७।३७।०३	४४।२२	९।५६	११।३६	१३।३७	१५।५४	१८।१२	२०।२८	२३।४०	०।५४	३।२०	५।२१	७।००	६।२८
११. बुध	४।००।३५।१०	६।२४।४६।३२	३।२६।२०।०६	६।०८।१२।०६	१।१।१८।२४।३६	६।२७।३३।५२	४४।२४	९।५२	११।३२	१३।३३	१५।५०	१८।०८	२०।२४	२३।४०	०।५०	३।१६	५।१६	६।५६	६।२४
१२. गुरु	४।००।१२।५७	६।२४।४२।५४	३।२६।११।४४	६।१०।२४।१६	१।१।१८।३४।४६	६।२६।३०।४१	४४।२५	९।४८	११।२८	१३।२८	१५।४६	१८।०४	२०।२०	२३।३६	०।४६	३।१२	५।१३	६।५२	६।२०
१३. शुक्र	३।२८।५४।५३	६।२५।१७।२५	३।२६।०४।०४	६।११।३६।१८	१।१।१८।३६।०५	६।२७।२७।३०	४४।२७	९।४४	११।२४	१३।२५	१५।४२	१८।००	२०।१६	२३।३२	०।४२	३।०८	५।०८	६।४८	६।१६
१४. शनि	३।२८।३६।४८	६।२५।५१।५६	३।२५।५६।२४	६।१२।४८।२०	१।१।१८।४६।२४	६।२७।२४।१८	४४।२८	९।४०	११।२०	१३।२१	१५।३८	१७।५६	२०।१२	२३।२८	०।३८	३।०४	५।०५	६।४४	६।१२
१५. रवि	३।२८।१८।४५	६।२६।२६।२७	३।२५।४६।४४	६।१४।००।२२	१।१।१८।५३।४३	६।२७।२१।०८	४४।३१	९।३६	११।१६	१३।१७	१५।३४	१७।५२	२०।०८	२३।२४	०।३४	३।००	५।०१	६।४०	६।०८
१६. सोम	३।२८।००।४१	६।२७।००।५८	३।२५।४२।०४	६।१५।१२।२४	१।१।१८।०१।०२	६।२७।१७।५८	४४।३३	९।३१	११।११	१३।१२	१५।२८	१७।४७	२०।०३	२३।१८	०।२८	३।५५	४।५६	६।३५	६।०३

फा. कृ. ५ गु. व. ८।४०।१६।३७
अवनांशाः २२।५५।००

२	१	१२ श.	११ सू.
गु.के.	७	बु.शु.रा.च.	६
५	८	३	४

फा. कृ. ११ गु. व. ८।४०।१६।४४
अवनांशाः २२।५५।०१

२	१	१२ श.	११ सू.
गु.के.	७	बु.शु.रा.	६
५	८	३	४

निवाधधावषधाः- माधफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्या- शिवरात्रिभ्रत तन्माहात्यञ्च
ब्रह्माद्रिखण्डे- माधफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी। दत्ते शिवः फलं
यस्मात्तेन सर्वसुखायुरैः। शिवरात्रिरिति ख्याता मन्कलेव पृथक् स्थिता॥

तथा च- उक्त्वास् कारेभ्यन्त जागरण समान्वतम्। यथाकारेभ्यन्तमागण तथा मोक्षो न संशयः॥ वर्षे वर्षे महादेवि नित्यं भक्त्या प्रपूजयेत्। अर्णवो यदि वा सूर्यछाद्यते हिमवानपि॥ चलन्त्येते कदाचिद्वै निश्चलं च शिवव्रतम्।

गंगासागरसंगमस्थानमन्त्रः- त्व द्वा सारता नाथ त्व द्वा सारता वर।
उभयोः संगमे स्नात्वा मुञ्चामि दुरितानि वै॥

समुद्रमंथनमन्त्रः— त्वमानिद्विपदा नाथ रताधाः कामदीपन। प्रथानः सर्वभूतानां जीवानां प्रभुख्यपः॥ अमृतस्याराणिस्त्वं हि देवयानिरपापते। वृजिं हर मे सर्वं तीर्थराज नमोऽस्तुते॥

गंगास्नानमन्त्रः— ब्रह्मस्वरूपं हे गंगा स्नानमाचर्यते मया। त्वदाय निमलं तापं यथोक्तफलदा भव॥

गंगागामाहृतस्य वक्ष्यपुराण- गंगा गंगात यन्नाम याजनानां शतरसः।
स्थितैरुच्चरितं हन्ति पापं जन्मत्रयार्जितम्॥

पुनश्च- इदं हि गाङ्गा त्वजलामहाङ्गं पुननं चाङ्गं यादं वापि चाङ्गम्। यानं विहङ्गं शयने भुजङ्गं करे रथाङ्गं चरणेऽपि गाङ्गम्॥

तिथयः	दिनानि	तिथि	तिथि	नक्षत्राणि	नक्षत्राणि	योगः	कणाणि	चन्द्राशयः	स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	मु०	ने०	अ०
	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घं. मि.	दं. प.	घं. मि.	दं. प.	राश्यादि	दिनमानम्	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	ता०	ता०	ता०
१	मंगल	२२।१५	दि.३।०४	पू.भा.त्।३७	दि.६।३७	शु.४६।०२	बव.२२।१५	मीन	१०।२४।३८।५३	२६।१०	६।१०	५।५०	१	२५	६
२	बुध	२२।३५	दि.३।११	उ.भा.१०।४५	दि.१०।२७	शु.४५।५६	कौ.२२।३५	मीन	१०।२५।३६।००	२६।१५	६।०६	५।५१	२	२६	१०
३	गुरु	२२।३८	दि.२।४७	रे.१।३५	दि.१०।४६	ग.२१।३८	मी.दि.१०।४६	मेघ	१०।२६।३६।०७	२६।२०	६।०८	५।५२	३	२७	११
४	शुक्र	१६।२८	दि.१।५४	अ.१२।१६	दि.११।०१	रे.३७।०६	वि.१६।२८	मेघ	१०।२७।३६।०७	२६।२४	६।०७	५।५३	४	२८	१२
५	शनि	१६।१४	दि.१२।३६	भ.६।५०	दि.१०।०२	कै.३१।२४	मे.दि.४।८	मे.दि.४।८	१०।२८।३६।०७	२६।२८	६।०६	५।५४	५	२८	१३
६	रवि	१२।१०	दि.१०।५८	कू.७।३७	दि.६।०६	वि.२५।०१	वृष	वृष	१०।२६।३६।०७	२६।३२	६।०६	५।५४	६	३०	१४
७	सोम	०७।१५	दि.८।५५	ये.३।३३	दि.७।३०	प्री.१८।०३	वृ.सं.६।५६	मिथुन	११।००।३६।०७	२६।३६	६।०५	५।५५	७	१	१५
८	मंगल	०१।५१	प्रा.६।४८	मू.००।५८	प्रा.६।२७	आ.१०।४०	बव.१।५१	मिथुन	११।०१।३६।०७	२६।४०	६।०४	५।५६	८	२	१६
१०	बुध	५०।०६	रा.२।०५	पुन.५२।४६	रा.३।११	सौ.२।५६	तै.२३।०५	मि.रा.६।३५	११।०२।३६।०७	२६।४४	६।०३	५।५७	९	३	१७
११	गुरु	४४।१३	रा.१।४३	पु.४८।४३	रा.१।३१	अ.४७।२६	क.२३।०६	कर्क	११।०३।३८।०७	२६।४८	६।०२	५।५८	१०	४	१८
१२	शुक्र	३८।२६	रा.६।२६	रत्ने.४४।५३	रा.१।५६	सु.३६।५६	बव.१।२१	क.रा.१।५६	११।०४।३७।४४	२६।५२	६।०२	५।५८	११	५	१९
१३	शनि	३३।१०	रा.७।१७	मघा.४।१८	रा.१।३६	धृ.३२।४५	कौ.५।५०	सिंह	११।०५।३७।२१	२६।५६	६।०१	५।५८	१२	६	२०
१४	रवि	२८।१७	सं.५।१६	पू.फ.३८।४३	रा.६।२८	शू.२६।०५	ग.२।४३	मि.३।१८	११।०६।३६।५७	३०।००	६।००	६।००	१३	७	२१
१५	सोम	२४।३६	दि.३।५१	उ.फ.३६।५२	रा.८।४४	गं.२०।०५	बव.२४।३६	कन्या	११।०७।३६।३३	३०।०४	५।५६	६।०१	१४	८	२२

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथयः	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	मिश्रमानम्	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिंह.अं.	कन्या.अं.	तुला.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
दिनानि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.
१. मंगल	शं.२८।४२।३७	६।२७।३५।२६	शं.२५।३४।२५	६।१६।२४।२६	११।१६।०८।२१	६।२७।१४।४६	४४।३५	६।२६	११।०६	१३।०७	१५।२४	१७।४२	१६।५८	२२।१४	०।२४	२।५१	४।४६	६।३०	७।५८
२. बुध	शं.२८।२४।३४	६।२८।१०।००	शं.२५।२६।४६	६।१७।३६।२८	११।१६।१५।४०	६।२७।११।३५	४४।३७	६।२२	११।०२	१३।०३	१५।२०	१७।३८	१६।५४	२२।१०	०।२०	२।४६	४।४७	६।२६	७।५४
३. गुरु	शं.२८।०६।३१	६।२८।४४।३१	शं.२५।१८।०७	६।१८।४८।२६	११।१६।२२।५८	६।२७।०८।२४	४४।४०	६।१८	१०।५८	१२।५६	१५।१५	१७।३४	१६।५०	२२।०६	०।१६	२।४२	४।४३	६।२२	७।५०
४. शुक्र	शं.२७।५२।०४	६।२६।५०।५०	शं.२५।११।२७	६।१६।५६।५७	११।१६।३०।३५	६।२७।०८।२४	४४।४२	६।१४	१०।५४	१२।५५	१५।११	१७।३०	१६।४६	२२।०२	०।१२	२।३८	४।३६	६।१८	७।४६
५. शनि	शं.२७।३७।३७	१०।००।५७।०६	शं.२५।०४।४७	६।२१।०५।२५	११।१६।३८।१२	६।२७।०५।१३	४४।४४	६।१०	१०।५०	१२।५१	१५।०६	१७।२६	१६।४२	२१।५८	०।०८	२।३४	४।३५	६।१५	७।४२
६. रवि	शं.२७।२३।१०	१०।०२।०३।०८	शं.२४।५८।०७	६।२२।१३।५३	११।१६।४५।४६	६।२७।०२।०२	४४।४६	६।०६	१०।४६	१२।४७	१५।०७	१७।२२	१६।३८	२१।५४	०।०४	२।३०	४।३१	६।१२	७।४०
७. सोम	शं.२७।०८।४३	१०।०३।०६।४७	शं.२४।५१।२७	६।२३।२२।२१	११।१६।५३।२६	६।२६।५८।५१	४४।४८	६।०२	१०।४२	१२।४३	१५।०५	१७।१८	१६।३४	२१।५०	०।००	२।२६	४।२७	६।०६	७।३७
८. मंगल	शं.२६।५४।१६	१०।०४।१६।०५	शं.२४।४४।४७	६।२४।३०।४८	११।२०।०१।०३	६।२६।५५।४०	४४।५०	६।५८	१०।३८	१२।३६	१५।०३	१७।१४	१६।३०	२१।४६	२३।५६	२।२२	४।२३	६।०५	७।३३
१०. बुध	शं.२६।३६।४६	१०।०५।२२।२३	शं.२४।३८।०७	६।२५।३६।१५	११।२०।०८।४०	६।२६।५२।२६	४४।५२	६।५५	१०।३२	१२।३६	१५।०२	१७।११	१६।२७	२१।४३	२।१६	२।१८	४।२०	६।०२	७।३०
११. गुरु	शं.२६।२५।२३	१०।०६।२८।४१	शं.२४।३१।२८	६।२६।४७।४२	११।२०।१५।१७	६।२६।४६।०७	४४।५४	६।५१	१०।३१	१२।३२	१५।५८	१७।०७	१६।२३	२१।३६	२।१५	२।१७	४।१६	५।५६	७।२६
१२. शुक्र	शं.२६।२३।३८	१०।०७।४४।४०	शं.२४।२५।५६	६।२७।५८।००	११।२०।२३।१५	६।२६।४२।५६	४४।५६	६।४७	१०।२७	१२।२८	१५।५४	१७।०३	१६।१६	२१।३५	२।११	२।१९	४।१२	५।५२	७।२२
१३. शनि	शं.२६।०१।५३	१०।०६।२०।३६	शं.२४।२०।३०	६।२६।१०।१८	११।२०।३१।१३	६।२६।३६।४५	४४।५८	६।४३	१०।२३	१२।२४	१५।५०	१६।१५	१६।१५	२१।३१	२।०७	२।०९	४।०८	५।४८	७।१८
१४. रवि	शं.२५।५०।०८	१०।१०।४६।३८	शं.२४।१५।०२	१०।००।२१।३६	११।२०।३६।११	६।२६।३६।३४	४५।००	६।३६	१०।१६	१२।२०	१५।४६	१६।१५	१६।१५	२१।२७	२।०३	२।०३	४।०४	५।४४	७।१४
१५. सोम	शं.२५।३८।२३	१०।१२।१२।३७	शं.२४।०६।३४	१०।०१।३२।५४	११।२०।४७।०८	६।२६।३३।२३	४५।०२	६।३५	१०।१५	१२।१६	१५।४२	१६।१५	१६।०७	२१।२३	१।५६	१।५८	४।००	५।४०	७।१०

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

दिवाधिप्रहरा	निशाधिप्रहरा
दि.७३७-६।०५।दि.१।२७-२।५५	रा.७२-२।५५
दि.६।०४-१२।३रा.दि.१२।००-१।२७	रा.१२।००-१।३रा.रा.३।०४-४।३६
दि.२।५६-५।५२	रा.१२।००-१।३रा.रा.४।३६-६।०७
दि.६।०३-१२।००	रा.६।५६-१०।२८
ग्रा.६।७-३।३।दि.१।२८-२।५।दि.४।२६-५।५४	सं.५।५४-७।२५।रा.१।३-३।०३।रा.४।३४-६।०५
दि.१०।३१-१।२८	रा.१०।२८-१२।००।रा.३।३१-३।०३
दि.७३३३-६।०३।दि.२।५७-४।२६	रा.१०।२८-१२।००।रा.३।०२-४।३३
दि.७३३३-६।०३।दि.१।२८-२।५८	रा.७।२७-६।५८
दि.६।०१-१०।३०।दि.१२।००-१।२८	रा.१२।००-१।३०।रा.३।०१-४।३२
दि.२।५६-५।५८	रा.१२।००-१।३०।रा.४।३१-६।०१
दि.६।०१-१२।००	रा.६।५६-१०।२८
ग्रा.६।०१-७।३०।दि.१।२८-२।५६।दि.४।२६-५।२८	सं.५।२६-७।२८।रा.१।३०-३।००।रा.४।३०-६।००
दि.१०।३०-१२।००	रा.१०।३०-१२।००।रा.१।३०-३।००
दि.७३२८-६।५६।दि.३।००-४।३०	रा.१०।३०-१२।००।रा.२।५६-४।२८

तिथयः	दिनानि	तिथि	तिथि	नक्षत्राणि	नक्षत्राणि	योगः	कणाणि	चन्द्राणयः	स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	मु०	ने०	अ०
	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घं. मि.	दं. प.	घं. मि.	दं. प.	राय्यादि	राय्यादि	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	ता०	ता०	ता०
१	मंगल	२१।४५	दि.२।४०	हस्त.३५।५३	रा.८।१८	चू.१४।४८	कौ.२१।४५	कन्या	११।०८।३६।०८	३०।०८	५।५८	६।०२	१५	६	२३
२	बुध	१८।५८	दि.१।५७	चि.३६।०४	रा.८।२४	शु.१०।२५	गर.१६।५८	क.दि.८।२१	११।०८।३५।४५	३०।११	५।५८	६।०२	१६	१०	२४
३	गुरु	१८।२४	दि.१।४३	स्वा.३७।२८	रा.५।५७	वि.१०।०२	वि.१८।२४	तुला	११।१०।३५।२१	३०।१४	५।५७	६।०३	१७	११	२५
४	शुक्र	२०।०६	दि.१।५८	वि.४०।११	रा.१०।००	ह.५।०७	वा.२०।०६	तु.दि.३।४४	११।११।३४।४३	३०।१८	५।५६	६।०४	१८	१२	२६
५	शनि	२२।१३	दि.२।४८	अनु.४४।०३	रा.११।३३	वक्र.१।१०	तै.२२।१३	वृश्चिक	११।१२।३४।०५	३०।२२	५।५६	६।०४	१८	१३	२७
६	रवि	२५।२३	दि.४।०४	ज्ये.४६।०२	रा.१।३२	सि.२।४४	व.२५।२३	कु.रा.१।३२	११।१३।३३।२७	३०।२६	५।५५	६।०५	२०	१४	२८
७	सोम	२८।३८	सं.५।४५	मूल.५५।५६	रा.४।१६	व्य.३।०८	बव.२६।३८	धनु	११।१४।३२।४८	३०।३०	५।५४	६।०६	२१	१५	२८
८	मंगल	३४।२८	रा.७।४०	पू.षा.६०।००	अहोरात्र	क.४।०८	बा.२।०३	धनु	११।१५।३२।१०	३०।३४	५।५३	६।०७	२२	१६	३०
९	बुध	३८।५०	रा.८।४८	पू.षा.१।१८	प्रा.६।२५	च.दि.५।३२	तै.७।०८	धनु	११।१६।३१।३१	३०।३७	५।५३	६।०७	२३	१७	३१
१०	गुरु	४५।००	रा.११।५२	उ.षा.७।५४	दि.८।०२	शि.७।०५	क.१२।२५	मकर	११।१७।३०।५२	३०।४०	५।५२	६।०८	२४	१८	१
११	शुक्र	४८।४३	रा.१।४४	श्र.१४।११	दि.११।३१	सि.८।२२	बव.१७।२१	म.रा.१२।४०	११।१८।२६।५४	३०।४४	५।५१	६।०८	२५	१८	२
१२	शनि	५३।३५	रा.३।१६	धनि.१६।५३	दि.१।४७	सा.८।१३	कौ.२१।३८	कुम्भ	११।२६।२८।५६	३०।४८	५।५०	६।१०	२६	२०	३
१३	रवि	५६।१६	रा.४।२०	शत.२४।३८	दि.३।४१	शु.८।२२	गर.२४।५६	कुम्भ	११।२०।२७।५८	३०।५२	५।५०	६।१०	२७	२१	४
१४	सोम	५७।४८	रा.५।५६	पू.षा.२८।१६	सं.५।०७	शु.८।३७	वि.२७।०२	कु.दि.१०।४७	११।२१।२७।००	३०।५६	५।४८	६।११	२८	२२	५
३०	मंगल	५८।००	रा.५।००	उ.षा.३०।४४	सं.६।०६	ब्र.६।५७	च.२७।५४	मीन	११।२२।२६।०२	३१।००	५।४८	६।१२	२८	२३	६

विश्वमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथयः	दिनानि	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	मिश्रमानम्	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिंह.अं.	कन्या.अं.	तुला.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
दिनानि	राय्यादि	राय्यादि	राय्यादि	राय्यादि	राय्यादि	राय्यादि	राय्यादि	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.
१. मंगल	३।२५।२६।३८	१०।१३।३८।३५	३।२४।०४।०६	१०।०२।४४।१२	११।२०।५५।०५	६।२६।३०।१२	४५।०४	८।३२	१०।१२	११।१३	१४।३७	१६।४८	१६।०४	२१।२०	२३।३७	१।५६	३।५७	५।३७	७।०४	७।०४
२. बुध	३।२५।१४।५३	१०।१५।०४।३३	३।२३।५८।३८	१०।०३।५५।३०	११।२१।०३।०२	६।२६।२७।०१	४५।०६	८।३०	१०।१०	११।११	१४।२८	१६।४६	१६।०२	२१।१८	२३।३५	१।५४	३।५५	५।३५	७।०२	७।०२
३. गुरु	३।२५।०३।०८	१०।१६।३०।३१	३।२३।५३।१०	१०।०५।०६।४३	११।२१।१०।५८	६।२६।२३।५०	४५।०७	८।२७	१०।०७	१२।०८	१४।२५	१६।४३	१८।५८	२१।१५	२३।३२	१।५१	३।५२	५।३२	६।५८	६।५८
४. शुक्र	३।२७।०२।२७	१०।१८।०४।१८	३।२३।४६।०४	१०।०६।१६।४६	११।२१।१६।२१	६।२६।२०।३१	४५।०८	८।२४	१०।०४	१२।०५	१४।२२	१६।४०	१८।५६	२१।१२	२३।२८	१।४८	३।४६	५।२६	६।५६	६।५६
५. शनि	३।२५।०१।४५	१०।१६।४८।०५	३।२३।४४।५८	१०।०७।३२।४८	११।२१।२७।४३	६।२६।१७।२०	४५।११	८।२०	१०।००	१२।०१	१४।१८	१६।३६	१८।५२	२१।०८	२३।२५	१।४४	३।४५	५।२५	६।५२	६।५२
६. रवि	३।२५।०१।०३	१०।२०।२६।५२	३।२३।४०।५२	१०।०८।४५।५२	११।२१।३६।०५	६।२६।१४।०८	४५।१३	८।१६	११।५७	१४।१४	१६।३२	१८।४८	२१।०४	२३।२१	१।४०	३।४३	५।२१	६।४८	६।४८	६।४८
७. सोम	३।२५।००।२१	१०।२२।०५।३८	३।२३।३६।४६	१०।०६।५८।५५	११।२१।४४।२६	६।२६।११।५८	४५।१५	८।१०	११।५३	१४।१०	१६।२८	१८।४४	२१।००	२३।१७	१।३६	३।३८	५।१७	६।४४	६।४४	६।४४
८. मंगल	३।२४।५८।४०	१०।२३।४४।२६	३।२३।२३।४०	१०।११।११।५७	११।२१।५२।४७	६।२६।०८।४७	४५।१७	८।०८	११।४८	१४।०६	१६।२४	१८।४०	२०।५६	२३।१३	१।३२	३।३५	५।१३	६।४०	६।४०	६।४०
९. बुध	३।२४।५८।५८	१०।२५।२३।१३	३।२३।२३।३४	१०।१२।२४।५८	११।२२।०१।०८	६।२६।०५।३६	४५।१८	८।०४	११।४४	१४।०२	१६।२०	१८।३६	२०।५२	२३।०८	१।२८	३।३१	५।०६	६।३६	६।३६	६।३६
१०. गुरु	३।२४।५८।१८	१०।२८।०२।००	३।२३।२४।२८	१०।१३।३८।०१	११।२२।०६।२८	६।२६।०१।३५	४५।२०	८।००	११।४०	१३।५८	१६।१६	१८।३२	२०।४८	२३।०५	१।२४	३।२७	५।०५	६।३२	६।३२	६।३२
११. शुक्र	३।२५।०१।०६	१०।२६।४८।३४	३।२३।२४।४१	१०।१४।५१।०३	११।२२।१८।१७	६।२५।५८।२२	४५।२२	७।५७	११।३८	१३।५५	१६।१३	१८।२८	२०।४५	२३।०२	१।२१	३।२४	५।०२	६।२८	६।२८	६।२८
१२. शनि	३।२५।०३।५४	१०।०१।३५।०८	३।२३।१८।५३	१०।१६।०४।०५	११।२२।२७।०४	६।२५।५५।११	४५।२४	७।५३	११।३४	१३।५१	१६।०८	१८।२५	२०।४१	२३।५८	१।१७	३।२०	४।५८	६।२५	६।२५	६।२५
१३. रवि	३।२५।०६।४२	१०।०३।२१।४२	३।२३।१६।०५	१०।१७।१७।०७	११।२२।३५।५१	६।२५।५२।००	४५।२६	७।४८	११।३०	१३।४७	१६।०५	१८।२१	२०।३७	२३।५४	१।१३	३।१६	४।५४	६।२१	६।२१	६।२१
१४. सोम	३।२५।०६।३०	१०।०५।०८।१६	३।२३।१३।१७	१०।१८।३०।०८	११।२२।४४।३८	६।२५।४८।४८	४५।२८	७।४५	११।२६	१३।४३	१६।०१	१८।१७	२०।३३	२३।५०	१।०८	३।१२	४।५०	६।१७	६।१७	६।१७
३०.मंगल	३।२५।१२।१८	१०।०६।५४।५०	३।२३।१०।२८	१०।१६।४३।११	११।२२।५३।२५	६।२५।४५।३८	४५।३०	७।४२	११।२३	१३।४०	१५।५८	१८।१४	२०।३०	२३।४७	१।०६	३।०८	४।४७	६।१४	६।१४	६।१४

दैनिकलनसारणी चक्रम्

दिवायर्धमहारा		निशायर्धमहारा	
दि.७।२८-८।५६दि.१।३०-३।०१	रा.७।३१-६।०१	दि.७।२८-८।५६दि.१।३०-३।०१	रा.७।३१-६।०१
दि.८।५६-१०।२६दि.१।००-१।३०	रा.८।००-१।२६रा.१।५६-१।२८	दि.८।५६-१०।२६दि.१।००-१।३०	रा.८।००-१।२६रा.१।५६-१।२८
दि.३।०१-६।०३	रा.१।००-१।२६रा.१।२७-५।५६	दि.३।०१-६।०३	रा.१।००-१।२६रा.१।२७-५।५६
दि.८।५६-१२।००	रा.६।०२-१०।३१	दि.८।५६-१२।००	रा.६।०२-१०।३१
दि.१०।२८-१२।००	सं.६।०४-७।३३रा.१।२६-२।५८रा.१।२७-५।५५	दि.१०।२८-१२।००	सं.६।०४-७।३३रा.१।२६-२।५८रा.१।२७-५।५५
दि.१।२५-८।५६दि.१।०३-१।३४	रा.१।०३-११।००रा.२।५७-१।२५	दि.१।२५-८।५६दि.१।०३-१।३४	रा.१।०३-११।००रा.२।५७-१।२५
दि.७।२४-८।५६दि.१।३१-३।०३	रा.७।३५-८।०३	दि.७।२४-८।५६दि.१।३१-३।०३	रा.७।३५-८।०३
दि.८।५६-१०।२६दि.१।००-१।३१	रा.१।००-१।२८रा.१।५६-१।२४	दि.८।५६-१०।२६दि.१।००-१।३१	रा.१।००-१।२८रा.१।५६-१।२४
दि.३।०४-६।०८	रा.१।००-१।२८रा.१।२४-६।५१	दि.३।०४-६।०८	रा.१।००-१।२८रा.१।२४-६।५१
दि.८।५५-१२।००	रा.६।०४-७।३२	दि.८।५५-१२।००	रा.६।०४-७।३२
दि.१।५०-७।२२दि.१।३२-३।०५दि.१।३७-६।१०	सं.६।१०-७।३७रा.१।२७-२।५५रा.१।२२-५।४८	दि.१।५०-७।२२दि.१।३२-३।०५दि.१।३७-६।१०	सं.६।१०-७।३७रा.१।२७-२।५५रा.१।२२-५।४८
दि.१०।२७-१।३२	रा.१।०३-१२।००रा.१।२७-२।५५	दि.१०।२७-१।३२	रा.१।०३-१२।००रा.१।२७-२।५५
दि.७।२१-८।५१दि.१।३३-३।०६	रा.१।०३-१२।००रा.१।५४-१।२१	दि.७।२१-८।५१दि.१।३३-३।०६	रा.१।०३-१२।००रा.१।५४-१।२१

तिथयः	दिनानि	तिथि	तिथि	नक्षत्राणि	नक्षत्राणि	योगाः	कणागानि	चन्द्राशयः	स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	मु०	ने०	अ०
		दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घं. मि.	दं. प.	दं. प.	राश्यादि	राश्यादि		घं. मि.	घं. मि.	ता०	ता०	ता०
१	बुध	५६।५७	रा.३।३४	रेवती.३१।५८	सं.६।३०	पुं.४।१७	किं.२७।२८	मी.सं.६।३०	११।२३।२५।०४	३१।०४	५।४७	६।१३	३०	२४	७
२	गुरु	५४।४०	रा.३।३८	अ.३१।४३	सं.६।२७	कै.०।३६	बा.५५।४८	मेष	११।२४।२४।०६	३१।०८	५।४६	६।१४	१	२५	८
३	शुक्र	५१।२०	रा.२।१८	भरणी.३०।३२	सं.५।५८	ग्री.५०।३०	तै.२३।००	मे.रा.११।४६	११।२५।२२।५७	३१।१२	५।४६	६।१४	२	२६	८
४	शनि	४७।०८	रा.११।३७	कृ.२८।३०	सं.५।०८	आ.४४।२२	आ.१६।१४	वृष.	११।२६।२१।४८	३१।१६	५।४५	६।१५	३	२७	१०
५	रवि	४२।०८	रा.१०।३५	रो.२५।३५	दि.३।५८	सौ.३७।३५	बाब.१४।३८	वृ.रा.३।१६	११।२७।२०।३६	३१।२०	५।४४	६।१६	४	२८	११
६	सोम	३६।३७	रा.८।२२	मु.२२।०५	दि.२।३२	शो.३०।२०	कौ.६।२२	मिथुन	११।२८।१६।३०	३१।२४	५।४३	६।१७	५	२९	१२
७	मंगल	३०।५०	सं.६।०२	आ.१८।१०	दि.१२।५८	अ.२२।४६	गर.७।०८	मिथुन	११।२६।१८।२१	३१।२८	५।४२	६।१८	६	३०	१३
८	बुध	२४।४७	दि.३।३७	पुन.१४।०२	दि.११।१८	सु.१५।०४	वि.४।४७	मि.प्रा.५।५०	००।००।१७।१२	३१।३२	५।४२	६।१८	७	१	१४
९	गुरु	१८।४३	दि.१।१०	पुष्य.६।५२	दि.६।३८	धृ.७।२२	कौ.२५।५३	कर्क	००।०१।१६।०२	३१।३६	५।४१	६।१८	८	२	१५
१०	शुक्र	१२।५८	दि.१०।५१	श्लेषा.५।५८	दि.८।०४	गंड.५२।३८	गर.१६।४८	क.दि.८।०४	००।०२।१४।३५	३१।४०	५।४०	६।२०	९	३	१६
११	शनि	७।३४	दि.८।४०	मघा.२।२८	दि.६।३८	वृ.४५।५४	वि.१३।५०	सिंह	००।०३।१३।०८	३१।४४	५।३९	६।२१	१०	४	१७
१२	रवि	०२।१८	प्रा.६।३३	उ.फ.५७।३२	रा.४।३८	धृ.३६।५०	बा.८।२०	सिं.दि.१०।३०	००।०४।११।४१	३१।४८	५।३८	६।२२	११	५	१८
१४	सोम	५५।५८	रा.४।०१	हस्त.५६।१८	रा.४।१०	व्या.३४।२६	तै.३।१७	कन्या	००।०५।१०।१४	३१।५२	५।३८	६।२२	१२	६	१९
१५	मंगल	५४।०७	रा.३।१६	चित्रा.५६।१५	रा.४।०७	ह.२६।५२	वि.२७।२१	क.दि.४।०८	००।०६।०८।४७	३१।५६	५।३७	६।२३	१३	७	२०

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथियः	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	मिश्रमानम्	मे.अं.	मे.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिंह.अं.	कन्या.अं.	तुला.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
दिनानि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि		घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.
१. बुध	श.२५।१५।०६	११।०८।४१।२४	श.२३।०४।५३	१०।२०।५६।१२	११।२३।०२।१२	६।२५।४२।२७	४५।३२	७।३८	६।१८	११।१८	१३।३६	१५।५४	१८।१०	२०।३०	२२।४३	१।०२	३।०५	४।४३	६।१०
२. गुरु	श.२५।१७।५४	११।१०।२७।५७	श.२३।०४।५३	१०।२२।०६।१३	११।२३।१०।५८	६।२५।३६।१६	४५।३४	७।३४	६।१४	११।१५	१३।३२	१५।५०	१८।०६	२०।२६	२२।३६	०।५८	३।०१	४।३६	६।०६
३. शुक्र	श.२५।२५।१२	११।१२।१६।०६	श.२३।०३।४७	१०।२३।२५।५२	११।२३।१७।१२	६।२५।३६।०५	४५।३६	७।३०	६।१०	११।११	१३।२८	१५।४६	१८।०२	२०।२२	२२।३५	०।५४	३।५७	४।३५	६।०२
४. शनि	श.२५।३२।३०	११।१४।१०।१५	श.२३।०२।४१	१०।२४।४२।३१	११।२३।२३।२५	६।२५।३२।५४	४५।३८	७।२६	६।०६	११।०७	१३।२४	१५।४२	१७।५८	२०।१८	२२।३१	०।५०	३।५३	४।३१	५।५८
५. रवि	श.२५।३६।४८	११।१६।०१।२३	श.२३।०१।३६	१०।२५।५६।१०	११।२३।२६।३८	६।२५।२६।४३	४५।४०	७।२२	६।०२	११।०३	१३।२०	१५।३८	१७।५४	२०।१४	२२।२७	०।४६	३।४८	४।२७	५।५४
६. सोम	श.२५।४७।०६	११।१७।५२।३१	श.२३।००।३१	१०।२७।१५।४८	११।२३।३५।५१	६।२५।२६।३२	४५।४२	७।१८	६।५८	११।५८	१३।१६	१५।४०	१७।५०	२०।१०	२२।२३	०।४२	३।४५	४।२६	५।५०
७. मंगल	श.२५।५४।२३	११।१८।४३।३६	श.२२।५६।२६	१०।२८।३२।२८	११।२३।४२।०३	६।२५।२३।२१	४५।४४	७।१४	६।५४	११।५५	१३।१२	१५।३०	१७।४६	२०।०६	२२।१६	०।३८	३।४१	४।१६	५।४५
८. बुध	श.२६।०१।४०	११।२१।३४।४७	श.२२।५८।२१	१०।२८।४६।०७	११।२३।४८।१५	६।२५।२०।१०	४५।४६	७।१०	६।५०	११।५१	१३।०८	१५।४२	१७।४२	२०।०२	२२।१५	०।३४	३।३७	४।१५	५।४१
९. गुरु	श.२६।०८।५७	११।२३।२५।५५	श.२२।५७।१६	११।०१।०५।४६	११।२३।५४।२७	६।२५।१६।५८	४५।४८	७।०७	६।४७	११।४८	१३।०५	१५।२३	१७।३६	२०।१२	२२।१२	०।३१	३।३४	४।१२	५।४२
१०. शुक्र	श.२६।२३।३६	११।२५।५१।३८	श.२२।५७।३२	११।०२।१८।५७	११।२४।०३।३८	६।२५।१३।४८	४५।५०	७।०३	६।४३	११।४४	१३।०१	१५।१८	१७।३५	२०।०८	२२।०८	०।२७	३।३०	४।०८	५।४३
११. शनि	श.२६।३८।१५	११।२८।१७।२१	श.२२।५७।४८	११।०३।३२।०७	११।२४।१२।४८	६।२५।१०।३७	४५।५२	७।००	६।४०	११।४१	१३।१५	१५।१६	१७।३१	२०।०५	२२।०५	०।२४	३।२७	४।०५	५।३१
१२. रवि	श.२६।५२।२४	०।०४।४३।०४	श.२२।५८।०४	११।०४।४५।१७	११।२४।२२।००	६।२५।०७।२६	४५।५४	६।५६	६।३६	११।३७	१३।५४	१५।१२	१७।२७	२०।१४	२२।०१	०।२०	३।२३	४।०१	५।२७
१४. सोम	श.२७।०७।३३	०।०३।०८।४७	श.२२।५८।२०	११।०५।५८।२७	११।२४।३१।११	६।२५।०४।१५	४५।५६	६।५३	६।३३	११।३४	१३।५१	१५।०८	१७।२४	२०।१५	२२।१५	०।१७	३।२०	४।२४	५।२४
१५. मंगल	श.२७।२२।१२	०।०५।३४।२८	श.२२।५८।३५	११।०७।११।३७	११।२४।४०।२१	६।२५।०१।०४	४५।५८	६।४८	६।२८	११।३१	१३।४७	१५।०५	१७।२०	२०।१५	२२।१५	०।१३	३।१६	४।२४	५।२०

चैत्रशुक्लनवम्यां रामनवमीव्रतं तत्रांगदेवतापूजनपूर्वकं श्रीरामं संपूज्यार्घ्यं

दद्यान्मन्त्रः- दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च॥ परित्राणाय साधुनां जातो रामः स्वयं हरिः। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोऽनघ॥ ततः परदिने इदं विष्णुरिति मन्त्रेण जुहुयाद् ब्राह्मणैश्च भोजयेत्॥

चैत्र शुक्ल पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८४, शाके १९४९, याग्यगोलः, ता. १४ तः सौम्यगोलः, सौम्यायनम्, वसन्तर्तुः, (राहु) दक्षिणेकालः शुद्धसमयः

दिनांकः ७ अप्रैल से २० अप्रैल २०२७ ई०

हिन्दु नववर्षं विक्रम सं. २०८४ आरम्भः, **वसन्ती नवरात्रारम्भः**, कलशस्थापनं श्री दुर्गापूजनोत्सवः, **भद्रा समातिः** सं. ६।३० उ., गंड दि. १।३२ उ. रा. ७।३२ या. अमृतयोगः, परिचम यात्रा, शिव स्नाप्य दिवसः वि. योगः ५५।२९, चन्द्रदर्शनं, रेमन्त पूजा, दाय विधिः रा. ३।३८ या., सूतीन्तानं, दक्षिणां विना यात्रा अश्विन्यां, शिववासः, अश्विनवासः, सर्वाश्वसिद्धयोगः सं. ६।२७ या., **दीक्षाग्रहणं** अश्विन्यां मन्वन्तरादिः

श्री गणेश ४ व्रतं, श्री सूर्यषष्ठी व्रतीनां संयमः (**नहाय-खाय**), भ. १९।१४ उ. ४७।९ या., दक्षिण यात्रा रोहिण्यां, अग्निवासः, सिद्धयोगः रा. १२।३७ या. ततः मृत्युयोगः, सर्वाश्वसिद्धयोगः सं. ५।०८ उ. श्री सूर्यषष्ठी व्रतीनां एकभुक्त (**खरना**), श्री पंचमी, लक्ष्मीव्रतं, पंचम्यां पूर्वं दक्षिण यात्रा, शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः रा. १०।३५ या. ततः मृत्युयोगः, **उपनयनं, दीक्षाग्रहणं** रोहिण्यां श्री सूर्यषष्ठी व्रतं **सायं कालिकार्घदानं**, गजपूजा, विल्वार्घमंत्रणं, पूर्वविना यात्रा मृगशिरसि, सर्वाश्वसिद्धयोगः दि. २।३२ या., शिववासः, सिद्धयोगः रा. ८।२२ या. ततः मृत्युयोगः मासान्तः, भ. ३७।४० उ., **प्रातः कालिकार्घदानं**, पत्रिका प्रवेशः, **महारात्रिनिशापूजा**, अग्निवासः, अमृतयोगः सं. ६।०२ या. ततः सिद्धयोगः

मेघ संक्रान्ति, अश्विन्यां मेघे रविः ३१।३९ मु. ३० फलं साम्यं जवविषुव संक्रान्ति पुण्यकालोः ५।४९ या., भ. ४।४७ या., अशोककष्टमी अशोक कलिका पानं, ब्रह्मपुत्र स्नानं, महाष्टमीव्रतं, **सतुआईन**, **मासादिः, रामनवमी**, रामावतारः, हनुमदष्टवज्रदानं, श्रीसीताराम पूजनं, दर्शनं, **हवनादिः**, त्रिशूलिनी पूजा, **जुद्धशीतल**, गंड ५४।५९ उ., मार्गगुरुः ४२।१९, शिववासः-मृत्युयोगश्च दि. १।१० या. **भ. ४६।४९ उ., विजयदशमी**, अपराजिता पूजा, **देवी विसर्जनं**, जयन्ती धारणं, **नवरात्र-रामनवमी** **पारणं**च, गंड १।५९ या., शूल योगः ५२।२९, **विवाहो मघायां**, अमृतयोगः दि. ११।११ या. ततः शिववासः, अग्निवासः पू.फ.न. ५७।०५, भ. १३।५० या., **कामदा ११ व्रतं सर्वेषां**, अग्निवासः, अमृतयोगः दि. ८।४० या. ततः शिववासः

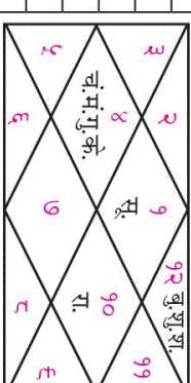
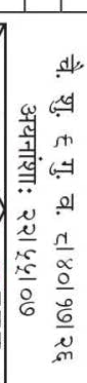
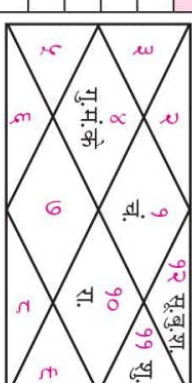
१३ तिथिमानम् ५६।३६ विष्णु द्वादशी, गो घृतेन पारणम्, प्रदोष १३ व्रतं, चैत्रावली, **द्विरागमनं, देवादिप्रतिष्ठा**, मदन १३, मदन पूजनं मेघादित्ये निम्ब पत्रयुत मसूर बीजपानं, **महावीर जयंती**, शिववासः, **भ. ५९।०३ उ., मदन भोजिका १४, प्रदोष-१४ व्रतं, द्विरागमनं**, दयाकान्त स्मृतिदिवसः, विपणि

चैत्री पूर्णमा, स्नानदानादिः भ. २७।२९ या., अग्निवासः

★ ततः सिद्धयोगः, अग्निवासः, सर्वाश्वसिद्धयोगः, गुरुपुष्य योगश्च दि. ६।३८ या.

अर्धग्रहार्बोधचक्रम्

दिवार्धग्रहा	निशाार्धग्रहा
दि.८।५३-१०।२६।दि.१२।००-१।३३	रा.१२।००-१।२६।रा.१५।३३-४।२०
दि.१०।०७-६।१४	रा.१२।००-१।२६।रा.१५-५।४५
दि.१५।३-१२।००	रा.६।०७-१०।३३
दि.१५।४५-७।१८।दि.१।३३-३।०७।दि.४।४१-६।१५	सं.६।१५-७।४१।रा.१२६-२।५२।रा.४।१८-५।४४
दि.१०।२६-१२।००	रा.१०।३४-१२।००।रा.१२६-२।५२
दि.७।१७-८।५१।दि.३।०८-४।४२	रा.१०।३४-१२।००।रा.१५-१।१७
दि.७।१६-८।५१।रा.१।३४-३।०८	रा.७।४३-६।०८
दि.८।५१-१०।२५।रा.१२।००-१।३४	रा.१०।३४-१२।००।रा.१५-१।१६
दि.३।०८-६।१८	रा.१०।३४-१२।००।रा.१५-५।४०
दि.८।५०-१२।००	रा.६।१०-१०।३५
प्रा.५।३६-७।१४।दि.१।३५-३।०७।दि.४।४५-६।२१	सं.६।२१-७।४५।रा.१।२४-२।४६।रा.४।१४-५।३८
दि.१०।२४-१।३५	रा.१०।३५-१२।००।रा.१।२४-२।४६
दि.७।१३-८।४६।दि.३।११-४।४६	रा.१०।३५-१२।००।रा.१।२४-४।१३
दि.७।१२-८।४६।दि.१।३५-३।११	रा.७।४७-६।११



विविधविषयाः- चैत्रशुक्लप्रतिपत्तो नवमी यावत् दुर्गापूजनोत्सवस्तत्र

घटे यन्त्रे चित्रे प्रतिमायां वा देवीं पूजयेत्, सप्तशतीपाठदिकं च कुर्यात्। चैत्रशुक्लतृतीयायाङ्गौरीशङ्करौ सम्पूज्य दोलोत्सवं कुर्यात्। तदुक्तं **देवीमहापुराणे**-तृतीयायां यजेद्वीं शङ्करेण समन्विताम् कुङ्कुमागरकूर्पमणिवस्त्र-सुगन्धकैः॥

स्नानधूपदीपैश्च दमनेन विशेषतः। आन्दोलयेत्ततो

तिथयः	दिनानि	तिथि	तिथि	नक्षत्राणि	नक्षत्राणि	योगः	कृत्तिका	चन्द्राष्टमः	सप्तम्यः	दिनमानम्	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	मु०	ने०	अ०
	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घ. मि.	दं. प.	राश्यादि	राश्यादि	घं. मि.	घं. मि.	म०	ता०	ता०	ता०
१	बुध	५३ २६	रा.रा.५६	स्वा.५७।०२	रा.४।२५	ब्र.२६।१८	बा.२४।३०	तुला	०।०७।०७।१६	३१।५६	५।३६	६।२४	१४	८	२१
२	गुरु	५४।०६	रा.३।१५	विशा.५६।४६	रा.शे.५।३०	सि.२३।४३	तै.२०।४८	तु.रा.११।१४	०।०८।०५।५१	३०।०२	५।३६	६।२४	१५	६	२२
३	शुक्र	५६।१४	रा.४।०४	अनु.६०।००	अहोरात्र	व्य.२२।०६	वृ.२२।२०	वृश्चिक	०।०६।०४।२०	३२।०६	५।३५	६।२५	१६	१०	२३
४	शनि	५८।१८	रा.शे.५।१७	अनु.३।२६	दि.६।५६	वरि.२१।२६	व्य.२३।१२	वृश्चिक	०।१०।०२।२६	३२।०८	५।३४	६।२६	१७	११	२४
५	रवि	६०।००	अहोरात्र	ज्ये.८।१३	दि.८।५१	परि.२१।४६	कौ.२५।१६	वृ.दि.८।५१	०।११।००।४८	३२।१२	५।३४	६।२६	१८	१२	२५
६	सोम	३।३०	दि.६।५७	मूल.१३।५५	दि.११।०७	शि.२२।४४	गर्.२८।२८	धनु	०।११।५६।०६	३२।१५	५।३३	६।२७	१६	१३	२६
६	मंगल	८।१६	दि.८।५०	पू.भा.२०।१६	दि.१।३८	सि.२४।०७	व.००।२१	ध.रा.८।१८	०।१२।५७।२४	३२।१८	५।३२	६।२८	२०	१४	२७
७	बुध	१३।३४	दि.१०।५६	ऊ.भा.२६।५२	दि.४।१६	सम.२५।४३	बृ.४।५६	मकर	०।१३।५५।४२	३२।२१	५।३१	६।२६	२१	१५	२८
८	गुरु	१८।३७	दि.१२।५७	श्रवण३३।१६	रा.६।४६	शु.२७।१०	कौ.१०।०२	मकर	०।१४।५४।००	३२।२४	५।३१	६।२६	२२	१६	२८
९	शुक्र	२३।१०	दि.२।४६	धनि.३६।०६	रा.६।०८	शु.२८।१२	गर्.१५।१२	म.दि.७।५८	०।१५।५१।५३	३२।२८	५।३०	६।३०	२३	१७	३०
१०	शनि	२६।५५	दि.४।१६	शत.४४।०८	रा.११।०६	ब्र.२८।३८	वि.२०।००	कुम्भ	०।१६।४६।४६	३२।३१	५।३०	६।३०	२४	१८	३०
११	रवि	२६।३१	सं.५।१७	पू.भा.४८।००	रा.१२।४१	पुं.२८।०८	बा.२४।०५	कुं.रा.६।१७	०।१७।४७।३६	३२।३४	५।२६	६।३१	२५	१८	२
१२	सोम	३०।५६	सं.५।५३	ऊ.भा.५०।४२	रा.१।४६	कै.२६।४६	तै.२७।११	मीन	०।१८।४५।३२	३२।३७	५।२६	६।३१	२६	२०	३
१३	मंगल	३१।०७	सं.५।५५	रेवती.५२।०६	रा.२।१८	वि.२४।२२	वृ.२६।१३	मी.रा.१।१८	०।१८।४३।२५	३२।४०	५।२८	६।३२	२७	२१	४
१४	बुध	३०।०१	सं.५।२७	अश्वि.५२।१७	रा.२।२२	प्री.२०।५७	शा.२६।५१	मेघ	०।२०।४१।१७	३२।४३	५।२७	६।३३	२८	२२	५
३०	गुरु	२७।३६	दि.४।३०	भरणी.५१।१८	रा.१।५८	आ.१६।३४	नाग.२६।१०	मेघ	०।२१।३६।०६	३२।४६	५।२७	६।३३	२६	२३	६

दैनिकलनसारणी चक्रम्

अर्धग्रहाब्धेचक्रम्

तिथयः	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	मिश्रमानम्	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सिंह.अ.	कन्या.अ.	तुला.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
दिनानि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि		घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.
१. बुध	३।२७।५।२६	०।०८।००।११	३।२२।५८।५०	११।०८।२४।४७	११।२४।४६।३१	६।२४।५७।५३	४६।००	६।४६	८।२६	१०।२८	१२।४४	१५।०२	१७।१७	१६।३८	२१।५१	०।१०	२।१३	३।५१	५।१७
२. गुरु	३।२७।५।२६	०।१०।२५।५३	३।२२।५८।५०	११।०८।३७।२७	११।२४।५८।४१	६।२४।५४।४२	४६।०१	६।४२	८।२२	१०।२४	१२।४०	१४।५८	१७।१३	१६।३४	२१।४७	०।०६	२।०६	३।४७	५।१३
३. शुक्र	३।२८।०३।४६	०।१२।०६।५२	३।२३।००।३५	११।१०।५२।२७	११।२५।०६।५१	६।२४।५१।३१	४६।०३	६।३६	८।१६	१०।२१	१२।३७	१४।५५	१७।१०	१६।३१	२१।४४	०।०३	२।०६	३।४४	५।१०
४. शनि	३।२८।१६।०६	०।१३।५३।५१	३।२३।०२।०५	११।१२।५७।२७	११।२५।१५।०१	६।२४।४८।२०	४६।०५	६।३६	८।१६	१०।१८	१२।३४	१४।५२	१७।०७	१६।२८	२१।४१	०।००	२।०३	३।४१	५।०७
५. रवि	३।२८।२८।२८	०।१५।३७।५०	३।२३।०३।३५	११।१३।२२।२७	११।२५।२३।१०	६।२४।४५।०६	४६।०७	६।३२	८।१२	१०।१४	१२।३०	१४।४८	१७।०३	१६।२४	२१।३८	२३।५७	२।००	३।३८	५।०४
६. सोम	३।२८।४०।४७	०।१७।२१।४६	३।२३।०५।०५	११।१४।३७।२७	११।२५।३१।१६	६।२४।४१।५८	४६।०८	६।२६	८।०६	१०।११	१२।२७	१४।४५	१७।००	१६।२१	२१।३५	२३।५४	१।५७	३।३५	५।०१
६. मंगल	३।२८।५३।०६	०।१६।०५।४७	३।२३।०६।३५	११।१५।५२।२६	११।२५।३६।२८	६।२४।३८।४७	४६।१०	६।२६	८।०६	१०।०८	१२।२४	१४।५२	१७।१८	१६।१८	२१।३२	२३।५०	१।५३	३।३१	५।५७
७. बुध	३।२८।०५।२५	०।२०।४६।४५	३।२३।०८।०५	११।१७।०७।२५	११।२५।४७।३७	६।२४।३५।३६	४६।११	६।२३	८।०३	१०।०५	१२।२१	१४।३६	१६।१५	१६।१५	२१।२८	२३।४६	१।४६	४।५४	५।५४
८. गुरु	३।२८।१७।४४	०।२२।३३।४३	३।२३।०६।३५	११।१८।२२।२४	११।२५।५५।४६	६।२४।३२।२५	४६।१२	६।२०	८।००	१०।०२	१२।१८	१४।३६	१६।१५	१६।१२	२१।२५	२३।४२	१।४५	३।२४	५।५०
९. शुक्र	३।२८।३६।१५	०।२३।४७।३२	३।२३।१३।०३	११।१६।३७।४३	११।२६।०३।३४	६।२४।२६।१४	४६।१४	६।१६	७।५६	१२।१४	१२।१४	१४।३७	१६।१०	१६।१०	२१।२१	२३।३८	१।४२	३।२१	५।४७
१०. शनि	३।२८।५४।४६	०।२५।११।२१	३।२३।१६।३१	११।२०।५३।०२	११।२६।११।२२	६।२४।२६।०३	४६।१६	६।१३	७।५३	१२।११	१२।२८	१४।४४	१६।०४	१६।०४	२१।१८	२३।३५	१।३६	३।१८	५।४४
११. रवि	४।००।१३।१७	०।२६।३५।१०	३।२३।१६।५६	११।२२।०८।२०	११।२६।१६।१०	६।२४।२२।५२	४६।१८	६।१०	७।५०	१२।०८	१२।१०	१४।४१	१६।०१	१६।०१	२१।१५	२३।३२	१।३६	३।१५	५।४१
१२. सोम	४।००।३१।४८	०।२७।६८।५६	३।२३।२३।२७	११।२३।२३।३८	११।२६।२६।५८	६।२४।१६।४१	४६।२०	६।०७	७।४७	१२।०५	१२।०५	१४।२३	१६।३८	१६।३८	२१।१२	२३।२६	१।३२	३।११	५।३७
१३. मंगल	४।००।५०।१८	०।२८।२६।४८	३।२३।२६।५५	११।२४।३८।५६	११।२६।३४।४६	६।२४।१६।३०	४६।२१	६।०४	७।४४	१२।०२	१२।०२	१४।२०	१६।३५	१६।३५	२१।०६	२३।२६	१।२६	३।०८	५।३४
१४. बुध	४।०१।०८।४८	१।००।४६।३७	३।२३।३०।२३	११।२५।५४।१४	११।२६।४२।३४	६।२४।१३।१६	४६।२२	६।००	७।४०	१२।४२	१२।५२	१४।१६	१६।३१	१६।५१	२१।०५	२३।२२	१।२६	३।०५	५।३१
३०. गुरु	४।०१।२७।१८	१।०२।१०।२५	३।२३।३३।५१	११।२७।०६।३२	११।२६।५०।२२	६।२४।१०।०८	४६।२३	५।५७	७।३७	१२।३६	१२।५५	१४।१३	१६।२८	१६।४८	२१।०२	२३।१६	१।२२	३।०१	५।२७

वैशाख कृष्ण पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८४, शाके १९४९, सौम्यायनम्, वसन्तर्तुः (राहु) दक्षिणेकालः शुद्धसमयः

वैशाखे तैलज्येते, पश्चिम दक्षिण यात्रा-विवाहः-द्विगमनश्च स्वात्त्यायां, शिववासः, अमृतयोगः

अश्विन्यां मेघे बुधः ४०।१७, पृथ्वी दिवसः, अग्निवासः

भद्रा २२।२० उ. ५२।२६ या. विवाहः विवासात्रौ, द्विगमनं, गृहसम्पत्तिः, सवार्थसिद्धिः, विपणि, दीक्षाग्रहणं, कुर्वसिंह जयन्ती

वक्रतुड ४ व्रतं, पश्चिमांतर यात्रा, चतुर्थ्यां, शिववासः, अग्निवासः, सिद्धयोगः

गंड-२।१३ उ. ७।१३ या. दक्षिण तिथिः ५६।१५ उ. उत्तर यात्रा पंचम्यां, विवाहः-दीक्षाग्रहणं-द्विगमनश्च मूले, शिववासः, अमृतयोगः, सर्वार्थसिद्धिः, दि. ८।५१ उ.

कोकिला षष्ठी, दक्षिण तिथिः अहोरात्र, अग्निवासः, शिववासः प्रा. ६।५७ या. ततः सिद्धयोगः, द्विगमनं

भा. ०।२१ उ. ३२।४० या. दक्षिण तिथिः ०।२१ या. मृत्युयोगः प्रा. ८।५० या. ततः अमृतयोगः

सर्करा सप्तमी, भरण्यां रविः १२।३९, विवाहः विवासात्रौ, अग्निवासः, सिद्धयोगः-विपणि च दि. १०।५६ या. ततः शिववासः-मृत्युयोगश्च

भद्रवारम्पः सं. ६।४९ उ. दक्षिण विना यात्रा श्रवणायां, विवाहः अष्टम्यां, शिववासः-अमृतयोगश्च दि. १२।५७ या. ततः मृत्युयोगः

भद्रा-४७।३६ उ. द्वादश्यां दक्षिण यात्रा नवम्यां, अग्निवासः, अमृतयोगः दि. २।४६ या.

मई मासारम्पः, भद्रा-२०।०० या. मृत्युयोगः दि. ४।१६ या. ततः अमृतयोगः-शिववासश्च, शिवाजी जयन्ती, श्रमिक दिवसः

वक्रतुडिनी ११ व्रतं सर्वेषां, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती, विवाहः उत्तरभाद्रपदे, द्वादश्यां दक्षिण यात्रा पूर्वभाद्रे, शिववासः, अग्निवासः-मृत्युयोगश्च सं. ५।१७ या.

कुशोदकेन पारणम्, प्रदोष-१३ व्रतं, विवाहः विवासात्रौ, शिववासः-मृत्युयोगश्च सं. ५।५३ या. ततः अग्निवासः, प्रेस स्वतंत्रता दिवसः

भद्रा २९।१३ उ. ५९।३२ या. प्रदोष-१४ व्रतं, भद्रा समाप्तिः रा.२।१८ उ. गंड ४०।०६ उ. ५५।०६ या. पश्चिम यात्रा, सिद्धयोगः सं. ५।५५ या. ततः राज्यप्रयोगः, गुंजेश्वर स्मृति दिवसः

आर्द्रायां शुक्रः १३।४७, शिववासः सं. ५।२७ उ.

वैशाखी अमावास्या, स्नानदानदिः, शिववासः दि. ४।३० या. अग्निवासः

अर्धग्रहाब्धेचक्रम्

विषयः	विषयः	विषयः
दिनानि	राश्यादि	राश्यादि
१. बुध	३।२७।५।२६	०।०८।००।११
२. गुरु	३।२७।५।२६	०।१०।२५।५३
३. शुक्र	३।२८।०३।४६	०।१२।०६।५२
४. शनि	३।२८।१६।०६	०।१३।५३।५१
५. रवि	३।२८।२८।२८	०।१५।३७।५०
६. सोम	३।२८।४०।४७	०।१७।२१।४६
६. मंगल	३।२८।५३।०६	०।१६।०५।४७
७. बुध	३।२८।०५।२५	०।२०।४६।४५
८. गुरु	३।२८।१७।४४	०।२२।३३।४३
९. शुक्र	३।२८।३६।१५	०।२३।४७।३२
१०. शनि	३।२८।५४।४६	०।२५।११।२१
११. रवि	४।००।१३।१७	०।२६।३५।१०
१२. सोम	४।००।३१।४८	०।२७।६८।५६
१३. मंगल	४।००।५०।१८	०।२८।२६।४८
१४. बुध	४।०१।०८।४८	१।००।४६।३७
३०. गुरु	४।०१।२७।१८	१।०२।१०।२५

वै. कृ. २ शु. व. ८।४०।१७।३३

वै. कृ. ८ गु. व. ८

तिथयः	दिनानि	तिथि	तिथि	नक्षत्राणि	नक्षत्राणि	योगः	कणागानि	चन्द्राशयः	स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	मु०	ने०	अ०
		दं. प.	घ. मि.	दं. प.	घं. मि.	दं. प.	दं. प.		राश्यादि		घं. मि.	घं. मि.	ता०	ता०	ता०
१	शुक्र	२४।१६	दि.३।०८	कू.४६।२६	रा.१।१२	सौ.११।२२	बव.२७।१८	मे.दि.७।४६	०।२२।३७।१२	३२।५०	५।२६	६।३४	१	२४	७
२	शनि	२०।००	दि.१।२५	रो.४४।४८	रा.११।२१	सो.५।२६	कौ.२४।२०	वृष	०।२३।३५।१४	३२।५३	५।२५	६।३५	२	२५	८
३	रवि	१४।५६	दि.११।२३	मुग.४३।१६	रा.१०।४३	शु.५।४३	गर.२०।२५	वृ.दि.१०।४७	०।२४।३३।१६	३२।५६	५।२५	६।३५	३	२६	८
४	सोम	६।२२	दि.६।०८	आ.३६।२२	रा.६।०८	शु.४४।१६	वि.१५।४१	मिथुन	०।२५।३१।१८	३२।५८	५।२४	६।३६	४	२७	१०
५	मंगल	३।२६	प्रा.६।४६	पुन.३५।१८	रा.७।३१	शु.३६।४१	बा.१०।१६	मि.दि.१।५६	०।२६।२६।२०	३३।०२	५।२४	६।३६	५	२८	११
७	बुध	५।१५	रा.१।५३	गुब्ब.३१।०७	सं.५।५०	ग.२६।०१	तै.४।२८	कर्क	०।२७।२७।२२	३३।०५	५।२३	६।३७	६	२८	१२
८	गुरु	४५।२५	रा.११।३२	श्ले.२७।०७	दि.४।१३	वृ.२१।२८	वि.२५।१८	क.दि.४।१३	०।२८।२५।२४	३३।०८	५।२२	६।३८	७	३०	१३
९	शुक्र	३६।५६	रा.६।२०	मघा.२३।३१	दि.२।४६	शु.१४।१४	बा.१६।५४	सिंह	०।२६।२३।०२	३३।११	५।२२	६।३८	८	३१	१४
१०	शनि	३५।०५	रा.७।२३	पू.फ.२०।२७	दि.१।३२	व्या.७।२८	तै.२३।२५	सिं.सं.७।१८	१।००।२०।४०	३३।१४	५।२१	६।३८	९	३२	१५
११	रवि	३१।०६	सं.५।४७	उ.फ.१८।१४	दि.१२।३८	ह.१।१७	क.न्या	कन्या	१।०१।१८।१८	३३।१७	५।२१	६।३८	१०	३३	१६
१२	सोम	२८।०३	दि.४।३३	हस्त.१६।४८	दि.१२।०३	सि.५।०७	बव.३।१६	क.रा.१।१६	१।०२।१५।५५	३३।२०	५।२०	६।४०	११	३४	१७
१३	मंगल	२६।०६	दि.३।४५	चित्रा.१६।२८	दि.११।५४	व्या.४।२२	तै.२७।४०	तुला	१।०३।१३।३२	३३।२३	५।१८	६।४१	१२	३४	१८
१४	बुध	२५।२२	दि.३।२८	स्वा.१७।२२	दि.१२।१६	वरि.४४।३८	क.२५।१५	तुला	१।०४।११।०८	३३।२६	५।१८	६।४१	१३	३५	१९
१५	गुरु	२५।५५	दि.३।४०	वि.१६।२८	दि.१।०६	परि.४२।५४	बव.२४।०४	तु.दि.८।१५	१।०५।०८।४६	३३।२८	५।१८	६।४२	१४	३६	२०

प्रिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिरय

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

अर्धग्रहराब्धचक्रम्

तिथियः	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहू	मिश्रमानम्	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क. अं.	सिंह.अं.	कन्या.अं.	तुला.अं.	वृ.अं.	घ.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
दिनानि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.
१. शुक्र	४।०१।४८।५१	१।०३।५३।०१	३।२३।३८।१८	११।२८।२३।००	११।२६।५०।५४	६।२४।०६।५७	४६।२५	७।५४	७।३४	६।३६	११।५२	१४।१०	१६।२४	१८।४४	२०।५८	२३।१५	१।१८	२।५७	४।२४
२. शनि	४।०२।१०।२४	१।०५।३५।३७	३।२३।४२।४७	११।२६।३६।४२	११।२६।५६।१४	६।२४।०३।४६	४६।२७	७।५०	७।३०	६।३२	११।४८	१४।०६	१६।२०	१८।४०	२०।५४	२३।११	१।१४	२।५४	४।२०
३. रवि	४।०२।३१।५७	१।०७।१८।१३	३।२३।४७।१५	०।००।५०।१७	११।२७।०७।३४	६।२४।००।३५	४६।२८	७।४६	७।२६	६।२८	११।४४	१४।०२	१६।१६	१८।३६	२०।५०	२३।०७	१।१०	२।५०	४।१६
४. सोम	४।०२।५३।३०	१।०८।००।४८	३।२३।५१।४३	०।०२।०३।५२	११।२७।१५।५४	६।२३।५७।२४	४६।३१	७।४२	७।२२	६।२४	११।४०	१३।१२	१६।१२	१८।३२	२०।४६	२३।०३	१।०६	२।४६	४।१२
५. मंगल	४।०३।१५।०२	१।१०।४३।२३	३।२३।५६।११	०।३।१७।२६	११।२७।२४।१४	६।२३।५४।१३	४६।३२	७।३८	७।१८	६।२०	११।३६	१३।५४	१६।०८	१८।२८	२०।४२	२३।५८	१।०२	२।४२	४।०८
७. बुध	४।०३।३६।३४	१।१२।२५।५८	३।२४।००।३८	०।०४।३१।००	११।२७।३२।३४	६।२३।५१।०२	४६।३३	७।३४	७।१४	६।१६	११।३२	१३।५०	१६।०४	१८।२४	२०।३८	२३।५५	०।५८	२।३८	४।०४
८. गुरु	४।०३।५८।०६	१।१४।०८।३३	३।२४।०५।०७	०।०५।४४।३४	११।२७।४०।५३	६।२३।४७।५१	४६।३४	७।३०	७।१०	६।१२	११।२८	१३।४६	१६।००	१८।२०	२०।३४	२३।५१	०।५४	२।३४	४।००
९. शुक्र	४।०४।२१।२८	१।१५।३६।१०	३।२४।१०।३७	०।०६।५६।२८	११।२७।४८।३६	६।२३।४४।४०	४६।३६	७।२५	७।०५	६।०७	११।२३	१३।४१	१६।५६	१८।१६	२०।३०	२३।४७	०।५०	२।३०	३।५६
१०. शनि	४।०४।४४।५२	१।१७।०८।४७	३।२४।१६।०७	०।०८।१४।२२	११।२७।५६।१८	६।२३।४१।२८	४६।३८	७।२१	७।०१	६।०५	११।१८	१३।३७	१६।५२	१८।१२	२०।२६	२३।४३	०।४६	२।२६	३।५२
११. रवि	४।०५।०८।१५	१।१८।४०।२४	३।२४।२१।३७	०।०८।२६।१६	११।२८।०४।०२	६।२३।३८।१८	४६।४०	७।२१	६।५७	११।१५	१३।३३	१६।४८	१८।०८	२०।२२	२०।३२	२३।४२	०।४२	२।२२	३।४८
१२. सोम	४।०५।३१।३७	१।२०।११।०१	३।२४।२७।०७	०।१०।४४।१०	११।२८।११।४५	६।२३।३५।०७	४६।४१	७।१८	६।५४	११।१२	१३।३०	१६।४५	१८।०५	२०।१६	२०।३६	२३।४३	०।३६	२।१६	३।४५
१३. मंगल	४।०५।५४।५८	१।२१।४१।३७	३।२४।३२।३७	०।११।५६।०४	११।२८।१६।२७	६।२३।३१।५६	४६।४२	७।१४	६।५०	११।०८	१३।२६	१६।४१	१८।०१	२०।१५	२०।३२	२३।४२	०।३५	२।१५	३।४१
१४. बुध	४।०६।१८।२१	१।२३।१२।१३	३।२४।३८।०६	०।१३।१५।५८	११।२८।२७।०८	६।२३।२८।४५	४६।४३	७।१०	६।४६	११।०४	१३।२२	१६।३७	१८।५७	२०।११	२०।३८	२३।४३	०।३१	२।११	३।३७
१५. गुरु	४।०६।४१।४३	१।२४।४२।४८	३।२४।४३।२८	०।१४।२८।५१	११।२८।३४।५१	६।२३।२५।३४	४६।४४	७।०६	६।४२	११।००	१३।१८	१६।३३	१७।५३	२०।०७	२०।२४	२३।४४	०।२७	२।०७	३।३३

वैशाख शुक्ल पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८४, शाके १९४९, सौम्ययोगः, सौम्यायनम्, वसन्तर्तुः ता. १५ तः ग्रीष्मर्तुः, (राहु) दक्षिणेकालः ता. १५ तः पश्चिमेकालः शुद्धसमयः चन्द्रदर्शनं, विवाहः रोहिण्यां, शिवाजी जयन्ती, अग्निवासाः-सिद्धयोगश्च दि. ३।०८ या. ततः शिववासः-मृत्युयोगश्च सर्वाधिसिद्धयोगः, अतिगंड योगः ५।३।१४, शिववासः दि. १।२५ या, विश्व रेडक्रॉस दिवसः

अक्षयतृतीया, जेतायुगादिः, गंगा-कौशिकी-वाङ्मन्यादि स्नानं, विवाहः-द्विरागमन-देवादिप्रतिष्ठाश्च मृगशिरसि, श्री गणेश ४ व्रतं, तृतीयायां पश्चिमां विना यात्रा, परशुराम जयन्ती, रविव्रतविर्साः,❖ भद्रा १५।४१ या, बुधोदयः पश्चिमे, उपनयनं, द्विरागमनं, गृहप्रवेशः रा. ६।०६ उ., अग्निवासः, शिववासः-अमृतयोगश्च दि. ६।०८ उ.

६ तिथिमानम् ५.३५.५४ जगद्गुरु शंकराचार्य जयन्ती, दशतिथिः १०।१६ उ., शिववासः, प्रयोगिकी दिवसः

जह्नुवी सप्तमी, भद्रा ५८।२३ उ., कृतिकायां रविः ००।३०, मुण्डनं, द्विरागमनं पुष्ये, गृहप्रवेशः-देवादिप्रतिष्ठाश्च सप्तम्यां पुष्ये, दशतिथिः ४।२९ या, सप्तम्यां पुष्ये उत्तरां विना यात्रा, शिववासः,❖ भद्रा २५।१९ या, गंड १६।०७ उ.-३९।०७ या, अमृतयोगः, विवाहः अष्टम्यां मघाश्च जानकी नवमी व्रतं, मैथिली दिवसः, हनुमद्भवज्जटानं, श्रीसीताराम पूजनादि, वगलामुखी जयन्ती, मासान्तः, शिववासः, अग्निवासः

वृषे रविः २८।१४ मु. ४५ फलं महर्षि विष्णुपदी सं. पु. कालो दि. घं १२ उ., हरिद्वारकल्पवासः समाप्तिः, मृत्युयोगः रा. ७।२३ या. ततः अमृतयोगः, विपणि दि. १।३२ उ. भद्रा ८।३ उ. ३५।३० या, मोहिनी ११ व्रतं सर्वेषां, मासादिः, एकादशीव्रतोद्यापनं, मृत्युयोगः सं. ५।४७ या, सर्वाधिसिद्धयोगः दि. १२।३८ उ., विपणि, दीक्षाग्रहणं मधुसूदन-१२, कुशोदकेनपारणम्, मुण्डनं, विवाहः दिवारात्रौ, गृहप्रवेशः, गृहप्रवेशः, देवादिप्रतिष्ठा, प्रदोष-१३ व्रतं, शिववासः, अग्निवासः, मृत्युयोगः दि. ४।३३ या, विपणि दि. १२।०३ या.

प्रदोष-१४ व्रतं, छिन्नमस्ता जयन्ती, नरसिंहावतारः, पश्चिम दक्षिण यात्रा, शिववासः-सिद्धयोगश्च दि. ३।४५ या. ततः राज्यप्रदयोगः भद्रा २५।१५ उ. ५४।४० या, अग्निवासः

वैशाखी पूर्णिमा, स्नानदानादिः, बुद्ध जयन्ती, विवाहः अनुराधायां, गृहप्रवेशः पूर्णिमायां, पूर्णिमायां अनुराधायां पश्चिमोत्तर यात्रा, सिद्धयोगः दि. ३।४० या. ततः शिववासः, सर्वाधिसिद्धयोगः दि. १।०६ उ.

विश्वविषयः-परशुरामार्घ्यदानम्नः- जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर प्रभो। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर। जानकीनवमीव्रतम्, बृहद्विष्णुपुराणे-

वैशाखस्य सिते पक्षे नवमी तु मघायुता। सैव मध्याह्नयोगेन शस्यते व्रतकर्मणि॥ तत्र जानकीं समूच्य

प्रणमेनम्नः- दशाननविनाशाय जाता धरणिस्पमन्वा। मैथिली शीलसम्पन्ना पातु नः पतिदेवता॥ अक्षयतृतीयायां दानमक्षयफलदम्, विष्णुधर्मोत्तरे-वैशाखे शुक्लपक्षे तु तृतीयायां द्विजोत्तम। यद्वाति नरश्रेष्ठ तद्वाताऽक्षयमश्नुते॥

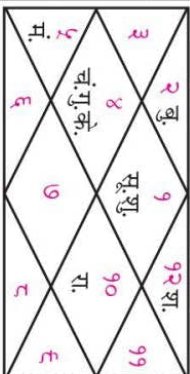
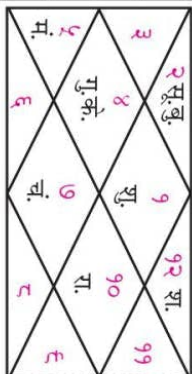
वैशाखे त्वान्य वस्तुनिः- कांस्तं मांसं मसूरानं चणकं कोद्वक्तथा। शाकं मधु परानं च पुनर्भोजनमैश्वरे।

वैशाखेदान वस्तुनिः- प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलतिकाम। उपानद् व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासार्सि चरन्म। जलपात्राणि दैयानि तथा पुपग्रहाणि च॥

मूलवासः- स्वर्गे शुचिप्रोष्ठपदेषमाधे भूमौ नभः कार्तिकचैत्रपौषे। मूलं ह्यधास्तातु तपस्पमार्गं वैशाखशुक्रेष्वशुभं च तत्र॥

अशुक्तमूलविचारः- अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवाङ्किः। रेवतीसप्रेशक्रान्ते मासस्तरसाः क्रमात्। तस्मादेषूत्पन्नानां शान्तिः मूलादिनक्षत्रेषु कार्या।

मूलवृक्षविचारः- मूलस्तम्भस्त्वचा शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा। मनयोऽप्यै दिशा रुद्राः सूर्याः पञ्चाब्धयोऽन्यः। मूले मूलविनाशः स्यात्सम्भे वीशिविनाशनम्। त्वचि मातुर्भवेत्क्लेशः शाखायां मातुलस्य च। पत्रे राज्यं विजानीयात्पुष्पे मन्त्रिपदं स्मृतम्। फले च विमूला लक्ष्मीः शिखायामल्पजीवितम्।



वै. शु. १५ गु. व. ८।४०।१८।०१
अन्यनशाः २२।५५।१२

वै. शु. ८ गु. व. ८।४०।१७।५४
अन्यनशाः २२।५५।११

औत्तरशान्तिरपि- विधेया।
तत्र सजातीयापचयत्रयानन्तरं
विजातीयापचयप्रसवरीतरः।

तिथयः	दिनानि	तिथि	तिथि	नक्षत्राणि	नक्षत्राणि	योगः	कणाणि	चन्द्राण्यः	स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	मु०	ने०	अ०
द. प.	घ. मि.	द. प.	घ. मि.	द. प.	घ. मि.	द. प.	घ. मि.	रात्र्यादि	रात्र्यादि	घं. मि.	घं. मि.	ता०	ता०	ता०	ता०
१	शुक्र	२७।५१	दि.४।२६	अमृ.२२।५४	दि.२।२८	शिव.४२।१०	कौ.२४।०७	वृश्चिक	१।०६।०६।१३	३३।३०	५।१८	६।४२	१५	७	२१
२	शनि	३०।५०	सं.५।३८	ज्ये.२७।२४	दि.४।१६	स्मि.४२।१८	गर.२५।३०	वृ.दि.४।१६	१।०७।०३।४०	३३।३२	५।१८	६।४२	१६	८	२२
३	रवि	३४।५४	रा.७।१४	मूल.३२।५८	दि.६।२८	सा.४३।१२	वि.२८।०१	धनु	१।०८।०१।०७	३३।३४	५।१७	६।४३	१७	८	२३
४	सोम	३८।३८	रा.८।०८	पू.षा.३८।१०	रा.८।५७	शु.४४।३६	बा.३१।४४	ध.रा.३।५३	१।०८।५८।३३	३३।३६	५।१७	६।४३	१८	१०	२४
५	मंगल	४४।४७	रा.११।११	उ.षा.४५।४४	रा.११।३५	शु.४६।१५	कौ.३।२८	मकर	१।८।५५।५८	३३।३८	५।१७	६।४३	१८	११	२५
६	बुध	४८।४८	रा.१।११	श्र.५२।१५	रा.२।१०	क्र.४७।५२	गर.८।१३	मकर	१।१०।५३।२५	३३।४०	५।१६	६।४४	२०	१२	२६
७	गुरु	५४।२४	रा.३।०१	धनि.५८।१४	रा.४।३४	पे.४८।०४	वि.१३।४८	म.दि.३।२२	१।११।५०।५१	३३।४२	५।१६	६।४४	२१	१३	२७
८	शुक्र	५८।०५	रा.४।२८	शत.६०।००	अहोरात्र	के.४८।४३	बा.१८।४५	कुंभ	१।१२।४७।४१	३३।४४	५।१५	६।४५	२२	१४	२८
९	शनि	६०।००	अहोरात्र	शत.३।२७	प्रा.६।३८	वि.४८।२८	तै.२३।०८	कुं.रा.१।५२	१।१३।४५।११	३३।४५	५।१५	६।४५	२३	१५	२८
१०	रवि	०।३६	प्रा.५।२८	पू.षा.७।३३	दि.८।१६	प्री.४८।२३	क.२६।४१	मीन	१।१४।४२।४१	३३।४६	५।१५	६।४५	२४	१६	३०
११	सोम	२।०५	प्रा.६।०५	उ.षा.१०।३३	दि.८।२८	आ.४६।१५	बक.२८।११	मीन	१।१५।४०।१०	३३।४७	५।१५	६।४५	२५	१७	३१
१२	मंगल	२।११	प्रा.६।०६	रेवती.१२।१४	दि.१०।०८	सौ.४३।०६	बा.०।११	मी.दि.१०।८	१।१६।३७।३८	३३।४८	५।१४	६।४६	२६	१८	३१
१३	बुध	१।०१	प्रा.५।३८	अ.१२।३८	दि.१०।१८	शो.३८।५६	तै.०।४८	मेघ	१।१७।३५।०८	३३।४८	५।१४	६।४६	२७	१९	२
१४	गुरु	५५।१२	रा.३।१८	भरणी.११।५६	दि.१०।००	अति.३३।५७	क.०।०५	मे.दि.३।५०	१।१८।३२।४७	३३।५०	५।१४	६।४६	२८	२०	३
३०	शुक्र	५०।५४	रा.१।३५	कृ.१०।१०	दि.८।१८	शु.२८।१०	क.२८।२८	वृष	१।१८।२६।३७	३३।५२	५।१४	६।४६	२८	२१	४

प्रश्नप्रमाणिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिरव्य

तिथयः	दिनानि	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	मिश्रमानम्	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिंह.अं.	कन्या.अं.	तुला.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
दिनानि	रात्र्यादि	रात्र्यादि	रात्र्यादि	रात्र्यादि	रात्र्यादि	रात्र्यादि	रात्र्यादि	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.
१. शुक्र	४।०७।०८।०२	१।२५।५२।२१	३।२४।५०।४८	०।१५।४१।०८	१।१।२८।४१।३४	६।२३।२२।२३	४६।४५	५।०२	६।३८	८।४०	१०।५७	१३।१५	१५।३२	१७।५०	२०।०८	२२।२६	०।२७	२।०७	३।३४	३।३४
२. शनि	४।०७।३४।२१	१।२७।०२।१३	३।२४।५८।०७	०।१६।५३।२७	१।१।२८।४८।१७	६।२३।१६।१२	४६।४६	४।५५	६।३५	८।३६	१०।५४	१३।१२	१५।३०	१७।४६	२०।०४	२२।२२	०।२३	२।०३	३।३०	३।३०
३. रवि	४।०८।००।४०	१।२८।११।५५	३।२५।०५।२६	०।१८।०५।४५	१।१।२८।५५।००	६।२३।१६।०१	४६।४७	४।५१	६।३१	८।३२	१०।५०	१३।२६	१५।२६	१७।४२	२०।००	२२।१८	०।१८	१।५८	३।२६	३।२६
४. सोम	४।०८।२६।५८	१।२८।२१।३६	३।२५।१२।४५	०।१९।१८।०२	१।१।२८।०१।४३	६।२३।१२।५०	४६।४८	४।४८	६।२८	८।२८	१०।४६	१३।०४	१५।२२	१७।३८	२०।१४	२२।१४	०।१५	१।५५	३।२२	३।२२
५. मंगल	४।०८।५२।१७	२।००।३१।१७	३।२५।२०।०३	०।२०।३०।१६	१।१।२८।०८।२६	६।२३।०८।३८	४६।४६	४।४४	६।२४	८।२५	१०।४२	१३।००	१५।१८	१७।३४	२०।१०	२२।१०	०।११	१।५१	३।१८	३।१८
६. बुध	४।०८।१८।३५	२।०१।४०।५८	३।२५।२७।०१	०।२१।४२।३६	१।१।२८।१५।०८	६।२३।०८।२८	४६।५०	४।४०	६।२०	८।२१	१०।३८	१३।५६	१५।१४	१७।३०	२०।१८	२२।०६	०।०७	१।४७	३।१४	३।१४
७. गुरु	४।०८।४५।५३	२।०२।५०।३८	३।२५।३४।३८	०।२२।५४।५३	१।१।२८।२१।५१	६।२३।०३।१७	४६।५१	४।३७	६।१७	८।१८	१०।३७	१३।५३	१५।११	१७।२७	२०।१५	२२।०३	०।०४	१।४४	३।११	३।११
८. शुक्र	४।१०।१३।२५	२।०३।२८।२०	३।२५।४२।३८	०।२४।०५।२६	१।१।२८।२८।४२	६।२३।००।०६	४६।५२	४।३३	६।१३	८।१४	१०।३३	१३।४८	१५।०७	१७।२३	२०।१५	२२।०३	०।००	१।४०	३।०७	३।०७
९. शनि	४।१०।४०।५७	२।०४।०८।२१	३।२५।५०।३७	०।२५।१५।५८	१।१।२८।३५।३३	६।२३।५६।५५	४६।५३	४।२८	६।०८	८।१०	१०।२८	१३।४५	१५।०३	१७।१८	२०।१४	२२।१५	०।०३	१।३६	३।०३	३।०३
१०. सोम	४।१०।०८।२८	२।०४।४६।४१	३।२५।५८।३६	०।२६।२६।३२	१।१।२८।४२।२४	६।२३।५३।४४	४६।५४	४।२६	६।०६	८।०७	१०।२६	१३।४२	१५।००	१७।१६	२०।१४	२२।१५	०।०३	१।३२	३।००	३।००
११. मंगल	४।१०।०३।३०	२।०६।०४।०१	३।२६।१४।३४	०।२८।४७।३८	१।१।२८।५६।०६	६।२३।४७।२२	४६।५५	४।१८	६।५८	८।०३	१०।१८	१३।३४	१५।०८	१७।१२	२०।१४	२२।१५	०।०३	१।२६	३।०५	३।०५
१२. बुध	४।१०।३१।०१	२।०६।४२।४१	३।२६।२२।३३	०।२८।५८।११	०।००।०२।५६	६।२३।४४।११	४६।५५	४।१५	६।५५	८।०५	१०।१५	१३।३१	१५।०८	१७।०८	२०।१४	२२।१५	०।०३	१।२२	३।०५	३।०५
१३. गुरु	४।१०।५८।३२	२।०७।२१।२१	३।२६।३०।३२	०।०१।०८।४३	०।००।०६।४६	६।२३।४१।००	४६।५५	४।११	६।५१	८।०५	१०।११	१३।३७	१५।०९	१७।०९	२०।१४	२२।१५	०।०३	१।१८	३।०५	३।०५
३०. शुक्र	४।१३।२७।४७	२।०७।१७।०७	३।२६।३८।३८	०।०२।२५।०७	०।००।१६।२४	६।२३।३७।४८	४६।५५	४।०७	६।४७	८।४८	१०।०७	१३।२३	१५।४१	१६।५७	२०।१५	२२।१५	०।०३	१।१४	३।०५	३।०५

दैनिकलनसारणी चक्रम्

दिवाधिप्रहस	निशाधिप्रहस
दि.८।३६-१२।००	रा.८।२१-१०।४०
प्रा.५।१८-६।५८दि.१।४०-३।२१दि.५।०१-६।४२	सं.६।४२-८।०१रा.१।१६-२।३८रा.३।५८-५।१७
दि.१०।१६-१।४०	रा.१०।४०-१२।००रा.१।१६-२।३८
दि.६।५७-८।३८दि.३।२१-५।०२	रा.१०।४०-१२।००रा.२।३८-३।५७
दि.६।५७-८।३८दि.१।४०-३।२१	रा.८।०२-६।२१
दि.८।३८-१०।१६दि.१२।००-१।४१	रा.१२।००-१।१६रा.२।३८-३।५७
दि.३।२२-६।४४	रा.१२।००-१।१६रा.३।५७-५।१५
दि.८।३७-१२।००	रा.८।२२-१०।४१
प्रा.५।१५-६।५६दि.१।४१-३।२२दि.५।०३-६।४५	सं.६।४५-८।०३रा.१।१८-२।३७रा.३।५६-५।१४
दि.१०।१८-१।४१	रा.१०।४१-१२।००रा.१।१८-२।३७
दि.६।५६-८।३७दि.३।२२-५।०३	रा.१०।४१-१२।००रा.२।३७-३।५६
दि.६।५५-८।३७दि.१।४१-३।२३	रा.८।०४-६।२३
दि.८।३७-१०।१८दि.१२।००-१।४१	रा.१२।००-१।१६रा.२।३७-३।५५
दि.३।२३-६।४६	रा.१२।००-१।१६रा.३।५५-५।१३
दि.८।३७-१२।००	रा.८।२३-१०।४१

सन् १४३४ साल, संवत् २०८४, शके १९४९, सौम्यागोलः, सौम्यायनम्, ग्रीष्मर्तुः॥ (राहु) पश्चिमेकालः शुद्धसमयः
दिनांकः ५ जून से १८ जून २०२७ ई०

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथयः	दिनानि	तिथि	व्य. मि.	नक्षत्राणि	व्यं. मि.	योगः	कणागानि	चन्द्राणयः	स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	मु०	ने०	अ०
तिथयः	दिनानि	दं. प.	व्य. मि.	दं. प.	व्यं. मि.	दं. प.	दं. प.	दं. प.	राश्यादि	राश्यादि	व्यं. मि.	व्यं. मि.	ता०	ता०	ता०
१	शनि	४५।४७	रा.११।३१	रा.७।३५	दि.८।१५	धृ.२१।४४	किं.२३।१२	वृ.सं.७।३६	१।२०।२६।३६	३३।५४	५।१३	६।४७	३०	२२	५
२	रवि	४०।०८	रा.६।१६	मृग।४।२०	दि.६।५७	शु.१४।४३	बा.१८।४८	मिथुन	१।२१।२३।३५	३३।५६	५।१३	६।४७	१	२३	६
३	सोम	३४।०८	रा.६।५२	आर्द्रा.०।३३	प्रा.५।२६	ग.०७।२४	तौ.१३।४१	मि.रा.१०।२३	१।२२।२०।३४	३३।५७	५।१३	६।४७	२	२४	७
४	मंगल	२८।००	दि.४।२४	पुष्य।५।१६	रा.२।०६	शु.५।२।११	च.८।०३	कर्क	१।२३।१७।३३	३३।५८	५।१२	६।४८	३	२५	८
५	बुध	२८।४८	दि.२।१८	शुल.४।१४	रा.१।३०	व्या.४४।४१	बक.२।०३	क.रा.१२।३०	१।२४।१४।३२	३३।५८	५।१२	६।४८	४	२६	८
६	गुरु	१५।५६	दि.११।३४	मघा.४४।३२	रा.१०।०१	ह.३७।२५	तै.२।४६	सिंह	१।२५।११।३१	३४।००	५।१२	६।४८	५	२७	१०
७	शुक्र	१०।२७	दि.६।३४	पू.फ.४१।१७	रा.६।४३	क.३०।३१	क.१६।४८	सिं.रा.३।२८	१।२६।०८।३१	३४।०२	५।१२	६।४८	६	२८	११
८	शनि	५।३१	दि.७।२३	ऊ.फ.३८।५१	रा.८।४३	सि.२४।१४	बक.११।०५	कन्या	१।२७।०५।३१	३४।०३	५।११	६।४८	७	२८	१२
९	रवि	१।२४	हस्त.३७।१३	रा.८।०४	व्य.१४।३८	कौ.५।५३	कन्या	१।२८।०२।३१	३४।०४	३४।०४	५।११	६।४८	८	३०	१३
१०	सोम	५६।११	रा.३।३६	चित्रा.३६।३७	रा.७।५०	वरि.१३।४६	ग.१।२६	क.दि.७।५७	१।२८।५६।३१	३४।०५	५।११	६।४८	९	३१	१४
१२	मंगल	५५।१८	रा.३।१८	स्वा.३७।१४	रा.७।४१	परि.६।५५	बक.२६।३५	तुला	१।२८।५६।३१	३४।०६	५।११	६।४८	१०	३२	१५
१३	बुध	५५।४४	रा.३।२८	विशा.३६।०५	रा.८।०५	शि.६।५८	कौ.२४।३८	तु.दि.२।३८	२।००।५३।३१	३४।०७	५।११	६।४८	११	३२	१६
१४	गुरु	५७।३०	रा.शे.४।११	अनु.४२।१३	रा.१०।०३	सि.५।०५	ग.२।३५७	वृश्चिक	२।०१।५०।३१	३४।०८	५।१०	६।५०	१२	३२	१७
१५	शुक्र	६०।००	अहोरात्र	ज्ये.४६।२५	रा.११।४४	वि.२४।३०	वृ.रा.११।४४	२।०२।४७।२६	३४।०८	५।१०	६।५०	६।५०	१३	३३	१८
१५	शनि	०।२२	प्रा.५।१८	मूल.५।४४	रा.१।५२	शु.३।११	बा.२६।१८	धनु	२।३।४४।२१	३४।१०	५।१०	६।५०	१४	३४	१९

दैनिकलनसारणी चक्रम्

तिथयः	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	मिश्रमानम्	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिंह.अं.	कन्या.अं.	तुला.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
दिनानि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	राश्यादि	मिश्रमानम्	व्य. मि.	व्य. मि.	व्य. मि.	व्य. मि.	व्य. मि.	व्य. मि.	व्य. मि.	व्य. मि.	व्य. मि.	व्य. मि.	व्य. मि.	व्य. मि.
१. शनि	४।१३।५७।०२	रा।०७।१२।५३	रा।२६।४८।४४	१।०३।४१।३०	०।००।२३।०२	६।२२।३४।३८	४६।५६	४।०४	५।४४	७।४५	१०।०३	१२।२१	१४।३७	१६।५३	१६।११	२१।२८	२३।३०	१।१०	२।३७
२. रवि	४।१४।२६।१७	रा।०७।०८।३६	रा।२६।५७।५०	१।०४।५७।५३	०।००।२६।४०	६।२२।३१।२७	४६।५७	४।००	५।४०	७।४१	६।५६	१२।१७	१४।३३	१६।४८	१६।०७	२१।२५	२३।२६	१।०६	२।३३
३. सोम	४।१४।५५।३२	रा।०७।०४।२५	रा।२७।०६।५६	१।०६।१४।१६	०।००।३६।१८	६।२२।२८।१६	४६।५८	३।२६	५।३३	७।३७	६।५५	१२।१३	१४।२८	१६।४५	१६।०३	२१।२१	२३।२२	१।०२	२।२८
४. मंगल	४।१५।२४।४७	रा।०७।००।११	६।२७।१६।०२	१।०७।३०।३८	०।००।४२।५५	६।२२।२५।०५	४६।५८	३।५३	५।३३	७।३४	६।५२	१२।१०	१४।२६	१६।४२	१६।००	२१।१८	२३।१९	०।५६	२।२६
५. बुध	४।१५।५४।०१	रा।०६।५५।५७	रा।२७।२५।०७	१।०८।४७।०२	०।००।४६।३२	६।२२।२१।५४	४७।००	३।४८	५।२८	७।३०	६।४८	१२।०६	१४।२२	१६।३८	१६।५६	२१।१४	२३।१५	०।५५	२।२२
६. गुरु	४।१६।२३।१५	रा।०६।५१।४४	रा।२७।३४।१२	१।१०।०३।२५	०।००।५६।०८	६।२२।१८।४१	४७।००	३।४७	५।२७	७।२८	६।४६	१२।०४	१४।२०	१६।३६	१६।५४	२१।१२	२३।१३	०।५३	२।२०
७. शुक्र	४।१६।५३।४०	रा।०६।०८।१८	रा।२७।४३।५८	१।११।१६।५५	०।०१।०१।४२	६।२२।१५।३२	४७।०१	३।४४	५।२४	७।२५	६।४३	१२।०१	१४।१७	१६।३३	१६।५१	२१।०८	२३।१०	०।५०	२।१७
८. शनि	४।१७।२४।०४	रा।०५।२६।५२	रा।२७।५३।४४	१।१२।३०।२५	०।०१।०७।१५	६।२२।१२।२१	४७।०२	३।४१	५।२१	७।२१	६।३८	११।५७	१४।१३	१६।२८	१६।४७	२१।०५	२३।०६	०।४६	२।१३
९. रवि	४।१७।५४।२८	रा।०४।४४।२७	रा।२८।०३।३०	१।१३।४३।५५	०।०१।१२।४८	६।२२।०६।२१	४७।०३	३।३८	५।१८	७।१८	६।३६	११।५४	१४।१०	१६।२६	१६।४४	२१।०२	२३।०३	०।४३	२।१०
१०. सोम	४।१८।२४।५२	रा।०४।०२।०२	रा।२८।१३।१६	१।१४।५७।२५	०।०१।१८।२१	६।२२।०५।५८	४७।०४	३।३४	५।१४	७।१५	६।३३	११।५१	१४।०७	१६।२३	१६।४१	२०।५८	२३।००	०।४०	२।०७
१२. मंगल	४।१८।५५।१६	रा।०३।१६।३७	रा।२८।२३।०१	१।१६।१०।५५	०।०१।२३।५४	६।२२।०२।४८	४७।०४	३।३१	५।११	७।१२	६।३०	११।४८	१४।०४	१६।२०	१६।३८	२०।५६	२३।५७	०।३७	२।०४
१३. बुध	४।१९।२५।४०	रा।०२।३७।१२	रा।२८।३२।४६	१।१७।२४।२४	०।०१।२६।२७	६।२१।५६।३७	४७।०४	३।२७	५।०७	७।०८	६।२६	११।४४	१४।००	१६।१६	१६।३४	२०।५२	२३।५३	०।३३	२।००
१४. गुरु	४।१९।५६।०४	रा।०१।५४।४१	रा।२८।४२।३१	१।१८।३७।५३	०।०१।३७।५८	६।२१।५६।२६	४७।०४	३।२३	५।०३	७।०४	६।२२	११।४०	१४।५६	१६।१२	१६।३०	२०।४८	२३।४८	०।२८	१।५६
१५. शुक्र	४।२०।२६।४७	रा।०१।१५।३२	रा।२८।५३।१७	१।१९।५१।१३	०।०१।४०।०२	६।२१।५३।१५	४७।०५	३।१८	४।५८	७।००	६।१८	११।३६	१३।५२	१६।०८	१८।२६	२०।४४	२३।४५	०।२५	१।५२
१५. शनि	४।२०।५७।३०	रा।००।३६।२३	रा।२९।०४।०१	१।२१।०४।३२	०।०१।४५।०५	६।२१।५०।०४	४७।०६	३।१६	४।५६	६।५७	६।१५	११।४३	१३।४८	१६।०५	१८।२३	२०।४१	२३।४३	०।२२	१।४८

रोहिण्यां दक्षिण यात्रा, मृगशिरसि पूर्वा विना यात्रा, अमृतयोगः, सर्वाथसिद्धयोगः दि. ८।१५ या., पर्यावरण दिवसः चन्द्रदर्शनं, मृगशिरसि पश्चिमां विना यात्रा, शिववासः, अग्निवासः, देवादिप्रतिष्ठा दि. ६।५७ या. पुनर्वसु न. ५५।५४, पंचाग्नि व्रतं, रम्यातृतीया, उपनयनं, मुण्डनं, देवादिप्रतिष्ठा पुष्ये, दश तिथिः ४०।५९ उ. वृ. योगः ५।२।२८, महाराणाप्रताप जयन्ती भद्रा ८।०३ उ. ३५।०७ या., श्री गणेश ष व्रतं, उमाचतुर्थी, उमापूजनं, सरस्वती स्मृतिदिवसः, मृगशिरसि रविः ५।२।४४, दशतिथिः ३५।०७ या., अग्निवासः-गन्धप्रदयोगश्च दि. ४।२४ या. गंड ३७।१४ उ. ५।२।१४ या., उपनयनं, विवाहो मघायाम्, शिववासः, अग्निवासः-अमृतयोगश्च दि. २।१६ उ.

विन्ध्यवासिनी पूजा, विवाहो मघायाम्, ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशम्यां हस्तयोगतः दशजन्माषाढा गङ्गा दशपापहरा स्मृता॥, शिववासः-अग्निवासश्च दि. ११।३४ या. भद्रा १६।४८ उ. ४३।५७ या., मृत्युयोगः दि. ६।३४ या. ततः अग्निवासः “गंगाया पूजिता यातु पूजिताः सर्वदेवताः”, अग्निवासः दि. ७।२३ या. ततः शिववासः-सिद्धयोगश्च

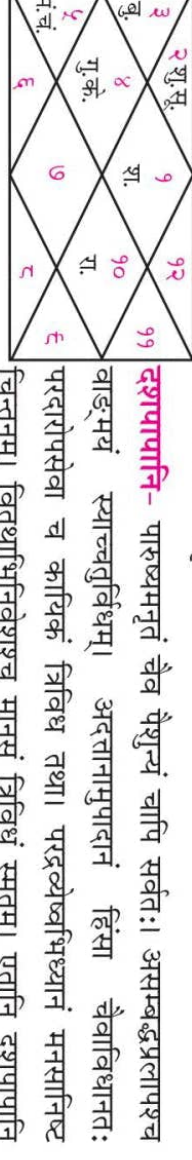
१० तिथिमानम् ५६।५२, हस्ते सर्वाथसिद्धयोगः, अग्निवासः, उपनयनं, विवाहो-देवादिप्रतिष्ठा पूर्व दक्षिण यात्राश्च दशम्यां गंगादशहरा, रामेश्वर दर्शनं, शिववासः प्रा. ५।४४ या. ततः अमृतयोगः, भ. ३०।२२ उ. ५७।५२ या., निर्वाला ११ व्रतं स्मार्तानां, एकादशी व्रतोद्यापनं, दक्षिण यात्रा, गृहारम्भः-गृहप्रवेशश्च, उपनयनं, मुण्डनं, विवाहः दिवारात्रौ, सिद्धयोगः, देवादिप्रतिष्ठा वैष्णवानामेकादशीव्रतं, त्रिविक्रम-१२, तिलेन पारणम, मिथुने रविः ५।२।३४ मु. ४५ फलं. महर्ष, मासान्तः, शिववासः, अग्निवासः, रक्तदान दिवस

प्रदोष १३ व्रतं, षडशीति संक्रान्ति, पुष्य कालो दि.बं.-१२ या., शिववासः, मृत्युयोगः, सर्वाथसिद्धयोगः रा. ८।०५ उ. भद्रा ५३।५४ उ., प्रदोष १४ व्रतं, चम्पक चतुर्दशी, रुद्र पूजा, मासादिः, अग्निवासः, मृत्युयोगः रा.शे. ४।११ या. ततः सिद्धयोगः, सर्वाथसिद्धयोगः रा. १०।०३ या.

ज्येष्ठी पूर्णिमा-तिलादिदानं, साम्प्रतिक वैक्स्वत मन्वादिः, विवाहः मूले, भद्रा २४।३० या., गंड ४०।१३ उ. ५५।१३ या., कबीर जयंती प्रतिपदी उत्तर यात्रा, अग्निवासः, शिववासः-अमृतयोगश्च प्रा. ५।१८ उ.

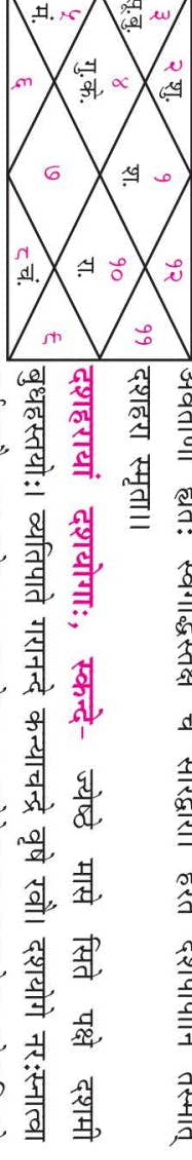
अर्धहरावोधचक्रम्

ज्ये. शु. ६ गु. व. ८।४०।१८।२२ ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां तु जाता पूर्वामुमा सती। तस्मात् सा तत्र सम्पूज्या स्त्रीभिः सौभाग्यवृद्धये॥



दशपापानि- पारष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वतः। असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्। अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः परदारोपसेवा च कापिकं त्रिविध तथा। परद्रव्येष्वभिषेधानं मनसानिष्ट चिन्तनम्। वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम्। एतानि दशपापानि हर त्वं मम जाह्नवि। दशपापहरा यस्मात् तस्मात् दशहरा स्मृता॥

ज्ये. शु. १४ गु. व. ८।४०।१८।२८ अयनांशाः २२।५५।१६ गंगादशहरा वाराहपुराणे- दशमीशुक्लपक्षे तु ज्येष्ठेमासे कुजेऽहनि। अवतीर्णा ह्यतः स्वर्गाद्धस्तर्क्षं च सरिद्धरा। हरते दशपापानि तस्मात् दशहरा स्मृता॥



दशहरायां दशयोगाः, स्कन्दे- ज्येष्ठे मासे सिते पक्षे दशमी बुधहस्तयोः। व्यतिपाते गगानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ। दशयोगे नरःस्नात्वा सर्व पापैः प्रमुच्यते। कुजबुधयोश्च कल्पभेदेन व्यवस्था ज्ञेया। योगाधिक्ये फलाधिक्याद्यत्रैव योगबाहुल्यं तत्रैवेयं ग्राह्या॥

सन् १४३४ साल, संवत् २०८४, शाके १९४९, सौम्यायनम्, सौम्यगोलः ता. १७ तः याम्यगोलः ग्रीष्मर्तुः ता. १७ तः वर्षर्तुः (राहु) पश्चिमेकालः शुद्धसमयः ता. १३ तः अशुद्धसमयः

दिनांकः ५ जुलाई १८ जुलाई २०२७ ई०

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

२ तिथिमानम् ५७।२१, चन्द्रदर्शनं, ग्रीष्म नवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, श्री दुर्गापूजनोत्सवः, मिथुनस्थे चन्द्रे पश्चिम दक्षिण यात्रा प्रतिपदि, श्री जगन्नाथ रथयात्रोत्सवारम्भः, समुद्रस्नानं, जगन्नाथ दर्शनं, ३ तिथि ५३।५२, गं. ५७।४७ उ., पुनर्वसो रविः ५८।३९, उत्तरां विना यात्रा पुष्ये, सिद्धयोगः, उपनयनं छन्दोगां भद्रा २५।१४ उ. ५२।१८ या., गंड १२।४७ या., विवाहो मध्यायां

पूर्व फाल्गुन्यां पूर्वोत्तर यात्रा, उपनयनं, विवाहो मध्यायां, व्य. योग ५३।१०, शिववासः, अग्निवासः, सिद्धयोगः उ. फाल्गुनी न. ५७।२०, पूर्व फाल्गुन्यां पूर्वोत्तर यात्रा, विवाहः, गृहप्रवेशः सप्तम्यां, देवदिप्रतिष्ठा प्रा. ५।५९ उ., शिववासः-सिद्धयोगश्च रा. ७।०३ या. ततः मृत्युयोगः, विपणि प्रा. ५।५९ उ. ♦

भद्रा ३५।०३ उ., दशतिथिः ३५।०३ उ., सप्तम्यां दक्षिण यात्रा, अग्निवासः, गृहप्रवेशः सप्तम्यां भद्रा-३।१७ या., करमूले पुलिक मूल बन्धनं, दशतिथिः ३०।३९ या., सिद्धयोगः दि. ४।११ या. ततः शिववासः - अग्निवासश्च, जनसंख्या दिवसः दशम्यां स्वात्मां पश्चिम दक्षिण यात्रा, शिववासः - अग्निवासश्च दि. ३।१४ या. ततः अमृतयोगः, मुण्डनं, क्षीणः शुक्रः ००।५२

भद्रा ५३।२७ उ., वैकतमन्वादिः, अग्निवासः-मृत्युयोगश्च दि. २।५९ उ. भद्रा २२।४४ या., हरिश्चयनी ११ व्रतं सर्वेषां, चातुर्मास्यव्रतारम्भः पश्चिम यात्रा अनुराधायां, अग्निवासः - अमृतयोगश्च दि. २।५८ या. ततः शिववासः - सिद्धयोगश्च, विपणि वामन १२ द्वादशी, यव चूर्णेन पारणम्, प्रदोष-१३ व्रतं, गंड ५८।५२ उ., पश्चिमोत्तर यात्रा त्रयोदश्यां, पूर्वस्तशुक्रः ०।५२, शिववासः, अग्निवासः-अमृतयोगश्च दि. ३।३८ उ., सर्वाथसिद्धयोगः प्रा. ५।३६ या.

प्रदोष-१४ व्रतं, गंड-९।५२ या., मासान्तः, शिववासः अग्निवासश्च दि. ४।४५ या. ततः अमृतयोगः कर्क रविः ३०।३९ मू. ३० फलं साप्यं याम्यायनम्, संक्रान्ति, पुकालो दि. १२ उ., सिद्धयोगः सं. ६।१८ या. ततः अग्निवासः-मृत्युयोगश्च

आषाढी गुरु पूर्णिमा, स्नान दानादिः, गुरु व्यासयोः पूजनं, भद्रा २९।३० या., चाक्षुष मन्वादिः, मासादिः, पूर्णान्ताद् सन् १४३५ साल सञ्जक वर्षारम्भः, करमूले पुलिक मूल बन्धनं, *

विधिधविषयः--आषाढ़े शक्नुन विचारः-- आषाढकृष्णाष्टम्यां चन्द्रोदये मेघे वृष्टिरुत्तमा सुभिर्क्षां चान्यथा दुर्भिर्क्षं, तथैव कृष्णवर्म्यां मेघे विद्युति सत्यां सुवृष्टिः। आषाढ शुक्लद्वितीयायाम् नवम्याञ्च शुभप्रहवरो वृष्टिकारकः समर्धकारकश्च। पूर्णिमायामाषाढे पूर्वाषाढे सति सुभिर्क्षं, प्रजापीडा च उत्तराषाढे। आषाढ़शुक्लद्वितीयायां जगन्नाथ रथयात्रा- तद्दिने रथस्थरामावलोकितो नैव विपद्यते। पूर्णिमायां वायुपरीक्षणम्- तत्र पूर्वपश्चिमवायुकोणोत्तरैशानवायौ धान्यः उत्पतिः। सुवृष्टि प्रजासुखञ्च जायते, तदितरवायौ भीतिः दुर्भिक्षादिकञ्चेति।

आद्रायाः प्रथमेपादे क्षीरमशनाति यो नरः अपि रोषयुतस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति। क्षीरम् अत्र पायसम् इति। आषाढ़ शुक्लपक्षे रविवासरे करमूले

आषाढ़शुक्लपक्षे रविवासरे करमूले पुलिकमूलबन्धन मन्त्रः-- शुचिसितदिन करवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य। नागाशेरिव नागाः प्रयात्ति किल दूरतस्य॥ एवं कृते सर्वभयं न जायते। चातुर्मास्य व्यतीते तु मुक्तिस्तस्य कराद् भवेत् इत्यनेन कार्तिकशुक्ल द्वादश्यां तस्य करान्मुक्तिः।

अर्धग्रहरावधेयक्रमम्

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथयः	दिनानि	तिथि	घ. मि.	नक्षत्राणि	घं. मि.	योगाः	दं. प.	करणाणि	दं. प.	चन्द्राण्यः	स्पष्टसूर्यः	राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	मु०	ने०	अं०
		दं. प.		दं. प.		दं. प.		दं. प.						घं. मि.	घं. मि.	ता०	ता०	ता०
१	सोम	३।३४	प्रा.६।३७	पुन.१७।१३	दि.१२।०१	व्या.२३।३५	बव.१०।२४	मि.दि.६।२६	२।१८।५४।२१	३३।५८	५।१२	६।४८	१	१८	५	१८	५	
३	मंगल	५।१०	रा.१।४०	पुष्य.१२।५३	दि.१०।२१	ह.१५।४६	कौ.४।२८	कर्क	२।१६।५१।११	३३।५४	५।१२	६।४८	२	२०	६	२०	६	
४	बुध	४५।१४	रा.१।१८	श्ले.८।४७	दि.८।४४	क.२५।१४	क.२५।१४	क.दि.८।४४	२।२०।४८।०१	३३।५५	५।१३	६।४७	३	२१	७	२१	७	
५	गुरु	३६।३८	रा.६।०४	मघा.४।५८	दि.७।१२	सि.०।४८	बव.१६।०४	सिंह	२।२१।४४।५१	३३।५६	५।१३	६।४७	४	२२	८	२२	८	
६	शुक्र	३४।३७	रा.७।०३	पू.फ.१।३४	प्रा.५।५१	वरि.४७।२४	कौ.१३।०७	सिं.दि.१।४४	२।२२।४१।४६	३३।५४	५।१३	६।४७	५	२३	८	२३	८	
७	शनि	३०।३०	सं.५।२६	हस्त.५७।०५	रा.४।०४	परि.४१।३८	ग.१।३८	कन्या	२।२३।३८।४१	३३।५२	५।१४	६।४६	६	२४	१०	२४	१०	
८	रवि	२७।२४	दि.४।११	चित्रा.५६।१३	रा.३।४३	शि.३६।४०	वि.३।१७	क.दि.३।५४	२।२४।३५।३५	३३।५०	५।१४	६।४६	७	२५	११	२५	११	
९	सोम	२५।०२	दि.३।१४	स्वा.५६।३२	रा.३।५१	सि.३२।३३	कौ.२६।५१	तुला	२।२५।३२।२८	३३।४८	५।१४	६।४६	८	२६	१२	२६	१२	
१०	मंगल	२४।०४	दि.२।५१	विशा.५८।०५	रा.४।२८	सा.२६।२६	ग.२।४०	तु.रा.१०।१८	२।२६।२६।२३	३३।४८	५।१४	६।४६	९	२७	१३	२७	१३	
११	बुध	२४।२१	दि.२।५८	अनु.६०।००	अहोरात्र	शु.२७।१०	वि.२२।४४	वृश्चिक	२।२७।२६।१७	३३।४७	५।१५	६।४५	१०	२८	१४	२८	१४	
१२	गुरु	२६।०२	दि.३।३८	अनु.०।५३	प्रा.५।३६	शु.२६।१६	बा.२२।३१	वृश्चिक	२।२८।२३।११	३३।४६	५।१५	६।४५	११	२९	१५	२९	१५	
१३	शुक्र	२८।४५	दि.४।४५	ज्ये.४।५२	दि.७।१२	क्र.२६।०२	तै.२३।३८	वृ.दि.७।१२	२।२८।२०।०६	३३।४४	५।१५	६।४५	१२	३०	१६	३०	१६	
१४	शनि	३२।३८	सं.६।१८	मूल.६।५६	दि.६।१३	ऐ.२६।४१	क.२५।५५	धनु	३।००।१७।०१	३३।४३	५।१५	६।४५	१३	१	१७	१	१७	
१५	रवि	३७।१२	रा.८।०८	पू.षा.१५।५२	दि.१।३७	कै.२८।२५	बव.२८।२३	ध.दि.६।१५	३।०१।१३।५६	३३।४२	५।१६	६।४४	१४	२	१८	२	१८	

तिथिग्रहः दिनानि	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहू	मिश्रमानम्	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिंह.अं.	कन्या.अं.	तुला.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१. सोम	४।२६।४१।१२	रा।००।३४।५४	४।०२।०३।५७	रा।१०।३६।२२	रा।०।५६।०७	६।२०।५५।५७	४६।५८	२।१६	३।५६	५।५७	८।१५	१०।३३	१२।४८	१५।०५	१७।२३	१८।४१	२१।४२	२३।२२	०।४८
२. मंगल	५।००।१४।५४	रा।०१।१७।२२	४।०२।१५।५२	रा।११।५२।४२	रा।०३।०३।०५	६।२०।५२।४६	४६।५८	२।१२	३।५२	५।५३	८।११	१०।२८	१२।४५	१५।०१	१७।१८	२३।३७	२१।३८	२३।१८	०।४५
४. बुध	५।००।४८।३६	रा।०१।५६।५०	४।०२।२७।४७	रा।१३।०६।०२	रा।०।३।०७।०३	६।२०।४८।३५	४६।५८	२।०८	३।४८	५।५०	८।०८	१०।२६	१२।४२	१५।१६	१७।१६	२३।३४	२१।३५	२३।१५	०।४२
५. गुरु	५।०१।२२।२०	रा।०२।५२।१७	४।०२।३६।४२	रा।१४।१६।२१	रा।०३।११।००	६।२०।४६।१४	४६।५८	२।०५	३।४५	५।४६	८।०४	१०।२२	१२।४३	१५।१४	१७।१२	२३।३०	२१।३१	२३।११	०।३८
६. शुक्र	५।०१।५६।३५	रा।०४।५७।५४	४।०२।५२।०८	रा।१५।३२।५०	रा।०३।१४।११	६।२०।४३।१३	४६।५७	२।०१	३।४१	५।४२	८।००	१०।१८	१२।४३	१५।१०	१७।०८	२३।२६	२१।२७	२३।०७	०।३४
७. शनि	५।०२।३०।५०	रा।०५।१३।३१	४।०३।०४।३६	रा।१६।४६।१८	रा।०३।१७।२२	६।२०।४०।०२	४६।५६	१।५७	३।३७	५।३८	७।५६	१०।१४	१२।४०	१५।०४	१७।०४	२३।२२	२१।२३	२३।०३	०।३०
८. रवि	५।०३।०५।०४	रा।०६।२६।०८	४।०३।१७।०३	रा।१७।५६।४८	रा।०३।२०।३०	६।२०।३६।५१	४६।५५	१।५३	३।३३	५।३४	७।५२	१०।१०	१२।४२	१५।००	१७।००	२३।१८	२१।१८	२२।५८	०।२६
९. सोम	५।०३।३६।१८	रा।०७।४४।४४	४।०३।२३।३०	रा।१८।१३।१७	रा।०३।२३।४३	६।२०।३३।४०	४६।५४	१।४८	३।२८	५।३०	७।४८	१०।०६	१२।४२	१५।१४	१६।५६	२३।१४	२१।१५	२२।५५	०।२२
१०. मंगल	५।०४।१३।३२	रा।०८।००।२०	४।०३।४१।५७	रा।२०।२६।४४	रा।०३।२६।५३	६।२०।३०।२८	४६।५३	१।४५	३।२५	५।२६	७।४४	१०।०२	१२।४३	१५।१२	१६।१०	२३।१०	२१।११	२२।५१	०।१८
११. बुध	५।०४।४७।४६	रा।१०।१५।५६	४।०३।५४।२३	रा।२२।४०।१२	रा।०३।३०।०३	६।२०।२७।१८	४६।५३	१।४१	३।२१	५।२२	७।४०	९।५८	१२।४३	१५।१०	१६।४८	२३।०७	२१।०७	२२।४७	०।१५
१२. गुरु	५।०५।२२।००	रा।११।३१।३२	४।०४।०६।४८	रा।२२।५३।४०	रा।०३।३३।१३	६।१०।२४।०६	४६।५३	१।३७	३।१७	५।१८	७।३६	९।५४	१२।४३	१५।१४	१६।४४	२३।०२	२१।०३	२२।४३	०।१०
१३. शुक्र	५।०५।५७।१८	रा।१२।५६।५३	४।०४।३२।१८	रा।२४।०७।४८	रा।०३।३५।३८	६।२०।२०।५५	४६।५२	१।३४	३।१४	५।१५	७।३३	९।५१	१२।४३	१५।१२	१६।४१	२३।०६	२१।००	२२।४०	०।०७
१४. शनि	५।०६।३२।३५	रा।१४।२८।१३	४।०४।४५।०२	रा।२५।२१।५८	रा।०३।३८।०५	६।२०।१७।४४	४६।५१	१।३०	३।१०	५।११	७।२८	९।४७	१२।०३	१५।१६	१६।३७	२३।५५	२२।३६	२२।३६	०।०३
१५. रवि	५।०७।०७।५२	रा।१५।५६।३३	४।०४।५७।४६	रा।२६।३६।०७	रा।०३।४०।३१	६।२०।१४।३४	४६।५०	१।२६	३।०६	५।०७	७।२५	९।४३	१२।१६	१५।३३	१६।५१	२०।५१	२२।५२	२२।३२	२३।५८

देशान्तर एवं वेलान्तर संस्कार प्रकार:

सम्पूर्ण भारत में स्टैण्डर्ड समय समान ही हैं। इसके अनुसार एक ही समय हरेक जगह ५ या ७ बजते हैं परन्तु स्थानीय समय प्रत्येक जगह के भिन्न-भिन्न होते हैं। अतः स्थानीय समय बनाने के लिये वेलान्तर और देशान्तर ये दो संस्कार (जोड़ना या घटाना) करना चाहिए। जैसे १ मार्च को कटिहार के इष्टकाल में १२ मिनट वेलान्तर ऋण एवं २० मिनट ४० सेकेण्ड देशान्तर धन कर देंगे तो कटिहार का स्थानीय समय हो जायेगा।

देशान्तर साधन- १. (८२।३०-इष्टस्थान का रेखांश) ४ = इष्टस्थानिक मिनटात्मक रेखांश ऋण। यथा- दिल्ली-रेखांश ७७।१८। (८२।३०-७७।१८ = ५।१२) ४ = २०।४८ दिल्ली का रेखांश ऋण।

२. (इष्टस्थान का रेखांश- ८२।३०) ४ = इष्टस्थानिक मिनटात्मक रेखांश धन। यथा-पटना-रेखांश ८५।१३। (८५।१३-८२।३० = २।४३) ४ = १०।५२ पटना का रेखांश धन।



मास	जन.	फर	मार्च	अप्रै	मई	जून	जुलै	अग	सित	अक्टू	नव	दिस.
दिनांक	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
१	-३	-१४	-१२	-४	+३	+२	-६	+०	+१०	+६	+१०	+११
२	-४	-१४	-१२	-४	+३	+२	-४	-६	+०	+१०	+६	+११
३	-४	-१४	-१२	-४	+३	+२	-४	-६	+०	+११	+६	+११
४	-५	-१४	-१२	-३	+३	+२	-४	-६	+१	+११	+६	+१०
५	-५	-१४	-१२	-३	+३	+२	-४	-६	+१	+११	+६	+१०
६	-५	-१४	-१२	-३	+३	+२	-४	-६	+१	+१२	+६	+१०
७	-६	-१४	-११	-२	+३	+१	-५	-६	+२	+१२	+६	+१०
८	-६	-१४	-११	-२	+४	+१	-५	-६	+२	+१२	+६	+१०
९	-७	-१४	-११	-२	+४	+१	-५	-६	+२	+१२	+६	+१०
१०	-७	-१४	-११	-२	+४	+१	-५	-६	+३	+१३	+६	+१०
११	-८	-१४	-१०	-१	+४	+१	-५	-६	+३	+१३	+६	+१०
१२	-८	-१४	-१०	-१	+४	+१	-५	-६	+४	+१३	+६	+१०
१३	-८	-१४	-१०	-१	+४	+०	-६	-५	+४	+१३	+६	+१०
१४	-९	-१४	-१०	-१	+४	+०	-६	-५	+४	+१४	+६	+१०
१५	-९	-१४	-०९	+०	+४	+०	-६	-५	+४	+१४	+६	+१०
१६	-१०	-१४	-९	+०	+४	+०	-६	-४	+५	+१४	+६	+१०
१७	-१०	-१४	-९	+०	+४	-१	-६	-४	+५	+१४	+६	+१०
१८	-१०	-१४	-८	+०	+४	-१	-६	-४	+५	+१५	+६	+१०
१९	-१०	-१४	-८	+१	+४	-१	-६	-४	+५	+१५	+६	+१०
२०	-११	-१४	-८	+१	+४	-१	-६	-४	+५	+१५	+६	+१०
२१	-११	-१४	-८	+१	+४	-१	-६	-३	+७	+१५	+६	+१०
२२	-११	-१४	-७	+१	+४	-२	-६	-३	+७	+१५	+६	+१०
२३	-१२	-१४	-७	+१	+३	-२	-६	-३	+७	+१५	+६	+१०
२४	-१२	-१३	-७	+२	+३	-२	-६	-३	+७	+१५	+६	+१०
२५	-१२	-१३	-६	+२	+३	-२	-६	-२	+७	+१६	+६	+१०
२६	-१२	-१३	-६	+२	+३	-२	-६	-२	+७	+१६	+६	+१०
२७	-१३	-१३	-६	+२	+३	-३	-६	-२	+७	+१६	+६	+१०
२८	-१३	-१३	-५	+२	+३	-३	-६	-२	+७	+१६	+६	+१०
२९	-१३	-१२	-५	+३	+३	-३	-६	-१	+७	+१६	+६	+१०
३०	-१३	०	-५	+३	+३	-३	-६	-१	+७	+१६	+६	+१०
३१	-१३	०	-५	+३	+३	०	-६	-१	+७	+१६	+६	+१०

लग्नको घटाकर, राशि में ३० से गुणा कर अंश को जोड़ दे फिर जो आये उसको ६ से भाग देने पर जो लब्धि आये वो अंश हाँगे जो शेष बचे उसे पुनः ६० से गुणा करके फिर ६ से भाग दे वो घड़ी होंगे इस तरह क्रमशः जो लब्धि आये वो घण्टियाँ होंगी।

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
२७८	३३	४२	५१	००	१०	१९	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५१	००	१०	१९	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५१	००	१०
२७९	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२८०	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२८१	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२८२	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२८३	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२८४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२८५	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२८६	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२८७	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२८८	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२८९	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२९०	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२९१	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२९२	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२९३	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२९४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२९५	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२९६	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२९७	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२९८	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
२९९	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३००	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३०१	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३०२	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३०३	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३०४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३०५	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३०६	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३०७	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३०८	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३०९	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३१०	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३११	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३१२	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३१३	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३१४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३१५	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३१६	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३१७	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५०	५६	१२
३१८	३३	४२	५०	५६	१२	२०	२८	३८	४७	५७	०६	१५																			

नक्षत्र मेलापक चक्रम् पाश्वे कन्यानक्षत्राणि उपरि वरनक्षत्राणि

[illegible]

अक्षांस-रेखांश एवं देशान्तरसरणी

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि. से
अरा	२५.३४	८१.३२	+ ०८।०८
औरंगाबाद	२१.४५	८१.२५	+ ०७।४०
कटिहार	२१.३०	८७।४०	+ २०।४०
कमौत	२६.२०	८५.५०	+ १३.२०
कहलगाँव	२५.१६	८७।१७	+ १६।०८
बनारस	२५.२०	८१.१६	+ ०७।०४
खगडिआ	२५.३१	८६.२७	+ १५।४८
गया	२१.४८	८५।०१	+ १०।०४
गोपरी	२५.२८	८६.३८	+ १६.३२
गोपालगंज	२६.२८	८१.२६	+ ०७।४४
छप्ता	२५.४७	८१.४७	+ ०६।०८
जालनापुर	२५.१६	८६.३२	+ १६।०८
जयनगर	२६.३६	८६।०८	+ १४।३२
जहानाबाद	२५.१३	८१.५८	+ ०६।५६
जोगनी	२६.२३	८७।१६	+ १६।०४
झंझारपुर	२६.१६	८६.१७	+ १५।०८
टंकेरी	२५.४०	८५.१२	+ १०।४८
डुमराँव	२५.३३	८१.१२	+ ०६।४८
दरभंगा	२६.१०	८५।५४	+ १३।३६
दानापुर	२६.१०	८५।५४	+ १०।२०
डहरी	२१.५३	८१.१४	+ १४।५६
धर्माइन	२५.१४	८५।१३	+ ०६।५२
दुमका	२१.३०	८५।२०	+ १६.२०
नवारा	२१.५३	८५.३५	+ १२।२०
नालन्दा	२५.०७	८५.२५	+ ११।४०
नौछिआ	२५.२४	८७।०६	+ १८.२४
पुपुरी	२६.२८	८५।४२	+ १२।४८
पटना	२५.३७	८५.१३	+ १०।५२
पासनाथ	२१.००	८६.११	+ १४।४४
पूर्णिया	२५.४८	८७।३१	+ २०।०४
फार्वसगंज	२६.१८	८७।१६	+ १६।०४
बगहा	२७।०८	८१.०४	+ ०६.१६
बक्सर	२५.३४	८१.०१	+ ०६।०४
बयौनी	२५.२८	८५.५८	+ १३।५६
बहेडी	२५.५७	८६।०३	+ १४।१२
बॉकीपुर	२५.३६	८५।०७	+ १०।२८
बाढ़	२५.२	८५.४३	+ १२।५२

देशान्तर्ग

[illegible]

देशान्तर

६	१२।०४
३	१६।५२
०	१६।००
४	२१।३६
९	०७।०८
९	०८।४४
९	११।५२
८	०७।०४
६	०८।३२
३	०८।१२
९	१६।२४
४	१७।३६
३	११।३२
३	२१।३२
४	१२।१६
८	१३।५२
५	११।००
०	२०।४०
९	१६।०४
५	११।४०
१	-५।१२
०	-१८।००
०	२।४०
२	-१३।५२
-	-०२।४०
९	-०७।१६
०	+२।००
६	-२०।१६
६	+०४।२४
३	+०३।३२
८	-०६।४८
९	+०१।४४
४	-१२।४४
८	+०५।१२
-	-०१।५२

[illegible]

84

[illegible]

सूर्यदशावर्षाणि ६	चन्द्रदशावर्षाणि १०	भौमदशावर्षाणि ७	राहुदशावर्षाणि १८	गुरुदशावर्षाणि १६	शनिदशावर्षाणि १८	बुधदशावर्षाणि १७	केतुदशावर्षाणि ७	शुक्रदशावर्षाणि २०
क्र. उफा. उषा.	रो. ह. श्रवणा	मृ. वि. ध.	आर्द्रा. स्वा. श.	पुन. वि. पूषा.	पुष्य. अनु. उषा.	आश्ले. ज्ये. रेव.	मघा. मू. अश्वि.	पूफा. पूषा. भर.
अनर्दशा १८	अनर्दशा ३०	अनर्दशा २१	अनर्दशा ५४	अनर्दशा ४८	अनर्दशा ५७	अनर्दशा ५१	अनर्दशा २१	अनर्दशा ६०
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
सू. ३ १८	चं. १००	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	वृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	वृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ८	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	सू. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	वृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ८	शु. २ १० ०	सू. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	वृ. १ ४ ०	श. १ १ ८	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	सू. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
वृ. ० ८ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	सू. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	सू. ० ८ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	वृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	सू. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ८	रा. २ ६ १८	वृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	सू. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ६	रा. २ १० ६	वृ. २ ३ ६	श. १ १ ८	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	सू. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	वृ. २ ६ १२	श. २ ८ ८	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

कृत्तिका नक्षत्र से जन्मनक्षत्र तक गिनकर ८ का भाग देने से एकादि शेष में क्रम से सूर्य, चन्द्र, भौम, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्र की दशा होती है।

उदाहरण- जन्म नक्षत्र मघा है। यहाँ कृत्तिका से मघा तक गणना की तो ८ संख्या हुई, इसमें ८ का भाग दिया तो लब्धी कुछ नहीं मिला, शेष ८ ही रहे। सूर्य, चन्द्र, भौमादि क्रम से आठ तक गिना तो आठवाँ संख्या केतु की हुई। अतः जन्मदशा केतु की कहलायेगी।

कृतिका नक्षत्र से जन्मनक्षत्र तक गिनकर ६ का भाग देने से एकाद्विंश शेष में क्रम से सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्र की दशा होती है।

उदाहरण- जन्म नक्षत्र मया है। यहाँ कृतिका से मया तक गणना की तो ८ संख्या हुई, इसमें ८ का भाग दिया तो लब्धी कुछ नहीं मिला, शेष ८ ही रहे। सूर्य, चन्द्र, भौमादि क्रम से आठ तक गिना तो आठवाँ संख्या केतु की हुई।
अतः जन्मदशा केतु की कहलायेगी।

होराचक्रम्	क.	सिं.
रा.	चं.	सू.
स	सू.	च

मंगला १	पिंगला २	धान्या ३	आमरी ४	शक्रिका ५	उल्का ६	सिद्धा ७	संकटा ८	राशि	मे. सि.	वृष	मि. तु.	क. वृ.	राशि	मे	वृ	मि	क	सिं.	क.	तु	वृ	ध.	म	कु	मी
श्र.आ.वि.	ध.पुन. स्वा.	श.पु.वि.	अ.आरुलै.	अ.आरुलै.	अ.आरुलै.	अ.आरुलै.	अ.आरुलै.	ध.	कं. म.	कं. म.	कं. म.	मी.	१५अं	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.
			अनु. पूषा	अनु. पूषा	अनु. पूषा	अनु. पूषा	अनु. पूषा	३/२०	म.	श.	शु.	चं.	३०अं	चं	सू.	च	सू.	च	सू.	च	सू.	च	सू.	च	
मा.१२ चं.	मा.२४ सू.	मा.३६वृ	मा.४८मं	मा.६०बु.	मा.७२श.	मा.८४शु.	मा.९६के.	६/४०	शु.	श.	मं.	सू.													
मं.०११०	पिं.१११०	धा.३१०	धा.५११०	धा.८११०	धा.९२१०	सि.१३११०	सं.१४११०	१०/००	बु.	वृ.	वृ.	बु.													
पि.०१२०	धा.२१००	धा.३१०	धा.६१२०	धा.९१००	सि.१४१०	सं.१५१२०	मं.२१२०	१३/२०	च	मं.	श.	शु.													
धा.११०	धा.२१२०	धा.५१०	धा.८१०	सि.१११२०	सं.१३१०	मं.२११०	पि.५११०	१६/४०	सू.	शु.	श.	मं.													
धा.१११०	धा.३११०	धा.६१०	सि.१११०	सं.१३११०	मं.२११०	पि.३१२०	धा.८१००	२०/००	बु.	बु.	वृ.	वृ.													
धा.११२०	धा.४१०	सि.११०	सं.११२०	मं.११२०	पि.३१२०	धा.६१०	धा.९१०१२०	२३/२०	शु.	चं.	मं.	श.													
धा.२१०	सि.३१२०	सं.८१०	मं.१११०	पि.३१२०	धा.६१०	धा.९११०	धा.९११०	२६/४०	मं.	सू.	शु.	श.													
धा.२११०	सं.५११०	मं.११०	पि.२१२०	धा.५१०	धा.८१०	धा.९१२०	धा.९१२०	३०/००	वृ.	बु.	वृ.	वृ.													

होरालगनानयनम्-द्विज्यलनादयः पञ्चपादा यच्छेषञ्च पलीकृतम्। दशादशंशास्ते योज्या रवौ होरोदयो भवेत्।

दैक्यणयनम्

राशि	मे	वृ	मि	क	सिं.	क.	तु	वृ	ध.	म	कु	मी
१०अं	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं	वृ	श	रा	वृ
२०अं	सू	बु	शु	मं	वृ	श	रा	वृ	मं	शु	बु	च
३०अं	वृ	श	रा	वृ	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं

त्रिंशत्तित्थम्

जन्मर्क्षं त्रियुतं भक्तमष्टभिः शेषत
क्रमात्। मङ्गलाद्याः सङ्कटान्त
वर्षवृद्ध्या दशाः स्मृताः। तत
विंशेत्तरीदशाद् भुक्तभोग्यवर्षानयन
कार्यम्।

तावायुः	मध्यमायुः	अल्पायुः
चारमे लगनेशः	चारमे लगनेशः	चारमे लगनेशः
चारमे लगनेशः	विश्वरभे लगनेशः	द्विस्वभे लगनेशः
विश्वरभे लगनेशः	विश्वरभे लगनेशः	द्विस्वभे लगनेशः
द्विस्वभे लगनेशः	द्विस्वभे लगनेशः	द्विस्वभे लगनेशः
द्विस्वभे लगनेशः	द्विस्वभे लगनेशः	द्विस्वभे लगनेशः

प्रत्यकास्मन् राशो १२ द्वादशाशान्तरा प्रतिद्वादशाशमान २।३०
अंशात्मकं भवति। द्वादशांशेः स्वराशित एव भवन्ति।

गरुडादिवर्गचक्रम्								
वर्गेशः	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष
शरसंख्या	८	५	६	४	७	१	३	२
वर्गनाम	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्गदिक्	पू.	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई
वर्गशत्रुः	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
वर्गसमः	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार
वर्गमित्रम्	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह

गरुडादिवर्गवर्णन शुभाशुभज्ञानप्रकारः

नाम-ग्राम-दिशाऽऽद्यक्षरवर्णने	शरसंख्यानं
संयोज्याष्टभिर्भक्तत्वा	एकादिशेषे क्रमशः

सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-शनि-वृहस्पति-राहु-
शुक्राणां दशा ज्ञातव्याः। तत्र शुभग्रहाणां दशाः शुभदाः,
पापग्रहाणाञ्च हानिकरा भवन्ति। स्वनामाद्यक्षरवर्णने यो
वर्गेशस्तस्माद्दिवर्गेशस्य शत्रुवर्गे पतनात्तद्विशि यद्गृहं
तन्न शुभप्रदम्। अतएव स्ववर्ग-मित्रवर्गादिगृहवासः
शुभः, समवर्गादिगृहवासो मध्यमः, शत्रुदिगृहवासश्च
हानिकर इति।

मेषसंक्रमे वारिपूर्णघटदानं-कुशादिकं हीत्वा ओं सोपकर
वाविर्पूर्णादाय नमः३ कुशोपरि-ओं ब्राह्मणाय नमः३ ।
घटं सिकत्वा-ओमहामुके मासि अमुके-पक्षेऽमुकतिथौ
मेषाकसंक्रमणप्रयुक्तपुण्याहे (पुण्यकाले) अमुकानोरत्र्य मम
श्रीअमुकशर्मणः सकलमनोरथ-सिद्धिपूर्वकपितृस्वर्गकाम इमं
सोपकरणवारिपूर्णघटं वरुणदैवतं यशनामगोत्राय ब्राह्मणायार्ह
द्दे। ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय-ओमह्य कृतैतत्सोपकरण-
वारिपूर्णघटदानप्रतिष्ठाशर्मोतावद्ब्रह्ममूल्यकाहिरण्यमग्निन-दैवतं
यशनामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहन्द्दे। ततः-एष धर्मघटो
दत्तो ब्रह्मविभूशेवात्मकः। अन्य प्रसादात्सफला मम सन्तु
ननोरथाः। इति प्राथयेत्।

लग्न	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
दिवा	सू.	शु.	श.	शु.	वृ.	चं.	बु.	मं.	श	मं.	वृ.	चं.
रात्रौ	वृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	वृ.	चं.

निपताकिचक्रं ग्रहस्थापनम्- सैका गताब्दसंख्या या विभक्ता नवभिस्ततः। शेषां के जन्मनि गताच्चन्द्र-राशिरिह न्यसेत्॥ शेषग्रहाश्चतुर्भक्तशेषसंख्यासु विन्यसेत् त्रिपताके वर्षलग्नमादौ स्थाप्यौ विधूदयौ। शुभैर्विद्धौ शुभफलौ पापैः पापफलप्रदौ॥

वर्षमुन्धानयन- (गतवर्षसंख्या+जन्मलग्नसंख्या)÷१२। एकादिशेषे मेषादिमुन्धाराशिः। **वर्षेशनिर्णयः-** वर्षलग्नेष-
जन्मलग्नेष-मंथेश- त्रिराशिपति- दिवारविराशीश- रात्रौचन्द्रराशीषेष
लग्नद्रष्टा सर्वाधिकबलवत्तरो वर्षेशः-

भावाः	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
तनुः	स्थानहानिः	सौख्यम्	बन्धनम्	भयम्	अभयम्	शत्रुनाशः	नाशः	कष्टम्	रोगः
धनम्	भयम्	धनम्	धननाशः	धनाप्तिः	धनाप्तिः	धनागमः	हानिः	धनम्	धननाशः
सहजः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	भीतिः	लाभः	शोकः	लाभः	नैरुज्यम्	सूखम्
सुहृद्	मानहानिः	रोगः	भयम्	धनम्	धनहानिः	लाभः	शत्रुवृद्धिः	शत्रुवृद्धिः	भौतिः
सुतः	दैन्यम्	कार्यसिद्धिः	धनक्षयः	रोगः	पुत्रसुखम्	पुत्राप्तिः	धनपुत्रनाशः	शोकः	शौकः
रिपुः	विजयः	शत्रुभयम्	विजयः	अलाभः	शोकः	शत्रुभयम्	द्रव्यलाभः	धनम्	धनाप्तिः
जाया	भ्रमणम्	लाभः	व्ययः	विग्रहः	मानम्	अशोकः	स्त्रीकष्टम्	हानिः	दुर्गतिः
मृत्युः	पीडा	कष्टम्	कष्टम्	लाभः	क्लेशः	विपत्तिः	शत्रुभयम्	रोगः	राजभयम्
धर्मः	धर्महानिः	मानम्	पीडा	रोगः	धर्मरतिः	लाभः	धर्महानिः	पापरतिः	बन्धनम्
कर्म	कार्यसिद्धिः	सुखम्	शोकः	सुखम्	उन्नतिः	दैन्यम्	दौर्मनस्यम्	वैरम्	शोकः
आयः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	सौख्यम्	लाभः	धनाप्तिः	आयुर्वृद्धिः	सौख्यम्	सुयशः
व्ययः	कष्टम्	व्ययः	हानिः	नाशः	चिन्ताः	हानिः	हानिः	शोकः	धनक्षयः

मस्तकः ७ मासाः—सवाराहानि। नद्रे ८ मासाः—सवारा
हानिः। मुखे ८ मासाः भोजनादिलाभः। कण्ठे ६
मासाः—भूषणादिलाभः। हृद्दये १० मासाः—यन्त्रादिलाभः। नाभौ ४ मासाः—कष्टमुदरे
उदरे ११ मासाः—अन्नानादिलाभः। नाभौ ४ मासाः—कष्टमुदरे
गुह्ये ५ मासाः—सर्वांशे हानिः। जानुनि १४ मासाः—राजबलेन
जयः। जघयोः ११ मासाः—स्त्रियादौ सौख्यम्। पादयोः ५
मासाः—व्यर्थभ्रमणम्।

गोचरफल-बोधचक्र

	भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	स्थानहानि	सौख्य	बन्धन	भय	अभय	शत्रुनाश	नाश	कष्ट	रोग	
धन	भय	धन	धननाश	धनादि	धनागम	हानि	धन	धननाश		
सहज	धन	लाभ	धनादि	भीति	लाभ	शोक	लाभ	नैरुज्य	सुख	
सुहृद्	मानहानि	रोग	भय	धन	धनहानि	लाभ	शत्रुवृद्धि	शत्रुवृद्धि	भीति	
सुत	दैत्य	कार्यसिद्धि	धनक्षय	रोग	पुत्रसुख	पुत्रादि	धनपुत्रनाश	शोक	शोक	
रिपु	विजय	शत्रुभय	विजय	अलाभ	शोक	शत्रुभय	द्रव्यलाभ	धन	धनादि	
जया	भ्रमण	लाभ	व्यय	विग्रह	मान	अशोक	स्त्रीकष्ट	हानि	दुर्गति	
मृत्यु	पीड़ा	कष्ट	कष्ट	लाभ	कत्तेश	विपत्ति	शत्रुभय	रोग	राजभय	
धर्म	धर्महानि	मान	पीड़ा	रोग	धर्मरति	लाभ	धर्महानि	पापरति	बन्धन	
कर्म	कार्यसिद्धि	सुख	शोक	उन्ति	दैत्य	दौर्मनस्य	वैर	शोक		
आय	धन	लाभ	धनादि	सौख्य	लाभ	धनादि	आयुर्वृद्धि	सौख्य	सुयश	
वय	कष्ट	व्यय	हानि	नाश	चिन्ता	हानि	शोक	धनक्षय		

जन्म कालिक ग्रहों का भावफल (स्त्रियों के लिये)

	भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	विधवा	अल्पायु	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	शत्रुनाश	नाश	कष्ट	रोग	
धन	दुःख	पुत्रवती	दुःखिता	सौभाग्यवती	धनागम	हानि	धन	धननाश		
सहज	पुत्रवती	धनाढ्या	पुत्रिणी	धनवती	पुत्रवती	शोक	लाभ	नैरुज्य	सुख	
सुहृद्	दरिद्रा	दुर्भगा	अल्पसन्ति	सुखी	सुखी	लाभ	शत्रुवृद्धि	शत्रुवृद्धि	भीति	
सुत	सन्ताननाश	कन्याधिक	पुत्रमरण	उत्तमसुख	उत्तमसुखी	पुत्रादि	धनपुत्रनाश	शोक	शोक	
रिपु	धनवती	विधवा	धनयुक्त	क्लेशप्राप्ति	धनवती	शत्रुभय	द्रव्यलाभ	धन	धनादि	
जया	रोगिणी	प्रवासिनी	स्वामीनाश	क्षय	भयबन्धन	अशोक	स्त्रीकष्ट	हानि	दुर्गति	
मृत्यु	विधवा	अतिकष्ट	धनवती	स्वजनवियोग	स्वजनवियोग	विपत्ति	शत्रुभय	रोग	राजभय	
धर्म	धर्मनिष्ठा	पुत्रवती	कर्मकारिणी	उत्तमभोग	धर्मवृद्धि	लाभ	धर्महानि	पापरति	बन्धन	
कर्म	परिश्रमी	व्यभिचारिणी	मृत्यु	धनवती	पतिधनी	दैत्य	दौर्मनस्य	वैर	शोक	
आय	पुत्रवती	लक्ष्मीवती	पुत्रवती	सुखी	आयुष्मती	धनादि	आयुर्वृद्धि	सौख्य	सुयश	
वय	अतिव्यापी	दिनांशा	वन्ध्या	सुपुत्रवती	सुशीला	हानि	शोक	धनक्षय		

राशीनां स्वामिचरादिसंज्ञाघातादिव्यक्रम्

राशि	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
पति	म	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं.	वृ	श	श	वृ
संज्ञा	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि
प्रकृ	पित	वात	सम	कफ	पित	वा	स	क	पि	वा	सम	क
आकृ	ह्रस्व	ह	सम	दीर्घ	दी	दी	स	स	ह	स	स	स
जाति	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि
घामा	का	मार्ग	आषा	पौ	ज्ये	भा.	मा	आ	श्रा	वै	चै.	फा
घाति	नन्दा	पूर्णा	भद्रा	ज्या	पूर्णा	रिक्ता	नन्दा	ज्या	रिक्ता	ज्या	पूर्णा	रिक्ता
दिन	२.	श.	चं.	बु.	श	बु.	शु.	शु.	मं	वृ	शु	
नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु	मू.	श्र	श	रे.	म.	से.	आ	श्ले
योग	वि.	सु.	प.	व्या	धृ	शु.	शुक्ल	व्य	वज्र	वै	गं	वज्र
करण	वव	श.	च	ना	वव	कौ	तै	ग	तै	श.	वाणि	वि
प्रहर	१	४	३	१	१	४	१	१	४	३	४	
पु.चं.	१	५	६	६	२	६	१०	३	७	४	८	११
स्त्रीचं.	१	८	७	६	४	३	६	२	१०	११	५	१२

ग्रहाणामुच्चादिवोधकव्यक्रम्

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बु.	बु.	शु.	शु.	रा	के
उच्च	मे १०	वृ ३	मर८	कं१५	क५	मी२७	तु२०	मि	ध	
नीच	तु १०	बृश्च३	कर८	मी१५	म५	कं२७	मे२०	ध	मि	
मूत्रि	सि	वृष	मे	कं	ध	तु.	कु	कु	सि	
जाति:	क्ष	वै	क्ष	शू	ब्रा	ब्रा	चा	चा	चा	
दिक्.	पू	वा	द	उ	ई	अ	प	नै	नै	
भाय	२२वर्ष	२४व	२८व	२२व	१६व	२५व	३६व	४२व	४८व	
प्रकृति:	पित	कफ	पित	सम	सम	वात	वात	वात	वात	
पुसंज्ञा	पु	स्त्री	पु	नपुं	पु	स्त्री	नपुं	नपुं	पु	
आकृति	ह	ह	ह	ह	दीर्घ	ह	दी	दी	दी	

कारकग्रहाः- ग्रहेषु सर्वाधिकशंखानाम्कारकस्त्वनांशक्रमेणमात्य-भातुमातिपितृ-पुत्राज्ञाकारकाः ज्ञेयाः। अशंखाम्ये कलाधिक्यं, कलाद्विसाम्ये बलाधिक्यं ग्राह्यम्।

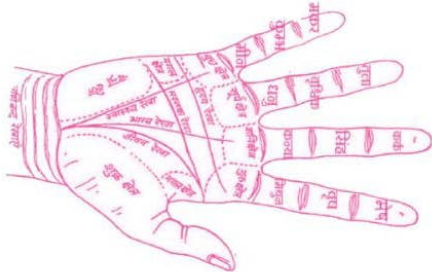
स्थिरकारकाः- तत्वादिभावानां क्रमेण सूर्य-गुरु-कुज-चन्द्रबुध-गुरु-शौम-शुक्र-शनि-सूर्यगुरु-यवबुधगुरुशनि-गुरु-शनयः स्थिरकारकाः भवन्ति।

स्वर्णादिचरणकच्यन्तानम्- जन्मकाले जन्मलग्नाच्चन्द्रे १६।।११ स्थिते स्वर्णपारे, २।५।६ स्थिते रजतपारे, ३।७।१० स्थिते ताम्रपारे, ४।८।१२ स्थिते च लौहपारे जन्म ज्ञेयम्। **आग्नीद्विद्वदशनक्षत्रेषु-** रजतपारे, जयेत्यदिसत्सु स्वर्णपारे, पूर्वभाद्रादिपञ्चसु ताम्रपारे, कृतिकादित्रिषु लौहपारे जन्म भवति।

तेषां फलम्- स्वर्णपारदत्युकृष्टं, रजतपारे शोभनं, ताम्रपारे मध्यमं, लौहपारे च हीनफलमिति।

हस्तेरेखा-(हथेली में ग्रह पर्वत (Mounts) व उनका फल)

हथेली में ग्रहों के पर्वतों का भी विशेष महत्त्व रहता है। अगर जन्म कुण्डली में कोई ग्रह बलवान होता है, तो उस जातक को हथेली में भी उस ग्रह का पर्वत उभरा और स्पष्ट होता है जिस व्यक्ति को अपनी जन्म-तिथि अथवा जन्म समय का ज्ञान नहीं होता, उस व्यक्ति की हथेली पर पर्वतों के आधार पर सही जन्म-कुण्डली का निर्माण किया जा सकता है। अंगूठे से जन्म लगन मालूम किया जाता है। प्रथम अंगुली (तर्जनी) से बृहस्पति की स्थिति, मध्यमा से शनि, व अनामिका से सूर्य की स्थिति मालूम कर कुण्डली का निर्माण किया जा सकता है। तर्जनी के नीचे के स्थान को बृहस्पति का पर्वत कहते हैं। मध्यमा अंगुली के नीचे के स्थान को शनि का पर्वत कहते हैं। अनामिका अंगुली के नीचे के भाग को सूर्य पर्वत कहते हैं और कनिष्ठिका अंगुली के नीचे के स्थान को बुध पर्वत कहते हैं। अंगूठे के नीचे हथेली पर जो जीवन रेखा से घिरा हो उसे शुक्र पर्वत कहते हैं। उसी के बाँयी ओर हथेली में ऊँचे उठे पर्वत को चन्द्र पर्वत कहते हैं। हृदय रेखा के नीचे और मस्तिष्क रेखा के ऊपर ऊँचे उठे भाग को मंगल का प्रथम क्षेत्र कहते हैं। शुक्र पर्वत के ऊपर और बृहस्पति, को मंगल का द्वितीय क्षेत्र कहते हैं। इस प्रकार सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि के एक-एक ग्रह पर्वत तथा मंगल के दो ग्रह पर्वत हथेली में होते हैं। हथेली का मध्य भाग को अपेक्षा ग्रह पर्वत ऊँचे उठे होते हैं। अंग्रेजी में इन पर्वतों को डवनरजे कहते हैं।



सूर्यपर्वत (Sun Mount) यह पर्वत अनामिका अंगुली के नीचे होता है। सूर्य पर्वत उन्नत होने पर जातक उत्साही, कला प्रेमी, शिल्पविद्या में निपुण, भावुक, धनवान्, उदार होता है। अगर सूर्य का पर्वत धंसा हुआ हो तो उस जातक में उत्साह की कमी होती है। और उसकी बुद्धि भी तेज नहीं होती। उसे सामाजिक कार्यों में प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती यदि क्रोध का चिह्न हो तो अनावश्यक बदनामी प्राप्त होती है। यदि सूर्य पर्वत हथेली में साधारण रूप से उच्च हो तो काव्य-कला सौन्दर्य इत्यादि में अभिरूचि होती है। जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य का पर्वत उच्च हो उसे यश व प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और वह धनवान होता है। सूर्य का पर्वत उठा हुआ हो तो व्यक्ति लेखक, यशस्वी, सुखी एवं बुद्धिमान होता है। सूर्य के पर्वत पर त्रिकोण का चिह्न हो तो जातक उच्च राज्याधिकारी, सरकारी क्षेत्रों में लाभान्वित, उच्च पदाधिकारी या लेखक अथवा कलाकार होता है। सूर्य-पर्वत पर बिन्दु या वृत्त का चिह्न शुभ नहीं माना जाता। जिस व्यक्ति के हाथ में यह पर्वत हो ही न उसका जीवन साधारण सा होता है। इस पर्वत से प्रतिभा, यश, सम्मान, सुख व सफलता की जानकारी प्राप्त होती है। अगर सूर्य-पर्वत बुध पर्वत के साथ मिला हो तो ऐसे जातक नम्र स्वभाव वाले, वाहनादि सुखों से युक्त, ईमानदार, व्यवहार दक्ष होते हैं। यदि स्त्री के हाथों में यह लक्षण हो तो रूपवती, पति से प्रीति रखने वाली, हंसमुख व सुशीला होती है। सूर्य पर्वत पर अगर दो खड़ी रेखाएँ हो तो वह महाधनी होता है। अगर सूर्य का पर्वत शनि की ओर झुक जाए तो व्यक्ति एकान्तिप्रिय व उदासीन होता है कभी-कभी निराशावादी बन जाता है।

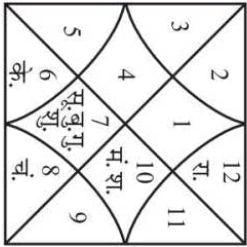
चन्द्र पर्वत (Moon Mount) रहिने हाथ में आयु रेखा से बाँयी ओर भाग्य रेखा के पास और

मणिबंध रेखा से ऊपर चन्द्र पर्वत होता है। चन्द्र क्षेत्र सौन्दर्य-प्रियता, कल्पना काव्य, कला, संगीत, कल्पना, गायन आदि के कारण सफल होता है धन, स्त्री, माता व विदेश यात्रा का सुख प्राप्त होता है। यदि चन्द्र क्षेत्र, साधारण हो तो पाचन शक्ति कमजोर होती है। चन्द्र-क्षेत्र का संपूर्ण भाग अत्यधिक उच्च हो और स्वास्थ्य के अन्य लक्षण हथेली में शुभ न हों तो सिर दर्द, पागलपन आदि के रोग होते हैं। चन्द्र-पर्वत अच्छा और उठाव हो तो मनुष्य सुखी, कला प्रेमी और शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत करने वाला होता है, अधिक उठा हुआ हो तो व्यक्ति चिन्ता-ग्रस्त होता है। चन्द्र-क्षेत्र पर त्रिकोण का चिह्न हो, तो व्यक्ति गुप्त विद्याओं को जानने वाला होता है। इस पर्वत पर वर्तुल या कोई दाग का चिह्न हो तो मानसिक रोग एवं जलभय होता है। यदि इस पर ऊर्ध्व रेखाएँ हों, तो विदेश-यात्रा के अवसर मिलते हैं। इस पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ विदेश में विघ्न व परेशानियाँ पैदा करती हैं। चन्द्र-क्षेत्र मणिबन्ध की ओर झुका हुआ हो व्यक्ति कल्पना लोक में विचरण करता है। चन्द्र-पर्वत से यदि कोई रेखा शुक्र पर्वत की ओर जावे तो वह व्यक्ति जलयात्रा करता है। चन्द्र प्रधान व्यक्ति कलाकार होते हैं। तथा कोमलता और भावुकता इनके स्वाभाविक गुण होते हैं। चन्द्र पर्वत उन्नत हो तो जातक में कल्पना, भावुकता, सौन्दर्य प्रियता तथा प्रेम विशेष रूप से होता है। ऐसे व्यक्ति अच्छे कलाकार, संगीतकार, साहित्यकार और कवि होते हैं। जिस व्यक्ति के हाथ में चन्द्र-क्षेत्र अनुपस्थित होता है, वह कठोर हृदय का होता है।

मंगल पर्वत (Mars Mount) मंगल के दो क्षेत्र होते हैं। पहला हथेली में बुध पर्वत एवं हृदय रेखा के नीचे एवं चंद्र पर्वत के ऊपर मंगल का स्थान है। दूसरा मंगल पर्वत बृहस्पति पर्वत के नीचे होता है जहाँ से जीवन-रेखा प्रारम्भ होती है। यह जीवन रेखा के अन्दर और शुक्र पर्वत की समाप्ति पर होता है। मंगल प्रधान व्यक्ति साहसी निडर, तथा शक्तिशाली होते हैं। जिनके हाथों में मंगल पर्वत बलवान होता है वे प्रभुत्वाकांक्षी, परिश्रम के कामों में दक्ष, लड़ाई-झगड़े में उत्साही होते हैं। धीरजता तथा साहस इनका प्रधान गुण होता है। नैतिक बलशाली, चंचल प्रकृति के सैनिक होते हैं। यदि मंगल पर्वत बहुत अधिक ऊँचा हो तो वह व्यक्ति दुराचारी, अकारण क्रोध करने वाला समाज-विरोधी, निर्दयी होता है। ऐसे व्यक्ति स्वभाव से लड़ाकू तथा अपनी बात को जबरदस्ती मनवाने के आदी होते हैं। यदि मंगल का पर्वत नीचा हो तो व्यक्ति में सहन-शक्ति की कमी होती है, नास्तिक, डरपोक तथा शान्त विचार का होता है। यदि मंगल पर्वत का झुकाव शुक्र क्षेत्र की ओर होता है तो यह निश्चित समझना चाहिए कि उस व्यक्ति में सद्गुणों की अपेक्षा दुर्गुण विशेष होंगे। ऐसे व्यक्ति झूठी शान-शौकत, व्यर्थ का आडम्बर तथा प्रदर्शन प्रिय होते हैं। यदि मंगल पर्वत या राहु के पर्वत पर त्रिकोण का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति (कुशल, दुर्द-निश्चयी, उत्तम सेनापति अर्थात् प्रबन्धन क्षमता से युक्त होता है। मंगल पर्वत यदि बुध की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति अच्छी राय देने वाला, सलहकार होता है। यदि मंगल पर्वत पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ हों और उनसे जाल-सा बन गया हो तो निश्चय ही उसकी मृत्यु दुर्घटना के फलस्वरूप होती है। मंगल का पर्वत यदि अशुभ, निर्बल हो तो ऐसे व्यक्ति को तीव्र ज्वर, पित्त विकार, शस्त्र, शत्रु, चोर व राजा से भय प्राप्त होता है। रक्त-विकार से पीड़ा होती है। यदि मंगल पर्वत भली प्रकार से विकसित हो तथा साथ ही हथेली का रंग भी लालिमा लिए हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही ऊँचा पर प्राप्त करता है। संघर्षों एवं बाधाओं के बावजूद वह अपने लक्ष्य तक पहुँच जाने में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

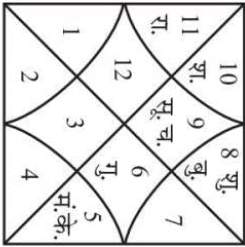
वरजुतः मंगल पर्वत से ही व्यक्ति साहसी, निर्भीक और स्पष्टवक्ता बनता है।

वल्लभ भाई पटेल
31 अक्टू., 1875 ई.
6-00 सायं, लगभग
गुजरात

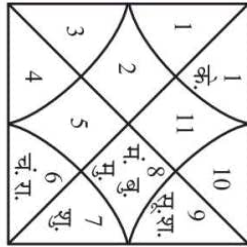


स्व. धीरू भाई अंबानी

28-12-1932
प्रातः 6-31 बजे
जन्मस्थान-गुजरात



अनिल कपूर
24-12-1959
12-00 दोपहर
मुम्बई



तत्पर, व्यवहार-कुशल और त्याग करने की भावना रखते हैं। उनकी लयबद्ध और यथार्थवादी सोच होती है। लोगों में अपने नाम के प्रचार से उनके अहं और मन को संतुष्टि मिलती है।

(1) **उदाहरणार्थ-** (१) लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की कुण्डली में कालसर्प योग के बावजूद वे दूरदर्शिता और दृढ़ व स्थिर मानसिकता के व्यक्तित्व से लब्ध एक महान् पुरुष थे। उनके जैसा गुहमंत्र आज तक नहीं हुआ। उनकी कुण्डली में सतम भाव में बुध आदित्य योग एवं दशम भाव में रूचक और शरा योग हैं। लनेश बली है। जिनकी कालसर्प के द्वारा कोई हानि नहीं हुई।

अनेक उच्चस्तरीय एवं सुप्रसिद्ध व्यक्तियों की कुण्डली में कालसर्प योग देखने में आया है। उदाहरणार्थ- सचिन तेंदुलकर, धीरू भाई अम्बानी, सुश्री लता-मंगेशकर, हटलर, मोरारजी देसाई इत्यादि।

(2) **उदाहरण कुण्डली-** (२) संलग्न कुण्डली प्रसिद्ध उद्योगपति स्व0 धीरू भाई अम्बानी की है, जिनके जन्मांग में समस्त ग्रह तृतीय के राहु तथा नवम के केतु के बीच हैं। कालसर्प योग का मुख तृतीय भाव में शनि की राशि तथा राहु के नक्षत्र में है। तृतीयेय शनि द्वितीय भाव में स्वगृही है। इस प्रकार कालसर्प का मुख राहु बली तथा शुभ स्थिति में है एवं उसका सम्बन्ध धनभाव से है, जो कि आर्थिक जगत में शीर्ष सफलतादायक है, इस प्रकार कालसर्प का मुख राहु धन उगलता रहा। तृतीय भाव में इसकी स्थिति स्वपराक्रम को बढ़ाने वाली तथा जुझारू प्रवृत्ति की द्योतक है।

इस कालसर्पयोग का शुभ फल लगन की बलवत्ता ने बहुत बढ़ा दिया। लग्नेश गुरू भाग्येश सूर्य के नक्षत्र में स्थित होकर दशम भावस्थ होना, लगन में भाग्येश सूर्य और उसका मित्र चन्द्रमा स्थित है। लग्नेश और भाग्येश का नक्षत्र सम्बन्ध तथा भाग्येश की लगन में स्थिति लगन को बली और इन्हें प्रबल भाग्यवान बनाया। इस प्रकार श्री अम्बानी की कुण्डली में उच्च सफलतादायक ग्रह योग विद्यमान थे, जिन्हें कालसर्प योग ने और भी ऊँचाईयों तक पहुँचाया।

(3). **उदाहरणार्थ-** (३) संलग्न जन्मांग प्रसिद्ध अभिनेता अनिल कपूर की है, जिन्होंने फिल्मी जगत में अच्छी पहचान बनाई। इनका जन्म कुम्भ लगन के मिथुन नवांश में हुआ था। कर्कोटक नामक, अष्टमस्थ राहु तथा द्वितीयस्थ केतु के मध्य सभी ग्रह बैठे हैं। लग्नेश शनि एकादश भाव में तथा द्वितीयेय (वाणी का कारक) गुरू बुध के साथ है। कला का कारक शुक्र भाग्य भाव में स्वगृही है, जिसने कपूर जी को वास्तव में कलाकार बनाया। स्पष्ट है, अष्टम भाव में कन्या राशिस्थ राहु (नवांश में भाग्य स्थान) कोई अशुभ/अरिष्ट प्रभाव प्रदान नहीं कर रहा। यद्यपि अष्टमस्थ राहु उत्तम फल नहीं देता परन्तु शुभ-अशुभ परिणाम राशि, बल तथा अन्य ग्रहों को दृष्टि के अनुसार प्रदान करता है। अतः कर्कोटक नामक कालसर्प योग से भय में न आएँ, यदि

अष्टमस्थ राहु शुभ होगा तो निश्चय ही लाभकारी परिणाम देगा। वास्तव में राहु वायुकारक, छाया व अशुभ ग्रह होते हुए भी प्राणी को दुःखों की अनिन में तपाकर उसे कुन्दन की भान्ति निखारने एवं परिष्कृत करने का कार्य करता है। दुःखों से व्याकुल होकर भी मनुष्य प्रभु की शक्तियों का स्मरण करने लगता है।

9. **श्रांखनाद कालसर्प योग-** नवम व तृतीये भाव में निर्मित कालसर्प योग में भाग्योन्नति में विध्न-बाधाएँ पैदा होंगी। लाटरी, सट्टे में धन का अपव्यय तथा किसी नजदीकी बन्धु द्वारा विश्वासघात हो। मनमाना अचाराण करने से प्रवृत्त।

शुभ प्रभाव- जातक स्वाभिमानी, जादू, यंत्र-मंत्र, तन्त्र, ज्योतिष, लाटरी-शेयर आदि विषयों में रूचि रखने वाला, जातक ऐसी योजनाओं के संचालक होते हैं। जिनमें धन की वृद्धि अचानक होती है।

10. **पातक कालसर्प योग-** दशम एवं चतुर्थ भावों में निर्मित इस योग से जातक अत्यन्त संघर्ष के पश्चात् जीवन में उन्नति करता है। आयु के उत्तरार्ध भाग में ही सफलता मिलती है। पिता के सुख में कमी करता है। झूठे आरोप झेलने पड़ते हैं।

शुभ प्रभाव- जातक उच्च प्रतिष्ठित संस्थान में महत्वपूर्ण पद प्राप्त करता है तथा अपनी योग्यता के बल पर भूमि, आवास, स्त्री आदि सुखों को प्राप्त करता है।

11. **विषाक्त कालसर्प योग-** एकादश व पंचम भाव से सम्बन्धित कालसर्प योग के कारण जातक पिता या संतान पक्ष के कारण चिन्तित, गुप्त आर्थिक, पेशेगानियाँ, प्रथम कन्या संतान की संभावना, पारिवारिक सुख एवं सहयोग में कमी, अत्यधिक परिश्रम करने पर भी धन लाभ के सम्बन्ध में असन्तोष बना रहता है।

शुभ प्रभाव-लाटरी, सट्टा, शेयर द्वारा आकस्मिक धन लाभ, अनेक यात्राओं द्वारा धन लाभ एवं ऐश्वर्य प्राप्त करता है। अरिष्टनाशक एवं सौभाग्य में वृद्धिकारक होता है।

12. **शेषनाग कालसर्प योग-** द्वादश भाव में राहु होने पर यह योग बनता है। जातक को शिर, नेत्रादि के कारण कष्ट, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला धन का वृथा खर्च अधिक होता है। कुसंगति के कारण व्यसन आदि का भी शिकार हो सकता है।

शुभ प्रभाव- यदि व्ययेय शुभ भावस्थ हो तो जातक अपने जन्म स्थान से दूर जाकर भाग्योदय प्राप्त करता है। आध्यात्म, धार्मिक, लेखन, ज्योतिष के क्षेत्र में विशेष रूचि रखेगा।

कालसर्प का मुख राहु होता है। यदि राहु बली हो तथा उस पर शुभ और योगकारक ग्रहों का प्रभाव हो, तो कालसर्प योग जातक को अतीव उन्नति देता है। किसी भी जन्मकुण्डली में उच्चस्तरीय सफलता के लिए केवल किसी एक योग पर निर्भर रहना शास्त्रसम्मत नहीं है। उच्चस्तरीय सफलता के लिए लगन का बली और शुभ प्रभाव में होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि लगन बली हो, तो जातक की कुण्डली में विद्यमान सामान्य शुभ ग्रहयोग भी जातक को अच्छी प्रगति देते हैं। इसके विपरीत लगन के निर्बल होने पर जातक की कुण्डली में विद्यमान ग्रहयोग उच्चस्तरीय सफलता नहीं दे पाते। कालसर्प योग के शुभफलदायक होने की स्थिति में लगन की बलवत्ता को ध्यान में रखना भी आवश्यक है। कालसर्प योग जिन स्थितियों में विशेष शुभ फलदायक सिद्ध होता है, उसके लिए योग की स्थिति एवं कुण्डली में विद्यमान योग कारक ग्रहों के परस्पर सम्बन्ध को अवश्य देखना चाहिए।

जिन लोगों की कुण्डलितियों में यह योग मेघ, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या और मीन राशिस्थ राहु से बनता है, उनके मन-मस्तिष्क और हृदय में गुह्य ज्ञान, अंतर्दृष्टि और प्रेरणाओं का अनूठा संगम होता है। जो उनके जीवन में उत्कर्ष के व्यापक अवसर प्रदान करते हैं। ऐसे मनुष्यों का व्यक्तित्व बहिर्मुखी होता है। वे समाज कल्याण हेतु

माता-पिता एवं परिवार के निर्मित पेशेगानियाँ होती हैं। आय में अनिश्चितता रहती है। जातक को पथरी एवं किडनी आदि उदर विकार होते हैं। जातक घरेलू परिस्थितियों के प्रति असन्तुष्ट रहता है। शुभ फल- इसके विपरीत उच्च राशिस्थ राहु होने एवं चतुर्थेश के बलिष्ठ होने पर यह योग पूर्ण शुभ तो नहीं, अपितु अल्प शुभफलही बन जाता है। जन्म स्थान छोड़ने पर जातक सुखी रहता है तथा माता को कष्ट के बावजूद सुख प्राप्त होता है। १, २, ३, ४ एवं कन्या राशि में शुभ फल प्राप्त होते हैं।

5. **पद्म कालसर्प योग-** पंचम व एकादश भावों के मध्य कालसर्प योग का प्रभाव शिक्षा, संतान, श्रम का मूल्यांकन, मान-सम्मान, पेट विशेषकर लीवर एवं आँत पर पड़ता है। पंचमेश नीच, वक्री, असत या अन्य निर्बल भावों में स्थित हो तथा राहु नीच राशि धनु या शत्रु राशि में हो तथा किसी शुभ ग्रह की दृष्टि भी न हो तो जीवन के पूर्वार्द्ध भाग में अत्यन्त कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। कोई भी विशेष कार्य पूर्ण होने से पूर्व विध्न या रुकावट पैदा हों। आर्थिक स्थिति अनिश्चित रहती है। सन्तान उत्पत्ति में विलम्ब अथवा कन्या सन्तान अधिक हों। उच्च-विद्या में विध्न-बाधाएँ अथवा अथरी शिक्षा रहती है।

शुभ फल- पंचमेश उच्च राशि एवं बलिष्ठ स्थिति में होने एवं उच्च राशि या शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट होने पर यह योग अनेक गुप्त विद्याओं का ज्ञान कराता है। संतान-उत्पत्ति के बाद क्रमिक उन्नति हो। मंगल-राहु योग हो तो जातक कूटनीति का प्रयोग करता है। भृगुसूत्र के अनुसार पंचम में यदि राहु हो तो मनुष्य को पुत्र सुख नहीं मिलता, सर्प के शाप से पुत्र का नाश होता है। नागदेव की पूजा करने से पुत्र प्राप्ति होती है।

6. **महपद्म कालसर्प योग-** षष्ठ स्थान में राहु होने पर योग बनता है। इसका प्रभाव रोग, शत्रु, मामा और मौसी पर पड़ता है। षष्ठेश निर्बल एवं पापग्रस्त या राहु नीचस्थ होने से जातक गुप्त रोग एवं गुप्त षड्यंत्र का शिकार होता है अथवा मामा/मौसी की अकाल मृत्यु होती है। वृथा खर्च, मानसिक तनाव व गुप्त शत्रु-भय, मातुल (मामाके) पक्ष को अनिष्टकर, दाँतों व नेत्रों सम्बन्धी रोग भया। प्रगति कठिनाता से हो पाती है।

शुभ फल- षष्ठेश उच्च राशिस्थ, बलिष्ठ तथा राहु उच्च राशिस्थ होने से शत्रु स्वयं ही (निजी कारणों से) दूर हट जाते हैं। विदेश गमन भी होता है। जातक तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने बुद्धि-चातुर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर शत्रुओं को परास्त करने वाला होता है। 7. **तक्षक कालसर्प योग-** राहु के सप्तम भाव में होने पर यह योग बनता है। इसका प्रभाव वैवाहिक जीवन, मित्र, सांझेदारी, दादा पर पड़ता है। सप्तमेश ६, ८, १२ वें अथवा अशुभ भावस्थ या राहु नीच राशिस्थ होने से वैवाहिक विलम्ब, विवाह होने पर वैवाहिक सुख में कमी, व्यवसाय में साझेदारी के कार्यों में विघ्न-बाधाएँ एवं शोछा, अत्यधिक परिश्रम द्वारा ही धन, आय के साधन हों। स्त्री/पति की ओर से पेशेगानी अथवा वैवाहिक जीवन में कलह-कलेश हो।

शुभ फल- सप्तमेश शुभ हो तो जातक का एक जगह सम्बन्ध छूटने के बाद वैवाहिक सुख प्राप्त होता है। स्त्री राशि का राहु शुभ फल करता है। विवाह जल्दी होता है। 8. **कर्कोटक कालसर्प योग-** राहु के अष्टमस्थ होने से यह योग बनता है। अशुभ होने पर क्लिष्ट रोग का भय, मानसिक तनाव, आर्थिक तंगी व घरेलू उलझनें अधिक हों।

शुभ फल- अष्टमेश शुभ भावस्थ हो, या राहु उच्च राशिस्थ, शुभ दृष्ट हो तो जातक दीर्घजीवी होता है तथा जीवन के उत्तरार्द्ध में भूमि, मकान, वाहन एवं सुयोग्य सन्तान आदि सुखों की प्राप्ति होती है।

जातक की कुण्डली में प्रथम छः भावों में बनता हो, तो उसे जीवन के पूर्वार्द्ध भाग में विशेष संघर्षपूर्वक परिस्थितियों का सामना रहता है। (इस स्थिति में राहु सप्तम में तथा केतु लगन भावस्थ होगा) इसी भाँति यदि राहु और केतु के मध्य सभी सातों ग्रह सप्तम भाव से द्वादश भावों के बीच पड़ते हों, तो तत्सम्बन्धित योग के प्रभावस्वरूप मनुष्य को जीवन का उत्तरार्द्ध भाग विशेष कठिन परिस्थितियों में से गुजरना पड़ता है। ध्यान रहे, इस योग की गणना राहु से लेकर केतु तक करनी चाहिए।

कालसर्प का शुभाशुभ फल द्वादश भावों में राश्यानुसार अलग-अलग होता है।

1. **अनन्त कालसर्प योग-** प्रथम व सातवें भाव से निर्मित कालसर्प योग मनुष्य के व्यक्तित्व, शरीर, सिर, आत्मा एवं पिता की माता(दादी) पर जीवन पर्यन्त प्रभावी रहता है। 42 वर्ष की आयु तक अथवा राहु की महादशा में विशेष प्रभाव देखा जा सकता है।

अशुभ प्रभाव- शारीरिक रोग, कष्ट व मानसिक तनाव अधिक रहता है। जीवन में संघर्ष अधिक करना पड़ता है। वैवाहिक जीवन में असन्तोष बना रहता है। जातक जीवन पर्यन्त उदर विकार से पीड़ित रहता है। बचपन में अथवा बड़े होने तक पेट में कीड़े होते हैं। प्रायः इसको शौच संबंधी कष्ट बना रहता है। यह तब और भी अधिक प्रभावी होता है, जब लगन एवं राशि एक ही हो। जातक को स्वप्न में सूर्य एवं मृत्यु लोग की आत्माएँ दिखती हैं।

शुभ फल- यदि यह अनन्त कालसर्प योग वृष एवं मिथुन, सिंह राशि पर आता है तब राजयोगकारक भी होता है। जातक प्रायः विदेश गमन भी करता है। रविक्षेत्रोदये राहौ राजभोगाय सम्पदि। वैद्यनाथ। गुप्त युक्तियों द्वारा लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, बाहरी तौर पर सज्जन परन्तु भीतर से चालाक प्रवृत्ति का होगा।

2. **कुलिक कालसर्प दोष-** द्वितीय व आठवें भाव से निर्मित कालसर्प दोष में यदि राहु अशुभ हो, तो जातक को कुटुम्ब एवं धन सम्बन्धी उलझनों का सामना रहता है। अत्यन्त कठिन एवं विषम परिस्थितियों में निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। गुप्त रोग होने की संभावना रहती है। जातक प्रायः अपनी वाणी पर संयम नहीं रख पाता। कभी-कभी मुख सम्बन्धी रोग, गले या श्वास सम्बन्धी पेशेगानी उत्पन्न हों।

शुभ फल- अचानक धन की प्राप्ति होती है। गड़्हा धन, लाँटरी, सट्टा आदि से भी धन का आगम हो सकता है। परिवार ख्याति प्राप्त एवं संयुक्त होता है। जातक धन की अपेक्षा कीर्ति को अधिक मूल्यवान समझता है।

3. **वासुकि कालसर्प योग-** तृतीय एवं नवम भाव में निर्मित इस योग से अपने निकटस्थ भाई-बन्धुओं के कारण ही विविध पेशेगानियों का सामना करना पड़ता है। विदेशों में अथवा भ्रमणशील (घूमने-फिरने) के कार्यों द्वारा धनार्जन होता है।

शुभ प्रभाव- तृतीयेय उच्च स्थानस्थ होकर भाग्येश, पंचमेश या राज्येश से युति होने पर एवं राहु के तृतीय भाव में वृष या मिथुन या कन्या राशिस्थ होने पर अखण्ड साम्राज्य प्रदान करता है। राजनीति में विशेष सफलता देता है। भाई-बहन होते हैं तथा उनसे सहयोग भी प्राप्त होता है। यदि गुरु की दृष्टि भी हो तो पराक्रम में वृद्धि तथा भाई-बन्धुओं का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। जातक का सम्पर्क एवं सम्बन्ध उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ भी रहता है, जिनसे जातक लाभान्वित भी होता है। शुभफल का अनुभव स्त्री राशियों में प्राप्त होता है। अशुभ फल का अनुभव पुरुष राशियों में प्राप्त होगा।

4. **शंखपाल कालसर्प योग-** चतुर्थ व दशम भावों द्वारा निर्मित कालसर्प योग का प्रभाव जातक की माता, स्थायी सम्पत्ति, पैतृक सम्पत्ति, वाहन-सुख एवं शरीर में पेट पर पड़ता है। चतुर्थेश निर्बल होने एवं राहु नीच राशिस्थ होने से जातक को आराम कम व संघर्ष अधिक रहता है।

दशगात्र (दशदिन) पिण्दान विधि:- रात्रौ दाहस्वेतर्हि न रात्रौ पिण्दानं भवति अग्रिम दिवसे एव पिण्डद्वयं देयम्। क्रम:- १. ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः शिरः पूरक प्रथमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। २. ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः कर्णाक्षिनासापूरक द्वितीय पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ३. ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः गलांसंभुजवक्षः पूरक तृतीयपिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ४. ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः नाभिगिण्गुदपूरक चतुर्थः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ५. ओं अद्य अमुक-गोत्र-पितरअमुकप्रेत एषः जानुजंघापादपूरक पञ्चमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ६. ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः सर्वमर्मपूरक षष्ठः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ७. ओं अद्य अमुक-गोत्र-पितरअमुकप्रेत एषः सर्वनाडीपूरकः सप्तमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ८. ओं अद्य अमुक-गोत्र-पितरअमुकप्रेत एषः नखदन्तलोमादिपूरक अष्टमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ९. ओं अद्य अमुक-गोत्र-पितरअमुकप्रेत एषः वीर्यपूरकः नवमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। १०. ओं अद्य अमुक-गोत्र-पितरअमुकप्रेत एषः पूणत्त्वतृपताक्षुद्धि पर्यपूरकपूरकः दशमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।		गण्डकीं तमसां तथा धनवज्ज्व वराहज्ज्व तीर्थं पिण्डारकम् तथा पृथिव्यां यानि तीर्थानि चत्वारः सागरास्तथा। मनसं जल में तिर्थक ध्यान करैत ओहि जल सँ शवके स्नान करा नूतन वस्त्रद्वय, यज्ञोपवीत, पुष्प, चन्दनादिसँ अलंकृत कय चितापर कुश ओछा पुरष के अधोमुख (नीचाँमुँह) स्त्री केँ उपर मुँह (चित्त) उत्तर शिरक सुताबी तकरा बाद अपसव्य कय दक्षिण मुँह भय वाम हाथ में सात बंधन सँ बाहल उल्का ग्रहण करी-ॐ देवाश्चानिमुखाः सर्वे कृतस्नपनं गतायुष्मेनं दहन्तु। मनमे ध्यान करैत-ॐ कृत्वा सुदुकरं कर्म जानता वाय्वजानता। मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम्। धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम्। दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकाञ्च गच्छतु। इ द्रुतु मन्त्र पढि तीन वेर शव केँ प्रदक्षिणा करैत जैरैत उल्का सँ मुँह मुखानि दी, तकरा बाद खढ़ आ काठादि सँ चिता जराबी आओर अन्त में एक कबूतरक बराबरी अवशेष बचावी, तकरा बाद एक प्रादेशक बराबरी सात टा काठी लय जैरैत चिता में पाहाँ मुँह, ‘ॐ क्रव्यादय नमस्तुभ्यं’ इ मंत्र पढि सातों काठी चितापर फेकि दी। तकरा बाद-‘ॐ अहरहर्न्यामानो गामशवं पुरुषं पशुम्। वैश्ववतो न तृप्यति सुरारिख दुर्मतिः।’ इ मन्त्र पढी यमगाथा गवैत(यमक गुणगान) बच्चा सब के आगा बृद्ध लोकनि ओकर पाछाँ-पाछाँ पैर सँ पैर नहि सटय (ऐंसी-गोरी) एहि प्रकारें जालश्यादि जायक स्नान करथि-ॐ अद्य अमुक गोत्र अमुकप्रेत एष तिलतोयाञ्जलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। एहिं मन्त्र केँ पढि तिलांजलि देवाक चाही। स्त्री लोकनि लेल-ॐ अद्य अमुकगोत्रे अमुकप्रेत ई पढवा क चाही। भीजले वस्त्र धारण कयनें कर्त्ता सहित सभ गोटे कर्त्ताक दुआरि पर जाय ॐ लौहवद् दृढकायोस्त ई मन्त्र सँ लौह स्पर्श करी तकरा बाद ॐ अश्मेव स्थिरो भूयासम् ई मन्त्र सँ पाशर स्पर्श तकर बाद ॐ अग्निर्नः शर्म यच्छतु अग्नि स्पर्श, तकर बाद जलक स्पर्श कय तीत नीमक पात (मिर्च) आदि खाय अपन व्यवहारक अनुसारें अपना घर जयवाक चाही।	
अशौचविचार भारतीय संस्कृति में शौचाशौच विचार महत्त्वपूर्ण है। जननाशौच एवं मरणशौच भेद से अशौच (अशुद्धि) दो प्रकार का होता है। लोककल्याण हेतु इसे संश्लेष में यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। १. गर्भप्रावजन्म अशौच-प्रथम से चतुर्थमास के भीतर गर्भ नाश को स्राव एवं पांचवे मास से छठे मास के भीतर गर्भनाश को गर्भपात तथा सातवें से दशवें मांस से गर्भ बाहर आये तो उसे प्रसव कहते हैं। आचतुष्टौदभवेत्स्रावः पातः पञ्चमषष्ठयोः। अत ऊर्ध्वं प्रसूतिः स्यादृणाहं सूतकं भवेत्॥ “ब्रह्मपुराण” के अनुसार सभी वर्षों में प्रथम से लेकर छठे मास के भीतर यदि गर्भनाश हो तो जितने महीने का गर्भ नष्ट होता है उतने दिनों के बाद ही माता की शुद्धि होती है। “षड्मासाभ्यन्तरे यावद्गर्भस्रावो भवेद्यदि। तदा माससमैस्तासां दिवसैः शुद्धिरिष्यते॥” सात मास से आगे गर्भपात या प्रसव में माता पिता के साथ साथ “सपिण्ड” (प्रथम से सात पीढ़ी तक) को दस दिनों का, सोदक (आठ से चौदह पीढ़ी तक) को तीन दिनों का, और सगोत्र (पन्द्रह से इक्कीस पीढ़ी तक) को एक दिन का अशौच होता है। जननाशौच में दस दिनों तक माता का स्पर्श नहीं करना चाहिये। पिता आदि स्नानोपरान्त स्पर्शयोग हो जाते हैं। कुछ आचार्यों ने जननाशौच को जाति या वर्ण के अनुसार माना है। जाते विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः। वैश्यः पञ्चदशाहेन शूद्रो मासेन शुद्धयति॥ किन्तु महर्षि प्रवेला के अनुसार सभी वर्णों की शुद्धि दस दिनों में ही होती है, जो लोक व्यवहार में अधिक प्रचलित है-“सूतिका सर्ववर्णेषु दशरात्रेण शुद्धयति। ऋतौ च न पृथक् शौचं सर्ववर्णोऽप्यत्र विधिः।” पुत्र जननाशौच में माता को बीस दिनों एवं कन्या जननाशौच में एक मास तक पाक क्रिया (भोजन बनाना), देव पूजन आदि कार्य नहीं करना चाहिये। मरा हुआ बालक पैदा हो तब भी पूर्ववत् ही अशौच समझना चाहिये। २. बालकमरण में अशौच:-बालक की मृत्यु दन्तोत्पत्ति काल तक होती है तो उसी क्षण, चौलकर्म (मुण्डन संस्कार) होने के बाद होती है तो तीन रात का अशौच होता है। यदि दौत जमने के पूर्व ही चौलकर्म हो चुका हो तो उस बालक की मृत्यु पर तीन रात्रि का अशौच होता है एवं ब्रतवन्ध होने के बाद मृत्यु होने पर दस दिनों का अशौच होता है। चौलकर्म के बाद मृत्यु होने पर शास्त्रों में अग्नि संस्कार करने का विधान है। “दन्तजातेऽनुजाते		कृतचूडे च संस्थिते। अग्नि संस्करणे तेषां त्रिरात्रमशुचिर्भवेत्॥ आदन्त जन्मतः सद्यः आचूडानैशिकी स्मृताः। त्रिरात्रमावातदेशा दश रात्रममः परम्॥” जन्म से दो वर्ष के भीतर बालक या कन्या की मृत्यु होने पर उसे जमीन में गाड़ देना चाहिये। इससे ऊपर की उम्र के सभी वर्णों के पुत्र बच्चों को दध्न करने का विधान है-ऊनं द्विवार्षिकं बालं भूमावेव निधापयेत्। न द्विवर्षस्य कर्तव्याः बान्धवैरूदक क्रिया॥ दो वर्ष तक के पुत्र बच्चों की श्राद्धादिक क्रिया बन्धु वर्गों को नहीं करनी चाहिये। तीन वर्ष से छः वर्ष तक तीन दिनों का अशौच, इसमें अग्नि-संस्कार, पिण्डोदक क्रिया एवं चौथे दिन ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। इसके बाद यज्ञोपवीत हुआ हो अथवा नहीं सभी को दस दिनों का अशौच और श्राद्ध करना चाहिये। ३. कन्यामरणजन्म अशौच:-सभी वर्णों में जन्म से लेकर चूड़ारण की अवधि पर्यन्त कन्या की मृत्यु होने पर तत्कालिक अशौच होता है। वागदान पर्यन्त मृत्यु होने पर एक दिन का अशौच, वागदान हो जाने पर दोनो पक्षों में तीन दिनों का अशौच होता है। विवाह के पश्चात् जननाशौच हो या मरणाशौच पतिकुल में ही होगा। जैसा कि कृत्यसमुच्चय में कहा है। आजन्मनस्तु चूडान्तं यत्र कन्या विपद्यते। सद्यः शौचं भवेत्तत्र सर्ववर्णेषु नित्यशः॥ ततो वादानपर्यन्त यावदेकाहमेव हि। अतः पर प्रबुद्धानां त्रिरात्रिमिति निश्चयः। वागदाने च कृते तत्र चोभयतस्त्वद्धम्। कन्या यदि पति को छोड़कर स्वतंत्रता पूर्वक अन्य को पतिरूप में स्वीकार कर लेती है तब उसके मरने पर पूर्वपति को अशौच नहीं होता। कामादक्षत योनिश्चोदन्त्यं गत्वा व्यवस्थिता॥ कन्या तस्य सगोत्रा सा यं त्वाश्रितवती स्वयम्॥ विवाहिता पुत्री का पिता या पति के घर में मृत्यु होने पर माता पिता को तीन दिनों का एवं भाई बान्धवों (पितृव्यादिको) को एक दिन का अशौच होता है। भाई के घर में बहन एवं बहन के घर में भाई की मृत्यु होने पर परस्पर तीन दिनों का अशौच होता है। ४. जमातामरणजन्म अशौच:-जामाता के घर में सास और श्वसुर के मरण में जामाता को तीन दिनों का अशौच एवं घर में न रहने पर डेढ़ दिन का अशौच जमाता को होता है तथा जमाता के मरण में सास श्वसुर को भी तीन दिनों का अशौच होता है। श्यालक (साला) एवं श्यालिका (सरहज) की मृत्यु में बहनोई को एक दिन का अशौच होता है।	
५. सगेसम्बन्धीजन्म अशौच-मौसी, बुआ, मामी, भाम्पी, ममेरा भाई, नानी, भगिनी आदि के मरण में (डेढ़ दिनों) का अशौच होता है। यदि इनकी अपने घर में मृत्यु हो तो तीन दिनों का अशौच होता है। पितामह, पितृव्य आदि के मरण में विवाहिता पुत्री को एक दिन का अशौच होता है। मातामह, मातामही, आचार्य एवं श्रोत्रियों के मरण में तीन दिनों का अशौच होता है। “अहं मातामहाचार्यश्रोत्रियेषु शुनिचरः।” शिल्पी, बढई, जुलहा, धोबी, चर्मकार, वैद्य, दासी, राजा, श्रोत्रिय (वेदपाठी) इनको अशौच नहीं होता। मरण के तत्क्षण ही शुद्धि हो जाती है। शित्पिनः कारुका वैद्या दासी दासश्च नापिताः। राजानः श्रोत्रियश्चैव सद्यः शौचाः प्रकीर्तिताः॥ ६. अशौच में त्याज्यकर्म:-सन्ध्या, पञ्चमहायज्ञ (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ) नित्यकर्म, स्मार्तकर्म, अशौच काल में नहीं करना चाहिये। सन्ध्यां पञ्चमहायज्ञान् नैत्यकस्मृति कर्म चा तन्मध्ये हापयेतेषां तर्पणम्। होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथि पूजनम्। श्राद्धं वा पितृयज्ञः स्यात् पित्रोर्बलिरथापि वा॥ ७. सूतककाल निर्णयः-सूर्यादय के पूर्व जन्म या मरण हो तो पूर्वदिन और सूर्यादय के बाद जन्म मरण हो तो उसी दिन से सूतक मानना चाहिये। अग्निहोत्रियों को शवदाह के दिन से तथा सामान्य लोगों को मरणदिन से सूतक लगता है। मरणादेव कर्तव्यः संयोगः तस्य नाग्निना॥ दाहादूर्ध्वमशौचं स्यादस्य वैतानिकोविधिः॥ ८. अशौचपरिहारः-संकल्पिपवत, विवाह, संकल्पिययज्ञ, श्राद्ध, हवन अर्चन तथा जपादि के आरंभ कर देने पर यदि किसी का जन्म या मरण हो तो तज्जन्य अशौच नहीं होता है। पूर्व कथित व्रतादि के प्रारंभ होने के पूर्व जन्म या मरण होने पर अशौच होता है। व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमार्चनेजपे। आराब्धे सूतकं न स्यादनाराब्धे तु सूतकम्॥ आरभ्यो वरणं यज्ञे संकल्प्यो व्रतजापयोः। नान्दीश्राद्धं विवाहादौ श्राद्धं पाकपरिक्त्रिया॥ निमन्त्रणं तु वा श्राद्धे प्रारंभः स्यादिति स्मृतिः। इसी प्रकार यज्ञ में ब्राह्मणों का वरण हो जाने पर (व्रत और जप में संकल्प हो जाने पर) विवाहदि में नान्दीश्राद्ध हो जाने पर, श्राद्ध में पाक (भोजन) की प्रक्रिया शुरू हो जाने पर अथवा श्राद्ध ब्राह्मणों के निमंत्रण दे देने पर तत् तत् कार्यों का आरंभ मान लिया जाता है। ९. अशौचद्वयसंक्रमणविचारः-यदि जननाशौच में मरणाशौच हो या मरणाशौच में जननाशौच हो तो मरणाशौच के अन्तर्गत		जननाशौच की निवृत्ति हो जाती है। मरणोत्पत्तिनयोगेन गयीयो मरणं भवेत्। सूतिका सर्ववर्णेषु दशरात्रेण शुद्धयति॥ इस महर्षि वाक्य के अनुसार सभी वर्णों की शुद्धि दस दिनों में होती है। प्रथम सम्पूर्ण अशौच के मध्य में द्वितीय सम्पूर्ण अशौच होने पर प्रथम सम्पूर्ण अशौच का दो भाग करे। यदि प्रथम अशौच दिन से पाँचवे दिन तक द्वितीय अशौच हो तो प्रथम अशौच के साथ ही द्वितीय अशौच की शुद्धि हो जायेगी। यदि प्रथम अशौच के छठे दिन से नव दिन पर्यन्त द्वितीय अशौच हो तब द्वितीय अशौच कालान्त के साथ प्रथम अशौच की शुद्धि होती है। जैसा कि ब्रह्मपुराण में कहा गया है। आद्यं भागद्वयं यावत् सूतकस्य तु सूतके। द्वितीये पतति त्वाद्यास्तूतकात शुद्धिरिष्यते॥ दसवें दिन (रात्रि में) द्वितीय अशौच प्राप्त हो तो दो दिनों की अशौच वृद्धि होती है। तत् पश्चात् प्रथम एवं द्वितीय अशौच क्षौरकर्म एवं श्राद्धादि कार्य साथ साथ सम्पादित करना चाहिये। रात्रि समाप्ति के बाद अर्थात् प्रातः काल द्वितीय अशौच में तीन दिनों की अशौच वृद्धि होती है। इसके बाद दोनों अशौच का एक साथ श्राद्धादि कार्य सम्पन्न करना चाहिये। “यदि दशरात्राः सन्निपत्येयुग्राहं दशरात्रामाशौचमानवादिदशरातउर्ध्वं द्विरात्रेण व्युष्टयात्रिरात्रेण इति”। १०. अस्थिसञ्चय का कालः-ब्रह्मपुराण के अनुसार शवदाह के पश्चात् ब्राह्मणों को चौथे दिन, क्षात्रियों को पाँचवे दिन, वैश्यों को सातवें दिन, शूद्रों को दशवें दिन देश काल के अनुसार अस्थि संचय करना चाहिये। दस दिनों के अशौच में सभी वर्णों को चौथे दिन, तीन दिन के अशौच में दूसरे दिन और सद्यः अशौच में उसी क्षण अस्थि संचय करना चाहिये। चतुर्थे ब्राह्मणानान्तु पञ्चमेऽहनि भूमुजाम्। सप्तमे वैश्यजतीनां शूद्राणां दशमेऽहनि॥ कर्तव्यं तु नैः श्राद्धं देशकालविधानतः॥ श्राद्धविवेक के अनुसार स्नान के बाद हड्डियों पर पञ्चाव्य का छिड़काव कर सुवर्ण, मधु, घी और तिल मिलाकर मृत्पिण्डक में रखकर दक्षिण दिशा की ओर देखते हुये “ऊँ नमोधर्माय का उच्चारण करते हुये जल में प्रवेश कर प्रेत के स्वर्ग की कामना से “वह मुझपर प्रसन्न हो ऐसा कहकर जल में हड्डियों को डाल दें। ऐसा करने से मृत प्राणी कल्पकल्पान्तर तक स्वर्ग में निवास करता है- एवं कृते प्रेतपुरे स्थितस्य स्वर्गं गतिःस्यान्तुमहेन्द्रतुल्या। गङ्गातोयेऽस्थि मज्जति। गङ्गायां मरणे यादृक् तादृक् फलमवाप्नुयत्॥ यावदस्थि मनुष्याणा गङ्गातोयेषुतिष्ठति। तावदूर्ध्वसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते॥	

सिमरियाधाम में महाकुम्भयोग

ताटङ्कमण्डलविभूषितगण्डभागं चूडामणिप्रभृतिमण्डनमङ्गिताङ्गीम्।

कौशेयवस्त्रमणि-मौक्तिकहारयुक्तां ध्यायेद्विदेहतनयां शशिगौरवणार्णम्॥

ध्यायेत् कल्पतरोरधःप्रवितते सौवर्णीचिन्तामणौ नानारत्नविराजितेऽत्र भवने सद्रत्नसिंहासने।

दूर्वानूतनपत्रसुन्दरतनुं चापं सबाणं महद्विभाणं मुकुटादि-भूषणयुतं पीताम्बर राघवम्॥

(यामलसरोब्द्धार, मिथिलाखण्ड, पटल ५, श्लो. ७१-८०)

लक्ष्मीः कौस्तुभ-पारिजातक-सुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमाः धेनुः कामदुधा सुरेश्वरगजो रम्भादि-देवाङ्गनाः।

अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुः शङ्खोऽमृतं चाम्बुधेः रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मङ्गलम्॥

(मधुघ्राविणीमीमांसा. पृ. ११)

जिस धराधाम के गर्भ से अवतार लेकर महालक्ष्मी-जगज्जननी-जानकी ने ‘‘माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः’’ के अनुसार माता की तरह पृथ्वी संरक्षण-आदर-सम्मान का सन्देश सम्पूर्ण विश्व को दिया है, जहाँ से गौतम-याज्ञवल्क्य-मण्डन-वाचस्पति-कुमारिल आदि राजर्षि-महर्षि-ब्रह्मर्षियों ने प्रवृत्तिमूलक (कर्मप्रधान) वेदान्त, त्यागपूर्वक सांसारिक जीवन-यापन, योग के साथ भोग का समन्वय, यज्ञ-दान-तप-विद्याध्ययन की महत्ता एवम् आत्मतत्त्व पर प्रकाश डालते हुए, शुक्ल्यजुर्वेद-शतपथब्राह्मण-बृहदारण्यकोपनिषद्-छान्दोग्योपनिषत्-

ईशावास्योपनिषत्-रामायण-श्रीमद्देवीभागवत-ब्रह्मसिद्धि-भामती-तन्त्रवार्तिक आदि ग्रन्थरत्नों के माध्यम से लोककल्याणार्थ ज्ञानराशि प्रसारित किया है, जहाँ से काल्यायनी-मैत्रेयी-गार्गी-भारती एवं विद्योत्तमा सदृशी महिला विदूषियों की विद्वत्ता का प्रकाश सर्वत्र फैल रहा है ऐसे सर्वत्र विख्यात परम पुण्यप्रद तीरभुक्ति (तिरहुत) क्षेत्र में ही देहमन्थन एवं शास्त्रमन्थन की भाँति क्षीरसागर का मन्थन कर देवताओं ने अमृत कुम्भ (अमृतकलश-अमृतघट) प्राप्त कर यहीं सिमरियाधाम में उत्तरवाहिनी गंगातट पर बैठकर अमृत पान किया था।

ऋग्वेद, शतपथब्राह्मण आदि प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार यह भूभाग जलमयप्रदेश (आर्द्रभूमि) के रूप में था। राजा विदेघ (विदेह), माधव (माधव) तथा उनके पुरोहित रहूगण गौतम ने वैश्वानर की उपासना के माध्यम से यज्ञ के द्वारा इस भूभाग को उर्वराशक्ति सम्पन्न तथा वासयोग्य बनाया। आधुनिक भूगर्भवैज्ञानिक, इतिहासकार एवं भूगोलशास्त्र के विशेषज्ञ भी इस विषय को स्वीकार करते हैं। श्रीमद्देवीभागवत में भी इस क्षेत्र की अवस्थिति, हिमालय के पार्श्व (बगल) तथा सागर के अतिसन्निकट में कही गई है। यथा-

राजापि विमनां भूत्वा गौतवं प्रत्यपूजयत्। इयाज हिमवत्पार्श्वे सागरस्य विशेषतः॥ (स्क.६, अ.१४, श्लो.३५)

कुम्भपर्व मुख्यतया क्षीरसागरमन्थनपूर्वक अमृतप्राप्ति कथा से सम्बद्ध है। क्षीरसागरमन्थन की कथा स्कन्दपुराण (१।८-१२), विष्णुपुराण (१।८), मत्स्यपुराण (अ.२४८-२५१) तथा पद्मपुराण (१।४) आदि ग्रन्थों में उपलब्ध होती है। स्कन्दपुराण के माहेश्वरखण्ड में प्राप्त कथानुसार-देवगुरु बृहस्पति के अपमान तथा एक अन्य कथा के अनुसार शिव प्रदत्त पारिजातपुष्पमाल्य को दुर्वासा द्वारा उपहारस्वरूप देने के पश्चात् देवराज इन्द्र ने स्वयं धारण नहीं करके हाथी को पहना दिया तथा हाथी द्वारा उस माला को अपने शृण्ड से उतारकर पाँव से कुचल दिये जाने के फलस्वरूप दुर्वासा द्वारा दिये गये शाप के कारण देवराज इन्द्र त्रैलोक्य राजलक्ष्मीविहीन हो गये। इसी मध्य असुरों ने उक्त वृत्तान्त सुनकर स्वर्ग पर चढ़ाई कर दी तथा स्वर्ग की सारी सम्पत्ति लूट ली किन्तु अभिशापत्वात् बलि आदि असुरों के हाथ से वह सारी सम्पत्ति क्षीरसागर (क्षीरोदकी सागर सङ्गम) में गिर पड़ी। इस तरह देवता एवं दैत्य-दोनों श्रीविहीन हो जाने के कारण दुःखी रहने लगे।

दुःखनिवृत्ति के लिये उपायान्तर नहीं देखते हुए देवता एवम् असुरगण अपने-अपने गुरु बृहस्पति एवं शुक्राचार्य से परामर्श कर देवाधिदेव महादेव के नेतृत्व में नष्ट राजलक्ष्मी की पुनः प्राप्ति के लिए क्षीरसागरमन्थन का निश्चय किया।

उक्त कथा अधिकांश ग्रन्थों में मिलती है किन्तु क्षीरसागरमन्थन स्थान के विषय में ये सभी ग्रन्थ मौन हैं। स्थान का निरूपण आदिकाव्य-वाल्मीकि एवं रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग (आगम) ग्रन्थों में मिलता है। यथा वाल्मीकिरामायण में-

अथ रामो महाप्राज्ञो विश्वामित्रं महामुनिम्। प्रपच्छ प्राञ्जलिर्भूत्वा विशालामुत्तमां पुरीम्॥
श्रूयतां राम शक्रस्य कथां कथयतः श्रुताम्। अस्मिन् देशे हि यद्वृत्तं शृणु तत्त्वेन राघव॥
पूर्वं कृतयुगे राम दितेः पुत्रा महाबलाः। अदिदेश्व महाभागा वीर्यवन्तः सुधार्मिकाः॥
ततस्तेषां नरव्याघ्र! बुद्धिरासीन् महात्मनाम्। अमरा विजरश्रयैव कथं स्यामो निरामयाः॥
ततो निश्चित्य मथनं योवत्रं कृत्वा तु वासुकिम्। मन्थानं मन्दरं कृत्वा ममन्थुरमितौजसः॥
उत्पपतानिनसङ्काशं हालाहलमहाविषम्। तेन दग्धं जगत्सर्वं सदेवामुरमानुषम्॥

हालाहलं विषं घोरं सञ्जग्राहामृतोपमम्। देवान् विमूच्य देवेशो जगाम भगवान् हरः॥
उच्चैः श्रव्य हयश्रेष्ठो मणिरत्नं च कौस्तुभम्। उदतिच्छन् नरश्रेष्ठ! तथैवामृतमुत्तमम्॥

(बा०का०, सर्ग ४५, श्लो. ११, १४-१६, १८, २०, २६, ३८)

अर्थात्, देवराज इन्द्र द्वारा सुनी हुई कथा को, धनुर्यज्ञावसर पर जनकपुर जाते हुए, गंगा पार करने के पश्चात् महामुनि विश्वामित्र भगवान श्रीराम को सुनाते हुए कहते हैं कि प्राचीनकाल में कृतयुग में इस तीरभुक्ति क्षेत्र में हिमालय पर्यन्त समुद्र का विस्तार था। उसी के उत्तर तट पर कैलाश से थोड़ी दूर पर गंगा-सागर का संगम तथा वहीं दक्षिण तट पर मन्दार पर्वत भी थी। इसी स्थान पर अजरत्व-अमरत्व एवम् आरोग्य लाभ के लिए देवता एवं राक्षसों ने मिलकर वासुकी को डोरी, कच्छप के पीठ पर स्थिर कर मन्दार पर्वत को मथनी बनाकर समुद्र मन्थन कर अमृत प्राप्त किया। यह स्थान सम्प्रति बिहार प्रान्त के बेगूसराय जिला मुख्यालय से नैऋत्यकोण में अवस्थित शाल्मलीवन (सिमरियाधाम) सिद्ध होता है।

इसी तरह रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग ग्रन्थ में भी कहा गया है-

आर्यावर्तस्य पूर्वस्यां समुद्रोऽस्ति सनातनः। हिमवद्वनपर्यन्तं विस्तारोऽभूत् कृते युगे॥
तस्योत्तरस्मिन् पुलिने गङ्गासागरसङ्गमः। ततोऽध्वनतिदूरे वै मम स्थानं सनातनम्॥
जाह्नव्या दक्षिणे भागे मन्दारकुसुमैर्युतः। यत्र वृक्षकृतच्छाये साक्षान्तरायणः स्वयम्॥
मन्दारस्य गिरेः पार्श्वे पुरा सिन्धुर्बभूव ह। जाह्नवी चापि तत्रैव सङ्गता सागरं प्रति॥
मुरारिचरणज्जाता गच्छन्ती चोत्तरां दिशम्। जाह्नवी सा महापुण्या विशिष्टा शाल्मलीवने॥
तत्रैव कमठपृष्ठे दण्डं संस्थाप्य पर्वतम्। मन्दारं शेषनागञ्च रज्जुं कृत्वा सुरासुराः॥
ममन्थुः सागरं सर्वे विष्णुं कृत्वा तु सन्निधौ। अमृतैकान्तिचितस्तु ममन्थुः सागरं शुभे॥
ततोऽमृतघटं धृत्वा भासयन् तेजसा भुवम् आविर्बभूव सहसा देवि! धन्वन्तरिः पुमान्॥
त्रयोदश्यां कृष्णपक्षे तुलार्कं च शुभे दिने। कार्तिके मासि सूर्यश्व तुलारढो यदा भवेत्॥
चन्द्रोऽपि देवकार्यार्थमसिते मम वासरे। गुणवपि तुलारुढे पिबन्त्यमृतमक्षयम्॥

(श्लो.१४, १५, २०, २६, ४३, २७, २८ पूर्वाब्द, ३८, ४०, ८८ उत्तराब्दः, ८८)

पूर्वार्प सन्दर्भश्लात् हरिहरक्षेत्र (गंगा-गण्डकी संगमक्षेत्र) के समीप क्षीरसागर की अवस्थिति सिद्ध होती है। (द्रष्टव्य-श्रीमद्भगवत, ८।२-८) उक्त प्रमाणों के आधार पर कार्तिककृष्ण त्रयोदशी-चतुर्दशी को तुलागत सूर्य-चन्द्र-गुरुयोग पर्यन्त पूर्वोक्तस्थान सिमरियाधाम (शाल्मलीवन) में क्षीरसागरमन्थन, अमृतप्राप्ति तथा देवताओं द्वारा अमृतपान सिद्ध होता है।

वर्तमान समय में उक्त सिमरियाधाम के दक्षिण भूभाग के बाँसी क्षेत्र में अवस्थित मन्दार पर्वत, सस्थाल-परगना के दारुकवन में वासुकिनाग द्वारा स्थापित वासुकिनाथ महादेव, जनकपुर से ५० मील उत्तर ठोसे मेगजेन नामक स्थान पर ‘‘जूटा पोखरि’’ नाम से प्रसिद्ध पुष्करिणी के मध्य भाग में विषपानोत्तर नीलकण्ठ महादेव का विश्रामस्थल, अहिल्यास्थान से पश्चिम ब्रह्मपुर में गौतम कुण्ड तक प्रवाहित क्षीरोदकी (क्षिरोई) नदी, नेपाल का सागरमाथा जिला एवं दशभंगा से ईशान कोण में अवस्थित बलिराजगढ-उक्त

विषय में प्रमाणस्वरूप अद्यपि विद्यमान हैं। एतदर्थं मधुस्राविणीमीमांसा (डा. रामकिशोर झा विभाकर), द्वादश कुंभस्थल (श्रीधनाकर ठाकुर), रुद्रयामलोक्तामृतीकरण प्रयोग (अनुवादक डॉ० विद्येश्वर झा एवं डॉ० श्रवण कुमार चौधरी) सिमरिया कुंभदर्पण (डॉ. विजय कुमार, प्रो. अवधेश कुमार झा एवं प्रो. विजय कुमार झा) एवं वाराहपुराणाङ्क कल्याण (गीताप्रेस) भी देखा जा सकता है।

अमृत प्राप्ति के बाद अमृतपान के लिए देवताओं एवं दानवों में भयङ्क युद्ध छिड़ गया। इस क्रम में सूर्य, चन्द्र एवं बृहस्पति ने “अमृत घट” की रक्षा करते हुए ११ वर्षों तक ११ स्थानों-कामाख्या, पुरी आदि में विश्राम क्रम में संरक्षित किया। अन्त में १२ वें वर्ष में उसी सिमरियाधाम में भगवान विष्णु के मोहिनीरूप के प्रभाव से देवताओं ने दीपावली के दिन अमृतपान किया। यथा-

अथ तस्य कृते राम महानासीत् कुलक्षयः। अदितेस्तु ततः पुत्रा दितिपुत्रानयोधयन्॥

एकतामगमन् सर्वे अुसरा राक्षसैः सह। युद्धमासीन्महाघोरं वीर त्रैलोक्यमोहनम्॥

यदा क्षयं गतं सर्वं तदा विष्णुर्महाबलाः। अमृतं सोहरतूर्णं मायामास्थाय मोहिनीम्॥

ये गताभिमुखं विष्णुमक्षरं पुरुषोत्तमम्। समिष्टास्ते तदा युद्धे विष्णुना प्रभविष्णुना॥ (वा.रा., बा.का., सर्ग ४५, श्लो, ४०-४३)

रुद्रयामलोक्तमृतीकरणप्रयोगग्रन्थ में भी कहा गया है-

एतस्मिन्नन्तरे काले विष्णुर्नारायणः स्वयम्। मोहिनीरूपामास्थाय ययौ दैत्यान् विमोहितान्॥

तां सम्मान तदा दैत्यराजो बलिरुवाच ह। सुधा त्वया विश्रक्तव्या सर्वेषां सममेव च॥

अद्योपवासः कर्तव्यः सुधापानसमुत्सुकैः। रात्रौ जागरणं कृत्वा स्नातव्यं स्वर्णदी जले॥

अत्रैव जाह्नवीतीरे ह्यन्तरे तु महद्वनम्। शाल्मल्याः शोभते देवि गंगा चोत्तरवाहिनी॥

पुलिते तत्र पपुर्देवाः स्नात्वा सुविमले जले॥ (श्लो. ६६, ६४, ६७, ८७ एवं ८८ पूर्वार्द्ध)

धर्मसम्प्राट् परमहंस स्वामी करपात्रिमहोदय ने भी अपने कुम्भपर्वाणिर्णय ग्रन्थ की पृष्ठसङ्ख्या २२ में “देवताओं के १२ दिनों में अथवा मनुष्यों के १२ वर्षों में १२ कुम्भ पर्वा होते हैं” ऐसा उल्लेख किया है। यथा-

देवानां द्वादशाहोभिर्मासैर्द्वादशवत्सैः। कुम्भपर्वाणि जायन्ते तथा द्वादशसङ्ख्या॥

उक्त सफल द्वादश कुम्भयोग घटित द्वादश स्थान के विषय में रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग ग्रन्थ में इस प्रकार वर्णन किया गया है-

देवाश्चागत्य मञ्जन्ति तत्र मासं वसन्ति च। तस्मिन् स्थानेन दानेन पुण्यमक्षय्यमाप्नुयात्॥

सिंहे युतौ च रेवायां मिथुने पुरुषोत्तमे। मीनभे ब्रह्मपुत्रे च तत्र क्षेत्रे वरानने॥

धनुराशिस्थिते ब्रह्मसरसि कर्कटे कृष्णशासने। कन्यायां दक्षिणे सिन्धौ यत्राहं रामपूजितः॥

अथाप्यन्योऽपि योगोस्ति यत्र स्थानं सुशोपमम्। मेघराशिस्थिते भानौ कुम्भे चैव गुरौ स्थिते॥

गङ्गाद्वारे भवेद्योगो भुक्तिमुक्तिप्रदः शिवे। मेघे गुरौ तथा देवि। मकरस्थे दिवाकरे॥

त्रिवेण्यां जायते योगः सद्योऽमृतफलं लभेत्। शिप्रायां मेघगे सूर्ये सिंहस्थे च बृहस्पतौ॥

मासं यावन्तः स्थित्वाऽमृतत्वं यान्ति दुर्लभम्॥ (श्लो. १२२-१२८)

अर्थात्, सूर्य, चन्द्र एवं गुरु के यशोक्तयोगवशात् सिंह राशि में नासिक (महाराष्ट्र) में, मिथुन राशि में जगन्नाथ (ओडिशा) में, मीन राशि में कामाख्या (आसाम) में, धनु राशि में गङ्गासागर (पश्चिमबंगाल) में, कुम्भराशि में कुम्भकोण (तमिलनाडु) में, तुला राशि में शाल्मलीवन अर्थात् सिमरियाधाम (बिहार) में, वृश्चिक राशि में कुरुक्षेत्र (हरियाणा) में, कर्क राशि में द्वारका (गुजरात) में, कन्या राशि में रामेश्वरम (तमिलनाडु) में, मेघार्क-कुम्भराशिगत गुरु में हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में,

मकरार्क-मेघराशिगतगुरु में प्रयाग (उत्तरप्रदेश) में एवं मेषार्क-सिंहस्थ गुरु में उज्जैन (मध्यप्रदेश) में कुम्भयोग होता है। इन सभी तीर्थस्थल में अमृतघट के संयोग से जल अमृतमय कहा गया है। अतएव इन स्थानों में स्नान, दान, दर्शन, मार्जन, जप, पूजन, हवन, कीर्तन, तर्पण, पिण्डदानादि विविध धर्मानुष्ठान से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है।

चन्द्रमा प्रतिमास, सूर्य प्रतिवर्ष तथा गुरु प्रतिद्वादशवर्ष में इन राशियों में आते हैं। अतएव सूर्य-चन्द्रयोगानुसार प्रतिवर्ष वैशाख (मेषार्क), कार्तिक (तुलार्क) एवं माघ (मकरार्क) मास में क्रमशः हरद्वार सिमरियाधाम एवं प्रयाग में कल्पवास का आयोजन होता है।

इसी तरह उक्त तीनों ग्रहों के योग से प्रति द्वादश वर्ष कुम्भयोग लगता है। जैसे-२०१३ ई० के मिथुनार्क में जगन्नाथ में, २०१४ ई० के कर्कार्क में द्वारका में, २०१५ ई० के सिंहार्क में नासिक में, २०१६ ई० के मेषार्क-सिंहराशिगत गुरु में उज्जैन में, २०१६ ई० के कन्यार्क में रामेश्वरम में, २०१७ ई० के तुलार्क में सिमरियाधाम में, २०१८ ई० के वृश्चिकार्क में कुरुक्षेत्र में, २०१९ ई० के धन्वार्क में गङ्गासागर में, २०२१ ई० के मेषार्क-कुम्भराशिगत गुरु में हरिद्वार में, २०२१ ई० के कुम्भार्क में कुम्भकोण में, २०२२ ई० के मीनार्क में कामाख्या में तथा २०२३ ई० के मकरार्क-मेघगत गुरु में प्रयाग में, २०२४ ई० में हरिद्वार, उज्जैन, बद्रीनाथ में, २०२५ ई० जगदशपुरी में, २०२६ ई० द्वारिका में, २०२७ ई० नासिक में, २०२८ ई० रामेश्वरम् में महाकुम्भयोग सिद्ध होता है।

तीरभुक्ति या मिथिला क्षेत्र वैकुण्ठ लोक के समान है। अतएव यहाँ वास करने से मनुष्य जीवनमुक्त होता है। यहाँ की यात्रा परम पुण्यप्रद कही गई है। काशी में एक वर्षवास से एवं प्रयाग तथा पुष्कर में तीन वर्षों तक वास से जो फल मिलता है वही फल मिथिला में एक दिन वास मात्र से प्राप्त होता है। अयोध्या के समान फल देने वाली मिथिलापुरी है। जैसे यामलसारोद्धर के मिथिलाखण्ड में कहा गया है-

वैकुण्ठमान् पुरस्कृत्य लोकालक्ष्मीरवातरत्। वैकुण्ठस्तु निजांशेन मिथिलाभूमिमाविशत्॥

अतो निवासभूमिस्ते सर्वस्थानाद्विशिष्यते। वैकुण्ठान्न कलान्यूना दृश्यते मिथिला मया॥ (पटल ३, श्लो. १५-१६)

अविमुक्ते मम क्षेत्रे संवत्सरनिवासतः। यत्फलं लभते मय्यौ मिथिलायां दिने दिने॥

तीर्थराजे विधिक्षेत्रे वर्षत्रयनिवासतः। यत्फलं समवाप्नोति मिथिलायां दिनेन तत्॥

गयायां पिण्डदानेन पितॄणां यत् फलं भवेत्। तत् फलं समवाप्नोति पिण्डदानान् संशयः॥

कुरुक्षेत्रे तु यद्दानं ब्राह्मणेभ्यः प्रदीयते। तस्मात् कोटिगुणं पुण्यं मिथिलायां धरोश्वर॥ (पटल ६, श्लो. २६-३४)

बृहद्विष्णुपुराण के मिथिला माहात्म्य में भी कहा गया है-

कथञ्चित्तत्र चेद्वास उद्धाराय भवेदलम्। तत्र यात्रा महापुण्या सर्वकामसमुद्दिता॥ (अ. १, श्लो. १७)

मिथिलां ये नमस्यन्ति देशान्तरगता अपि। तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च जायते नात्र संशयः॥ (अ. २, श्लो. ३६)

मिथिलावासमासद्य जीवन्मुक्तो भवेन्तः। देहान्ते राघवं प्राप्य तद्भवत्सैः सह मोदते॥ (अ. ४, श्लो. १६)

महापुण्यातिरेकैश्च जनुर्लब्ध्या च भारते। मिथिलाया निवासस्य नराः संयान्ति योग्यताम्॥ (अ. ६, श्लो. १३)

अतएव धर्मानुरागियों, साधु-सन्तों एवं विद्वज्जनों से करबद्ध निवेदन है कि उक्त विषय के आलोक में ‘वृश्चिकके ब्रह्मसरसि’ वचनानुसार इस वर्ष दि.१६.११.२०१८ से १६.१२.२०१८ ई० तक ब्रह्मसरोवर, कुरुक्षेत्र, हरियाणा में अगाहन (वृश्चिकार्क) में आयोज्यमान महाकुंभ में तथा दि.१५.०१.२०१९ से १३.०२.२०१९ तक प्रयाग अर्द्धकुम्भ में अवश्यमेव पधारने तथा इस संबंध में अपनी सम्मति प्रदान कर अनुगृहीत करने की कृपा करेंगे।

गंगादशहरा

२६.०५.२०२६

निवेदक:-

स्वामी रवीन्द्र जी ब्रह्मचरी

परम पूज्य स्वामीजी के वचनभूत

- १. ॐ स्वस्तिश्च नमः स्वाहा स्वाहा त्वं दक्षिणा तथा। निरूपिताश्चतुर्वेदे षट् प्रशस्तार्च कर्मिणाम्॥
ॐ, नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वाधा एवं दक्षिणा चारों वेदों द्वारा इन छः स्वरूपों का निरूपण किया गया है।
- २. पाठो होमश्चातिथीनां सेवनं देव-पूजनम्। पितृ श्राद्धं कुलाचारं तत्त्वज्ञानं सदाचरत्॥
सनातन धर्मावलम्बियों को नित्य पाठ, हवन, अतिथियों की सेवा, देव-पूजन, पितृ-श्राद्ध, कुलाचार और तत्त्वज्ञान में संलग्न रहना चाहिए। जिससे वास्तविक सुख-शान्ति प्राप्त होती है।
- ३. सदाचारतः श्रीमान् सदायज्ञ परायणः। स्थण्डिले पञ्चतत्त्वानि गेहमध्यं प्रयत्नतः॥
४. एकाक्षरे तथा कटुे माला मुद्रादि वैदिके। गृहस्थाश्रमासाद्य तत्त्वज्ञानेषु योगतः॥
५. कुलपूजां विना देवि तत्त्वज्ञानं न जायते। तत्त्वज्ञानं विना देवि निर्वाणं नैव जायते॥
६. बीज और ध्यान युक्त नवाक्षर मंत्र सब मन्त्रों में श्रेष्ठ, सब कार्यों की सिद्धि करानेवाला है।

राजा सुरेश से महर्षि मेधा ने कहा था- तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम्।

आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गपर्वदा॥

महाराज! आप उन्हीं भगवती परमेश्वरी की अराधना कीजिए।
वे आराधना से प्रसन्न होकर भोग, स्वर्ग और अपुनरावर्ती मोक्ष प्रदान करती हैं।

ऋग्वेद का स्वरूप- “ऋं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहा।”

श्री दुर्गासप्तशती में तीनों वेद के तीन ऋषि बतलाये गये हैं जिसके अङ्ग सहित पाठ करने से चारो पदार्थ की प्राप्ति होती है।

- (क) प्रथम चरित्र के-ब्रह्म ऋषि हैं, महाकाली देवता हैं, अग्नि तत्व है, ऋग्वेद स्वरूप है।
 - (ख) मध्यम चरित्र के विष्णु ऋषि हैं, महालक्ष्मी देवता हैं “ह्रीं” बीज है, वायु तत्व है, यजुर्वेद स्वरूप है।
 - (ग) उत्तर चरित्र के शिव (रुद्र) ऋषि हैं, महासरस्वती देवता हैं “ऐं” बीज है, सूर्य तत्व है, सामवेद स्वरूप है।
- रहस्य को समझने वाला विशुद्ध ज्ञान को प्राप्त करता है। दिव्य चक्षु अर्थात् तीसरी दृष्टि (ज्ञान) को प्राप्त करता है।

- (घ) केवल सप्तशतीकी दुर्गा या सिद्ध कुब्जिका स्तोत्र से भी दुर्गापाठ का फल प्राप्त हो जाता है।
- मनुजकूल सफलता एवं चारो पदार्थ की प्राप्ति होती है।

सनातन धर्मावलम्बियों को शिखा, सूत्र, गौर, देवकर्म और पितर कर्म के साथ-साथ अतिथि सेवा भी अनिवार्य कहा गया है। कुलदेवी सभी प्रकार के सिद्धियों को देने वाली कही गयी है।

छन्दोगानां देवताप्राणप्रतिष्ठाभ्यन्त्रः-ॐ वाङ्मनः प्राणापानौ व्यानश्चक्षुः श्रोत्रं शर्मन् वर्म भूतिः प्रतिष्ठा॥

वाजसनेयिनान्-ॐ यज्ञोपवितं परमं पवित्रं प्रजापतेर्वसहजं पुरस्तात्। आयुधमग्रभ्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवितं बलमस्तु तेजः॥

छन्दोगानाम्-ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वोपवीतेनोपनह्यामि।

दूर्वाक्षतदानमन्त्रः ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसमी जायतामा राष्ट्रै राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोश्री धेनुर्बोढानड्वानाशुः सतिः पुरन्धर्योषा जिष्णू रथेष्टाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्। मन्त्रार्थः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥



Achary Deepak Krishn shandily ji

॥ द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि॥

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्॥
उज्जयिन्यां महाकालम् ॐकारमलेश्वरम् ॥१॥
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम् ॥
सेतुबंधे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥२॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यंबकं गौतमीतटे॥
हिमालये तु केदारम् घुश्मेशं च शिवालये ॥३॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः॥
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥४॥

संवत् २०८३ - २०८४ के प्रमुख व्रत, पर्व

मौनापंचमी	०३ अगस्त २०२६	पितृपक्षान्त	१० अक्टूबर २०२६	सामाज्यारम्भ	१६ नवम्बर २०२६	नरकविवाण चतुर्दशी	०४ फरवरी २०२७	शिवाजीजयन्ती	०७ मई २०२७
मधुश्रीवाणी	१५ अगस्त २०२६	कलशस्थापन	११ अक्टूबर २०२६	अक्षयनवमी	१८ नवम्बर २०२६	मौनी अमावास्या	०६ फरवरी २०२७	राविव्रतविसर्ग	०८ मई २०२७
नागपंचमी	१७ अगस्त २०२६	विज्याभिषमत्रण	१६ अक्टूबर २०२६	अहिज्याजयन्ती	१८ नवम्बर २०२६	शिश्नारवारात्रारम्भ	०७ फरवरी २०२७	सत्ताडोरविसर्ग	०८ मई २०२७
शीतलापूजा	१८ अगस्त २०२६	पात्रिकाप्रवेश	१७ अक्टूबर २०२६	देवास्थान एकादशी	२० नवम्बर २०२६	सरस्वती पूजा	११ फरवरी २०२७	अक्षयतृतीया	०८ मई २०२७
संस्कृतिदिवस	२८ अगस्त २०२६	मिशापूजा	१८ अक्टूबर २०२६	तुलसीविवाह	२१ नवम्बर २०२६	अचलासप्तमी	१३ फरवरी २०२७	परशुरामजयन्ती	०८ मई २०२७
रक्षाबंधन	२८ अगस्त २०२६	महाशमीव्रत	१८ अक्टूबर २०२६	विद्यापतिपर्व	२२ नवम्बर २०२६	माघी पूर्णिमा	२० फरवरी २०२७	शङ्कराचार्यजयन्ती	११ मई २०२७
याज्ञवल्क्यजयन्ती	२८ अगस्त २०२६	सिरिया कल्पवास	१८ अक्टूबर २०२६	राविव्रतारम्भ	२२ नवम्बर २०२६	राविकासजयन्ती	२० फरवरी २०२७	जङ्गलबोसनी	१२ मई २०२७
अगस्त्यादेव	०१ सितम्बर २०२६	महानवमीव्रत	२० अक्टूबर २०२६	कार्तिकेयपूजा	२४ नवम्बर २०२६	महाशिवरात्रि	०६ मार्च २०२७	वैशाखपूर्णिमा	२० मई २०२७
कृष्णष्टमी	०४ सितम्बर २०२६	विजयादशमी	२१ अक्टूबर २०२६	सोनपुरमेला	२४ नवम्बर २०२६	सोमवत्यमा	०८ मार्च २०२७	बुद्धजयन्ती	२० मई २०२७
कृशीत्याटन	११ सितम्बर २०२६	कोजागरा	२५ अक्टूबर २०२६	सामाज्यसर्जन	२४ नवम्बर २०२६	होलिकादाह	२१ मार्च २०२७	वैशाखपूर्णिमा	२० मई २०२७
हरितालिका (तीज)	१४ सितम्बर २०२६	धन्वन्तरिजयन्ती	०६ नवम्बर २०२६	नवात्रपार्वण	२६ एवं २८ नवम्बर २०२६	होली	२२ मार्च २०२७	अगस्त्यास्त	०१ जून २०२७
चौदवन्द (चौड़चाण)	१४ सितम्बर २०२६	हनुमानजयन्ती	०७ नवम्बर २०२६	वीडपंचमी	२८ नवम्बर २०२६	सत्ताडोरारम्भ	२३ मार्च २०२७	वटसावित्रीव्रत	०४ जून २०२७
गणेशपूजा	१५ सितम्बर २०२६	दीपावली	०८ नवम्बर २०२६	कालभैरवाष्टमी	२८ नवम्बर २०२६	महामहाराणीयोग	०३ अप्रिल २०२७	पञ्चागिनवत	०७ जून २०२७
ऋषिपंचमी	१६ सितम्बर २०२६	कालीपूजा	०८ नवम्बर २०२६	कालभैरवाष्टमी	०१ दिसम्बर २०२६	वारुणीयोग	०४ अप्रिल २०२७	विन्ध्यवासिनीपूजा	१० जून २०२७
विश्वकर्मापूजा	१७ सितम्बर २०२६	सोमवत्यमा	०८ नवम्बर २०२६	कामेश्वरसिंहजयन्ती	०१ दिसम्बर २०२६	वसन्तनवारात्रारम्भ	०७ अप्रिल २०२७	गङ्गादशहरा	१३ जून २०२७
राधाष्टमी	१८ सितम्बर २०२६	अन्नकूट	०८ नवम्बर २०२६	विवाहपंचमी	१४ दिसम्बर २०२६	सूर्यषष्ठीव्रत	१२ अप्रिल २०२७	रामेश्वरदर्शन	१३ जून २०२७
इन्द्रपूजारम्भ	२३ सितम्बर २०२६	गोवर्द्धनपूजा	०८ नवम्बर २०२६	गीताजयन्ती	२० दिसम्बर २०२६	हवाहार कल्पवास	१४ अप्रिल से	वैवस्वतमत्वादि	१८ जून २०२७
हरिवासरवत	२३ सितम्बर २०२६	कालिदासजयन्ती	१० नवम्बर २०२६	दशतारकारम्भ	०५ जनवरी २०२७	मेघसङ्कान्ति	१४ अप्रिल २०२७	कबीरजयन्ती	१८ जून २०२७
अनन्तपूजा	२५ सितम्बर २०२६	भगुद्वितीया (थैया दूज)	११ नवम्बर २०२६	गुरुगोविन्दसिंहजयन्ती	१५ जनवरी २०२७	रामनवमी	१५ अप्रिल २०२७	जगन्नाथारथयात्रा	०५ जुलाई २०२७
अगस्त्यार्वादान	२६ सितम्बर २०२६	विश्वगुणपूजा	११ नवम्बर २०२६	मकरसंक्रांति	१५ जनवरी २०२७	जुडिशीतली	१५ अप्रिल २०२७	हरिश्चन एकादशी	१४ जुलाई २०२७
पितृपक्षारम्भ	२७ सितम्बर २०२६	प्रतिहारषष्ठी सायं अर्घ्य	१५ नवम्बर २०२६	प्रयाग कल्पवास	१५ जनवरी से १३ फरवरी २०२७	महावीरजयन्ती	१८ अप्रिल २०२७	चातुर्मास्यव्रतारम्भ	१४ जुलाई २०२७
जितिया	०३ अक्टूबर २०२६	प्रतिहारषष्ठी प्रातः अर्घ्य	१६ नवम्बर २०२६	दशतारकान्त	१५ जनवरी २०२७	कुँवरसिंहजयन्ती	२३ अप्रिल २०२७	गुरुपूर्णिमा	१८ जुलाई २०२७
मातृनवमी	०४ अक्टूबर २०२६	जगद्धात्रीपूजारम्भ	१६ नवम्बर २०२६						

मुहूर्त सूची

- १. सौराठससौला सभा - दिनांक ०१-०७-२०२७ से ६-०७-२०२७ ई. तक
- २. उपवनयनदिन - फरवरी ६ (छन्दोग), ११, १६ (छन्दोग), १७। मार्च-१७ (क्षत्रियवैश्य), १८। अप्रिल-११। मई-१०, जून-७, ६, १३, १४। जुलाई-६ (छन्दोग), ८।
- ३. विवाहदिन - नवम्बर-२२, २५, २६, ३०। दिसम्बर-४, ६, ६, १०, ११, १४। जनवरी-१८, २४, २८, २९, ३१। फरवरी-७, १०, ११, १५, २३, २४, २५, २८। मार्च-१, ३, ४, १०, ११। अप्रिल-१६, २१, २३, २५, २८, २९, ३०। मई-२, ३, ७, ६, १३, १४, २०, २१, २३, २४, २६, २७, ३०, ३१। जून-२, ४, ६, १०, १३, १४, १८, २३, २४। जुलाई-१, २, ७, ८, ६
- ४. द्विगामनदिन - नवम्बर-२२, २५, २६, २८। दिसम्बर-६, १०, ११, १३, १४। फरवरी-१५, १७, १८, १९, २२, २४, २५। मार्च-१०, ११। अप्रिल-१८, १९, २३, २४, २६। मई-६, १०, १२।
- ५. मुण्डनदिन - नवम्बर-२६। दिसम्बर-१४। जनवरी-२०, २७। फरवरी-८, ११, १८, १९, २३, २५। मार्च-१०, ११। मई-१२, १७, १९, २१। जून-७, १४, २१, २३, २४। जुलाई-५, १२।
- ६. गृहारम्भ - अक्टूबर-२४, २६, ३०। नवम्बर-२०, २१, २६, २८। जनवरी-२२। फरवरी-१६, २३, २५। अप्रिल-२३। मई-१७, २०, २२। जून-१४, २१, २३, २४।
- ७. गृहप्रवेश - अक्टूबर-२४। नवम्बर-१४, १६, २०, २१। दिसम्बर-१४। जनवरी-१८, २०। फरवरी-१५, १७, १८, १९। मई-१०, १२, १७। जून-१४। जुलाई-६, १०
- ८. देवादिप्रतिष्ठा - जनवरी-२०, २२। फरवरी-८, ११, १८, १९। मार्च-१०, ११। अप्रिल-१८। मई-६, १२, १७। जून-६, ७, १३, १४। जुलाई-५, ६।
- पंचाग सम्बन्धी जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र- डा. शिवेन्द्र झा, मो. ८७०९६३६३९, पं. दिगम्बर शास्त्री मो. ९५७०६५८९९९

श्री दिनेश कुमार झा, मो. ७६३९८२९८४७, पं. श्री सनातन कुमार झा-८७८९९३२०६६